पूरन डावर

संघर्ष..सफलता से समर्पण तक

2025 में पहली बार प्रकाशित

ASIAONE मीडिया ग्रुप

AsiaOne मीडिया होल्डिंग्स LLC
कार्यालय संख्या 606, 6वीं मंजिल, DLF साउथ कोर्ट,
साकेत जिला केंद्र, नई दिल्ली–110017
ईमेलः india@asiaone.co.in

AsiaOne FZE, UAE
Q1–08–0058/C, SAIF जोन शारजाह,
संयुक्त अरब अमीरात, PO Box–124144
ईमेलः dubai@asiaone-co-in

URS AsiaOne PTE LTD.
151, चिन स्वी रोड. #07–12 मैनहट्टन हाउस
सिंगापुर–169876
ईमेलः singapore@asiaone-co-in

पाठ और चित्र कॉपीराइट © AsiaOne मीडिया होल्डिंग्स LLC
सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी रूप में इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक माध्यम से, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग, या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा पुनः प्रस्तुत या प्रेषित नहीं किया जा सकता है, सिवाय इसके कि प्रकाशक द्वारा लिखित रूप में स्पष्ट रूप से अनुमति दी गई हो।

संघर्ष..सफलता से समर्पण तक

पूरन डावर

ASIAONE मीडिया ग्रुप

प्रस्तावना

मेरे प्रिय मित्र पूरन डावर की जीवनी के लिए प्रस्तावना लिखना मेरे लिए खुशी और सम्मान की बात है। पूरन का जीवन उद्देश्य और करुणा से भरपूर है। वह न केवल एक सफल व्यवसायी के रूप में, बल्कि समाज कल्याण के लिए अटूट प्रतिबद्धता वाले दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में एक अनुकरणीय व्यक्ति हैं।

इस प्रस्तावना को लिखते हुए मुझे यह स्मरण हो रहा है कि जीवनी केवल किसी व्यक्ति के जीवन का विवरण मात्र नहीं होती; वह हमें प्रेरित करने, मार्गदर्शन देने और जीवन, संघर्षों तथा उपलब्धियों को एक नए दृष्टिकोण से समझने की चुनौती देने की क्षमता रखती है। मेरे मित्र की यात्रा केवल एक उत्कृष्ट व्यावसायिक कौशल की कहानी नहीं है, बल्कि यह आत्म–चिंतन और अपने पथ की खोज के लिए एक निमंत्रण है।

साधारण शुरुआत से लेकर फुटवियर उद्योग में एक शक्ति–स्रोत बनने तक, पूरन ने डावर समूह को एक वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त ब्रांड के रूप में स्थापित करने में योगदान दिया है। अपने पूरे जीवन में उन्होंने सतत विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व की निरंतर वकालत की है। उनका दृढ़ विश्वास है कि आर्थिक स्वतंत्रता ही सच्ची स्वतंत्रता की नींव है। जो बात उन्हें विशेष बनाती है, वह है सफलता के प्रति उनका समग्र दृष्टिकोण, जो सामूहिक कल्याण में निहित है। भगवद गीता के दार्शनिक ज्ञान से प्रभावित उनकी व्यवसायिक समझ ने उन्हें न केवल रणनीतिक अंतर्दृष्टि प्रदान की है, बल्कि उनके प्रयासों को एक उच्च उद्देश्य से भी संपन्न किया है।

'मुझे विश्वास है कि इस जीवनी के पाठक पूरन की जीवन–यात्रा में वही मानवता अनुभव करेंगे, जिसने उन सभी के हृदय पर अमिट छाप छोड़ी है जिन्हें उन्हें जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी के ये प्रेरणादायक शब्द मुझे स्मरण होते हैं: 'स्वयं को खोजने का सर्वोत्तम उपाय है–दूसरों की सेवा में स्वयं को खो देना।' यह भावना पूरन की जीवनी के मूल भाव को अत्यंत सुंदरता से अभिव्यक्त करती है।''

–वाई.के. गुप्ता
माननीय प्रो–चांसलर, शारदा विश्वविद्यालय
और उपाध्यक्ष, एसजीआई

प्रस्तावना

पूरन डावर की जीवन कहानी मानवीय भावना की लचीलता, दृढ़ संकल्प और सफलता की क्षमता का जीवंत प्रमाण है। विभाजन की त्रासदी और पाकिस्तान से आए एक पंजाबी शरणार्थी के रूप में विस्थापन से लेकर एक अग्रणी जूता उद्योगपति बनने तक की उनकी यात्रा संघर्ष, संकल्प और नवाचार की प्रेरणादायक गाथा है।

पूरन ने अपनी असाधारण कहानी को पूरी ईमानदारी और उल्लेखनीय स्पष्टता के साथ साझा किया है—कठिनाइयों और संघर्षों से भरे शुरुआती दिनों से लेकर उपलब्धियों और प्रशंसा की ऊँचाइयों तक। उनके अनुभवों के माध्यम से हम यह सीखते हैं कि दूरदर्शिता, कठोर परिश्रम और अनुकूलनशीलता की शक्ति से सबसे कठिन चुनौतियों पर भी विजय पाई जा सकती है।

पूरन की आत्मकथा केवल एक व्यक्तिगत कहानी नहीं है; यह आशा, लचीलता और उत्कृष्टता की अटूट खोज का एक प्रेरणादायक इतिहास है। उनकी कहानी न केवल पाठकों को मोहित करेगी, बल्कि उन्हें प्रेरित भी करेगी और उनके मन पर एक अमिट छाप छोड़ेगी। यह उन सभी लोगों के लिए मूल्यवान सबक प्रस्तुत करती है जो प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने और अपने सपनों को साकार करने की आकांक्षा रखते हैं।

—साधना भार्गव
सलाहकार
इनक्रेडिबल इंडिया फाउंडेशन

धन्यवाद संदेश

पाकिस्तान में स्थित पंजाब से आए एक शरणार्थी परिवार से होने के नाते, एक अग्रणी जूता उद्योगपति बनने तक का मेरा सफर अत्यंत कठिनाइयों और चुनौतियों से भरा रहा। फिर भी, यही यात्रा थी जिसने मुझे लचीलापन, संघर्ष और दृढ़ता का महत्व सिखाया, जिसकी बदौलत मैं प्रतिकूल परिस्थितियों से उभर पाया और एक अदम्य आत्मबल के साथ अपने सपनों को साकार कर सका।

जब मैं इस उत्कृष्टता की खोज पर पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मैं उन सभी महान व्यक्तियों का सदा आभारी रहूँगा जिन्होंने मेरे जीवन और मेरी यात्रा को आकार देने में अहम भूमिका निभाई है। मैं उन सभी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जो मेरी जीवन–यात्रा में मेरे साथ कदम से कदम मिलाकर चले। मेरी यह आत्मकथा उन्हीं के योगदान का प्रतीक है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मेरे पूज्य पिता, स्वर्गीय **श्री चौधरी लाल चंद जी** का आभार, जिन्होंने भारत और पाकिस्तान के विभाजन की पीड़ा और सबकुछ खोने के बावजूद अपने साहस और संकल्प को बनाए रखा। उन्होंने अथक परिश्रम किया ताकि हमारा जीवन न केवल सहज हो, बल्कि उद्देश्यपूर्ण और गरिमामय भी बने। उनका जीवन और उनका दिया हुआ ज्ञान आज भी मुझे प्रेरणा देता है।

मेरी पूज्य माता, **स्वर्गीय श्रीमती सत्यवंती जी** को धन्यवाद, जिनकी सनातन में अटूट आस्था और कठिन जीवन की परिस्थितियों में भी उनका अडिग संकल्प हमारे जीवन में मानवता और आध्यात्मिकता के बीज बोने वाला बना।

मेरे प्रिय भाई, **श्री जवाहर डावर** का आभार, जिन्हें मैं स्नेहपूर्वक अपना 'राम लक्ष्मण समकक्ष' कहता हूँ। वे हर कदम पर मेरे साथ खड़े रहे और निरंतर प्रेम और सहयोग प्रदान करते रहे। 1974 में हमारे पूज्य पिताजी के निधन के समय मैं मात्र 21 वर्ष का था। तब उन्होंने पिता के समान स्नेह और मार्गदर्शन से मुझे संभाला और मेरे जीवन को दिशा दी।

मेरी प्रिय पत्नी, **श्रीमती मधु डावर** को धन्यवाद, जो जीवन के हर उतार–चढ़ाव में मेरे साथ अडिग रहीं। उनका सदा सकारात्मक और मिलनसार स्वभाव विशेष रूप से मेरे सार्वजनिक और परोपकारी कार्यों में मेरी प्रेरणा बना। आप ही वह शक्ति हैं जो हर प्रयास को सार्थक बनाती हैं।

मेरे पुत्र **संभव डावर** का धन्यवाद, जो मेरे लिए ज्ञान और सीखने का एक गहन स्रोत रहे हैं। उन्होंने यह दिखाया कि किस प्रकार युवा पीढ़ी पारंपरिक उद्योगों में नई सोच और नवाचार के माध्यम से क्रांति ला सकती है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि चमड़ा उद्योग, जिसे कभी केवल मालिक–प्रधान और पारंपरिक रूप से संचालित माना जाता था, एक सुदृढ़ कॉर्पोरेट संरचना में भी फल–फूल सकता है।

मेरी बहू **श्रुति डावर** का आभार, जो जीआईए से प्रशिक्षित एक कुशल आभूषण डिजाइनर हैं। उन्होंने हमारे परिवार में एक प्यारी बेटी की कमी को पूरी तरह भर दिया है, और अब वह हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई हैं।

मेरे छोटे पुत्र, **स्वर्गीय सक्षम डावर** को धन्यवाद, जिन्हें मैंने अत्यंत दुःखद रूप से 1998 में मात्र 9 वर्ष की आयु में खो दिया। यद्यपि उनका हमारे साथ समय बहुत अल्प था, परंतु उनके जीवन ने मुझ पर और असंख्य अन्य लोगों पर एक गहरा और चिरस्थायी प्रभाव छोड़ा है। उन्होंने मेरे जीवन में प्रेम और उद्देश्य की जो विरासत छोड़ी है, वह मुझे आज भी प्रेरणा देती है और हमेशा देती रहेगी।

मेरे पोतों **शिवेन** और **समेद** को धन्यवाद, जिन्होंने मेरे जीवन को असीम आनंद और उल्लास से भर दिया है। उनकी मासूम उपस्थिति ने मेरे भीतर एक बार फिर बचपन की सरलता और निष्कलंक भावनाओं को जागृत कर दिया है। उन्होंने मुझे यह सिखाया है कि जीवन की छोटी–छोटी बातों में भी आनंद और सार्थकता खोजी जा सकती है।

मेरे स्कूल और कॉलेज के दिनों के सभी मित्रों का आभार– आप सभी इतने प्रिय और अनेक हैं कि किसी एक को अलग से उल्लेखित करना कठिन है। आप सभी ने जीवन के हर मोड़ पर सच्चे मित्र और स्नेहिल सहचर के रूप में मेरा साथ दिया है।

मंजू और डॉ. राकेश गुप्ता का आभार– जो स्कूल और कॉलेज के दिनों से मेरे साथ हैं और आज भी डटे हैं, और पिछले 40 वर्षों से हमारे अटूट मित्र हैं। उनका स्नेह और साथ मेरे जीवन की एक अनमोल धरोहर है।

1980 के दशक के मेरे प्रिय मित्रों– **साधना और विजय भार्गव, वीना और गौतम कौल, तथा डॉ. अजय और डॉ. दिव्या प्रकाश** को धन्यवाद, जिनके साथ मैंने जीवन के उतार–चढ़ावों का सामना किया है, अनेक देशों की यात्राएँ की हैं और असंख्य अविस्मरणीय अनुभवों को साझा किया है। हम सभी ने मिलकर जीवन को पूरी तरह जिया है– और यह साथ, यह यात्रा, आगे भी यूँ ही जारी रहेगी।

मेरे मित्र **यतेंद्र कुमार गुप्ता** का आभार, जिनका शारदा विश्वविद्यालय और एसजीआई में नेतृत्व तथा शिक्षा के प्रति समर्पण अत्यंत प्रेरणादायक रहा है।
शारदा विश्वविद्यालय की **डॉ. गुरप्यारी भटनागर** को धन्यवाद, जिनकी गहन समीक्षा और विवरणों पर बारीक नजर ने हमेशा उत्कृष्टता सुनिश्चित की है– उनका योगदान अत्यंत सराहनीय है।

अंततः, मैं अपने **व्यापारिक साझेदारों, सहयोगियों, आपूर्ति श्रृंखला के सदस्यों, और अपने सम्मानित खरीदारों** का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ। आपके विश्वास, सहयोग और समर्थन ने मेरे व्यावसायिक सफर को न केवल संभव बनाया, बल्कि उसे सशक्त और सफल भी किया।

धन्यवाद!
पूरन डावर

जीवन–संग्रह

पूरन डावर

अध्यक्ष, डावर ग्रुप

अध्याय 1: दृढ़ता की नई सुबह 12

अध्याय 2: शिक्षा और प्रारंभिक करियर 22

अध्याय 3: एक उद्यमी का उद्भव 34

अध्याय 4: विनिर्माण में प्रवेश 54

अध्याय 5: विस्तार की ओर बढ़ते कदम 62

अध्याय 6: एक विचारक का निर्माण 74

अध्याय 7: अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर धाक जमाना 104

अध्याय 8: प्रतिस्पर्धा से सहयोग तक: भारत के जूता उद्योग की सामूहिक यात्रा 116

अध्याय 9: वर्तमान का डावर साम्राज्य 128

अध्याय 10: सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के सामाजिक कार्य 140

अध्याय 11: नव–उद्यमियों का निर्माण 160

अध्याय 12: पूरन डावर – एक विचारक और विश्लेषक 170

अध्याय 13: विचार की आवाज: बदलाव के लिए पूरन डावर की रचनाएँ और विश्लेषक 192

अध्याय 14: यात्रा जारी है 202

अध्याय 1

दृढ़ता की नई सुबह

ऐतिहासिक शहर आगरा, जिसे ताजमहल की खूबसूरती और भारत के जूता उद्योग की राजधानी के रूप में जाना जाता है, वहीं पर स्थित है डावर ग्रुप–एक व्यक्ति, पूरन डावर की अदम्य सोच और दृढ़ता का प्रतीक। वैश्विक जूता उत्पादन की दौड़ में, डावर ग्रुप ने न केवल अपने अनगिनत उत्पादों की विविधता से बल्कि अपनी उच्च गुणवत्ता, पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति निष्ठा से अपनी अलग पहचान बनाई है। पाँच दशकों से अधिक की इस यात्रा ने इसे एक ऐसे उदाहरण के रूप में स्थापित किया है जो नैतिक व्यवसाय के मापदंडों को परिभाषित करता है, और एक ऐसा नाम बन गया है जो जिम्मेदार उत्पादन की सीमाओं को लगातार आगे बढ़ाता है।

साधारण शुरुआत से लेकर जूता उद्योग के दिग्गज बनने तक, डावर ग्रुप ने एक वैश्विक पहचान बनाई है। यह ब्रांड आज ना ही सिर्फ सौ से अधिक अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है, अपितु हर साल आगरा में निर्मित 1,700 से अधिक नए डिजाइन और स्टाइल्स भी पेश करता है। आगरा, जिसे दुनिया की जूता राजधानी भी कहा जाता है, में बने ये उत्पाद न केवल गुणवत्ता में बल्कि डिजाइन और नवाचार में भी बेमिसाल होते हैं। डावर ग्रुप की सफलता सिर्फ उसके उत्पादन के आंकड़ों से नहीं, बल्कि उसकी मान्यता और प्रमाणपत्रों से भी मापी जाती है। ISO 9001 प्रमाणन से लेकर ISO 14001 और ISO 45001 तक, यह ग्रुप गुणवत्ता, पर्यावरण संरक्षण, और स्वस्थ कार्यस्थल सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अलावा, SA 8000 स्टैंडर्ड यह दर्शाता है कि समूह अपने कर्मचारियों के साथ निष्पक्ष व्यवहार के प्रति समर्पित है, जिसमें बाल श्रम, स्वास्थ्य, सुरक्षा और भेदभाव जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं।

डावर ग्रुप की उपलब्धियों में उत्तर प्रदेश राज्य का निर्यात पुरस्कार (2018–2019) भी शामिल है। निर्यात पुरुस्कार ने क्षेत्र में डावर समूह के उत्कृष्ट योगदान और औद्योगिक विकास को एक मजबूत पहचान दी है। SMETA/Sedex प्रमाणन इसके नैतिक व्यवसायिक व्यवहार को और भी मजबूत बनाता है, जो श्रम, स्वास्थ्य, सुरक्षा, पर्यावरण और व्यावसायिक नैतिकता के उच्च मानकों को बनाए रखता है। डावर समूह का यह सतत और नैतिक उत्पादन का संकल्प उसकी मूल सोच में बसा हुआ है। हर जूता पर्यावरण के अनुकूल सामग्री और प्रक्रियाओं का ध्यान रखकर ही बनाया जाता है। उत्पादन चक्र को इस तरह से तैयार किया गया है कि कचरे को कम से कम और संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाए। प्रमाणित टेनरियों से चमड़े की प्राप्ति से लेकर रीसाइक्लिंग सामग्री के उपयोग तक, हर कदम पर पर्यावरणीय प्रभाव का ध्यान रखा जाता है।

इस अद्वितीय समूह के पीछे इसके संस्थापक, श्री पूरन डावर जी हैं। आगरा के

प्राचीन वैभव के साए में, पूरन डावर ने एक ऐसी यात्रा शुरू की जिसने भारतीय जूता शिल्प को दुनिया भर में एक नई पहचान दी। डावर समूह, जो अपनी गुणवत्ता, पर्यावरणीय स्थिरता और नैतिक व्यवसाय प्रथाओं के लिए जाना जाता है, केवल एक कॉर्पोरेट इकाई नहीं, बल्कि एक विरासत है। यह उस इंसान की कहानी है जिसने अपने हालातों की सीमाओं को पार कर एक अदम्य सपना देखा और उसे पूरा करने का साहस किया। यह शुरुआत है उस सफर की, जो न केवल आगरा को गौरवान्वित करता है, बल्कि भारत की शिल्पकला को भी दुनिया के मानचित्र पर सम्मानित स्थान दिलाता है।

जन्म और परिवार

आगरा का दिल, मुगल इतिहास से भरा हुआ है, सन् 1951 में यहाँ एक नया अध्याय शुरू हुआ। उस अध्याय का नाम है पूरन डावर। उनके परिवार की दृढ़ता और साहस से भरी कहानी, उनके जन्म से पहले ही शुरू हो चुकी थी और उसी परिवेश ने उनके जीवन और चरित्र को आकार दिया।

डावर परिवार की कहानी का जिक्र महाभारत के अभिमन्यु के साहसिक किस्सों की याद दिलाता है। जैसे अभिमन्यु ने अपनी माँ के गर्भ में रहते हुए अर्जुन की वीरता की कहानियाँ सुनीं और योद्धा के गुण हासिल किए, वैसे ही पूरन का जन्म भी एक ऐसे माहौल में हुआ था जहाँ साहस और संघर्ष जीवन के मूल थे।

सन् 1947 की गर्मियों के मौसम में, जब भारत उपमहाद्वीप को दो देशों में विभाजित किया गया, डावर परिवार भी लाखों अन्य लोगों की तरह विभाजन की त्रासदी में फंस गया। अपने पुश्तैनी घर, डेरा गाजी खान, जो अब नई सीमा के पार है, को छोड़ने का दिल तोड़ने वाला फैसला उन्हें लेना पड़ा। इस कठिन दौर में एक अनोखी दयालुता और रिश्ते की कहानी जन्मी, जो डावर परिवार की धरोहर बन गई।

अपने जरूरी सामान के साथ निकलने की तैयारी करते हुए, पूरन के पिता, जो एक जमींदार और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, ने अपने पड़ोसी परिवार को मुश्किल में देखा। वह परिवार, डावर परिवार की तरह, अपने कीमती सामान इकट्ठा नहीं कर पाया था। परिवार का मुखिया घर के बाहर बेचैन घूम रहा था, चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिख रही थीं। उनका परिवार डरा–सहमा हुआ एक कोने में बैठा देख रहा था।

यह देखकर, उनके पिता ने उनके पास जाकर मदद की पेशकश की। चारों ओर फैली अफरा–तफरी के बीच, उनके चेहरे की शांति और साहस ने सभी को चकित कर दिया। उन्होंने उस परिवार से कहा, 'ऐसे समय में हमें एक–दूसरे का साथ देना चाहिए, चाहे जितना भी खतरा हो। आपके परिवार की धरोहर केवल समान नहीं, यादें हैं, जिन्हें बचाना जरूरी है।'

दोनों मिलकर उस परिवार के घर में वापस गए। गली में फैली हलचल और शोर के बीच, हर कदम बहुत सावधानी से उठाते हुए, उन्होंने गहने, जरूरी दस्तावेज और छोटे पारिवारिक यादगार का सामान इकट्ठा किया, हर सामान उस परिवार के इतिहास की निशानी थी।

सुरक्षित लौटने पर, उस परिवार ने कृतज्ञता भरे हृदय से धन्यवाद दिया। दोनों परिवारों के बीच जो केवल जान–पहचान थी, वह अब एक अटूट रिश्ते में बदल गई। जाते–जाते, उस परिवार ने यह इच्छा व्यक्त की कि वे एक दिन इस मदद का कर्ज चुकाना चाहेंगे।

आखिरकार, डावर परिवार आगरा पहुंचा और मलपुरा के शरणार्थी शिविर में नए सिरे से जीवन शुरू किया। शिविर में जीवन कठिन था, लेकिन उनके पिता अक्सर अपने बच्चों को उस दिन की कहानी सुनाते थे। ये किस्से सिर्फ बीते हुए दिनों की यादें नहीं थे, बल्कि साहस, ईमानदारी और मानवता की शक्ति के सबक थे।

साल बीते और 1958 में, जब परिवार भारत में अपनी जड़े जमा चुका था, वे फिर से डावर परिवार के संपर्क में आए। वे एक अनोखा प्रस्ताव लेकर आए रिश्ता जोडने का। विभाजन के दौरान मिली मदद के आभार स्वरूप, उन्होंने सोचा कि परिवारों के बीच का बंधन विवाह के जरिए अटूट हो सकता है।

आगरा में दोनों परिवारों और नवीन संगठित समुदाय की उपस्थिति में, एक साधारण लेकिन भावनात्मक समारोह में पूरन की बड़ी बहनों, जो उस समय मात्र 13 और 15 वर्ष की थीं, का विवाह उस परिवार के बेटों से कर दिया। यह अवसर नए आरंभ की खुशी के साथ–साथ उन कठिनाइयों की याद भी दिलाता था, जिन्हें दोनों परिवारों ने सहा था।

ये शादियां सिर्फ एक वादा पूरा करना नहीं था, बल्कि यह दिखाता था कि भावना और प्रेम से जुड़े रिश्ते किस तरह जीवन को नई दिशा दे सकते हैं। उस समय बालक पूरन ने इन घटनाओं को देखा, और उनके पिता के साहस, अपने घर की यात्रा और इन विवाहों की कहानियों ने उनके जीवन के मूल्यों को गढ़ा। यह कहानी उनके भीतर जिम्मेदारी, करुणा और समुदाय की शक्ति के प्रति गहरी आस्था का बीज बो गई।

संघर्ष भरी जिंदगी

1947 के भारत पाकिस्तान बंटवारे के बाद, डावर परिवार भी लाखों लोगों की भांति विस्थापन और अस्थिरता के संकट से गुजर रहा था। पाकिस्तान के डेरा गाजी

खान में अपना घर छोडकर भारत की ओर पलायन का कठिन सफर और उसके बाद, आगरा के मलपुरा शिविर में अस्थायी आश्रय। जीवन कठिन परिस्थितियों में निरंतर चलता रहा और उसी बीच, पूरन डावर का जन्म हुआ– एक ऐसे बच्चे का जन्म जिसने संघर्षों के मध्य दृढ़ता और निरन्तरता का पाठ सीखा।

तंबुओं और अस्थाई झोपड़ियों का एक जाल, मलपुरा शरणार्थी शिविर, पूरन डावर का पहला घर बना। यहां पर हर परिवार की अपनी कहानी थी, जो दुख और जीवटता की गूंज बनकर चारों ओर फैलती थी। यह कैंप सिर्फ एक जगह नहीं, बल्कि उन घरों की यादें संजोए हुए था जिन्हें वे छोड़ आए थे और एक स्थायी अनिश्चितता की तस्वीर थी जिससे वे जूझ रहे थे।

शिविर में जीवन अभावों से भरा था। भोजन, पानी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसी बुनियादी जरूरतों की कमी थीं। सरकार इस बड़े शरणार्थी संकट से जूझ रही थी और सहायता सीमित थी। डावर परिवार, जो पहले समृद्ध जमींदार थे, अब राशन और सामुदायिक सहायता पर निर्भर थे। इन कठिन परिस्थितियों के बावजूद, उनके पिता चौधरी लाल चंद, अपने परिवार और समुदाय के लिए एक मजबूत स्तंभ बने रहे। उनके धैर्य और सहनशीलता ने लोगों को हिम्मत और प्रेरणा दी।

बालक पूरन के लिए, शरणार्थी कैंप में बिताया समय जीवन की बड़ी सीख बना, जहाँ हर चेहरा संघर्ष की कहानी कहता था। उसकी शुरुआती यादों में उसके दोस्तों की हंसी और उनके माता–पिता की गंभीर बातें शामिल थीं। यह एक विरोधाभास था बचपन की मासूमियत और संघर्ष की कड़ी हकीकत का। उनकी माँ, एक कोमल हृदय और मजबूत महिला थी। प्रारंभिक शिक्षा में उनकी माँ एक महत्वपूर्ण कड़ी रहीं। वे रोजाना के छोटे उदाहरणों से दयालुता, बांटने की भावना और समुदाय के महत्व का पाठ पढ़ाती थीं। वे अक्सर अपने सीमित भोजन को उन पड़ोसियों के साथ साझा करतीं जिनकी हालत उनसे भी खराब होती थी।

हालांकि शिविर में जीवन चुनौतीपूर्ण था, लेकिन यह सांस्कृतिक आदान–प्रदान का भी स्थान बन गया। अलग–अलग जगहों से आए विस्थापित परिवार अपने–अपने रीति–रिवाज और परंपराएं लेकर आए, जिससे शिविर एक सांस्कृतिक संगम बन गया। इस अनुभव ने उनके पालन–पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उसमें विविधता का सम्मान और एकता की भावना पनपी।

लेकिन शिविर में जीवन समस्याओं से मुक्त नहीं था। बीमारियाँ आम थीं और उचित सफाई जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी ने समस्याओं को बढ़ा दिया। बरसात के मौसम में तो हालात और भी बदतर हो जाते, जब पूरा शिविर कीचड़ में बदल जाता और स्वास्थ्य के गंभीर खतरे उत्पन्न होते। ऐसे समय में उनके पिता की चतुराई और संसाधन एकत्र करने की अद्भुत क्षमता ने उनको शिविर का

सम्मानित नेतृत्वकर्ता बना दिया।

पेठे के स्वाद से पहचान बनाने वाला आगरा, 26 सितंबर 1951 के दिन पूरन डावर का जन्मस्थल बना। यह वह दौर था जब एक नव स्वतंत्र भारत अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश कर रहा था। उनका परिवार, पाकिस्तान से उजड़कर आया हुआ, मलपुरा शिविर में अस्थायी आश्रय के बाद शाहगंज में स्थिरता की तलाश कर रहा था। उन्हें शाहगंज में जो छोटा सा घर मिला, वह उनकी पिछली संपत्तियों की तुलना में बेहद मामूली था, लेकिन वहां रिश्तेदारों का साथ और प्यार मिला। यहां, पूरन का विस्तारित परिवार चाचा, चाची और उनके बच्चे एक ही छत के नीचे रहते थे। भीड़भाड़ के बावजूद, पारिवारिक बंधन ने एक मजबूत समर्थन तैयार किया। पलवल में आठ एकड़ जमीन उनकी आजीविका का सहारा बनी, जो उनकी पहले की विशाल संपत्तियों से एकदम विपरीत थी।

पूरन के पिता, जो पाकिस्तान में जमींदार और कपड़े के व्यापारी थे, वे अब नए सिरे से जीवन शुरू कर रहे थे। शाहगंज में, उनके पास जो थोड़ा–बहुत पैसा बचा था, उससे चौधरी जी और उनके भाई ने नवजीवन का पुनर्निर्माण किया। एक तरफ चाचा की कपड़े की दुकान और दूसरी ओर पिता की दर्जी की दुकान ने धीरे–धीरे विस्थापित से स्थापित होने का सफर शुरू किया।

बचपन में, सिलाई मशीनों की खटर–पटर और कपड़े कटने की आवाज में खोए हुए, पूरन ने अपने पिता की दुकान में अनगिनत घंटे बिताए। उन घंटों को पूरन

पूरन डावर की स्थायी प्रेरणा उन्हें अपने दिवंगत माता–पिता, श्री लाल चंद डावर और श्रीमती सत्यवंती डावर से प्राप्त होती है।

ने अंकों से नहीं अनुभव एवं अवलोकन से गिना। पूरन ने देखा कैसे उसके पिता और मास्टर शकूर साधारण कपड़े को विस्तृत वस्त्रों में बदल देते। 'मास्टर शकूर सिर्फ दर्जी नहीं, कलाकार थे,' पूरन वर्षों बाद याद करते हुए कहते हैं कि 'मास्टर शकूर का हर टांका मेरे बचपन के कैनवास में एक रंग भरता था।

उन्होंने मुझे सिलाई के साथ–साथ दृढ़ता की कला सिखाई। हमारा कपड़ा साधारण हो सकता था, पर हमारी उम्मीदें कभी साधारण नहीं थीं,' उन्होंने एक इंटरव्यू में गर्व के साथ कहा।

दर्जी की दुकान समुदाय का छोटा सा केंद्र बन गई, जहां पुराने किस्से उतनी ही आजादी से साझा किए जाते थे जितनी आसानी से सेवाएं दी जाती थीं। यहीं पर पूरन ने मेहनत और समुदाय की अहमियत सीखी। हर ग्राहक अपनी विस्थापन, जीवटता और नए सिरे से जीवन बनाने की अनोखी कहानी लेकर आता।

जैसे–जैसे पूरन डावर बड़े हुए, उनके पिता अक्सर पाकिस्तान में उनकी पुरानी जिंदगी की कहानियां सुनाते – तीन मंजिला घर फैले हुए खेत और उनका मान–सम्मान। लेकिन ये किस्से खोई हुई संपत्ति की याद नहीं, बल्कि सम्मान, ईमानदारी और परिवार की अडिग भावना के सबक थे।

उनके पिता गर्व से कहते, 'शाहगंज का हमारा घर चाहे तीन मंजिला न हो और पलवल की जमीनें उतनी विस्तृत न हों पर जिस सम्मान से हमने जीवन जिया, वह अटल रहा।' यह पाठ, हर परिस्थिति में अपनी गरिमा बनाए रखने का, उनके जीवन पर गहरा प्रभाव छोड़ गया।

भले ही उनके साधन सीमित थे, पर उनके माता–पिता, खासकर उनकी माँ ने यह सुनिश्चित किया कि उनके बच्चों को शिक्षा मिले। उनकी साधारण सी दिखने वाली माता शिक्षा के प्रति सजग थी। उनकी मान्यता थी की शिक्षा ही बेहतर भविष्य की कुंजी है। 'उन्होंने हमें कभी गरीब महसूस नहीं होने दिया,' उन्होंने कहा। 'हम हमेशा अच्छे कपड़े पहनते थे– शायद दुकान के बचे हुए कपड़ों से बने हुए, पर इतने अच्छे से सिले हुए कि हम हमेशा सम्मानित महसूस करते।'

मेहनत, शिक्षा और नैतिकता की भावना से भरा हुआ यह माहौल उनके भविष्य की नींव बना। शाहगंज की उस छोटी सी दुकान में सीखे गए सबक एक दिन डावर ग्रुप के उसूलों में तब्दील हो गए, जिसने उसे गुणवत्ता, नवाचार और नैतिक व्यवहार के लिए दुनिया भर में एक अग्रणी नाम बना दिया।

अपने पिता की दर्जी की दुकान से लेकर डावर ग्रुप के बोर्डरूम तक पूरन डावर का सफर विरासत की शक्ति, मानवीय भावना का लचीलापन और मूल्यों के गहन प्रभाव का प्रमाण है। यह एक ऐसी कहानी है जो एक राष्ट्र के निर्माण के लोकाचार को प्रतिध्वनित करती है लचीला, महत्वाकांक्षी और दूरदर्शी।

प्रारंभिक वर्ष

यमुना नदी के तट पर बसा प्राचीन शहर आगरा और भीड़भाड़ वाले शाहगंज के बाजार के बीच, डावर परिवार ने अपनी नई जिंदगी की शुरुआत की। मलपुरा के शरणार्थी शिविर को पीछे छोड़ते हुए, शाहगंज का यह सफर उनके जीवन में एक अहम मोड़ था। यह सफर उनकी सहनशक्ति और छोटी–छोटी जीतों की कहानी कहता है। शाहगंज में परिवार का बसना सरकार द्वारा नियुक्त एक कस्टोडियन की मदद से हुआ, जिसने पाकिस्तान में छोड़ी गई संपत्ति के आधार पर घर आवंटित किए। डावर परिवार को एक छोटा सा घर और पलवल के पास आठ एकड़ जमीन मिली। हालांकि घर छोटा था और पूरे परिवार के लिए पर्याप्त नहीं था, जिसमें चाचा, मामा और मौसी जैसे रिश्तेदार भी शामिल थे। फिर भी यह नजदीकी संगठित परिवार और परिवारिक एकता को बढ़ावा देता और अपनी चुनौतियां भी साथ लाता था।

उनके पिता चौधरी लाल चंद, जिन्हें पाकिस्तान में प्यार से 'चौधरी साहब' कहा जाता था, एक सम्मानित कपड़ा व्यापारी और जमींदार थे। तीन मंजिला घर से एक छोटे से मकान में आना पूरे परिवार के लिए एक कठिन हकीकत थी। लेकिन चौधरी साहब की दृढ़ता और सूझबूझ के किस्से परिवार में मिसाल बन गए थे।

पाकिस्तान से लाई गई मामूली रकम और 1958 में जमीन की बिक्री से हुई आय अब एक नई शुरुआत का जरिया थी। इस रकम का एक हिस्सा पूरन डावर की बड़ी बहनों की शादी के लिए खर्च किया गया और बाकी से चौधरी साहब और उनके भाई ने अपने पुराने हुनर कपडे के व्यापार में हाथ आजमाया। आमने–सामने

1980 के दशक के उत्तरार्ध का एक अविस्मरणीय पल, जब पूरन डावर अपनी पत्नी मधु और अपने बच्चों संभव व सक्षम के साथ एक सुखद पारिवारिक क्षण साझा कर रहे थे।

दो दुकानें खोली गई एक कपड़े की और दूसरी दर्जी की। यही वह शिक्षालय था, जहाँ उनके व्यापार और हुनर की शुरुआती यादें जुड़ी हैं। 'मुझे मास्टर शकूर याद है, जो मेरे पिता के साथ काम करते थे,' पूरन ने एक इंटरव्यू में उन्हें याद करते हुए कहा। 'वह सिर्फ दर्जी नहीं, कपड़े के कलाकार थे। मैंने उनसे सीखा कि हर कपड़े का अपना एक किस्सा होता है और हर टांका एक मकसद से होता है। वहीं, सिलाई मशीनों की खटर–पटर और कपड़े की खुशबू के बीच, मैंने पहली बार श्रम की गरिमा को समझा।'

चौधरी साहब के हुनर से चल रही दर्जी की दुकान खूब फली–फूली। 10 से 12 कारीगर वहां काम करते थे। यह दुकान सिर्फ आय का जरिया नहीं, बल्कि बालक पूरन के लिए एक स्कूल थी। वहाँ की कहानियाँ, संघर्ष और सूझबूझ ने उनके नजरिए को गढ़ा। 'हर शाम दुकान बंद होने के बाद, पिताजी मुझे बैठाकर पाकिस्तान में हमारी जिंदगी के किस्से सुनाते थे,' उन्होंने कहा 'हमारे खेत, हमारा घर और वो जीवन जो हमने छोड़ा। पर सबसे अहम वो मूल थे जो कोई हालात हमसे छीन नहीं सकते– ईमानदारी, मेहनत और नए सिरे से शुरुआत करने की हिम्मत। ये सिर्फ खोए हुए वैभव की कहानियां नहीं, बल्कि दृढ़ता के सबक थे।'

जैसे–जैसे पूरन डावर बड़े हुए, परिवार की मुश्किलें और साफ दिखने लगीं। भीड़भाड़ भरे घर में रहना, बढ़ते व्यापार की जिम्मेदारी और एक शरणार्थी परिवार

पूरन डावर अपने परिवार के साथ–माँ सत्यवंती डावर, भाई जवाहर डावर, भाभी संतोष डावर, बहन दुर्गा और बहनोई शारू राम–तथा करीबी पारिवारिक मित्र विजय सोनी और चंद्र मोहन मेहता।

की नई जगह में इज्जत बनाना बड़ी चुनौतियां थीं। फिर भी, इन संघर्षों के बीच छोटी–छोटी खुशियां भी थीं, जिनका पूरा परिवार मिलकर आनंद लेता था।

'हमारा घर छोटा था और निजता हमारे लिए एक लग्जरी थी। लेकिन हंसी–मजाक, साथ खाना और रात की कहानियां हमें उस तरह जोड़ती थीं, जैसा कोई ऐशो–आराम नहीं कर सकता,' उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

शाहगंज की इन दुकानों के बीच ही व्यापारिक सफर की नींव पड़ी। वह अपने पिता को कपड़े के सप्लायरों से मोलभाव करते, चाचा को ग्राहकों से बात करते और दोनों को पैसों का हिसाब रखते देखते थे। ये अनुभव न सिर्फ उनके अंदर व्यापार की रुचि जगाते थे, बल्कि उन्हें सिखाते थे कि एक सफल उद्यमी होना क्या होता है। उन्होंने सीखा कि व्यापार केवल रोजी–रोटी का साधन नहीं, बल्कि नवाचार, प्रभाव और समाज पर सकारात्मक असर डालने का माध्यम है। ये तीन सबक उनके जीवन और उनके व्यापारिक सफर के अहम हिस्से बन गए।

नवाचारः उनका पहला सबक था। उन्होंने देखा कि उनके पिता ग्राहकों की मांग के हिसाब से सिलाई में बदलाव करते और नई शैली अपनाते। इसी समझ ने बाद में उन्हें जूता उद्योग में नए–नए प्रयोग करने की प्रेरणा दी।

प्रभावः दूसरा सबक था। जो उन्होंने महसूस किया था कि उनके पिता और चाचा सिर्फ व्यापार नहीं करते थे, वे रिश्ते बनाते थे। ग्राहकों और सप्लायर्स से उनका व्यवहार व्यक्तिगत और सम्मानपूर्ण होता था। यह देखकर उन्होंने सीखा कि व्यापार में विश्वास और सम्मान किस तरह आपके प्रभाव को बढ़ाते हैं।

असरः सबसे गहरा सबक था। व्यापार का मकसद केवल मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि परिवार, कर्मचारियों और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालना होता है। यह समझ बाद में उनके कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी CSR, पर्यावरणीय स्थिरता और नैतिक व्यापार व्यवहार में झलकी।

ये तीन सिद्धांत – नवाचार, प्रभाव और असर उनके व्यापार साम्राज्य की नींव बने। ये महज व्यापारिक रणनीतियां नहीं, बल्कि शाहगंज की छोटी सी दुकान में सीखे हुए जीवन के सबक थे।

उन्होंने कहा, 'संघर्ष हमारा साथी था, पर साथ में हमारा संकल्प भी था। मैंने सीखा कि हर चुनौती में एक अवसर छिपा होता है और असली सफलता तब होती है जब हर गिरावट के बाद हम उठ खड़े होते हैं।'

उनके बचपन के संघर्षों की ये कहानियां सिर्फ एक परिवार के जीवित रहने की गाथा नहीं, बल्कि एक भावी नेता की परवरिश का प्रतीक हैं। पूरन डावर की कहानी दिखाती है कि कैसे शुरुआती जीवन की मुश्किलें एक मजबूत नेतृत्वकर्ता को आकार देती हैं।

अध्याय 2

शिक्षा और प्रारंभिक करियर

विभाजन के बाद के भारत की चुनौतीपूर्ण लेकिन जीवंत दुनिया में, जहाँ अनगिनत परिवार आर्थिक अस्थिरता और सामाजिक उथल–पुथल से जूझ रहे थे, वहीं डावर परिवार में उम्मीद की किरण थी– पूरन की माँ, जिनका शिक्षा की शक्ति पर अटूट विश्वास था। यथा तथा आर्थिक परेशानियां उन्हें घेरने की जब भी कोशिश करतीं, उनकी माँ का दृढ संकल्प अडिगता से शिक्षा को ही परेशानियों से बाहर निकलने की चाबी बताता। 'हम कभी शिक्षा के लिए गरीब नहीं थे,' पूरन डावर अक्सर गर्व और कृतज्ञता से कहते हैं।

उनकी माँ ने अपने परिवार के रोजमर्रा के जीवन को बड़ी सावधानी से संजोया। चाहे उनकी जिंदगी कितनी भी कठिन क्यों न हो, बच्चों की शिक्षा हमेशा उनकी प्राथमिकता रही। परिवार के पास हर बच्चे के लिए बस एक ही यूनिफॉर्म थी, लेकिन हर सुबह पूरन और उनके भाई–बहन साफ–सुथरे, प्रेस किए हुए कपड़ों में स्कूल जाते। वह कहतीं, 'कपडे धोकर अगले दिन के लिए तैयार करो" और यह नियम बच्चों में न सिर्फ साफ–सफाई की आदत डालता, बल्कि उन्हें तैयारी और धैर्य का सबक भी देता।

अनुशासन और शिक्षा के प्रति सम्मान ही वह आधार था जिसने पूरन डावर के चरित्र को गढ़ा। शाहगंज के छोटे से घर में सपनों की चहलकदमी थी, जहाँ दिन का प्रारंभ पिता के व्यापारिक प्रयासों के किस्सों से होता और रात को मोमबत्ती की हल्की रोशनी में ज्यामिति और व्याकरण के पाठ पढ़ाए जाते।

बचपन में ही उन्होंने अपने माता–पिता के त्याग को बखूबी समझा। उन्होंने देखा कि कैसे उनके पिता कई कामों के बीच संतुलन साधते और उनकी माँ हर पैसे को स्कूल की फीस और किताबों के लिए बचाती। इस माहौल में हर दिन एक पाठ था, जहाँ आपने सीखा कि हर चुनौती एक बड़े मकसद की ओर कदम हो सकती है।

सिर्फ घर ही नहीं, बल्कि स्कूल जाते वक्त भी आप हर गली में उन बच्चों के चेहरों में परिवारों की उम्मीदों की झलक देखते थे। वे सपने देखने वाले बच्चे थे, जो डॉक्टर, इंजीनियर या शायद एक दिन पूरन डावर की तरह उद्यमी बनने की राह पर थे।

आपके लिए स्कूल सिर्फ पढ़ाई की जगह नहीं थी। यह एक ऐसा मंच था जहाँ उन्होंने सामाजिक संबंधों को समझा, नेतृत्व कौशल को निखारा और ज्ञान के प्रभाव को महसूस किया। आगरा के उस जीवंत शहर में, जहाँ हर गली इतिहास की कहानियाँ फुसफुसाती थी, उनके स्कूल के दिन किताबों और कक्षाओं से बाहर के सबक भी सिखाते थे।

आपकी माँ ने उनमें शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति के प्रति गहरी आस्था जगा दी थी। वह इसे न केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन मानती थीं, बल्कि पूरे समुदाय

विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें स्क्वाड्रन लीडर ए. के. सिंह, भारतीय वायु सेना की प्रथम महिला अधिकारी श्रीमती आशा भदोरिया, एवं प्रतिष्ठित समाजसेवी श्रीमती रेणुका डांग, श्रीमती मधु डावर तथा श्री पूरन डावर सम्मिलित थे।

को ऊपर उठाने का एक तरीका भी समझती थी। उनकी शिक्षा के प्रति यह निष्ठा, उनकी आध्यात्मिक भक्ति से मेल खाती थी, जिसने आपके पालन–पोषण पर गहरा प्रभाव डाला।

उनकी नेतृत्व क्षमता तब और स्पष्ट हुई जब उन्हें स्कूल का खेल कप्तान नियुक्त किया गया। यह भूमिका प्रतिष्ठा की बात थी, लेकिन इसके साथ जिम्मेदारियों का अंबार भी था– टीम की हौसला अफजाई करना, खेलों की रणनीति बनाना और उपकरणों का ध्यान रखना। आपने इन जिम्मेदारियों को पूरी ऊर्जा से निभाया, जिससे खेल के मैदान और कक्षा दोनों में अनुकरणीयता की मिसाल बने।

लेकिन असली चुनौती तब आई जब उन्हें खेल कप्तान के कर्तव्यों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना पड़ा। रोज शाम 4 बजे, जब उनकी खेल की प्रैक्टिस होती थी, उसी समय उनकी माँ 'व्यास जी की कथा' सुनने जाती थीं। उनके लिए यह धार्मिक प्रवचन उतने ही महत्वपूर्ण थे जितनी कि पढाई। वह चाहती थीं कि पूरन डावर भी इन प्रवचनों में शामिल हो।

आपने इस स्थिति में अपनी रणनीतिक सोच और प्रभावी नेतृत्व का परिचय दिया– ऐसी योग्यता जिसने आगे चलकर उनके व्यवसाय कौशल की नींव रखी।

उन्होंने विचार कर के खेल उपकरणों के प्रबंधन की जिम्मेदारी अपने उपकप्तान को सौंप दी। इससे उन्हें खेल कप्तान की भूमिका भी निभाने का मौका मिला और माँ की इच्छा का सम्मान भी हो गया।

यह संतुलन साधने का काम उनके लिए सिर्फ एक हल नहीं, बल्कि एक गहरा सबक था। इससे उन्होंने सीखा कि प्राथमिकता तय करना, अपनी टीम पर भरोसा करना और दबाव में लचीलेपन से काम लेना कितना महत्वपूर्ण है। ये सबक उनके भविष्य के व्यापारिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए जरूरी साबित हुए।

जैसे–जैसे आप बड़े हुए आपकी शिक्षा और बाहरी गतिविधियों के बीच का तालमेल मजबूत होता गया। खेलों में भागीदारी और आध्यात्मिक सत्रों में उपस्थिति ने उन्हें टीम वर्क, सामुदायिक भावना और नैतिक जीवन जीने की समझ दी। इन अनुभवों ने उनके भीतर एक समग्र दृष्टिकोण को जन्म दिया, जहाँ सफलता का अर्थ केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों से नहीं, बल्कि दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव डालने की क्षमता से था।

गोलगप्पे और उदारताः एक चाटवाले से मिले सबक

शाहगंज की चहल–पहल भरी गलियों में, जहाँ हर कोने से रोजमर्रा की जिंदगी की हलचल सुनाई देती थी, वहीं बालक पूरन डावर ने अपने शुरुआती उद्यमिता के और दया के सबक सीखे–ये सबक किसी कक्षा में नहीं, बल्कि उनके मोहल्ले के खुले आसमान के नीचे, एक स्थानीय गोलगप्पे वाले से मिले।

हर दोपहर, जब सूरज की तपिश थोड़ी कम होती, आगरा की गलियां स्ट्रीट फूड की खुशबू से भर जातीं, एक खास गोलगप्पे वाला अपनी ठेली लेकर उनके मोहल्ले में आता। यह गोलगप्पे वाला बच्चों के बीच 'चाचाजी' के नाम से मशहूर था। उसकी मुस्कान इतनी मोहक थी कि हर कोई उसकी चटपटी गोलगप्पे की पुकार पर खिंचा चला आता।

सात–आठ साल की उम्र में, आप सिर्फ चाचाजी के स्वादिष्ट गोलगप्पों से ही नहीं, बल्कि उनकी छोटी सी दुकान के पूरे संचालन से मंत्रमुग्ध हो जाते थे। वे देखते कि चाचाजी कैसे सावधानी से इमली का पानी तैयार करते और तेजी से, लगभग नृत्य करते हुए, कुरकुरे पूरियों में मसाला भरते। यही सब देखते हुए, पूरन ने सोचा कि वह भी इस खुशी भरे काम का छोटा सा हिस्सा बन सकते हैं।

आपने चाचाजी को घर से साफ पानी लाकर देने की पेशकश की। काम सीधा था, पर महत्त्वपूर्ण–चाचाजी को गोलगप्पों के लिए ताजा पानी चाहिए होता था ताकि गोलगप्पों का चटपटा मसाले वाला पानी तैयार किया जा सके और

बर्तनों की सफाई भी बनी रहे। बदले में, आपको दो गोलगप्पे मिलते, जो न सिर्फ उनके स्वाद को खुश करते, बल्कि उन्हें व्यापार और आपसी लाभ के पहले सबक सिखाते।

यह छोटा सा लेन–देन, एक लड़के और एक चाटवाले के बीच, असल में उनके लिए एक गहरा सीखने का अनुभव था। हर दिन, जब वह चाचाजी को पानी पहुँचाते, तो वे समझते कि सेवा का महत्व क्या होता है और कैसे एक साधारण सी चीज भी किसी व्यवसाय की सफलता में योगदान दे सकती है। उनके लिए वो गोलगप्पे सिर्फ एक मिठास नहीं, बल्कि एक निष्पक्ष आदान–प्रदान का प्रतीक बन गए।

जैसे–जैसे आप बड़े होते गए, चाचाजी के साथ उनकी बातचीत गहरी होती गई। चाचाजी, जिन्होंने जिंदगी के कई उतार–चढ़ाव देखे थे, अपने संघर्ष और सफलता की कहानियाँ सुनाते। इन कहानियों से आपने धैर्य, ग्राहक संतुष्टि और हर परिस्थिति में मुस्कान बनाए रखने का सबक सीखा।

उद्यमिता के इन शुरुआती सबकों में उदारता और खुशी से सेवा करना मुख्य था। चाचाजी अक्सर कहते, 'हर गोलगप्पा सिर्फ एक लेन–देन नहीं होता, बल्कि किसी के चेहरे पर मुस्कान लाने का मौका होता है।' यह विचार पूरन के दिल को छू गया और उन्हें सिखाया कि असली व्यापारिक सफलता तब होती है जब आप दूसरों के लिए खुशी पैदा करते हैं, सिर्फ पैसे कमाने से नहीं।

उन्होंने यह भी सीखा कि दया और सामुदायिक समर्थन का क्या महत्व होता है। उन्होंने देखा कि कैसे ग्राहक कभी–कभी चाचाजी की सेवा से खुश होकर ज्यादा पैसे देते और कैसे चाचाजी जरूरतमंदों को मुफ्त में गोलगप्पे भी खिलाते। इन छोटे–छोटे उदारता के कार्यों ने आपकी सामाजिक जिम्मेदारी की समझ को गहरा किया, जो आगे चलकर उनके व्यापार के मूल्यों में शामिल हो गई।

आप अक्सर अपने शुरुआती वर्षों को याद करते हुए कहते हैं कि यह सिर्फ गोलगप्पे खिलाना या पानी लाना नहीं था। यह उस सामुदायिक व्यापार की भावना को समझना था, जहां सफलता का मापदंड सिर्फ मुनाफा नहीं, बल्कि आपके ग्राहकों के चेहरे पर आने वाली खुशी होती है।

चाचाजी से सीखे सबक पूरन के व्यापारिक दृष्टिकोण की नींव बने। उन्होंने समझा कि सच्ची उद्यमिता में जितना लेना होता है, उतना ही देना भी शामिल होता है। यह आपसी लाभ, दयालुता और सामुदायिक सहभागिता की सोच ने आपके व्यापार साम्राज्य की दिशा तय की। यह साबित हुआ कि पानी का एक साधारण घड़ा लाने का काम भी सफलता के रास्ते में गहरे अनुभव दे सकता है।

इस प्रकार, पूरन डावर की यात्रा में गोलगप्पे सिर्फ बचपन की चाट नहीं, बल्कि

पूरन डावर अपने पुत्र संभव, पुत्रवधू श्रुति एवं पत्नी मधु के साथ पारिवारिक एकता और सौहार्द का आदर्श प्रस्तुत करते हुए।

भविष्य की उन ऊंचाइयों की पहली सीढी बने, जहाँ व्यापार और परोपकार हाथ में हाथ डालकर चलते हैं। चाचाजी की कहानी इस बात का सबूत है कि सबसे गहरे व्यापारिक सबक सबसे अप्रत्याशित जगहों और अनुभवों से मिलते हैं।

कैंपस से कॉमर्स तकः छात्र नेतृत्व की ताकत

पूरन डावर की शैक्षणिक यात्रा और छात्र राजनीति केवल डिग्रियों की खोज तक सीमित नहीं थी। यह उनके नेतृत्व की क्षमता और मानवीय समझ को निखारने वाली गहरी भागीदारी से भरी रही। उनके विविध अनुभवों ने एक मजबूत नींव तैयार की, जिस पर उन्होंने आगे चलकर एक विशाल और नैतिक मूल्यों पर आधारित व्यापारिक साम्राज्य खड़ा किया।

आपकी शैक्षिक कहानी आगरा कॉलेज की जीवंत कक्षाओं से शुरू हुई, जहाँ उन्होंने विज्ञान और गणित में अपनी गहरी रुचि दिखाई। 1967 में हाई स्कूल करते समय उनके पास सिर्फ एक प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि दुनिया को समझने की तीव्र इच्छा भी थी चाहे वह भौतिक रूप से हो या सामाजिक रूप से। उनकी जिज्ञासा उन्हें भौतिकी, रसायनशास्त्र और गणित में बीएससी करने के लिए प्रेरित

करती रही। इन विषयों ने उनकी विश्लेषणात्मक क्षमताओं को निखारा और जटिल समस्याओं के समाधान के लिए उन्हें तैयार किया।

लेकिन पूरन डावर सिर्फ विज्ञान पर ही सीमित नहीं रहे। बीएससी के बाद उन्होंने अर्थशास्त्र और कानून का भी अध्ययन किया। इन विषयों ने उन्हें बाजार की गतिशीलता और नियमों की जटिलताओं को समझने के नए दृष्टिकोण दिए, जिससे उनके व्यापारिक और सामाजिक–आर्थिक ताकतों के बीच के संबंधों की समझ और समृद्ध हुई।

विश्वविद्यालय में आप एक मेहनती छात्र ही नहीं, बल्कि कैंपस जीवन का एक सक्रिय हिस्सा भी थे। वे अध्ययन समूहों में शामिल होते, कॉलेज की बहसों में हिस्सा लेते, और सामुदायिक सेवा में स्वयंसेवा करते। उनकी भागीदारी पढ़ाई से आगे बढ़कर छात्र सक्रियता की ऊर्जावान धड़कन में बदल गई, जिसने उनके नेतृत्व शैली को बहुत प्रभावित किया।

इन्हीं वर्षों में पूरन डावर का सामना अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) से हुआ, जो शिक्षा और सांस्कृतिक विकास के प्रति समर्पित एक प्रमुख राष्ट्रीय छात्र संगठन था। ABVP से जुड़ना उनके लिए महज एक सह–पाठ्यक्रम गतिविधि नहीं थी, यह एक बदलने वाला अनुभव था जिसने उनके नेतृत्व और रणनीतिक सोच को विकसित किया।

ABVP में पूरन डावर ने जल्दी ही अपनी पहचान बनाई। उन्होंने सेमिनार आयोजित किए, शैक्षिक उत्कृष्टता और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देने वाली पहलों का नेतृत्व किया और छात्र अधिकारों व शैक्षणिक सुधारों के लिए अभियानों में भाग लिया। इन भूमिकाओं के माध्यम से उन्होंने न केवल एक कुशल नेता के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की, बल्कि योजनाओं को लागू करने और विभिन्न हितधारकों के साथ काम करने की बारीकियों को भी सीखा।

ABVP के साथ बिताए समय ने पूरन डावर को लोगों का आकलन करना और उनके उद्देश्यों को समझना सिखाया यह एक ऐसी योग्यता थी जो बाद में उनके व्यावसायिक सौदों में बेहद काम आई। 'छात्र राजनीति में, जैसे व्यापार में, आपको हर तरह के व्यक्तित्व मिलते हैं। इन संबंधों को समझना, सच्ची मंशा को महज बातों से अलग करना, मेरी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा था,' उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया।

विश्वविद्यालय के वर्षों में मिली चुनौतियों और सफलताओं ने आपको सिर्फ करियर के लिए तैयार नहीं किया बल्कि एक नेता के रूप में उनकी सोच को भी आकार दिया। वे अपने शैक्षिक और राजनीतिक अनुभवों से एक ऐसी दृढ सोच के साथ निकले, जिसमें नैतिक नेतृत्व और समाज में सकारात्मक योगदान की

प्रतिबद्धता थी। ये सिद्धांत उनके भविष्य के व्यवसायिक उपक्रमों की नींव बने, जहां उन्होंने अपने छात्र जीवन में विकसित नवाचार और ईमानदारी के प्रति वही जुनून लागू किया।

पीछे मुड़कर देखने पर, कठोर शैक्षिक प्रशिक्षण और ऊर्जावान राजनीतिक भागीदारी का मिश्रण आपको एक अनोखा कौशल सेट देने वाला साबित हुआ। इसने न केवल उन्हें व्यापार की जटिलताओं को समझने में सक्षम बनाया, बल्कि यह जिम्मेदारी का गहरा एहसास भी जगाया कि अपने कौशल और संसाधनों का उपयोग समाज की भलाई के लिए किया जाए।

जब पूरन डावर शैक्षणिक दुनिया से उद्यमिता की दुनिया में कदम रख रहे थे, तब वे अपने साथ उन वर्षों में सीखे गए अनुकूलन, विश्लेषण और परोपकार के सबक लेकर चल रहे थे। उनकी शिक्षा और छात्र राजनीति की यात्रा केवल व्यक्तिगत सफलता की ओर एक रास्ता नहीं थी, बल्कि एक ऐसा प्रशिक्षण था जो उन्हें दुनिया पर गहरा प्रभाव डालने के लिए तैयार कर रहा था।

परीक्षाओं से बदलाव तकः एक यात्रा उम्मीदों से हकीकत की ओर

पूरन डावर की यात्रा एक महत्वाकांक्षी छात्र से एक उभरते हुए उद्यमी तक, चुनौतियों, बदलावों और उस अहम मोड़ से भरी रही जिसने उनके करियर की दिशा तय की। उनके शुरुआती करियर प्रयास, जो उनके पिता के मूल्यों और उनके अपने प्रारंभिक अनुभवों से प्रेरित थे, ने उन्हें अंततः उद्यमिता की ओर मुड़ने की प्रेरणा दी।

1974 में, जब शरद ऋतु की सुनहरी धूप धीरे–धीरे ठंडी सर्दियों की छांव में बदल रही थी, पूरन डावर के जीवन का सबसे अंधकार का समय शुरू हुआ। उनके पिता, जो उनके जीवन में शक्ति और नैतिकता का प्रतीक थे, लीवर कैंसर से जूझते हुए दुनिया को अलविदा कह गए। यह घटना तब हुई जब पूरन डावर बस युवावस्था की दहलीज पर कदम रख रहे थे, सिर्फ 21 साल की उम्र में, एक संरक्षक, मार्गदर्शक और प्रेरणा से भरे पिता की मृत्यु ने उनके जीवन में एक शून्य पैदा कर दिया।

चौधरी लाल चंद डावर, उनके पिता, ने एक ऐसा जीवन जिया था जो संघर्ष और ईमानदारी से भरा था। विभाजन की उथल–पुथल से लेकर भारत में नई जिंदगी बसाने तक, उन्होंने हर चुनौती का सामना दृढ संकल्प और मेहनत से किया। उनके ये मूल्य उनके चरित्र की नींव थे, जिन्हें उन्होंने बचपन से ही पूरन डावर के अंदर डालने की कोशिश की।

पूरन को वे अनगिनत शामें याद हैं, जब वे पुराने मिट्टी के दीये की हल्की रोशनी

'पंजाबी नूर' से सम्मानितः पूरन डावर को पंजाबी एसोसिएशन द्वारा उनके योगदान और समृद्ध विरासत के लिए प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया गया।

में अपने पिता की कहानियाँ सुनते थे। वे कहानियाँ, संघर्ष और साहस की थीं, जो केवल समय बिताने के लिए नहीं, बल्कि पूरन के भीतर उद्देश्य और दृढ़ता का बीज बोने के लिए चुनी गई थीं। उनके पिता अक्सर कहते, 'याद रखना, बेटा, एक आदमी का असली मूल्य उसकी सफलताओं से नहीं, बल्कि उस तरह से होता है जैसे वह असफलताओं के बाद उठ खड़ा होता है।'

इस अपूरणीय क्षति ने पूरन डावर को दिशाहीन और संदेह से भर दिया। इतनी कम उम्र में वे अपने पिता की विरासत को कैसे आगे बढ़ा सकते थे? बिना पिता के मार्गदर्शन के वे कैसे उन ऊँचे आदर्शों को जी सकते थे? ये सवाल उनके दिल और दिमाग पर भारी पड़ते थे और पिता की कमी भरने की जिम्मेदारी एक दुर्गम कार्य की तरह लगती थी।

अगले कुछ हफ्तों और महीनों में, जब परिवार ने अपने दुख और आर्थिक प्रभावों से जूझना शुरू किया, तब पूरन डावर ने अपने पिता की शिक्षाओं पर और गहराई से सोचना शुरू किया। उन्हें एहसास हुआ कि उनके पिता ने उन्हें सिर्फ दुनिया का सामना करने के लिए नहीं, बल्कि उसे अपनी सोच के मुताबिक गढ़ने के लिए तैयार किया था। इसी सोच के बीच, पूरन का रास्ता धीरे–धीरे आकार लेने लगा।

अपने शुरुआती करियर विकल्पों की तलाश करते हुए, उन्होंने अपने बड़े भाई के साथ जीवन बीमा निगम में सहायक की नौकरी से लेकर बैंक पीओ परीक्षा तक की कोशिश की। हर प्रयास में आपने अपने पिता के आदर्शों को अपनाने की कोशिश

की। हर प्रयास, हर असफलता और हर छोटी सी सफलता उनके आत्म–अन्वेषण की यात्रा में एक नूतन कदम था और हर कदम पर, वे अपने पिता की उपस्थिति को महसूस करते, जो उन्हें राह दिखा रहे थे।

पूरन डावर के प्रारंभिक करियर प्रयास चुनौतियों से भरे थे। योग्यता और दृढता के बावजूद, सफलता उन्हें उस रूप में नहीं मिली जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। लेकिन हर असफलता के साथ, उनका संकल्प और मजबूत होता गया। उनके पिता की वह बात उन्हें हमेशा याद रहती, 'हर चुनौती अपने भीतर एक अवसर छुपाए होती है। उसे पहचानना हमारा काम है।'

1976 में, जब आगरा की गलियों में हमेशा की तरह हलचल थी, पूरन डावर के लिए यह समय उम्मीदों और चिंताओं का मिला–जुला दौर था। जीवन बीमा निगम में सुरक्षित नौकरी छोड़ने का फैसला सिर्फ महत्वाकांक्षा से नहीं, बल्कि अपने पिता की विरासत को सम्मानित करने की गहरी इच्छा से प्रेरित था।

पूरन डावर ने बैंकिंग क्षेत्र को अपने अगले कदम के रूप में चुना, जहाँ चुनौती और अवसर दोनों थे। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के प्रोबेशनरी ऑफिसर प्रोग्राम ने उन्हें आकर्षित किया। आवेदन प्रक्रिया कठिन थी, लेकिन सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा था दिल्ली जाकर इंटरव्यू देना। पहली बार, उन्होंने राजधानी की ओर ट्रेन यात्रा की। ट्रेन की खटर–पटर उन्हें अपने दिल की धड़कनों की तरह महसूस होती।

दिल्ली पहुँचकर, ठंड की शुरुआत वाली हवा में पूरन डावर और उनके दोस्त ने भीड़भाड़ वाले स्टेशन से पार्लियामेंट स्ट्रीट तक का रास्ता तय किया। बैंक की इमारत उन्हे गंभीरता की याद दिला रही थी। इंटरव्यू सवालों और जवाबों की धुंध थी। हर सवाल के पीछे आपने अपने पिता की सीख को महसूस किया और ईमानदारी व सूझबूझ से जवाब दिए।

लेकिन नतीजा उम्मीद के मुताबिक नहीं था। असफलता का यह दौर पूरन डावर के लिए बड़ा झटका था। यह सिर्फ व्यक्तिगत असफलता नहीं, बल्कि एक ऐसी निराशा थी जो उनके पिता की उम्मीदों को पूरा न कर पाने के दुःख के रूप में आई।

आगरा लौटते समय ट्रेन का सफर चिंतन का सफर बन गया। वह रास्ता जो पहले उम्मीदों से भरा था, अब एक अजनबी सा लग रहा था। पर इसी आत्म–मंथन के बीच, उनको एक नई शक्ति मिली।

कुछ समय बाद, एक नया मौका उनके जीवन में आया। उनके परिवारिक मित्र विजय सोनी, जो न्यू बैंक ऑफ इंडिया के प्रबंधक थे, ने पूरन डावर को बैंक के पीओ परीक्षा के लिए प्रेरित किया। आपने परीक्षा उत्तीर्ण की और लखनऊ में इंटरव्यू के लिए बुलावा आया। पर यह समय उत्तर प्रदेश में उथल–पुथल का था।

किताबों पर भारी टैक्स के विरोध में पूरन डावर भी छात्र प्रतिनिधि मंडल के साथ मुख्यमंत्री से मिलने गए। उस दिन, अपनी योग्यताओं के साथ, आपने इंटरव्यू हॉल में प्रवेश किया।

'कागज अखबार में लपेटे क्यों लाए?' पैनल ने पूछा। पूरन डावर ने शांत जवाब दिया, 'मैं पारदर्शिता और व्यावहारिकता में विश्वास करता हूँ। आज के अखबार में आज की सच्चाई छिपी होती है।'

इंटरव्यू के बाद भी परिणाम निराशाजनक रहा।

निराश होकर पूरन डावर आगरा वापस लौट आये, जहाँ विजय सोनी ने उन्हें उदास भाव से देखा। उन्होंने कहा, 'पूरन, तुम्हारे पास हुनर और जोश है, लेकिन यह दरवाजा बंद हो चुका है। शायद यह एक संकेत है। शायद तुम किसी और काम के लिए बने हो कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण काम के लिए। याद रखो, भले ही यह रास्ता बंद लगे, लेकिन भगवान ने तुम्हारे लिए कुछ और लिखा है।'

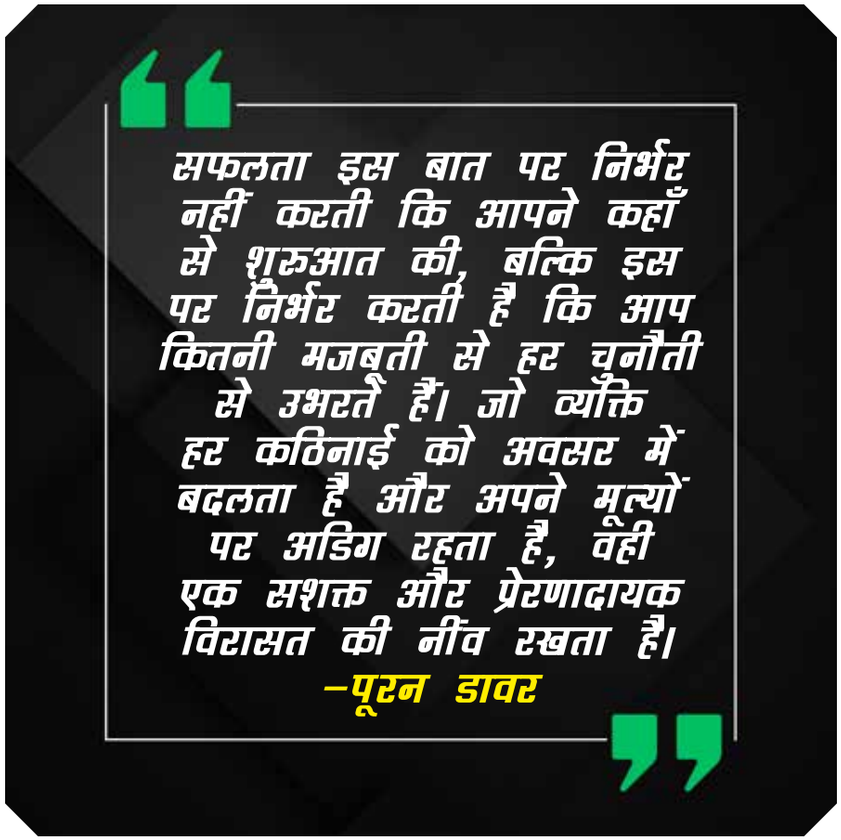

अध्याय 3

एक उद्यमी का उद्भव

1977 में जब आगरा के जीवंत शहर में पूरन डावर का नौकरी करने का सुनहरा सूरज डूब रहा था। उसी समय एक नया सूर्य धीरे–धीरे उगने का प्रयास भी कर रहा था। आगरा, जो न केवल ताजमहल के लिए बल्कि अपने असाधारण चमड़े के उत्पादों के लिए भी जाना जाता है, वहाँ युवा पूरन डावर अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े थे। 'भगवान ने तुम्हारे लिए कुछ और लिखा है।' ये, शब्द उनके दिमाग में गूंज रहे थे, जो एक अध्याय के अंत और दूसरे की शुरुआत को चिह्नित कर रहे थे। यह असफलता उनके पेशेवर प्रयासों में केवल एक विराम नहीं था, यह एक ऐसी यात्रा की सुबह थी जो उनके अस्तित्व के सार को फिर से परिभाषित करेगी।

पूरन डावर, एक युवा जिसकी महत्वाकांक्षाएँ कभी बैंकिंग परीक्षाओं और साक्षात्कारों के संरचित दायरे में उड़ती थीं, खुद को बार–बार अवसरों के उन दरवाजों से विफल पाता था जो उसके पहुँचने पर बंद हो जाते थे। प्रमुख बैंकों के लिए कठोर परीक्षाओं को पास करके अपनी योग्यता साबित करने के बावजूद, पारंपरिक रोजगार की दुनिया मायावी बनी हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे ब्रह्मांड ही उसे धीरे–धीरे घसीट कर सामान्य रास्ते से हटाकर, अप्रयुक्त संभावनाओं से भरपूर रास्ते की ओर ले जा रहा था।

कोयला व्यवसाय जिसने उनके परिवार को सहारा दिया था और जो उनके पिता की कड़ी मेहनत और लचीलेपन की विरासत का प्रतीक था, कम होता जा रहा था। नई पर्यावरण नीतियों और स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों की ओर बदलाव के कारण आए बदलाव ने एक युग के अपरिहार्य अंत की आहट दी। जैसे–जैसे कोयले की मांग कम होती गई, वैसे–वैसे वह स्थिरता भी कम होती गई जो इसने उनके परिवार को पीढ़ियों से प्रदान की थी। यह गहन अनिश्चितता के ऐसे क्षण थे जब पूरन डावर ने खुद को अस्तित्वगत दुविधा से जूझते हुए पाया, जो उनके पिता की बुद्धिमत्ता और मार्गदर्शन का मूल रहा था।

जीवन और व्यावसायिक नैतिकता पर उनके पिता के पाठों की सुकून देने वाली प्रतिध्वनि उनके भीतर गूंजती थी, जो इस उथल–पुथल के समय में एक सुखदायक लेकिन शक्तिशाली उपस्थिति थी। उनके पिता ने उन्हें हमेशा सिखाया था कि हर चुनौती एक छिपे हुए अवसर की तरह होती है। खुद को विकसित करने और फिर से परिभाषित करने का मौका देती है। अब, जब कोयला व्यवसाय उनके पारिवारिक इतिहास के पन्नों में लुप्त हो रहा था, तो पूरन डावर को अपने पिता की अपेक्षाओं का भार और यह खामोश उम्मीद महसूस हो रही थी कि वे सफलता के लिए एक नया रास्ता खोजें। इन विचारों के बीच उनको अक्सर एक करीबी दोस्त के आश्वस्त करने वाले शब्द याद आते थे, जो उसके सबसे बुरे दिनों में एक

प्रकाशस्तंभ थे। 'भले ही हमें चाचा का समर्थन प्राप्त था और भारतीय स्टेट बैंक के साथ–साथ न्यू बैंक ऑफ इंडिया की लिखित परीक्षाएँ भी पास कर ली थीं लेकिन निश्चित रूप से भगवान ने तुम्हारे लिए कुछ और लिखा है। कुछ बेहतर।' उसके दोस्त ने जोर देकर कहा था। यह सलाह, सांत्वना देने वाली और प्रोत्साहित करने वाली दोनों थी। यही बदलाव के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम आई. जिसने पूरन डावर के भीतर लंबे समय से दबी हुई उद्यमशीलता की भावना को जगा दिया। इन शब्दों से प्रोत्साहित होकर, आपने अपने पेशेवर अस्वीकृतियों की श्रृंखला को असफलताओं के रूप में नहीं, बल्कि एक अलग नियति की ओर मार्गदर्शन करने वाले संकेतों के रूप में देखना शुरू किया जिसके लिए उसे पारंपरिक रास्तों की छाया से बाहर निकलकर अभिनव संभावनाओं के प्रकाश में कदम रखना था।

अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने का विचार उसके दिमाग में जड़ जमाने लगा, जो कुछ स्थायी बनाने की इच्छा से प्रेरित था। कुछ ऐसा जो उसके पिता की विरासत को एक नए और जीवंत तरीके से सम्मानित करेगा। उन्होंने अपने विकल्पों पर विचार करते हुए आगरा शहर पर विचार किया न केवल अपने जन्मस्थान के रूप में बल्कि एक चहल–पहल भरे पर्यटन केंद्र के रूप में, जो दुनिया भर से लाखों लोगों को आकर्षित करता था। जो पर्यटक ताजमहल के आकर्षण से आकर्षित हुए उनको पूरन डावर ने एक अवसर रूप में देखा। यहीं, विस्मय–विमुग्ध आगंतुकों की भीड़ के बीच आपने बाजार में एक स्पष्ट अवसर की पहचान कीः पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने वाले सुलभ, उच्च–गुणवत्ता वाले जूते की दुकानों की कमी। अधिकांश मौजूदा जूता दुकानें मुख्य पर्यटक मार्गों से दूर, तंग, अव्यवस्थित गलियों में बसी हुई थीं और सुविधा और गुणवत्ता की तलाश करने वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यटक ही नहीं अपितु घरेलू पर्यटकों की प्राथमिकताओं के अनुकूल नहीं थीं। इस अहसास ने उनके मन में एक विजन जगाया एक ऐसा फुटवियर स्टोर बनाने का विजन जो ताजमहल की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर गुणवत्ता और सुलभता दोनों प्रदान करे। यह स्टोर न केवल पर्यटकों की व्यावहारिक जरूरतों को पूरा करेगा बल्कि आगरा के समृद्ध शिल्प कौशल को भी प्रदर्शित करेगा, जिससे बिकने वाले हर जोड़ी जूते स्थानीय कलात्मकता के राजदूत बन जाएँगे। इस सपने को साकार करने की यात्रा चुनौतियों से भरी हुई थी। सही जगह को सुरक्षित करने से लेकर व्यवसाय को शुरू करने की जटिलताओं को पार करने तक। फिर भी, हर बाधा को पार करने के साथ पूरन डावर को अपने उद्देश्य और दृढ़ संकल्प की भावना बढ़ती हुई महसूस हुई। वह अब सिर्फ बंद दरवाजों से बाधित व्यक्ति नहीं था, वह एक उद्यमी था जो सिर्फ उसके लिए भगवान द्वारा लिखी गई दिव्य योजना में विश्वास से प्रेरित होकर एक नया रास्ता बना रहा था।

जब पूरन डावर ने जूते के व्यापार की नींव रखी तो वह जल्द ही एक संपन्न उद्यम बन गई। वे अक्सर उन घटनाओं के अप्रत्याशित मोड़ पर विचार करते थे जिसने उसे यहाँ तक पहुँचाया। कृतज्ञता और दृढ़ संकल्प के मिश्रण के साथ उन्होंने अपनी नई भूमिका को अपनाया, आगे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होकर, उसके दिल में, वह अटूट विश्वास था कि वास्तव में, उसके लिए कुछ बेहतर लिखा गया था और वह अब उस सच्चाई को एक–एक कदम आगे बढ़ाते हुए जी रहा था।

कोयले से कॉमर्स तक का सफर

1970 के दशक के उत्तरार्ध में, जब दुनिया अधिक संधारणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर बढ़ने लगी तो डावर परिवार के एक समय के संपन्न कोयला व्यवसाय को अपरिहार्य गिरावट का सामना करना पड़ा। पूरन डावर ने देखा कि कोयले की माँग कम हो गई। यह प्रवृत्ति प्राकृतिक गैस के उदय और कड़े पर्यावरण नियमों से तेज हो गई। इसका प्रभाव विशेष रूप से आगरा में तीव्र था, एक ऐसा शहर जो न केवल अपने ऐतिहासिक महत्व के लिए बल्कि ताजमहल के कारण सुंदरता और ऐतिहासिक विरासत के प्रतीक के रूप में भी प्रतिष्ठित है।

सरकार की नई नीतियों के अंतर्गत, ताजमहल जैसे स्मारक स्थल के आसपास के पर्यावरण की रक्षा करना अनिवार्य था। इस कारण आगरा जैसे शहर में कोयले का उपयोग प्रतिबंधित था। ये नीतियाँ पर्यावरण और ताजमहल के प्राचीन संगमरमर दोनों पर कोयले के उत्सर्जन के हानिकारक प्रभावों के बारे में बढ़ती जागरूकता में निहित थीं, जिसने प्रदूषण के कारण संकट के संकेत दिखाने शुरू कर दिए थे। इस बदलाव ने, न केवल उद्योगों के बड़े हिस्से को प्रभावित किया, बल्कि डावर जैसे छोटे परिवार द्वारा संचालित व्यवसाय को भी प्रभावित किया, जिन्होंने पाया कि उनकी आय का प्राथमिक स्रोत तेजी से गायब हो रहा है।

जैसे–जैसे पारंपरिक ईंधन व्यवसाय कम होता गया, ताजमहल के आसपास की सड़कों पर कोयले की गाड़ियाँ कम दिखाई देने लगीं, जो कभी एक आम दृश्य हुआ करता था। कोयले के ढेर और कोयला मजदूरों के उदास चेहरों के बीच पले–बढ़े पूरन डावर अपने परिवार की विरासत के लुप्त होने की नब्ज महसूस कर सकते थे। यह गिरावट सिर्फ एक कारोबारी संकट नहीं थी बल्कि एक गहरी निजी क्षति थी। यह कोयला उनके दिवंगत पिता के गुरूर की यादों को ताजा कर देता था, जो कभी गर्व से दावा किया करते थे, कि उनके कोयले से सैकड़ों घर गर्म होते हैं और अनगिनत उद्योगों को ईंधन मिलता है। अपने परिवार के कोयला कारोबार के पतन का सामना करते हुए पूरन ने खुद को एक चौराहे पर पाया जहाँ एक नई दिशा

की जरूरत स्पष्ट थी, लेकिन रास्ता नहीं था। अनिश्चितता के इस दौर में पूरन डावर का एक प्रमुख छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के माध्यम से जुड़ाव अप्रत्याशित रूप से लाभकारी साबित हुआ। एबीवीपी के नेटवर्क में उनकी मुलाकात कई ऐसे साथियों से हुई, जिनके परिवार आगरा के प्रसिद्ध जूता उद्योग से जुड़े थे। जूता बाजार से उनका परिचय एक महत्वपूर्ण समय पर हुआ। वे प्रेरणादायक थे। पूरन डावर ने उनमें अपने प्रिय शहर की अर्थव्यवस्था में योगदान करते हुए अपनी पेशेवर पहचान को पुनः परिभाषित करने का मौका देखा। कोयले से जूतों की ओर रुख करने का फैसला हल्के में नहीं लिया गया था। पूरन डावर ने व्यापार, बाजार की माँगों और जूता बनाने की जटिल कला के बारे में जानने में अनगिनत घंटे बिताए। कानून और अर्थशास्त्र के अनुशासित वातावरण में प्रशिक्षित उनका विश्लेषणात्मक दिमाग अब जूता उद्योग की रचनात्मकता और उद्यमशीलता में डूब गया। उन्होंने महसूस किया कि कोयले के लिए बातचीत करने में उनकी पृष्ठभूमि सामग्री के स्रोत और कारीगरों और खुदरा विक्रेताओं से निपटने में शामिल जटिल बातचीत में एक परिसंपत्ति हो सकती है।

जूता उद्योग में प्रवेश करने का उनका निर्णय आगरा में बाजार की गतिशीलता के सावधानीपूर्वक विश्लेषण पर आधारित था। उन्होंने देखा कि आगरा एक ऐसा शहर है, जो हर साल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहाँ की मुख्य आर्थिक गतिविधियाँ पर्यटन के आसपास केंद्रित थीं। हालाँकि, पूरन डावर ने एक महत्वपूर्ण अंतर देखा, जबकि किनारी बाजार और फव्वारा जैसे आंतरिक बाजार स्थानीय खरीदारों से गुलजार थे, वे पर्यटकों के लिए आदर्श स्थान नहीं थे. खासकर अधिक संपन्न लोगों के लिए जो भीड़भाड़ वाले इलाकों में नहीं जाना पसंद करते थे। इस अवलोकन से एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई। ताजमहल की ओर जाने वाली मुख्य सड़क, जिसे ताज रोड या सदर बाजार के नाम से जाना जाता है। पर्यटकों से भरी रहती थी, लेकिन इस जनसांख्यिकी के लिए कोई जूते की दुकान नहीं थी। पूरन डावर ने न केवल जूते बेचने का अवसर देखा, बल्कि एक ऐसा अनुभव बनाने का अवसर देखा जो सुविधा, गुणवत्ता और प्रामाणिकता चाहने वाले अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की अपेक्षाओं के अनुरूप हो।

बाजार की अपनी सहज समझ और जूता उद्योग में अपने दोस्तों से प्राप्त नए ज्ञान का उपयोग करते हुए, पूरन डावर ने एक योजना तैयार की और ताज रोड पर एक जूते की दुकान खोलेंगे, जिसमें उच्च गुणवत्ता वाले जूते होंगे जो आगरा के शिल्प कौशल को प्रदर्शित करेंगे, पारंपरिक शैलियों को आधुनिक संवेदनशीलता के साथ जोड़कर घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पर्यटकों को आकर्षित करेंगे।

यह रणनीतिक निर्णय केवल जूते बेचने के बारे में नहीं था, यह नवाचार और

अनुकूलनशीलता के माध्यम से एक पारिवारिक विरासत को पुनर्जीवित करने के बारे में था। पूरन डावर ने अपने जूते की दुकान को आगरा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और वैश्विक बाजार के बीच एक सेतु के रूप में देखा। कोयला व्यवसाय में गिरावट से मिली सीखों पर आधारित यह दृष्टिकोण, जल्द ही डावर परिवार की उद्यमशीलता की यात्रा में एक नए अध्याय की शुरुआत करेगा। चुनौतियों को अवसरों में बदलेगा और आगरा में वाणिज्य के परिदृश्य को नए सिरे से परिभाषित करेगा।

नीलामी और अवसर

आगरा, जो असंख्य पर्यटकों के कदमों की निरंतर लय से स्पंदित शहर हैं, वहाँ 1973 में पूरन डावर की दुर्जेय उद्यमशीलता चुनौती की शुरुआत हुई। छावनी बोर्ड ताजमहल से बस थोड़ी ही दूरी पर था, वह ताज रोड पर प्रमुख व्यावसायिक संपत्तियों की नीलामी कर रहा था। ये विशाल 1200 वर्ग फुट की दुकानें न केवल एक व्यावसायिक अवसर का प्रतिनिधित्व करती थीं, बल्कि उनके मनमोहक स्थान के कारण किसी भी दूरदर्शी उद्यमी के लिए एक सुनहरा प्रवेश द्वार थीं। ताजमहल की ऊँची मीनारों को पृष्ठभूमि के रूप में देखते हुए, आकांक्षाओं से भरे पूरन डावर ने इस नीलामी को आकर्षक पर्यटन बाजार में अपने प्रवेश बिंदु के रूप में देखा। इतिहास और संस्कृति के अपने समृद्ध ताने–बाने के साथ आगरा ने दुनियाभर से लाखों लोगों को आकर्षित किया, जो एक चतुर व्यवसायी के लिए एक परिपक्व बाजार प्रस्तुत करता है। हालांकि, जैसे–जैसे नीलामी आगे बढ़ी, यह स्पष्ट हो गया कि इन प्रतिष्ठित स्थानों में से एक को सुरक्षित करने के लिए वित्तीय आवश्यकताएं उनके मौजूदा साधनों से कहीं अधिक थीं। नीलामी का माहौल बिजली की तरह था, स्थानीय और बाहरी दोनों निवेशकों की महत्वाकांक्षाओं और रणनीतियों से भरा हुआ था। प्रत्येक बोली जो लगातार ऊंची होती जा रही थी, इन प्रमुख स्थानों की मान्यता प्राप्त क्षमता का प्रमाण थी। इस संपन्न बाजार का लाभ उठाने के सपनों से प्रेरित पूरन डावर ने इस स्वर्णिम पट्टी पर अपने भविष्य के व्यवसाय को स्थापित करने की उम्मीद में अपनी कोशिश जारी रखी। जैसे–जैसे संख्या बढ़ती गई, वैसे–वैसे बोलीदाताओं के बीच तनाव भी बढ़ता गया। प्रत्येक नई बोली के साथ पूरन डावर का दिल तेजी से धड़क रहा था, उनकी उम्मीदें संख्याओं के साथ बढ़ रही थीं, लेकिन जब वे उनकी पहुँच से परे ऊँचाइयों पर पहुँच गई, तो वे धराशायी हो गए। अंतिम हथौड़े ने न केवल नीलामी के अंत को चिह्नित किया, बल्कि इस तरह के उच्च–दाँव वाले वातावरण में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक भारी पूँजी का स्पष्ट एहसास भी कराया। खाली हाथ लौटते हुए पूरन डावर को भावनाओं

पूरन डावर ने जी बिज़नेस द्वारा आयोजित 'डेयर टू ड्रीम' कार्यक्रम में एक प्रेरणादायक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने दर्शकों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए सशक्त और प्रेरित किया।

का मिश्रण महसूस हुआ– छूटे हुए अवसर पर निराशा, फिर भी हार के सामने घुटने ना टेकने का संकल्प। प्रमुख पर्यटक आकर्षणों के पास अचल संपत्ति की कठोर वास्तविकता एक क्रूर शिक्षक की तरह थी, जिसने किसी दिन इस प्रतिष्ठित परिदृश्य पर अपनी छाप छोड़ने के लिए एक ज्वलंत संकल्प को बढ़ावा दिया।

सूरज की कोमल किरणों के नीचे दिन की घटनाओं पर विचार करते हुए, दूर ताजमहल की छाया के साथ आपको विस्मय और संकल्प का अनोखा मिश्रण महसूस हुआ। यह ऐतिहासिक स्मारक, जो प्रेम और दृढ़ता का प्रतीक है, मानो उसकी चोटिल लेकिन अटूट आत्मा को प्रोत्साहित कर रहा था। नीलामी का अनुभव एक कठिन परीक्षा थी, जिसने उसके संकल्प की कसौटी ली और उसकी दृष्टि को और अधिक दृढ़ किया। प्रेम और सौंदर्य के इस प्रतीक के पास अपनी उपस्थिति स्थापित करने का सपना टला जरूर था, पर पराजित नहीं हुआ था।

इस प्रकरण ने, क्षणिक झटका देने के बावजूद, उनके दिल में आकांक्षा का एक दृढ़ बीज बो दिया। पर्यटन केंद्रों में स्थावर संपदा की प्रतिस्पर्धा का एक आंतरिक सबक था, जिसने उनको तैयारी और रणनीतिक योजना का मूल्य सिखाया। अपने मन की आँखों में, पूरन डावर ने उस दिन की कल्पना की जब वह ताज रोड पर भीड़ में बोली लगाने वाले के रूप में नहीं, बल्कि एक दुकान के गर्वित मालिक के

रूप में लौटेगा, जो दुनिया का, अपने दरवाजे पर स्वागत करेगा। नए जोश और स्पष्ट दृष्टि के साथ, वह एक ऐसी यात्रा पर निकलने के लिए तैयार था जिसके लिए धैर्य, रणनीति और बड़े सपने देखने की हिम्मत की आवश्यकता थी ऐसे गुण जो अंततः उद्यमी सफलता के लिए उसके मार्ग को परिभाषित करेंगे।

1977 तक आगरा में ताज रोड काफी हद तक बदल चुका था, जो पूरन डावर के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास को दर्शाता था। एक बार भयंकर रूप से प्रतिस्पर्धा वाली दुकानें अब पूरी तैयार हो चुकी थीं और नए मालिकों की प्रतीक्षा कर रही थीं। ताजमहल से प्रतिदिन आने वाले पर्यटकों की भीड़ का लाभ उठाने के लिए यह दुकाने पूर्णतः सजी हुई थीं। पूरन डावर भी विकसित हो चुके थे, पिछली नीलामी के बाद से पिछले चार साल उन्होंने न केवल आवश्यक पूंजी जमा करने में बिताए, बल्कि अपने व्यावसायिक कौशल और रणनीतिक योजना कौशल को भी निखारा। उनकी यात्रा में पेशेवर असफलताएँ और एक विश्वसनीय मित्र की मार्मिक सलाह थी कि शायद 'भगवान ने तुम्हारे लिए कुछ और लिखा है।' इन अनुभवों ने उनकी भावना को रोकने के बजाय उनके संकल्प को प्रेरित किया, जिससे वे एक अधिक अनुभवी उद्यमी बन पाए। अब, ताजा अंतर्दृष्टि और नवीनीकृत दृढ संकल्प के साथ, वह इस प्रमुख खुदरा स्थान में अपना पदचिह्न स्थापित करने के लिए तैयार था। प्रत्येक पिछली विफलता को व्यवसाय में अपने सच्चे आह्वान की ओर एक दिव्य इच्छा द्वारा निर्देशित एक कदम के रूप में देख रहा था। नए जोश के साथ स्थावर संपदा के क्षेत्र में लौटते हुए, पूरन डावर की नजरें अधिक प्राप्त करने योग्य लक्ष्य पर थीं– नव निर्मित परिसर के पीछे स्थित एक मामूली आकार की, 600 वर्ग फुट की दुकान। यह स्थान, हालांकि हलचल भरे मुख्य सड़क के किनारे की दुकानों की तुलना में कम प्रमुख था, परन्तु एक ऐसी कीमत पर उपलब्ध था जो आपकी वित्तीय क्षमताओं के अनुरूप था। 40,000 रुपये, पट्टे के वर्तमान धारक पी. के. गुप्ता थे, जो दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) से संबद्ध एक इंजीनियर और आगरा के पेशेवर हलकों में एक प्रसिद्ध व्यक्ति थे।

व्यावसायिक वार्ता में व्यक्तिगत संबंधों के महत्व को समझते हुए पूरन डावर सीधे गुप्ता जी से मिलने के लिए दिल्ली गए, ताकि उन्हें लीज हस्तांतरित करने के लिए राजी किया जा सके। आगमन पर उन्हें गुप्ता की सतर्क आशावादिता का समर्थन मिला, लेकिन आधिकारिक प्रक्रियाओं का पालन करने पर दृढ़ आग्रह भी मिला। 'कागजात तैयार करो और जब सब कुछ तैयार हो जाए तो मुझे बुलाओ, गुप्ता जी ने नौकरशाही परिश्रम की आवश्यकता पर जोर देते हुए निर्देश दिया। उद्यमी भावना और अधीरता के मिश्रण से प्रेरित पूरन डावर ने एक साहसिक प्रस्ताव के साथ जवाब दिया। 'नहीं, चाचा, आप कल आइए, हम तैयार हैं, उन्होंने आग्रह किया,

एक आत्मविश्वास प्रदर्शित करते हुए जो आंशिक रूप से बहादुरी और आंशिक रूप से प्रक्रिया को तेज करने के लिए एक जोखिम था। गुप्ता जी पूरन डावर की तत्परता और दृढ़ संकल्प से चकित थे, लेकिन युवा व्यक्ति की दृढ़ता और स्पष्ट दृष्टि से झिझक रहे थे। यह वार्ता केवल एक लेन–देन से अधिक थी, यह अनुनय और दृढ़ता का एक महत्वपूर्ण नृत्य था। पूरन डावर को पता था कि व्यापार में समय का बहुत महत्व है, खासकर स्थावर संपदा में, जहाँ अवसर जितनी जल्दी आते हैं उतनी ही जल्दी गायब भी हो सकते हैं। वे समझते थे कि तैयार रहना– सभी आवश्यक दस्तावेज और वित्तीय व्यवस्था को व्यवस्थित रखना– समीकरण का केवल एक हिस्सा है। दूसरा, अक्सर अधिक महत्वपूर्ण हिस्सा है सही समय पर सही स्थान पर होना और सही निर्णय ले पाना। इसके अलावा वे अपनी सीमाओं में बंधने नहीं अपितु उनसे आगे बढ़ने और कभी–कभी, नए रास्ते बनाने के लिए पारंपरिक व्यावसायिक जुड़ावों के नियमों को तोड़ना भी जानते थे। शर्तों पर चर्चा करते समय, पूरन डावर ने अपनी व्यावसायिक योजना बताई, जिसमें बताया कि कैसे रणनीतिक स्थान में, पीछे होने के बावजूद, मुख्य सड़क से दूर शांत, अधिक सुलभ खरीदारी के अनुभव की तलाश करने वाले पर्यटकों के लिए अधिक पैदल यातायात की संभावना प्रदान करता है। उन्होंने अपनी दृष्टि को इतनी स्पष्टता और उत्साह के साथ व्यक्त किया कि इसने धीरे–धीरे गुप्ता जी की शंकाओं को दूर करना शुरू कर दिया। बातचीत घंटों तक चली, जिसमें पूरन डावर ने गुप्ता जी की प्रत्येक चिंता को सावधानीपूर्वक संबोधित किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी औपचारिकताओं को सटीकता और ईमानदारी से संभाला जाएगा। उनकी तैयारी स्पष्ट थी क्योंकि उन्होंने समीक्षा और निष्पादन के लिए तैयार कानूनी और वित्तीय दस्तावेजों का एक व्यापक दस्तावेज प्रस्तुत किया। पूरन डावर के दृढ़ संकल्प और चतुर बातचीत कौशल ने अंततः सुखद फल दिया। पूरन डावर की पूरी तैयारी से प्रभावित होकर और उसके उद्यमशीलता के उत्साह से प्रेरित होकर, गुप्ता जी ने अगले दिन मिलने पर सहमति जताई, ताकि इस हस्तांतरण को अंतिम रूप दिया जा सके। यह समझौता उनके लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जिसने ऐतिहासिक ताज रोड पर जल्द ही एक संपन्न खुदरा उद्यम बनने वाली दुकान की स्थापना के लिए मंच तैयार किया।

जब पूरन डावर बैठक से बाहर निकले, तो उनमें प्रत्याशा के साथ–साथ उपलब्धि की भावना भरी थी। उन्हें पता था कि हालांकि यह सिर्फ शुरुआत थी, लेकिन भविष्य की नींव रखी गई, जहाँ उनके व्यापारिक सपने ताजमहल की कालातीत सुंदरता के साथ–साथ पनपेंगे।

आगरा लौटने पर पूरन डावर और उनकी टीम आगे के निर्णायक कदमों के

लिए तैयार थी। उन्होंने सावधानीपूर्वक आवश्यक दस्तावेजों को इकट्ठा किया और 40,000 रुपये का एक मसौदा हासिल किया, जो ताजमहल के पास एक हलचल भरे नए वाणिज्यिक परिसर के पीछे एक मामूली दुकान के लिए पट्टे को अंतिम रूप देने के लिए तैयार था। हालाँकि भाग्य ने कुछ और ही सोच रखा था, जो खुदरा दुनिया में पूरन डावर के प्रक्षेपवक्र को नाटकीय रूप से बदल देगा।

जैसे ही उन्होंने कैंटोनमेंट बोर्ड के समक्ष अपने कागजात प्रस्तुत किए, एक ऐसा प्रश्न उठा जिसने संयोगवश उनके मार्ग को बदल दियाः जब एक बेहतर अवसर फिर से सामने आया है तो कम वांछनीय, छिपी हुई जगह से क्यों संतुष्ट होना चाहिए? प्रीमियम, सामने की ओर वाली दुकान, जिस पर पूरन डावर ने चार साल पहले असफल बोली लगाई थी, फिर से बाजार में आ गई थी। मूल आवंटी केवल 15,000 रुपये की बयाना राशि का भुगतान करने में कामयाब रहा था और तब से शेष राशि का भुगतान नहीं कर पाया था, जिससे संपत्ति अधर में लटकी हुई थी।

पूरन डावर ने एक बेहतर स्थान का दावा करने के दुर्लभ अवसर को पहचानते हुए तुरंत इस प्रमुख स्थान को प्राप्त करने की संभावना के बारे में पूछताछ की। मामले को सुलझाने और जगह को भरने के लिए उत्सुक कैंटोनमेंट बोर्ड ने एक त्वरित बातचीत की सुविधा प्रदान की। उन्होंने चूक करने वाले आवंटी से संपर्क किया जो अपना दावा छोड़ने के लिए सहमत हो गया।

छावनी बोर्ड के साथ बातचीत पूरन डावर की खुदरा क्षेत्र में पैर जमाने की पहल में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। दृढ़ता और सूझबूझ का मिश्रण दिखाते हुए, उन्होंने प्रीमियम लोकेशन के लिए डाउन पेमेंट के रूप में मूल रूप से छोटी दुकान के लिए निर्धारित 40,000 रुपये के ड्राफ्ट का उपयोग करने का प्रस्ताव रखा। हालांकि, बकाया राशि का भुगतान करना एक चुनौती थी। बाधाओं को रचनात्मक समाधानों में बदलने में माहिर पूरन डावर ने अगले छह महीनों में तीन किश्तों में शेष राशि का भुगतान करने के लिए एक सौदा किया।

यह व्यवस्था केवल एक वित्तीय लेनदेन नहीं थी, बल्कि नौकरशाही बाधाओं को पार करने और अपने व्यवसायिक कौशल का अपने लाभ के लिए उपयोग करने की उनकी क्षमता का प्रमाण थी। बोर्ड के सदस्यों के साथ प्रत्येक चर्चा सम्मानजनक लेकिन दृढ़ व्यवहार के साथ की गई, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि सभी पक्ष पूरी प्रक्रिया में शामिल और सराहना महसूस करें। पूरन डावर की विस्तृत तैयारी और बोर्ड की आवश्यकताओं की समझ ने एक सहज समझौते को सुगम बनाने में मदद की, जिससे एक आशावादी उद्यमी से जटिल बातचीत को संभालने में सक्षम एक रणनीतिक विचारक के रूप में उनका विकास प्रदर्शित हुआ। जिस क्षण उन्होंने प्रीमियम शॉप, ए3 के लिए लीज हासिल की, वह उनके करियर का एक

महत्वपूर्ण मोड़ था और उनके बढ़ते उद्यम के लिए एक महत्वपूर्ण जीत थी। यह एक केंद्रित दृष्टिकोण के साथ वर्षों की दृढ़ता सीखने और अनुकूलन का परिणाम था। ताजमहल की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर रणनीतिक रूप से स्थित यह दुकान, क्षेत्र में अक्सर आने वाले पर्यटकों की भीड़ के लिए अद्वितीय दृश्यता और पहुँच प्रदान करती थी। इस अर्जन का जश्न न केवल एक व्यावसायिक उपलब्धि के रूप में मनाया गया, बल्कि एक व्यक्तिगत जीत के रूप में मनाया गया, जो उनके दिवंगत पिता द्वारा उनमें डाले गए लचीलेपन और दृढ संकल्प को दर्शाता है। यह कोयला खदानों की धूल भरी गलियों से खुदरा क्षेत्र में सफलता के चमकदार गलियारों तक की उनकी यात्रा का एक भौतिक प्रतिनिधित्व था। दुकान जल्द ही आगरा के प्रतिस्पर्धी जूता बाजार में गुणवत्ता और नवीनता का प्रतीक बन गई, जो पर्यटकों और स्थानीय लोगों दोनों को समान रूप से आकर्षित करती है। जिस दिन उन्हें दुकान की चाबी मिली, पूरन डावर बड़ी कांच की खिड़कियों के सामने खड़े थे और ताज रोड की ओर देख रहे थे, जो आगरा की पर्यटन अर्थव्यवस्था की हलचल भरी धमनी है। उन्होंने उपलब्धि और आशावाद की गहरी भावना के साथ भविष्य की कल्पना की। यह सिर्फ एक व्यावसायिक स्थान से कहीं ज्यादा था, यह उनके सपनों और आकांक्षाओं के लिए एक लॉन्चिंग पैड था। पूरन डावर के जीवन का यह अध्याय जो प्रीमियम दुकान के अधिग्रहण से चिह्नित है, सिर्फ एक समझदार व्यावसायिक पैंतरेबाजी से कहीं ज्यादा है। यह व्यक्तिगत विकास और भावनात्मक गहराई की कहानी है जो दर्शाती है कि कैसे स्पष्ट दृष्टि, रणनीतिक योजना और अटूट दृढ़ता का संयोजन चुनौतियों को मील के पत्थर में बदल सकता है। कोयले की धूल से लेकर प्रीमियम दुकान तक की पूरन डावर की कहानी न केवल व्यावसायिक कौशल की कहानी है, बल्कि यह इस बात का भी उदाहरण है कि किस प्रकार बुद्धि और धैर्य से निर्देशित स्थायी मानवीय भावना सफलता और नवाचार के असाधारण अध्याय लिख सकती है।

नींव रखना

1977 की तपती गर्मी में ऐतिहासिक शहर आगरा सिर्फ एक पर्यटन स्थल नहीं था, बल्कि एक उद्यमी के सपने के साकार होने की जगह थी। दूरदृष्टि और दृढता से प्रेरित व्यक्ति पूरन डावर एक अवसर को मूर्त वास्तविकता में बदलने की दहलीज पर थे। जैसे ही भारत का सूरज सड़कों पर अपनी लंबी छाया डाल रहा था, पूरन डावर गतिविधियों की झड़ी में डूबे हुए थे और प्रतिष्ठित ताज रोड पर एक प्रगति का प्रतीक बनने वाली जूता दुकान के जन्म की योजना बना रहे थे।

यह यात्रा जुलाई के मध्य में शुरू हुई जब पूरन डावर ने एक दुकान के लिए

बातचीत शुरू की, जिसने आगरा के व्यस्त पर्यटन मार्ग की व्यावसायिक सुर्खियों में उनकी आकांक्षाओं को उछालने का वादा किया। उनकी दृढ़ता ने तुरंत फल दिया, 14 अगस्त तक, उन्होंने खुद को छावनी बोर्ड कार्यालय की औपचारिक सीमाओं के भीतर पाया, उनकी उपस्थिति दृढ़ थी, उनके दस्तावेज तैयार थे। अधिकारियों ने उनके दृढ़ संकल्प और उनके प्रस्ताव की स्पष्टता को पहचानते हुए, उन्हें दो दिन बाद ही आवंटन पत्र सौंप दिया। इस पत्र के साथ ही एक ऐसी जगह की चाबियाँ भी आई जो जल्द ही सिर्फ सामान रखने से कहीं ज्यादा की जगह लेने वाली थी–यह सांस्कृतिक और व्यावसायिक आदान–प्रदान का केंद्र बनने वाली थी। इस खाली जगह को एक जीवंत खुदरा प्रतिष्ठान में बदलने के लिए पूरन डावर का दृष्टिकोण व्यवस्थित और एक संक्रामक उत्साह से भरा हुआ था। संभावनाओं से भरी यह दुकान, विलासिता को उजागर करने के लिए सावधानीपूर्वक बनाई गई थी और विविध ग्राहकों को आकर्षित करती रही। पूरन डावर ने एक वास्तुकार की सटीकता और एक डिजाइनर की प्रतिभा के साथ नवीनीकरण के विवरण में गोता लगाया। इंटीरियर के हर इंच पर विचार किया गया था जिसमें खूबसूरत डिस्प्ले विंडो जो राहगीरों का ध्यान आकर्षित करती थीं से लेकर लाइटिंग की रणनीतिक व्यवस्था तक शामिल थी, जो प्रत्येक जूते की शिल्पकला को उजागर करती थी। इन्वेंट्री सोर्सिंग एक और क्षेत्र था जहाँ उनकी चतुराई चमक उठी। उन्होंने गुणवत्ता और स्थायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाने जाने वाले निर्माताओं से संपर्क किया और ऐसी साझेदारी बनाई जो आपसी सम्मान और उत्कृष्टता के साझा लोकाचार पर आधारित थी। प्रत्येक जूता जो बाद में उनके स्टोर की अलमारियों की शोभा बढ़ाएगा, उसे हाथ से चुना गया था यह सुनिश्चित करते हुए कि यह न केवल उनके ग्राहकों के लिए बल्कि उनके लिए भी उनके द्वारा निर्धारित उच्च मानकों को पूरा करता है। ब्रांडिंग को संयोग पर नहीं छोड़ा गया। पूरन डावर एक ऐसा नाम चाहते थे जो उनकी दृष्टि की भव्यता और ताजमहल के पास उनके स्थान की विरासत के साथ प्रतिध्वनित हो। वह एक ऐसी ब्रांड पहचान चाहते थे जो आकर्षक हो, एक ऐसा नाम जिसे पर्यटक और स्थानीय लोग अपनी यात्रा के बाद भी लंबे समय तक याद रखें। नाम और पहचान चिह्न को विलासिता और सुलभता दोनों को दर्शाने के लिए तैयार किया गया था, जो उनके ग्राहकों के परिष्कृत स्वाद और उनकी ग्राहक सेवा की स्वागत भावना को दर्शाता था।

पर्दे के पीछे, लॉजिस्टिक ग्राउंडवर्क भी उतना ही गहन था। पूरन डावर ने ऐसी आपूर्ति श्रृंखलाएँ स्थापित कीं जो उतनी ही विश्वसनीय थीं जितनी कि वे कुशल थे, जिससे निर्माताओं से लेकर स्टोर की अलमारियों तक निर्बाध प्रवाह सुनिश्चित होता था। कर्मचारियों को न केवल बिक्री तकनीकों पर बल्कि एक ऐसी सेवा संस्कृति

को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करके प्रशिक्षण दिया गया जिसमें ग्राहक संतुष्टि को सबसे अधिक प्राथमिकता दी गई। पूरन डावर ने व्यक्तिगत रूप से अपनी टीम को प्रशिक्षित किया उनमें सहानुभूति, चौकसी और ईमानदारी के मूल्यों को डाला।

जैसे–जैसे भव्य उद्घाटन का दिन करीब आता गया, पूरन डावर की दुकान एक अवधारणा से पूरी तरह कार्यात्मक बुटीक में बदल गई जो ताज रोड पर आने वाले पर्यटकों और स्थानीय लोगों की भीड़ की सेवा के लिए तैयार थी। तैयारी का हर कदम एक सपने को साकार करने की ओर एक कदम था, जो न केवल उनके जीवन को बदलने के लिए बल्कि आगरा के वाणिज्य और संस्कृति के समृद्ध ताने–बाने में एक नया अध्याय जोड़ने के लिए निर्धारित था। ताज रोड पर अपने नए जूते की दुकान के उद्घाटन के लिए तैयार होने के दौरान पूरन डावर का लोगों से जुड़ने का स्वाभाविक लगाव एक महत्वपूर्ण संपत्ति बन गया। नेटवर्किंग के लिए उनका दृष्टिकोण न केवल एक कौशल बल्कि जुनून था, जो उन्हें आगरा समुदाय के विभिन्न क्षेत्रों में संबंधों का एक जाल बुनने में सक्षम बनाता था। इस नेटवर्क में स्थानीय गणमान्य व्यक्ति, साथी उद्यमी और यहाँ तक कि अधिकारी भी शामिल थे, जो सभी उनके नवोदित व्यवसाय की प्रचार रणनीति का अभिन्न अंग बन गए। अपने बजट की सीमाओं को समझते हुए, वे राष्ट्रीय प्रकाशनों में आमतौर पर देखे जाने वाले महंगे विज्ञापन अभियानों पर पैसा खर्च नहीं कर सकते थे। इसके बजाय, उन्होंने मार्केटिंग के लिए एक अधिक रचनात्मक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण अपनाया। वे रणनीतिक प्लेसमेंट करते, जिनमें समुदाय के सम्मानित व्यक्तियों के हार्दिक समर्थन के साथ आकर्षक प्रचार सामग्री का संयोजन किया जाता था।

ऐसी ही एक शख्सियत एक जाने–माने स्थानीय ब्रिगेडियर थे, जिनका समर्थन पूरन डावर ने सम्मान और वास्तविक तालमेल के संयोजन के जरिए हासिल किया। उनकी लगन और दूरदर्शिता से प्रभावित होकर ब्रिगेडियर ने उनका समर्थन करने में संकोच नहीं किया। इन विज्ञापनों में उनके समर्थन को प्रमुखता से दिखाया गया, जो नई दुकान की विश्वसनीयता और उच्च मानकों का एक शक्तिशाली प्रमाण प्रदान करता है। ब्रिगेडियर के बधाई और समर्थन के शब्द सिर्फ औपचारिकता नहीं थे, बल्कि पूरन डावर के उद्यम में मजबूत विश्वास का संकेत थे, जो समुदाय को संकेत देते थे कि यह नया व्यवसाय उनके ध्यान और संरक्षण के योग्य है।

इन विज्ञापनों को स्टोर में उपलब्ध होने वाले जूतों के जीवंत दृश्यों के साथ रणनीतिक रूप से रखा गया था, प्रत्येक जोड़ी को गुणवत्ता और शैली को दर्शाने के लिए सावधानीपूर्वक चुना गया था। विज्ञापनों ने दुकान के अनूठे स्थान को भी उजागर किया, ताजमहल से इसकी निकटता और पर्यटकों और स्थानीय लोगों

'मीट एट आगरा' कार्यक्रम का शुभारंभ श्री पूरन डावर के गरिमामय उद्घाटन भाषण से हुआ, जिन्होंने अपने गर्मजोशी भरे और प्रेरणादायक अध्यक्षीय स्वागत से समूचे वातावरण को सारगर्भित और उत्साहपूर्ण बना दिया।

दोनों के लिए इसकी पहुँच पर जोर दिया। इसने न केवल दुकान की दृश्यता बढ़ाई, बल्कि इसे एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान के रूप में भी स्थापित किया, जिसने आधिकारिक तौर पर इसके दरवाजे खुलने से पहले ही गुणवत्ता और सेवा के लिए उच्च उम्मीदें स्थापित कर दीं। इन सावधानीपूर्वक तैयार किए गए विज्ञापनों का प्रभाव तत्काल और गहरा था। दुकान के खुलने की प्रत्याशा समुदाय के भीतर बनने लगी, जिसकी चर्चा तेजी से फैल गई। नए जूते की दुकान के बारे में बातचीत बाजारों, चाय की दुकानों और यहाँ तक कि सामाजिक समारोहों में भी होने लगी, जिसमें अक्सर ब्रिगेडियर और अन्य उल्लेखनीय हस्तियों के समर्थन का उल्लेख होता था।

पूरन डावर की अपने रिश्तों का प्रभावी ढंग से लाभ उठाने की क्षमता ने एक सामान्य स्टोर के उद्घाटन को एक बहुप्रतीक्षित स्थानीय कार्यक्रम में बदल दिया। इस रणनीति ने न केवल पारंपरिक विज्ञापन की वित्तीय चुनौतियों को दरकिनार किया, बल्कि समुदाय की भागीदारी और गर्व की भावना को भी बढ़ावा दिया। यह इस बात का प्रमाण था कि कैसे पारंपरिक व्यावसायिक कौशल आधुनिक विपणन कौशल के साथ मिलकर एक आकर्षक कहानी बना सकता है जो विविध दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित होती है, जिससे ताज रोड पर एक प्रमुख व्यवसाय बनने के लिए

तैयार एक व्यवसाय के सफल लॉन्च के लिए मंच तैयार होता है।

भव्य उद्घाटन और शुरुआती सफलता

25 सितंबर, 1977 को ताज रोड के आस–पास की सड़कें प्रत्याशा की स्पष्ट भावना से भरी हुई थीं। हल्की शरद ऋतु की हवा में बैनर लहरा रहे थे और नई जूते की दुकान के प्रवेश द्वार पर जीवंत सजावट सजी हुई थी, जो आगरा के खुदरा परिदृश्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन के लिए मंच तैयार कर रही थी। लालित्य और शैली की एक दृष्टि, यह दुकान पूरन डावर के सपने और दृढ़ संकल्प की परिणति थी। पॉलिश की गई लकड़ी के फर्श से लेकर शानदार ढंग से व्यवस्थित प्रकाश व्यवस्था तक, इसके डिजाइन का हर विवरण परिष्कार और ग्राहक अनुभव पर गहन ध्यान देने की बात करता था।

जैसे–जैसे सूर्य उगता गया, एक विविध भीड़ इकट्ठा होने लगी। स्थानीय लोग पर्यटकों के साथ घुल–मिल गए, प्रत्येक उस हलचल से आकर्षित हुए जो समुदाय में हफ्तों से बन रही थी। उल्लेखनीय हस्तियों के समर्थन और रणनीतिक विज्ञापनों से यह बात फैल गई थी जिसने जनता की कल्पना को जकड़ लिया था। आस–पास के दुकानदारों से लेकर ताजमहल देखने आए परिवारों तक हर वर्ग के लोग पूरन डावर के नए उद्यम को देखने के लिए एकत्र हुए।

रिबन काटने की रस्म के लिए नियत समय के करीब आते ही माहौल उत्साह से भर गया। पूरन डावर, शानदार कपड़े पहने हुए अपने परिवार, दोस्तों और प्रमुख हस्तियों से घिरे हुए सबसे आगे खड़े थे, जिन्होंने उनकी यात्रा के दौरान उनका साथ दिया था। जब उन्होंने औपचारिक कैंची पकड़ी तो उनके चेहरे पर गर्व और विनम्र कृतज्ञता का मिश्रण था। एक संक्षिप्त भाषण के साथ उन्होंने समुदाय को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया और स्टोर के लिए अपने दृष्टिकोण को रेखांकित किया। तत्पश्चात पूरन डावर ने रिबन काटा तथा भीड़ को अंदर आने के लिए आमंत्रित किया।

दुकान का अंदरूनी भाग सावधानीपूर्वक व्यवस्थित था, जिसमें अलमारियों में व्यावहारिक से लेकर लक्जरी तक के जूते रखे हुए थे, जो उनके ग्राहकों की विभिन्न पसंद के अनुसार थे। चयन में हस्तनिर्मित चमड़े के जूते से लेकर अलंकृत सैंडल तक सब कुछ शामिल था, प्रत्येक जोड़ी गुणवत्ता एवं शिल्प कौशल का प्रमाण थी। अंदर की सजावट आकर्षक और अभिनव दोनों थी, जिसमें ग्राहकों को खरीदारी के अनुभव का आनंद लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए आरामदायक बैठने की जगह की व्यवस्था की गई थी। जैसे ही दरवाजे खुले ग्राहक अंदर घुस आए और अच्छी तरह से प्रशिक्षित कर्मचारियों की गर्मजोशी भरी मुस्कान ने उनका

स्वागत किया। पहले दिन की बिक्री लगभग तुरंत शुरू हो गई, जिसमें कई लोगों ने न केवल उत्पादों की गुणवत्ता के लिए बल्कि ग्राहक सेवा के स्तर के लिए भी अपनी प्रशंसा व्यक्त की, जिसने पूरन डावर की दुकान को क्षेत्र में दूसरों से अलग बनाया। दिन भर दुकान में चहल–पहल रही, जीवंत बातचीत की आवाज और कैश रजिस्टर की घंटी हवा में गूँजती रही। ग्राहकों की प्रतिक्रिया अत्यधिक सकारात्मक थी, कई लोगों ने जूतों की विविधता और विशिष्टता की सराहना की। पर्यटकों ने ताजमहल के इतने करीब उच्च गुणवत्ता वाले जूते मिलने की सुविधा की सराहना की, जबकि स्थानीय लोग अपने पड़ोस में ही स्टाइलिश और टिकाऊ जूतों की एक श्रृंखला तक पहुँच पाकर प्रसन्न थे।

भव्य उद्घाटन सिर्फ एक सफल व्यवसाय लॉन्च नहीं था, यह समुदाय का उत्सव और उद्यमशीलता की भावना का प्रदर्शन था। इसने एक ऐसे व्यवसाय की शुरुआत की जो आगे चलकर एक लोकप्रिय स्थानीय व्यवसाय बन गया, जो गुणवत्ता और ग्राहक संतुष्टि के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है। आपके लिए, यह एक सपना था जो साकार हुआ, दृढता की शक्ति का एक प्रमाण और आगरा के खुदरा परिदृश्य को नया आकार देने वाले व्यवसायी के रूप में उनकी यात्रा में एक नए अध्याय की शुरुआत थी।

पूरन डावर की जूते की दुकान के शुरुआती दिन गतिविधि और सीखने का एक बवंडर थे। भव्य उद्घाटन के शुरुआती उत्साह के साथ आपको जल्दी ही एहसास हो गया कि उनके व्यावसायिक कौशल की असली परीक्षा अभी शुरू ही हुई थी। हर दिन नई चुनौतियाँ और अवसर लेकर आया, जिनमें से प्रत्येक ने उन्हें सफल खुदरा संचालन चलाने के बारे में अमूल्य सबक सिखाए।

पहली और सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक इन्वेंट्री प्रबंधन था। उनको मांग और आपूर्ति के बीच नाजुक संतुलन को जल्दी से सीखना था। उन्होंने बिक्री के आंकड़ों की सावधानीपूर्वक निगरानी की, ध्यान दिया कि कौन सी शैलियाँ और आकार तेजी से बिक रहे थे और कौन से नहीं, ओवरस्टॉकिंग और अंडरस्टॉकिंग से बचने के लिए अपने ऑर्डर को तदनुसार समायोजित किया। यह निरंतर ट्यूनिंग न केवल नकदी प्रवाह को बनाए रखने के लिए बल्कि सही समय पर सही उत्पाद उपलब्ध कराकर ग्राहकों की संतुष्टि सुनिश्चित करने के लिए भी महत्वपूर्ण थी।

ग्राहक सेवा एक और क्षेत्र था जहाँ पूरन डावर के नेतृत्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी टीम में यह दर्शन स्थापित किया कि प्रत्येक ग्राहक संपर्क केवल एक लेन–देन नहीं बल्कि संबंध बनाने का अवसर है। इस दृष्टिकोण के लिए कर्मचारियों को न केवल उत्पाद रेंज के बारे में जानकारी होनी चाहिए बल्कि ग्राहकों की जरूरतों और प्राथमिकताओं की बारीकियों पर भी ध्यान देना चाहिए।

प्रशिक्षण सत्र अक्सर होते थे, जिसमें वार्ता कौशल, उत्पाद ज्ञान और विभिन्न प्रकार के ग्राहक इंटरैक्शन को चतुराई और सहानुभूति के साथ संभालने पर ध्यान केंद्रित किया जाता था।

हालाँकि यह केवल परिचालन पहलू नहीं थे जिन्होंने उनके संकल्प का परीक्षण किया। भव्य उद्घाटन से ठीक पहले एक विशेष रूप से यादगार चुनौती आई। दुकान के लिए फर्नीचर और फिटिंग को संभालने के लिए नियुक्त ठेकेदार समय पर डिलीवरी करने में विफल रहा एक दुर्घटना जिसने बहुप्रतीक्षित लॉन्च में देरी की धमकी दी। दुकान का सौंदर्य और कार्यात्मक डिजाइन एक अच्छी पहली छाप बनाने के लिए महत्वपूर्ण था और उद्घाटन में किसी भी देरी से न केवल दुकान की प्रतिष्ठा खराब होगी बल्कि महत्वपूर्ण वित्तीय नुकसान भी होगा। इस मुश्किल परिस्थिति से विचलित हुए बिना आपने समाधान खोजने के लिए अपनी टीम को एकजुट किया। उल्लेखनीय लचीलापन दिखाते हुए, उन्होंने चौबीसों घंटे काम किया, नए आपूर्तिकर्ताओं के साथ समन्वय किया और यहाँ तक कि कुछ काम खुद भी किया। इस तनावपूर्ण समय के दौरान अपनी टीम को प्रेरित रखने की उनकी क्षमता उनके नेतृत्व और अपने उद्यम के प्रति प्रतिबद्धता के बारे में बहुत कुछ बताती है। सामूहिक प्रयास तब रंग लाया जब वे अपनी शुरुआती समय सीमा को पूरा करने में सफल रहे। यह अनुभव टीम के समर्पण और प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने की क्षमता का प्रमाण था। इसने बैकअप योजनाओं और व्यावसायिक संचालन में लचीलापन बनाए रखने के महत्व को भी पुष्ट किया, जो सबक पूरन डावर ने आजीवन याद रखा। ये शुरुआती दिन जो परीक्षणों और जीत दोनों से भरे थे, न केवल दुकान की प्रतिष्ठा स्थापित करने में बल्कि उनके व्यवसाय के दृष्टिकोण को आकार देने में भी आधारभूत थे। उन्होंने अनुकूलनशीलता, सक्रिय समस्या समाधान और व्यवसाय के सभी पहलुओं में व्यक्तिगत भागीदारी के महत्व को रेखांकित किया। इस अवधि के दौरान प्रत्येक चुनौती और हर छोटी जीत ने उनके अपने उद्यमी सपने की क्षमता में विश्वास को मजबूत किया, जिसने भविष्य के विकास और सफलता के लिए मंच तैयार किया। इन सबके बीच, उनका व्यावहारिक नेतृत्व और अपने दृष्टिकोण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ही वह प्रेरक शक्ति थी जिसने दुकान को एक आशाजनक स्टार्टअप से खुदरा उद्योग में एक सम्मानित नाम बना दिया।

ब्रांड का निर्माण

पूरन डावर न केवल आगरा के रंगीन दिल में एक जूता स्टोर बना रहे थे, जो प्रसिद्ध ताजमहल से कुछ ही दूरी पर था, बल्कि एक आधारशिला भी बना रहे

थे जो जल्द ही एक प्रसिद्ध खुदरा क्रांति बन जाने वाली थी। डावर शू शॉप की शुरुआत सिर्फ बाजार की कमी को पूरा करने के बारे में नहीं थी, यह एक ऐसे ब्रांड की स्थापना के बारे में थी जो गुणवत्ता, ग्राहक संतुष्टि और समुदाय के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक बना। अलमारियों पर रखा प्रत्येक जूता सिर्फ एक उत्पाद नहीं था, यह शिल्प कौशल, जुनून और देखभाल का एक प्रमाण था जो इसके निर्माण में गया था।

शुरू से ही, पूरन इस बात पर अड़े थे कि डावर नाम से बेचे जाने वाले हर जोड़ी जूते गुणवत्ता के उच्चतम मानकों को पूरा करें। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से आपूर्तिकर्ताओं से मुलाकात की, केवल उन्हीं को चुना जो टिकाऊपन और स्टाइल सुनिश्चित करने वाली सामग्री प्रदान कर सकते थे। विवरण पर इस सावधानीपूर्वक ध्यान ने सुनिश्चित किया कि प्रत्येक उत्पाद न केवल अच्छा दिखे बल्कि लंबे समय तक चलने वाला हो, एक सिद्धांत जो जल्द ही डावर ब्रांड की पहचान बन गया।

ग्राहक संतुष्टि के लिए पूरन डावर की प्रतिबद्धता भौतिक उत्पादों से परे थी। उन्होंने अपने कर्मचारियों को खरीदारी का ऐसा अनुभव प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित किया जो स्वागत करने वाला और जानकारीपूर्ण दोनों हो, जिससे यह सुनिश्चित हो कि हर ग्राहक दुकान में कदम रखते ही मूल्यवान महसूस करे। पूरन डावर खुद अक्सर ग्राहकों से बातचीत करते, उनकी जरूरतों को सुनते और सीधे फीडबैक प्राप्त करते। इस व्यावहारिक दृष्टिकोण ने उन्हें सेवा और उत्पाद पेशकशों में तत्काल समायोजन करने की अनुमति दी, जिससे दुकान की इन्वेंट्री ग्राहक की प्राथमिकताओं से बेहतर ढंग से मेल खाती हो।

पूरन डावर के नेतृत्व में दुकान सिर्फ एक खुदरा स्थान से बढ़कर एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र बन गई। ताजमहल से इसकी निकटता ने इसे आगरा आने वाले मशहूर हस्तियों और गणमान्य व्यक्तियों के लिए एक नियमित पड़ाव बना दिया, जिससे समुदाय और पर्यटकों के बीच इसकी स्थिति और भी बढ़ गई। पूरन डावर ने इन हाई–प्रोफाइल यात्राओं का लाभ उठाते हुए ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जो न केवल इन अवसरों का जश्न मनाते थे बल्कि भीड़ को भी आकर्षित करते, चर्चा पैदा करते और समुदाय की भावना को बढ़ावा देते थे।

दुकान ने अपनी सालगिरह धूमधाम से मनाई, हैंडबिल बांटे जो न केवल कार्यक्रम का विज्ञापन करते थे बल्कि एक ओर प्रिंस चार्ल्स, संजीव रेड्डी, जैसे गणमान्य आगंतुकों को और दूसरी और पूनम ढिल्लों और सचिन तेंदुलकर जैसी बॉलीवुड हस्तियों को भी धन्यवाद देते थे, जो यहाँ आए थे। इन हैंडबिल को स्थानीय समाचार पत्रों में चतुराई से रखा गया था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि संदेश महंगे मीडिया की आवश्यकता के बिना व्यापक दर्शकों तक पहुँचे। इस रणनीति ने

न केवल विज्ञापन लागत को कम रखा बल्कि समुदाय को प्रसिद्ध हस्तियों के साथ दुकान के संबंध के बारे में भी उत्साहित किया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए बड़े विज्ञापन बजट की कमी के बावजूद पूरन डावर ने दृश्यता बनाए रखने के लिए अभिनव तरीके खोजे। अमर उजाला जैसे स्थानीय समाचार पत्र उनके प्राथमिक विज्ञापन प्लेटफॉर्म बन गए, जहाँ रणनीतिक प्लेसमेंट ने अधिकतम प्रभाव सुनिश्चित किया। प्रत्येक वर्ष उन्होंने हैंडबिल डिजाइन किए जो दुकान की गुणवत्ता और सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को उजागर करते थे, जिन्हें इन समाचार पत्रों के माध्यम से व्यापक रूप से वितरित किया जाता था।

दुकान की सफलता इतनी गहरी थी कि पूरन के बड़े भाई जो एलआईसी में काम कर रहे थे, उन्होंने व्यवसाय में शामिल होने का फैसला किया क्योंकि उन्होंने इसकी क्षमता और विकास का आंकलन कर लिया था। इस जोड़ ने टीम को मजबूत किया और दुकान को अपने संचालन और ग्राहक सेवा क्षमताओं का विस्तार करने की अनुमति दी।

रणनीतिक योजना, गुणवत्ता पर ध्यान और चतुर विपणन के माध्यम से पूरन डावर ने न केवल एक सफल व्यवसाय बनाया उन्होंने एक ऐसा ब्रांड भी बनाया जो आगरा में गुणवत्ता और लालित्य का पर्याय बन गया। एक दूरदर्शी उद्यमी से एक सम्मानित व्यवसायी नेता बनने तक का उनका सफर दर्शाता है कि कैसे एक छोटी सी दुकान उत्कृष्टता और सामुदायिक जुड़ाव के प्रति प्रतिबद्धता से प्रेरित होकर खुदरा बाजार में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन सकती है। डावर शू शॉप, अपनी साधारण शुरुआत से लेकर फुटवियर के लिए एक मशहूर जगह बनने तक, इस बात का प्रमाण है कि कड़ी मेहनत, रणनीतिक दृष्टि और समुदाय के साथ गहरे जुड़ाव से क्या हासिल किया जा सकता है।

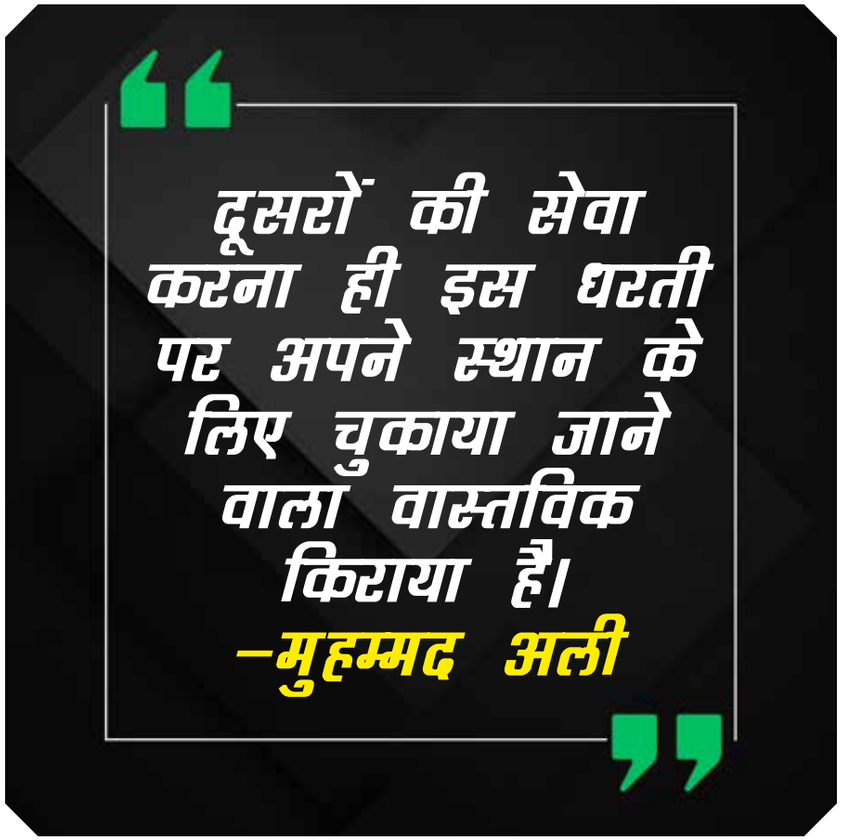

अध्याय 4

विनिर्माण में प्रवेश

1980 के दशक की शुरुआत में डावर शू शॉप ने न केवल आगरा में अपनी प्रतिष्ठा को मजबूत किया था, बल्कि पूरे भारत में भी पहचान हासिल की। यह ब्रांड गुणवत्ता और शैली का पर्याय बन गया, जिसने मुंबई जैसे महानगरों से लेकर कोलकाता के सांस्कृतिक केंद्रों तक के ग्राहकों को आकर्षित किया। पूरन डावर की दूरदर्शिता और अथक परिश्रम ने दुकान को नई ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया। हालांकि, जैसा कि अक्सर सफल उद्यमों के साथ होता है, नई चुनौतियां और अवसर क्षितिज पर होते हैं, आपने भी उसी का सामना किया।

1983 में, पूरन डावर ने विनिर्माण में प्रवेश करने का फैसला किया। यह निर्णय शुरू से अंत तक उत्पादों की गुणवत्ता को नियंत्रित करने और ऐसे तरीकों से नवाचार करने की तीव्र इच्छा से प्रेरित था जो केवल खुदरा व्यापार के माध्यम से संभव नहीं थे। विनिर्माण इकाई आगरा के एक प्रसिद्ध जूता बाजार हींग की मंडी में स्थापित की गई। शुरुआती सेटअप मामूली था दुकानों के ऊपर एक टूटी–फूटी इमारत, एक सिंगल सोल प्रेस और आठ से दस सिलाई मशीनें। यह एक साधारण शुरुआत थी, लेकिन पूरन डावर के दृढ़ संकल्प और दूरदर्शिता की कोई सीमा नहीं थी।

एक नई शुरुआतः विवाह और भाइयों का बंधन

वर्ष 1983 पूरन डावर के लिए पेशेवर और व्यक्तिगत दोनों ही दृष्टि से महत्वपूर्ण था। इसी वर्ष उनका विवाह मधु डावर से हुआ, जो हर अच्छे–बुरे समय में उनके साथ एक मजबूत स्तम्भ की भांति खड़ी रहीं। शादी से उनके जीवन में स्थिरता और खुशियाँ ला दीं, जिससे उनके व्यावसायिक कार्यों और पारिवारिक जीवन की गर्मजोशी में संतुलन बना।

पूरन डावर की एक बड़ी खूबी थी उसका अपने भाई–बहनों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार था। पूरन डावर और उनके बड़े भाई के बीच इतना गहरा रिश्ता था कि लोग अक्सर उन्हें राम और लक्ष्मण कहकर पुकारते थे, जो उनके आत्मीयता और आपसी सम्मान का प्रमाण था। उनके मित्र एक ही थे और उनकी कई समान रुचियाँ थीं, जिससे व्यवसाय में उनकी साझेदारी स्वाभाविक और प्रभावी दोनों ही थी।

हालाँकि, किसी भी भारतीय परिवार की तरह, उनकी अपनी प्राथमिकताएँ और मतभेद थे, खासकर विवाह के बाद। मधु डावर जो हमेशा पूरन डावर के भाई के प्रति दयालु और अच्छी रही, ने परिवार में नई गतिशीलता ला दी। व्यवसाय की माँगों और परिवार को संभालने की जिम्मेदारियों ने नई जटिलताएँ पैदा की। 1984 तक, डावर शॉप की सफलता ने आयकर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित

कर लिया था, जिससे निगरानी बढ़ गई थी। इस जाँच ने पूरन डावर और उसके भाई को अपने व्यवसाय की संरचना और जिम्मेदारियों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया।

आपसी सहमति से अलग होने का निर्णय

1984 में, बढ़ते व्यवसाय और पारिवारिक जीवन की बारीकियों को संभालने के दबाव के बीच, उनकी पत्नी ने अपने पारिवारिक खर्चों को अलग करने की इच्छा व्यक्त की। मधु डावर दोनों परिवारों के बीच स्पष्ट वित्तीय सीमाएँ चाहती थीं, जो कई भारतीय घरों में आम बात है जहाँ संयुक्त परिवार अक्सर सामूहिक और व्यक्तिगत जरूरतों को संतुलित करने के लिए संघर्ष करते हैं वहाँ व्यक्तिगत वित्तीय सीमाएं संबंधों को ठोस रखने में कारगर रहते हैं। शुरू में पूरन डावर इन सीमाओं के लिए सहमत होने के अनिच्छुक थे, क्योंकि वे हमेशा से एकता और अपने भाई और भाभी के प्यार और देखभाल को महत्व देते थे। हालाँकि, उन्होंने मधु डावर के दृष्टिकोण को समझा और उसका सम्मान किया, अंततः व्यक्तिगत ही नहीं अपितु व्ययसाईक वित्तीय मामलों को अलग करना ही ठीक समझा।

1984 में, सैर के दौरान, भाइयों के बीच दिल से बातचीत हुई। पूरन डावर के भाई ने एक उदार प्रस्ताव दियाः 'आप जितना चाहें उतना ले लें, मैं बाकी का प्रबंधन कर लूँगा।' यह प्रस्ताव उनके बीच गहरे बंधन और आपसी सम्मान का परिचायक था। मतभेद की संभावना के बावजूद, भाइयों ने स्थिति को शालीनता और समझदारी से संभाला। पूरन डावर के भाई ने दुकान रखने पर जोर दिया, जबकि पूरन ने विनिर्माण इकाई का प्रभार सँभालने का निश्चय किया, जो केवल एक साल से चालू थी और अभी तक महत्वपूर्ण रिटर्न नहीं दे रही थी।

भौतिक संपत्तियों पर उनके रिश्ते की सद्भावना को महत्व देते हुए, पूरन डावर बहुत आसानी से सहमत हो गए। उन्होंने अपनी संपत्तियों के वास्तविक मूल्यांकन को सावधानीपूर्वक नहीं गिना, इसके बजाय, वे मौखिक आधार पर सहमत हुए कि प्रत्येक की कीमत लगभग 10 लाख रुपये है। प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना था कि डावर शॉप की प्रतिष्ठा बरकरार रहे और दोनों संस्थाएं सुचारू रूप से काम कर सकें। इस प्रकार, डावर शॉप और डावर फैक्ट्री दो अलग–अलग संस्थाओं के रूप में उभरीं, जिसने उनके पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन में एक नया अध्याय शुरू किया।

अलग होने के बावजूद प्रतिष्ठा बनाए रखना

जिम्मेदारियों को विभाजित करने के अपने फैसले के बाद भी पूरन डावर और उनके

मधु और पूरन डावर पारंपरिक भारतीय परिधान में पारिवारिक विवाह समारोह की शोभा बढ़ाते हुए।

भाई ने डावर शॉप की प्रतिष्ठा और ब्रांड को बनाए रखने के लिए मिलकर काम करना जारी रखा।

कोलकाता में पूजा का मौसम उनके व्यवसाय के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि थी, क्योंकि इस दौरान महत्वपूर्ण बिक्री होती थी। अपने अलगाव के बावजूद दोनों भाइयों ने इस पीक सीजन के दौरान दुकान की सफलता सुनिश्चित करने के लिए अगले चार से पाँच महीनों तक अथक सहयोग किया। ब्रांड के प्रति पूरन का दृढ़ समर्पण स्पष्ट था इसलिए उन्होंने संचालन की देखरेख के लिए कोलकाता की यात्रा की, यह सुनिश्चित करते हुए कि दुकान अपने उच्च मानकों को बनाए रखे। इस अवधि के दौरान सहयोग, डावर विरासत के लिए उनकी साझा प्रतिबद्धता का प्रमाण था। इसने उस प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए व्यक्तिगत मतभेदों को पेशेवर दायित्वों के साथ संतुलित करने के महत्व पर प्रकाश डाला, जिसे बनाने के लिए उन्होंने इतनी मेहनत की थी।

पूरन डावर अपने सहयोगी व्यापारियों के साथ मिलकर समुदाय के सशक्तिकरण और विकास के लिए सक्रिय रूप से कार्य करते हुए।

वफादारी और ईमानदारी का पाठ

कानपुर के एक ग्राहक, जो अक्सर डावर फैक्ट्री से जूते खरीदते थे, उन्होंने एक दिलचस्प प्रस्ताव रखा। उन्होंने 20 लाख में डावर शॉप में 50: हिस्सेदारी खरीदने का सुझाव दिया। यह मूल्यांकन दुकान की शानदार बिक्री और प्रतिष्ठा पर आधारित था। इसके अलावा, दिल्ली के करोलबाग में मेन्सन और अन्य दुकानें थीं जो डावर के उत्पादों में गहरी दिलचस्पी रखती थीं। करोलबाग में मुगल नामक एक नई दुकान ने एक महत्वपूर्ण राशि का निवेश किया था, कथित तौर पर 1 करोड़, लेकिन इसकी बिक्री अभी भी डावर शॉप की तुलना में कम थी।

यह प्रस्ताव भाइयों के बीच दूरिया और मन भेद उत्पन्न करने में सक्षम था। इस कोशिश की संभावनाओं को दूर करते हुए, पूरन डावर की प्रतिक्रिया दृढ़ थी: 'यह एक पारिवारिक मामला है और मैं पारिवारिक मामलों को बाहर नहीं ले जाना चाहता।' यह रुख न केवल पारिवारिक अखंडता को बनाए रखने के बारे में था, बल्कि ब्रांड की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के बारे में भी था। भाइयों ने अपनी संपत्ति और नकदी को समान रूप से विभाजित करने का फैसला किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि दोनों अपने अलग–अलग व्यवसायों को सुचारू रूप से चला सकें। इस प्रकरण ने पारिवारिक मूल्यों के प्रति पूरन डावर की प्रतिबद्धता और ब्रांड की विरासत को बनाए रखने में उनकी रणनीतिक सोच को उजागर किया।

विनिर्माण इकाई का निर्माण: चुनौतियाँ और अवसर

शुरुआत से विनिर्माण इकाई शुरू करना कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी। शुरुआती सेटअप बुनियादी था जिसमें हाथ से बने काम ही उत्पादन प्रक्रिया पर हावी थे। कारखाने में एक ही प्रेस और कुछ सिलाई मशीनें थीं, जो मैन्युअल श्रम पर बहुत ज्यादा निर्भर थीं। चुनौतियाँ कई गुना थीं–वित्तीय बाधाएँ, श्रम प्रबंधन और एक विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला स्थापित करना।

हालाँकि आपने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने इन चुनौतियों को कुछ नया करने और बेहतर बनाने के अवसर के रूप में देखा। पहली बड़ी चुनौतियों में से एक तब पैदा हुई जब आपके भाई द्वारा प्रबंधित डावर शॉप ने अपनी इन्वेंट्री दूसरी फैक्टरियों से मंगवाना शुरू कर दिया। इस अचानक बदलाव ने फैक्टरी की बिक्री को काफी प्रभावित किया, जो अपने व्यवसाय के लिए डावर शॉप पर काफी हद तक निर्भर थी। फैक्टरी की बिक्री, जो 13 लाख तक पहुँच गई थी उसमें भारी गिरावट देखी गई, जिसमें डावर शॉप का योगदान 7–8 लाख से गिरकर शून्य हो गया। इस स्थिति ने पूरन डावर पर काफी दबाव डाला, क्योंकि उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि एक बड़े ग्राहक के चले जाने के बावजूद फैक्टरी चालू रहे।

साप्ताहिक श्रम भुगतान एक और महत्वपूर्ण चुनौती थी। फैक्ट्री का वित्तीय चक्र तनावपूर्ण था क्योंकि आपूर्ति की गई सामग्री के लिए भुगतान बाद में आता था, लेकिन श्रमिकों को साप्ताहिक भुगतान करना पड़ता था। इससे नकदी प्रवाह की समस्या पैदा हुई जिसके लिए सावधानीपूर्वक योजना और संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता थी। उनको इस जटिल वित्तीय परिदृश्य को संचालित करना था, फैक्ट्री की तात्कालिक आवश्यकताओं को विस्तार और विकास के दीर्घकालिक लक्ष्यों के साथ संतुलित करना था। इन बाधाओं के बावजूद, पूरन डावर ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके दृढ़ निश्चय और अभिनव सोच ने उन्हें स्थानीय बाजार में विस्तार करने की अनुमति दी। शुरुआती महीने कठिन थे, वित्तीय तनाव और परिचालन चुनौतियों से चिह्नित थे। हालांकि, पूरन डावर की अनुकूलन और समाधान खोजने की क्षमता ने सुनिश्चित किया कि फैक्ट्री न केवल बची रहे बल्कि फलती–फूलती रहे।

एक नया सवेरा

डावर समूह का खुदरा से विनिर्माण तक का सफर पूरन डावर और उनके परिवार के लिए एक महत्वपूर्ण बदलाव था। इसके लिए नई चुनौतियों के अनुकूल होना, नए कौशल सीखना और प्रतिस्पर्धा में आगे रहने के लिए लगातार नवाचार करना आवश्यक था। इस बदलाव ने उस नींव को रखा जो अंततः डावर समूह बन गया एक ऐसा समूह जो गुणवत्ता, नवाचार और ग्राहक संतुष्टि के प्रति अपनी प्रतिबद्ध ता के लिए जाना जाता है। इस यात्रा का एक मुख्य घटक पूरन डावर की अपने परिवार और अपने व्यवसाय के प्रति अपने दायित्वों को प्रबंधित करने की क्षमता थी। उन्होंने महसूस किया कि एक समृद्ध कंपनी स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत के अलावा एक प्यार करने वाले परिवार की मदद की जरूरत होती है। मधु डावर की संगति ने उन्हें सुरक्षा और संतुष्टि दी, जिससे वे जोश और ऊर्जा के साथ अपने आर्थिक प्रयासों में वापस आ सके। अपने भाई के साथ जिम्मेदारियों का बंटवारा, हालांकि चुनौतीपूर्ण था लेकिन शालीनता और आपसी सम्मान के साथ संभाला गया। इसने दोनों भाइयों को डावर ब्रांड की अखंडता और प्रतिष्ठा को बनाए रखते हुए अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने की अनुमति दी। यह अलगाव एक छिपे हुए आशीर्वाद की तरह था. जिसने पूरन डावर को विनिर्माण व्यवसाय में पूरी तरह से डूबने और विकास के नए रास्ते तलाशने की अनुमति दी। विनिर्माण में प्रवेश करना उनकी उद्यमशीलता की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यह गहन चुनौतियों और अपार सीखने का दौर था, एक ऐसा समय जब उन्हें जीवित रहने के लिए अपनी प्रवृत्ति पर भरोसा करना था और नवाचार करना था। इस दौरान सीखे गए सबक ने डावर समूह के भविष्य की सफलता की नींव रखी। पारिवारिक और व्यावसायिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने की पूरन की क्षमता, समस्या–समाधान के प्रति उनका अभिनव दृष्टिकोण और गुणवत्ता और ग्राहक संतुष्टि के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता इस सफलता के मुख्य चालक थे।

विनिर्माण इकाई, जो मुट्ठी भर मशीनों के साथ एक टूटी हुई इमारत में शुरू हुई थी, एक संपन्न उद्यम के रूप में विकसित हुई, जिसने जूता उद्योग में नए मानक स्थापित किए। पूरन डावर के जीवन का यह महत्वपूर्ण मोड़ दृष्टि, दृढ़ संकल्प और चुनौतियों को अवसरों में बदलने की क्षमता का प्रमाण है। यह एक ऐसी यात्रा की शुरुआत है जो डावर ब्रांड को एक वैश्विक प्रतीक में बदल देगी, जो अपनी गुणवत्ता, नवाचार और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता के लिए सम्मानित होगा। जैसे–जैसे पूरन डावर ने नए रास्ते तलाशना और अपने व्यवसाय का विस्तार करना जारी रखा इन शुरुआती वर्षों के दौरान रखी गई नींव अमूल्य साबित हुई। उन्होंने व्यापार जगत की जटिलताओं को संचालित करने के लिए आवश्यक स्थिरता और दिशा प्रदान की, जिससे भविष्य में विकास और सफलता का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह डावर समूह की शुरुआत थी।

अध्याय 5

विस्तार की ओर बढ़ते कदम

डावर विनिर्माण इकाई के प्रबंधन के शुरुआती तीन से चार महीने पूरन डावर के लिए चुनौतियों से भरे थे। एक विनिर्माण इकाई को जड़ से स्थापित करना कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी और पूरन डावर ने इस प्रयास की वास्तविकताओं का सामना किया। सीमित संसाधनों, कार्यस्थल के रूप में एक टूटी हुई इमारत और मुट्ठी भर मशीनों के साथ कारखाने के संचालन को वित्तीय बाधाओं और रसद बाधाओं से चिह्नित किया गया था। हालाँकि पूरन डावर के अथक दृढ़ संकल्प और अभिनव सोच ने जल्द ही फल देना शुरू कर दिया।

उनको कई बाधाओं से निपटना पड़ा, जिसमें एक तनावपूर्ण वित्तीय चक्र भी शामिल था, जहाँ आपूर्ति की गई सामग्रियों के लिए भुगतान बाद में आता था जबकि श्रमिकों को साप्ताहिक भुगतान पहले करना पड़ता था। इससे नकदी प्रवाह की समस्या पैदा हुई जिसके लिए संरचित योजना और संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता थी। दबाव बहुत अधिक था, लेकिन पूरन डावर के लचीलेपन और रणनीतिक मानसिकता ने उन्हें इन शुरुआती कठिनाइयों से निपटने में मदद की। उन्होंने महसूस किया कि कारखाने के फलने–फूलने के लिए, व्यवसाय के हर पहलू को सटीकता और अनुशासन के साथ प्रबंधित करने की आवश्यकता है।

अनुशासन और संरचनाः सफलता की नींव

अनुशासन पूरन डावर की सफलता की आधारशिलाओं में से एक था। उन्होंने नियमों का एक सेट स्थापित किया जिसका उन्होंने और उनकी टीम ने सख्ती से पालन किया। ये नियम केवल व्यवस्था बनाए रखने के बारे में नहीं थे, वे विश्वसनीयता और उत्कृष्टता की संस्कृति बनाने के बारे में थे। वे समझ गए कि फैक्ट्री के सफल होने के लिए, व्यवसाय के हर पहलू को सटीकता के साथ प्रबंधित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने जो पहला नियम लागू किया, वह था समय पर भुगतान। चाहे वह श्रमिक हों या आपूर्तिकर्ता, सभी को समय पर भुगतान किया जाता। इस अभ्यास ने विश्वास और निष्ठा का निर्माण किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि कारखाने में सामग्री की निरंतर आपूर्ति और एक प्रेरित कार्यबल रहे। आपने महसूस किया कि वेतन और बकाया का समय पर भुगतान मनोबल और परिचालन दक्षता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण था।

पूरन डावर ने याद करते हुए कहा, जब 1983 में फैक्ट्री खोली गई, तो पहले ही दिन हमने नियम बनाए। 'हमने तय किया कि जैसे हम हर महीने की 7 तारीख को कर्मचारियों को वेतन देते हैं और श्रमिकों को साप्ताहिक भुगतान किया जाता है, वैसे ही हम आपूर्तिकर्ताओं को भी 7 तारीख को भुगतान करेंगे। इसलिए चेक 7

तारीख को बनाए जाएंगे ताकि किसी को भुगतान के लिए इंतजार न करना पड़े या आना न पड़े।' इस अभ्यास ने न केवल वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित की, बल्कि एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में कारखाने की प्रतिष्ठा को भी मजबूत किया। आपूर्तिकर्ता और कर्मचारी जानते थे कि पूरन डावर समय पर भुगतान करेंगे, जिससे वफादारी और प्रतिबद्धता की भावना बनी।

इन्वेंट्री प्रबंधनः एक शून्य–स्टॉक दृष्टिकोण

पूरन डावर की प्रबंधन रणनीति का एक और महत्वपूर्ण पहलू कुशल इन्वेंट्री प्रबंधन था। उन्होंने शून्य–स्टॉक दृष्टिकोण अपनाया, यह सुनिश्चित करते हुए कि कारखाना न्यूनतम अपशिष्ट के साथ संचालित हो। इस दृष्टिकोण के लिए सटीक योजना और निष्पादन की आवश्यकता थी, उत्पादन कार्यक्रम को बाजार की मांग के साथ संरेखित करना।

उन्होंने बताया, स्टॉक को इस तरह से बनाए रखा गया था कि यह साप्ताहिक रूप से शून्य–स्टॉक दृष्टिकोण रखता हो। 'मैंने इसे इस तरह से प्रबंधित किया कि स्टॉक एक सप्ताह के लिए आए। अगर मैं एक दिन में 200 जोड़ी बनाता हूँ तो शनिवार को सभी की डिलीवरी की जा सकती है।'

इस पद्धति ने अतिरिक्त इन्वेंट्री को कम किया, भंडारण लागत और बिना बिके उत्पादों के जोखिम को कम किया। इसने यह भी सुनिश्चित किया कि कारखाने का संचालन कम और कुशल हो और संसाधनों का इष्टतम उपयोग हो।

उदाहरण के लिए प्रत्येक सोमवार को आप पिछले सप्ताह की बिक्री की समीक्षा करते और तदनुसार सामग्री के ऑर्डर को समायोजित करते। बुधवार तक सामग्री आ जाएगी, जो उत्पादन में उपयोग के लिए तैयार होगी, जो गुरुवार तक पूरे जोरों से उपयोग के लिए शुरू हो जाएगी। इस असरदार योजना ने सुनिश्चित किया कि शनिवार तक सभी उत्पादित जूते डिलीवरी के लिए तैयार थे, जिससे उत्पादन से बिक्री तक एक निर्बाध प्रवाह बना रहा।

श्रम प्रबंधनः नवाचार और दक्षता

असंगठित जूता उद्योग में श्रम का प्रबंधन एक और महत्वपूर्ण चुनौती थी। उन्होंने देखा कि श्रम भुगतान आमतौर पर शनिवार को किया जाता था जिससे श्रमिकों की उपस्थिति में अप्रत्याशितता होती थी। श्रमिक अक्सर सोमवार को नहीं आते थे जिससे उत्पादन में देरी होती थी और लागत बढ़ जाती थी। श्रमिकों की अनुपस्थिति के मुद्दे को संबोधित करने और अधिक विश्वसनीय कार्यबल सुनिश्चित करने के लिए, आपने मौजूदा श्रम भुगतान प्रणाली को बदलने का फैसला किया।

परंपरागत रूप से भुगतान चक्र सोमवार से शनिवार तक चलता था, जिसमें श्रमिकों को सप्ताह के अंत में शनिवार को उनका वेतन मिलता था। हालाँकि, इस प्रणाली में कुछ खामियाँ थीं: अपना वेतन प्राप्त करने के बाद श्रमिक अक्सर सोमवार को छुट्टी ले लेते थे, जिससे उत्पादन में व्यवधान होता था। पूरन डावर ने शनिवार से शुक्रवार तक चलने वाले भुगतान चक्र को स्थानांतरित करके एक सरल लेकिन प्रभावी बदलाव पेश किया। इस नई व्यवस्था के तहत, श्रमिकों को शनिवार से शुक्रवार तक उनके काम के लिए भुगतान किया जाता था जिससे यह सुनिश्चित होता था कि उन्हें शनिवार शाम को उनका वेतन तुरंत मिल जाए। शनिवार के काम का हिसाब अगले सप्ताह के चक्र में लगाया जाएगा। इस समायोजन का मतलब था कि श्रमिकों को शनिवार को काम पर आने के लिए प्रोत्साहित किया गया, यह जानते हुए कि उनके प्रयासों को अगले भुगतान चक्र में तुरंत मुआवजा दिया जाएगा।

इस प्रक्रिया को और भी सरल बनाने और किसी भी तरह की उलझन से बचने के लिए, पूरन आपने हर मजदूर के लिए जॉब कार्ड शुरू किए। इन कार्डों पर उनके दैनिक काम और उससे जुड़ी मजदूरी दर्ज की जाती थी, जिससे पारदर्शिता और सटीकता सुनिश्चित होती थी। फिर भुगतान सप्ताह में दो बार वितरित किए जाते थेः बुधवार को आंशिक भुगतान और शनिवार को शेष राशि। इस द्वि–साप्ताहिक भुगतान कार्यक्रम ने मजदूरों को अधिक सुसंगत नकदी प्रवाह प्रदान किया और उनकी प्रेरणा और उपस्थिति को बनाए रखने में मदद की। उदाहरण के लिए, अगर कोई मजदूर साप्ताहिक 500 रुपये कमाता था तो उसे बुधवार को 200 रुपये और शुक्रवार को शेष 300 रुपये मिलते थे। भुगतान के इस विभाजन ने यह सुनिश्चित करने में मदद की कि मजदूरों के पास सप्ताह के बीच में पैसा हो, जिससे विशेष रूप से महत्वपूर्ण दिनों में अनुपस्थिति की संभावना कम हो गई। इन परिवर्तनों को अपनाकर, पूरन डावर ने प्रभावी रूप से अनुपस्थिति को कम किया और एक अधिक स्थिर और उत्पादक कार्यबल सुनिश्चित किया, जिससे बदले में, कारखाने की समग्र दक्षता और उत्पादन में वृद्धि हुई। उन्होंने याद करते हुए कहा, हम उन्हें शनिवार को 100 रुपये एडवांस देते थे और सोमवार को हम उसमें से पैसे काट लेते थे। इसलिए उन्हें समझ में आ जाता था कि उन्हें पैसे मिल गए हैं। श्रम प्रबंधन के लिए इस अभिनव दृष्टिकोण ने सुनिश्चित किया कि कारखाने का संचालन सुचारू और कुशल हो। उत्पादन सारणी के साथ श्रम भुगतान को संरेखित करके आप एक स्थिर कार्यप्रवाह बनाए रखने और उत्पादन में देरी को कम करने में सक्षम थे। इसके अतिरिक्त, आपने माना कि भुगतान के लिए लंबी कतारों में प्रतीक्षा करना श्रमिकों के लिए एक महत्वपूर्ण असुविधा थी। इसे संबोधित करने के लिए, उन्होंने

एक ऐसी प्रणाली लागू की, जहाँ भुगतान सीधे श्रमिकों को उनके कार्यस्थलों पर पहुँचाया जाता था। इससे कतारों की आवश्यकता समाप्त हो गई और श्रमिकों को बिना किसी रुकावट के अपना काम जारी रखने की अनुमति मिली। 'हमने इसे आसान बना दिया, हम उनका भुगतान उस स्थान पर ले गए जहाँ वे काम कर रहे थे। कोई कतार नहीं, कोई प्रतीक्षा नहीं। हमने उनके कार्ड एकत्र किए और उन्हें शनिवार को शाम 5 बजे से पहले भुगतान के साथ एक सीलबंद लिफाफा दिया। उन्होंने बताया 'इससे हमारा निर्माण समय और दक्षता बढ़ गई।'

आपूर्तिकर्ता प्रबंधनः मजबूत संबंध बनाना

पूरन डावर ने समझा कि आपूर्तिकर्ताओं के साथ मजबूत संबंध बनाए रखना कारखाने की सफलता के लिए महत्वपूर्ण था। इसे सुनिश्चित करने के लिए, उन्होंने विश्वसनीयता और विश्वास के उन्हीं सिद्धांतों को लागू किया जो श्रम भुगतान के प्रबंधन में प्रभावी साबित हुए थे। उनकी प्रमुख रणनीतियों में से एक आपूर्तिकर्ताओं के लिए एक सुसंगत और भरोसेमंद भुगतान सारणी स्थापित करना था। इस उद्देश्य

पूरन डावर एक कार्यक्रम में बॉलीवुड अभिनेता विवेक ओबेरॉय के साथ।

से उन्होंने तय किया कि हर महीने की 7 तारीख को चेक तैयार किए जाएँगे, ताकि भुगतान समय पर और नियमित रूप से हो सके।

वे अक्सर खुद को इस प्रणाली की व्यावहारिकता पर विचार करते हुए पाते थे। मान लीजिए आपको किसी आपूर्तिकर्ता को 10 लाख का भुगतान करना है, वह सोचते थे। यदि आपके खाते में पूरी राशि नहीं है, तो आप इसका प्रबंधन कैसे करेंगे? उदाहरण के लिए, यदि बैंक बैलेंस केवल 5 लाख था तो उस कमी को पूरा करने का कोई तरीका खोजने की आवश्यकता थी। ऐसे मामलों में, पूरन डावर अंतर को पाटने के लिए बैंक ओवरड्राफ्ट का उपयोग करते थे यह सुनिश्चित करते हुए कि चेक समय पर क्लियर हो जाएँ। आपूर्तिकर्ता का भरोसा और विश्वास बनाए रखने के लिए यह सक्रिय दृष्टिकोण आवश्यक था।

हालांकि, ऐसे समय भी थे जब उनके खाते में 8 लाख हो सकते थे, जो आवश्यक 10 लाख से 20% कम थे। ऐसी स्थितियों में भी, उनकी प्रबंधन प्रणाली मजबूत थी। वह भुगतान को प्राथमिकता देते थे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि अधिकांश आपूर्तिकर्ताओं को 7 तारीख को उनका बकाया मिल जाए। शेष बचे लोगों के लिए, उन्होंने चेक तैयार करके रखे और उन्हें इस तरह से तैयार रखा कि वे अपने भुगतान की उम्मीद कब कर सकते हैं इस बारे में खुला और ईमानदार संचार सुनिश्चित किया। उन्होंने बताया, 'भले ही मैं 20% कम था, मैंने सुनिश्चित किया कि 95% आपूर्तिकर्ताओं को समय पर भुगतान किया जाए। शेष के लिए मैंने चेक तैयार रखे और भुगतान सारणी के बारे में पारदर्शी तरीके से संवाद किया। यह दृष्टिकोण केवल वित्त प्रबंधन के बारे में नहीं था, बल्कि विश्वास बनाने और बनाए रखने के बारे में भी था। आपूर्तिकर्ताओं ने पारदर्शिता और पूरन डावर द्वारा उनके भुगतान को समय पर सुनिश्चित करने के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने बताया, 'इससे इतनी पूंजी स्थिरता मिली कि शायद नकद भुगतान में देरी हो लेकिन उनको प्राथमिकता मिलती है और आपूर्तिकर्ता डावर ग्रुप के प्रति वफादार बन जाते हैं।' 'क्योंकि यह सुरक्षित और समय पर भुगतान था।' आपूर्तिकर्ताओं के भुगतान के सावधानीपूर्वक प्रबंधन ने कारखाने को सामग्री की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की, जिससे संचालन बिना किसी रुकावट के सुचारू रूप से जारी रहा। इस विश्वसनीयता ने आपूर्तिकर्ताओं के साथ दीर्घकालिक संबंधों को बढ़ावा देते हुए, एक भरोसेमंद भागीदार के रूप में कारखाने की प्रतिष्ठा को मजबूत किया। आपूर्तिकर्ता प्रबंधन के प्रति उनका रणनीतिक दृष्टिकोण एक स्थिर और भरोसेमंद विनिर्माण व्यवसाय के निर्माण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण था, जहां हर भागीदार, चाहे वह मजदूर हो या आपूर्तिकर्ता, मूल्यवान और सुरक्षित महसूस करता था।

अनुपालन और व्यवस्थितकरण

सुचारू संचालन और विनियामक आवश्यकताओं के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए आपने प्रशासनिक कार्यों को संभालने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण स्थापित किया। इसमें नियमित रूप से फॉर्म भरना और विस्तृत रिकॉर्ड बनाए रखना शामिल था।

'आयकर के अनुपालन को पूरा करने के लिए भी एक निश्चित प्रणाली थी। सभी के लिए तिमाही 3ए और 3बी फॉर्म भरे गए और सी फॉर्म जारी किए गए और वितरित किए गए, उन्होंने बताया कि कर्मचारियों के लिए इन सभी को जारी करने और भरने के लिए एक दिन तय किया गया था।'

इन प्रक्रियाओं को व्यवस्थित करके पूरन डावर ने सुनिश्चित किया कि फैक्टरी सभी नियमों का अनुपालन करती रहे, जिससे संभावित कानूनी मुद्दों से बचा जा सके। इस व्यवस्थित दृष्टिकोण ने प्रशासनिक कार्यों को भी सुव्यवस्थित किया, जिससे मुख्य व्यावसायिक गतिविधियों के लिए समय और संसाधन मुक्त हुए।

सिस्टम और प्रक्रियाओं में उनका विश्वास फैक्टरी के संचालन के हर पहलू तक फैला हुआ था। वह समझते थे कि अगर छोटे मुद्दों को अनदेखा किया जाता है, तो वे बड़ी समस्याओं में बदल सकते हैं। स्पष्ट प्रक्रियाएँ स्थापित करके और जिम्मेदारियाँ सौंपकर पूरन डावर ने सुनिश्चित किया कि फैक्टरी सुचारू रूप से और कुशलता से संचालित हो।

'उदाहरण के लिए, हमने सुनिश्चित किया कि हर छोटी समस्या, जैसे कि धूल का कण, अनदेखा न किया जाए। गुणवत्ता का ध्यान रखा गया।' पूरन डावर ने जोर देकर कहा कि 'यह रवैया 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता' या 'यह हल करने के लिए बहुत छोटा है' धीरे–धीरे बड़े मुद्दों में बदल जाता है।'

छोटे मुद्दों को तुरंत संबोधित करके और उच्च मानकों को बनाए रखते हुए, पूरन ने सुनिश्चित किया कि कारखाने के उत्पाद दोषरहित हों। गुणवत्ता पर इस फोकस ने कारखाने की प्रतिष्ठा बनाई और एक वफादार ग्राहक आधार को आकर्षित किया।

गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता

गुणवत्ता के प्रति पूरन डावर की प्रतिबद्धता अटूट थी। उनका मानना था कि विस्तार पर सावधानीपूर्वक ध्यान और उच्चतम मानकों का पालन कारखाने की सफलता के लिए महत्वपूर्ण थे। गुणवत्ता के प्रति यह समर्पण विनिर्माण प्रक्रिया के हर पहलू में व्याप्त था, कच्चे माल की सोर्सिंग से लेकर तैयार उत्पादों के अंतिम निरीक्षण तक।

उन्होंने माना कि गुणवत्ता बनाए रखना केवल अंतिम उत्पाद का निरीक्षण करने के बारे में नहीं था, बल्कि विनिर्माण प्रक्रिया के हर चरण में गुणवत्ता नियंत्रण उपायों

को प्रयोग करने के बारे में था। उन्होंने एक व्यापक गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली लागू की जो कच्चे माल के सावधानीपूर्वक चयन और नियमित निरीक्षण से शुरू हुई। उत्पादन में उपयोग किए जाने से पहले यह सुनिश्चित करने के लिए सामग्री के प्रत्येक बैच की जाँच की गई कि वह कड़े गुणवत्ता मानदंडों को पूरा करता है अथवा नहीं?

इसके अलावा आपने श्रमिकों के लिए निरंतर प्रशिक्षण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि हर कर्मचारी, नई भर्ती से लेकर सबसे अनुभवी कारीगर तक, कारखाने के गुणवत्ता मानकों से अच्छी तरह वाकिफ हो। सभी को सर्वोत्तम प्रथाओं पर अपडेट रखने और इन मानकों का पालन करने के महत्व को सुदृढ़ करने के लिए नियमित प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए। 'गुणवत्ता हर किसी की जिम्मेदारी है।' अपनी टीम में स्वामित्व और गर्व की भावना पैदा करते हुए, उन्होंने समझाया कि प्रशिक्षण और निरीक्षण के अलावा, मुद्दों की तुरंत पहचान करने और उनका समाधान करने के लिए फीडबैक लूप स्थापित किए। गुणवत्ता मानकों से किसी भी विचलन को दोबारा होने से रोकने के लिए दस्तावेज और विश्लेषण किया गया। इस सक्रिय दृष्टिकोण ने कारखाने को अपनी प्रक्रियाओं में निरंतर सुधार करने और अपने उत्पादों की उच्च गुणवत्ता बनाए रखने की अनुमति दी। उन्होंने कहा कि 'हमारे लिए, गुणवत्ता पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। यह हमारी प्रतिष्ठा की नींव थी।' 'हमने सख्त गुणवत्ता नियंत्रण उपायों को लागू किया और सुनिश्चित किया कि हमारे कारखाने से निकलने वाला हर उत्पाद उच्चतम मानकों को पूरा करता है।' गुणवत्ता के प्रति पूरन डावर की प्रतिबद्धता बहुत स्पष्ट थी। उन्होंने एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा दिया जहाँ हर समस्या, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो सिस्टम में लाई जाती थी और व्यवस्थित रूप से संबोधित की जाती थी। इस दृष्टिकोण ने सुनिश्चित किया कि समस्याओं का मूल रूप से समाधान किया जाए, जिससे वे दोबारा न आएं और अंतिम उत्पाद को प्रभावित न करें। इस मानसिकता को फैक्ट्री के संचालन में एकीकृत करके, पूरन डावर ने गारंटी दी कि उत्पाद न केवल उच्च गुणवत्ता वाले थे बल्कि दोषरहित भी थे। उन्होंने बताया कि हमारा मानना था कि हर विवरण मायने रखता है।' 'अगर समय रहते इसका समाधान न किया जाए, तो छोटी से छोटी समस्या भी बढ़ सकती है। हर समस्या को सिस्टम में लाकर और इसे हमारी गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रिया का हिस्सा बनाकर, हमने सुनिश्चित किया कि हमारे उत्पाद लगातार उत्कृष्ट हो।' पूरन डावर की गुणवत्ता के प्रति निरंतर खोज और समस्या समाधान के लिए उनके व्यवस्थित दृष्टिकोण ने फैक्ट्री के संचालन के लिए एक मजबूत ढाँचा तैयार किया। इसने न केवल उच्च गुणवत्ता वाले फुटवियर का उत्पादन सुनिश्चित किया, बल्कि

डावर ब्रांड के लिए एक मजबूत प्रतिष्ठा भी बनाई। ग्राहकों को भरोसा था कि डावर नाम वाला कोई भी उत्पाद बेहतर गुणवत्ता और शिल्प कौशल का पर्याय है। विनिर्माण प्रक्रिया के हर पहलू में गुणवत्ता नियंत्रण को शामिल करके पूरन डावर ने फैक्ट्री को उत्कृष्टता के प्रतिमान में बदल दिया। उत्पादन के प्रत्येक चरण में उच्चतम मानकों को बनाए रखने के प्रति उनका समर्पण कारखाने की सफलता और विकास में एक महत्वपूर्ण कारक था, जिसने उद्योग में अन्य लोगों के लिए अनुकरणीय मानक स्थापित किया।

विस्तार के लिए विनिर्माण व्यवसाय के प्रबंधन में सबक

पूरन डावर की एक मामूली विनिर्माण इकाई शुरू करने से लेकर प्रसिद्ध खुदरा ब्रांड स्थापित करने तक की यात्रा में कई अमूल्य सबक शामिल थे। व्यावहारिक अनुभव और रणनीतिक सोच से प्राप्त ये सबक विनिर्माण उद्योग में उनकी सफलता का आधार बने। कई चुनौतियों का सामना करने के 1.5 साल के भीतर, पूरन ने न केवल अपने कारखाने को स्थिर किया, बल्कि दो सफल खुदरा ब्रांड–एक्टिव और टफ भी लॉन्च किए। इन ब्रांडों ने तेजी से लोकप्रियता हासिल की, जो विविध, उच्च–गुणवत्ता वाले जूते पेश करते थे और व्यापक ग्राहक आधार को आकर्षित करते थे। 1987 तक डावर मैन्युफैक्चरिंग ने घरेलू बाजार में खुद को मजबूती से स्थापित कर लिया था, जिससे निरंतर विकास और विस्तार के लिए मंच तैयार हो गया। पूरन के विनिर्माण व्यवसाय से 8 सीख मिलती हैं:

1. अनुशासन

पूरन डावर के प्रबंधन दर्शन का आधार अनुशासन था। उनका मानना था कि दीर्घकालिक सफलता प्राप्त करने के लिए काम के प्रति अनुशासित दृष्टिकोण आवश्यक है। इस सिद्धांत को कारखाने के संचालन के हर पहलू पर लागू किया गया, उत्पादन से लेकर गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं का पालन करने तक। पूरन डावर ने अपनी टीम के लिए सख्त दिनचर्या और प्रोटोकॉल स्थापित किए। दैनिक कार्यों की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई और उन्हें सटीकता के साथ निष्पादित किया गया। अनुशासन की संस्कृति को बढ़ावा देकर पूरन डावर ने सुनिश्चित किया कि कारखाना सुचारू रूप से और कुशलता से संचालित हो जिसके परिणामस्वरूप व्यवधान कम से कम हो और उत्पादकता अधिकतम हो।

2. आपूर्तिकर्ताओं और खरीदारों को समान महत्व

पूरन डावर आपूर्तिकर्ताओं और खरीदारों दोनों के साथ मजबूत संबंध बनाने के महत्व को समझते थे। उन्होंने आपूर्तिकर्ताओं के साथ अपने ग्राहकों के समान सम्मान और विचार के साथ व्यवहार किया, यह पहचानते हुए कि उनका समर्थन कारखाने की सफलता के लिए महत्वपूर्ण था।

3. समय पर भुगतान

पूरन डावर की प्रबंधन रणनीति के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक सभी हितधारकों को समय पर भुगतान सुनिश्चित करना था। उन्होंने एक ऐसी प्रणाली स्थापित की, जिसमें हर महीने की 7 तारीख को चेक तैयार किए जाते थे, जिससे यह सुनिश्चित होता था कि आपूर्तिकर्ताओं और श्रमिकों को बिना देरी के उनका भुगतान मिल जाए।

4. श्रम प्रबंधन

पूरन डावर की सफलता में प्रभावी श्रम प्रबंधन एक और महत्वपूर्ण कारक था। उन्होंने श्रमिकों को प्रेरित करने और अनुपस्थिति को कम करने के लिए एक संरचित भुगतान प्रणाली लागू की।

5. जीरो–स्टॉक अप्रोच

पूरन डावर ने इन्वेंट्री प्रबंधन के लिए जीरो–स्टॉक अप्रोच को अपनाया जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि फैक्ट्री न्यूनतम अपशिष्ट के साथ संचालित हो। इस रणनीति के लिए सटीक योजना और समन्वय की आवश्यकता थी, ताकि उत्पादन सारणी को बाजार की मांग के साथ संरेखित किया जा सके।

इष्टतम इन्वेंट्री स्तरों को बनाए रखने और अधिक उत्पादन से बचने के द्वारा पूरन ने भंडारण लागत को कम किया और अप्रचलित स्टॉक के जोखिम को कम किया। इस दृष्टिकोण ने न केवल परिचालन दक्षता में सुधार किया, बल्कि फैक्ट्री के वित्तीय स्वास्थ्य को भी बढ़ाया।

6. छोटी चीजों का ध्यान रखना

उनका मानना था कि उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए छोटी–छोटी बातों पर ध्यान देना महत्वपूर्ण था। उन्होंने सुनिश्चित किया कि हर छोटी समस्या का तुरंत समाधान किया जाए और उसे फैक्ट्री की गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं में एकीकृत किया जाए।

कार्यस्थल की सफाई सुनिश्चित करने से लेकर कच्चे माल की अखंडता बनाए रखने तक, उत्पादन के हर पहलू पर विस्तार से ध्यान दिया गया। छोटे–छोटे

कार्यों का ध्यान रखकर, उन्होंने छोटी–छोटी समस्याओं को बड़ी समस्याओं में बदलने से रोका, जिससे सुचारू और कुशल व्यावसायिक संचालन सुनिश्चित हुआ।

7. एक आदर्श प्रणाली बनाना

समस्या–समाधान के लिए उनका दृष्टिकोण व्यवस्थित और प्रक्रिया–उन्मुख था। वे आवर्ती समस्याओं को संबोधित करने के लिए सिस्टम बनाने में विश्वास करते थे। यह सुनिश्चित करते हुए कि समाधान टिकाऊ हों और कारखाने के संचालन में एकीकृत हों। प्रक्रियाओं का दस्तावेजीकरण करके और स्पष्ट प्रोटोकॉल स्थापित करके पूरन डावर ने कारखाने के संचालन के लिए एक मजबूत ढाँचा तैयार किया। इस व्यवस्थित दृष्टिकोण ने स्थिरता सुनिश्चित की, दक्षता में सुधार किया और कार्यों के आसान प्रतिनिधिमंडल की सुविधा प्रदान की।

8. गुणवत्ता सर्वोपरि

गुणवत्ता के प्रति पूरन डावर की अटूट प्रतिबद्धता, डावर ब्रांड की सफलता की नींव थी। उन्होंने कच्चे माल के निरीक्षण से लेकर अंतिम उत्पाद जाँच तक उत्पादन के हर चरण में सख्त गुणवत्ता नियंत्रण उपायों को लागू किया। गुणवत्ता के प्रति इस समर्पण ने न केवल ग्राहकों की संतुष्टि सुनिश्चित की, बल्कि एक वफादार ग्राहक आधार भी बनाया, जिसने डावर ब्रांड पर उसके बेहतरीन शिल्प कौशल और विश्वसनीयता के लिए भरोसा किया।

एक्टिव और टफ लॉन्च करना सिद्धांतों के पालन का पुरस्कार था

इन सिद्धांतों को लागू करने के 1.5 साल के भीतर पूरन डावर ने दो नए खुदरा ब्रांड–एक्टिव और टफ को सफलतापूर्वक लॉन्च किया। इन ब्रांडों ने घरेलू बाजार में तेजी से लोकप्रियता हासिल की जो विभिन्न ग्राहकों की प्राथमिकताओं को पूरा करने वाले उच्च गुणवत्ता वाले जूते की अपनी विविध रेंज के लिए जाने जाते हैं। एक्टिव को गतिशील, आधुनिक उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिए डिजाइन किया गया था, जो रोजमर्रा के इस्तेमाल के लिए स्टाइलिश और आरामदायक जूते प्रदान करता था। दूसरी ओर, टफ ने स्थायित्व और मजबूती पर ध्यान केंद्रित किया, जो उन ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करता था जिन्हें अधिक माँग वाली गतिविधियों के लिए विश्वसनीय जूते की आवश्यकता थी।

1983 से 1987 तक, डावर मैन्युफैक्चरिंग ने घरेलू बाजार में अपनी उपस्थिति बढ़ाई, एक्टिव और टफ की सफलता का लाभ उठाकर अपनी पहुँच का विस्तार किया। गुणवत्ता, समय पर डिलीवरी और ग्राहक संतुष्टि के प्रति फैक्ट्री की

प्रतिबद्धता ने इसे जूता उद्योग में एक विश्वसनीय नाम के रूप में स्थापित किया। विनिर्माण व्यवसाय के प्रबंधन और विस्तार में पूरन डावर की यात्रा महत्वाकांक्षी उद्यमियों के लिए अमूल्य सबक प्रदान करती है। उनका अनुशासित दृष्टिकोण, गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता और अभिनव प्रबंधन रणनीतियाँ उनकी सफलता के प्रमुख चालक थे। आपूर्तिकर्ताओं और खरीदारों को समान महत्व देते हुए, समय पर भुगतान सुनिश्चित करते हुए, प्रभावी रूप से श्रम का प्रबंधन करते हुए और शून्य–स्टॉक दृष्टिकोण को बनाए रखते हुए, उन्होंने एक मजबूत और कुशल विनिर्माण संचालन बनाया। छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखने, सिस्टम में समाधान डालने और गुणवत्ता को प्राथमिकता देने पर उनका ध्यान उद्योग में उत्कृष्टता के लिए एक बेंचमार्क स्थापित करता है। एक्टिव और टफ का सफल लॉन्च इन सिद्धांतों की प्रभावशीलता का एक प्रमाण है, जो दर्शाता है कि उच्च मानकों और अनुशासित निष्पादन के प्रति प्रतिबद्धता विनिर्माण क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि और सफलता की ओर ले जा सकती है।

अध्याय 6

एक विचारक का निर्माण

एक सफल व्यवसायी से एक विचारक बनने का सफर, पूरन डावर के हर अनुभव का विश्लेषण कर उससे सीखने और आगे बढ़ने की उनकी क्षमता का प्रमाण है। उनका विकास कई महत्वपूर्ण अनुभवों से प्रभावित था जिसने उनकी समझ को गहरा किया और व्यवसाय, राजनीति और जीवन के प्रति उनक दृष्टिकोण को आकार दिया। कई महत्वपूर्ण घटनाएं हैं जिन्होंने एक विचारक और विश्लेषक के रूप में उनके विकास में योगदान दिया।

कॉलेज चुनाव

1972 में, जब पूरन डावर आगरा कॉलेज के छात्र थे तब उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में सक्रिय रूप से भाग लिया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भारत का एक प्रमुख छात्र संगठन है, जिसका उद्देश्य छात्रों में राष्ट्रवादी मूल्यों को विकसित करना रहा है। उस समय कॉलेज के चुनाव में काफी संघर्ष होता था, जो अकसर स्थानीय या राष्ट्रीय चुनावों की तुलना में ज्यादा तीव्र होता। दांव बहुत ऊँचे थे क्योंकि चुने गए कॉलेज अध्यक्ष दूर–दराज के गाँवों सहित विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों का प्रतिनिधित्व करते थे।

चुनाव अभियान के दौरान पूरन डावर और उनके साथी विद्यार्थी परिषद के समर्थकों को एक महत्वपूर्ण झटका लगा। विपक्ष के ब्राह्मण लॉबी के नेतृत्व ने एक चालाक योजना बनाई, जिसका नेतृत्व उदय प्रकाश शर्मा कर रहे थे। उदय प्रकाश एक कुख्यात व्यक्ति थे जिन्हें धमकाने जैसे अन्य कृत्यों के लिए जाना जाता था। एक दिन, उदय प्रकाश के गुंडों ने विद्यार्थी परिषद की जीप, जिसमें विद्यार्थी परिषद के बैनर लगे थे छीन छात्रावास में ले गए और छात्रों को डराने के लिए इस्तेमाल किया। इस प्रकार कहानी को तोड़–मरोड़ कर पेश किया गया, जिससे ऐसा लगे कि विद्यार्थी परिषद समर्थक ही अपराधी हैं। इस घटना ने विद्यार्थी परिषद की प्रतिष्ठा को धूमिल किया और इसके समर्थकों का मनोबल गिराया। इस झटके के बावजूद चुनाव प्रचार जारी रहा। अभियान का मुख्य आकर्षण अंतिम भाषण का दिन होता था, जब सभी उम्मीदवारों को कॉलेज के प्रांगण की ओर देखने वाली कॉलेज लाइब्रेरी की बालकनी से छात्रों को संबोधित करना होता था। कुछ नकली प्रत्याशी भी हुआ करते थे जो किसी विशेष प्रतियोगी के पक्ष में नामांकन वापस ले लेते और एक मजबूत कारण बताते हुए अपना समर्थन दे जीत में महत्वपूर्ण भागीदारी करते थे। यह भाषण महत्वपूर्ण होता था क्योंकि यह मतदाताओं को प्रभावित करता था। विपक्षी अभियान के ब्राह्मण लॉबी के पीछे एक शानदार वक्ता और मास्टरमाइंड उदियन शर्मा ने उस दिन एक भाषण दिया, जिसने पूरन डावर के विश्लेषण कौशल पर एक अमिट छाप छोडी। उदियन ने अपने भाषण की

शुरुआत परिषद के उम्मीदवार चंद्र प्रकाश की शैक्षणिक कौशल और अच्छे चरित्र के लिए प्रशंसा करके की। इसके बाद उन्होंने अपना रुख बदलते हुए विद्यार्थी परिषद पर राजनीतिक लाभ के लिए छात्रों का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। उन्होंने एक स्थानीय नेता भगवान शंकर रावत द्वारा छात्रावास के डी एन छात्रावास के कमरा नंबर 4 में आयोजित एक गुप्त बैठक के बारे में एक कहानी गढ़ी, जिसने छात्रों के मन में संदेह के बीज बोए। अपने झूठे व्याख्यान से वह यह साबित करने में सफल रहे कि विद्यार्थी परिषद छात्रों का इस्तेमाल, जनसंघ अपनी राजनीतिक नींव रखने के लिए कर रही है। तत्पश्चात उन्होंने जनसंघ की इस प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई। तथ्यों के इस चतुराईपूर्ण हेर–फेर और झूठे व्याख्यानों के रणनीतिक उपयोग ने चुनाव के नतीजों को प्रभावित किया, जिससे पूरन डावर को राजनीति में बयानबाजी और धारणा की शक्ति के बारे में एक मूल्यवान सबक मिला। उदियन के भाषण में कई तत्व थे जो विशेष रूप से प्रभावी थे। सबसे पहले, उन्होंने प्रशंसा के साथ शुरुआत की, जिसने दर्शकों को निहत्था कर दिया और उन्हें बाद में उनकी आलोचनाओं के प्रति अधिक ग्रहणशील बना दिया।

आलोचनात्मक संदेश देने से पहले ताल–मेल बनाने की यह तकनीक कुछ ऐसी है जिसे पूरन डावर ने बाद में कई राजनीतिक और व्यावसायिक संचारों में पहचाना। दूसरा, उदियन ने कथित बैठक के कमरे के नंबर जैसे विशिष्ट विवरणों का उपयोग करके अपनी मनगढंत कहानी में विश्वसनीयता का एक आवरण जोड़ा। पूरन डावर ने महसूस किया कि विशिष्ट विवरणों को शामिल करना, भले ही वे झूठे हों, लोगों की धारणाओं और विश्वासों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं। इस घटना ने पूरन डावर को सूचना का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने और कथाओं पर सवाल उठाने का महत्व सिखाया।

उन्होंने समझा कि जो दिखाई देता है वह हमेशा सत्य नहीं हो सकता और जो सच है वह हमेशा दिखाई नहीं दे सकता। यह सबक बाद के वर्षों में उनके विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का आधार बन गया, जिससे उन्हें व्यापार और राजनीति की जटिलताओं को विस्तार से समझने और सतही दिखावे को संतुलित संदेह के साथ नकारने में मदद मिली।

अरविंद केजरीवाल पर अवलोकन

इस प्रकरण के सालों बाद, पूरन डावर ने अपने कॉलेज के चुनावी अनुभवों और आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल की राजनीतिक रणनीतियों के बीच समानताएं खींची। पूरन डावर ने गौर से देखा कि केजरीवाल ने किस तरह से जनता की राय को प्रभावित करने के लिए व्यख्यान का इस्तेमाल किया। उन्होंने

एक साक्षात्कार किया और इशारा करते हुए बताया की किस तरह केजरीवाल ने तथ्यों की पुष्टि किए बिना गुजरात में किसानों की आत्महत्या के बारे में विशिष्ट आंकड़े दिए। एक सम्मोहक लेकिन भ्रामक व्यख्यान बनाने के लिए डेटा के इस हेरफेर ने पूरन डावर को उदियन की रणनीति की याद दिला दी।

पूरन डावर की ऐसी रणनीतियों को समझने की क्षमता इस बात की गहरी समझ से आई कि किस तरह से व्यख्यानों को गढ़ा जाता है और जनता की राय को प्रभावित करने के लिए उनका इस्तेमाल किया जाता है। उनके कॉलेज के अनुभवों ने उन्हें राजनीतिक बयानों का आलोचनात्मक विश्लेषण करना और अंतर्निहित उद्देश्यों को समझना सिखाया। यह अंतर्दृष्टि उनके विचार नेतृत्व की आधारशिला बन गई, जिससे उन्हें राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर एक सूक्ष्म दृष्टिकोण प्रदान करने में मदद मिली।

पूरन डावर ने एक प्रमुख पत्रकार संजय पोखरिया, जो उस समय सीएनएन के लिए काम करते थे, के साथ केजरीवाल का एक साक्षात्कार देखा। केजरीवाल ने दावा किया कि गुजरात में 800 किसानों ने आत्महत्या की है, इस आंकड़े का इस्तेमाल उन्होंने राज्य सरकार की आलोचना करने के लिए किया था। जब पोखरिया ने संख्या की सत्यता पर सवाल उठाया, तो केजरीवाल ने स्वीकार किया कि उन्हें सटीक संख्या के बारे में ज्ञान नहीं था, लेकिन उनकी जानकारी के आधार पर उन्हें लगता था कि यह सच है। पोखरिया ने फिर अन्य राज्यों से आत्महत्या के आँकड़े दिए, जिससे पता चला कि गुजरात की संख्या तुलनात्मक रूप से बहुत अधिक नहीं थी।

सही किए जाने के बावजूद, केजरीवाल ने बाद में और भी अधिक संख्या ट्वीट की, जिसमें दावा किया गया कि गुजरात में 1567 किसानों ने आत्महत्या की है। उन्होंने इस संख्या को एक सटीक सांख्यिकी के रूप में प्रस्तुत किया, जबकि इसके समर्थन में कोई सत्यापन योग्य डेटा नहीं था। एक विशिष्ट कथा बनाने के लिए तथ्यों के साथ जानबूझकर छेड़छाड़ करना पूरन डावर को आधुनिक राजनीति में एक खतरनाक प्रवृत्ति लगी। उन्होंने तथ्य जाँच के महत्व और सटीक जानकारी प्रदान करने के लिए सार्वजनिक हस्तियों की जिम्मेदारी को पहचाना।

पूरन डावर द्वारा केजरीवाल की रणनीति के बारे में आलोचनात्मक अवलोकन ने नेतृत्व में पारदर्शिता और जवाबदेही की आवश्यकता में उनके विश्वास को मजबूत किया। उन्होंने समझा कि नेता जनमत पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं और उन्हें इस शक्ति का जिम्मेदारी से उपयोग करना चाहिए। इस अहसास ने संचार के प्रति उनके दृष्टिकोण को प्रभावित किया। वे सार्वजनिक बयान और लेखन के गहन शोध और तथ्यात्मक सटीकता की हिमायत करते हैं।

आगरा सम्मेलनः संख्याओं की शक्ति

एक विचारक के रूप में पूरन डावर की भूमिका, उनकी भागीदारी के माध्यम से, व्यापार जगत में फैली हुई है खासकर आगरा जूता निर्माताओं और निर्यातकों के चौंबर में। उन्होंने 'मीट एट आगरा' प्रदर्शनी के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो वैश्विक जूता निर्माताओं, आपूर्तिकर्ताओं और खरीदारों को एक साथ लाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम था।

यह प्रदर्शनी जूता प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करने और व्यावसायिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है।

यहाँ पूरन डावर ने अनुभव किया कि कैसे मीडिया अक्सर कार्यक्रम के गुणात्मक प्रभाव के बजाय सनसनीखेज संख्याओं पर ध्यान केंद्रित करता है। पत्रकार सम्मेलन के दौरान किए गए कुल व्यवसाय के बारे में पूछते थे, ऐसे आंकड़े मांगते थे जो आकर्षक सुर्खियाँ बन सकें।

मीडिया की धारणा के महत्व को समझते हुए, पूरन डावर और उनकी टीम ने कार्यक्रम की सफलता को मीडिया के साथ प्रतिध्वनित करने वाले शब्दों में संप्रेषित करने की रणनीति विकसित की। उन्होंने प्रदर्शनी के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न अनुमानित व्यवसाय की मात्रा पर जोर दिया, जिसने आगरा के जूता उद्योग को समग्र कारोबार से जोड़ा। इस दृष्टिकोण के कारण पर्याप्त व्यावसायिक आंकड़ों की घोषणा करने वाली सुर्खियाँ बनीं, जिससे कार्यक्रम के आसपास सकारात्मक चर्चा संभव हुई।

उदाहरण के लिए, 'मीट एट आगरा' के एक संस्करण के दौरान, पूरन डावर ने इस बात पर प्रकाश डाला कि प्रदर्शनी में कोई प्रत्यक्ष बिक्री नहीं हुई, लेकिन इससे सालाना 12,000 करोड़ रुपये के कारोबार की नींव रखी गई है। यह आंकड़ा आगरा के जूता उद्योग के कुल कारोबार से लिया गया था, जिसका एक बड़ा हिस्सा प्रदर्शनी में किए गए कनेक्शन और सौदों से प्रभावित था। मीडिया ने इस आंकड़े को पकड़ लिया और ऐसी सुर्खियाँ बनाई जो तीन दिनों के इस आयोजन से बड़े पैमाने पर आर्थिक प्रभाव का सुझाव देती रहीं।

संख्याओं के रणनीतिक उपयोग ने मीडिया की गतिशीलता की उनकी समझ और सार्वजनिक धारणा को आकार देने की उनकी क्षमता को प्रदर्शित किया। इस घटना ने डेटा की शक्ति और इसे प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के महत्व में उनके विश्वास को मजबूत किया।

इस अनुभव ने मात्रात्मक मीट्रिक को गुणात्मक अंतर्दृष्टि के साथ संतुलित करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को भी उजागर किया। पूरन डावर ने इस संतुलन के सिद्धांत का समर्थन अपने विचार नेतृत्व में लेखन और व्यख्यान के मध्यम से समर्थन किया।

भाटिया कैंटीन में चिंतनः लेखन की उत्पत्ति

एक लेखक और विचारक के रूप में पूरन डावर की यात्रा आगरा कॉलेज के पास एक लोकप्रिय आउटलेट, भाटिया कैंटीन से शुरू हुई। चाय और समोसे के साथ, पूरन डावर सांप्रदायिक दंगों से लेकर राजनीतिक घटनाक्रमों तक विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार लिखते थे। ये लेख केवल व्यक्तिगत विचार नहीं थे, बल्कि स्थानीय समाचार पत्रों के साथ साझा किए जाते थे, जिससे उन्हें अपनी राय व्यक्त करने का एक मंच मिला।

उस समय के सांप्रदायिक दंगे उनके लेखन का एक सतत विषय था। पूरन डावर के लेखों ने एक संतुलित दृष्टिकोण पेश किया, जिसमें हिंसा के पीछे राजनीतिक उद्देश्यों की आलोचना करते हुए शांति और समझ का आह्वान किया गया। जटिल मुद्दों को एक सुसंगत तरीके से व्यक्त करने की उनकी क्षमता ने ध्यान आकर्षित किया, जिससे उन्हें समुदाय में एक विश्वसनीय आवाज के रूप में स्थापित किया गया।

उदाहरण के लिए, अलीगढ़ में सांप्रदायिक अशांति के एक विशेष रूप से तनावपूर्ण दौर के दौरान, पूरन डावर ने एक लेख लिखा, जिसमें संघर्ष के ऐतिहासिक संदर्भ, खेल में सामाजिक–आर्थिक कारक और हिंसा को बढ़ावा देने वाले राजनीतिक एजेंडे पर चर्चा की गई। उन्होंने संवाद और आपसी सम्मान की वकालत की, जिसमें शामिल समुदायों की साझा विरासत और आम मानवता पर जोर दिया गया। उनके सूक्ष्म दृष्टिकोण ने पाठकों को प्रभावित किया, जिससे उन्हें सम्मान और पहचान मिली। भाटिया कैंटीन में उनके लेखन ने आत्मनिरीक्षण और आत्म–अभिव्यक्ति के साधन के रूप में भी काम किया। इन लेखनों ने उन्हें अपने विचारों को संसाधित और परिष्कृत करने की अनुमति दी, जिससे एक विचारक के रूप में उनका विकास हुआ। नियमित रूप से लिखने और पाठकों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने के अनुभव ने उन्हें अपनी आवाज विकसित करने और अपने विश्लेषणात्मक कौशल को निखारने में मदद की। विचार नेतृत्व में विकास पर केंद्रित उनके शुरुआती लेख धीरे–धीरे अधिक संरचित और विश्लेषणात्मक टुकड़ों में विकसित हुए। व्यवसाय, राजनीति और समाज के विभिन्न पहलुओं के बारे में उनके संपर्क ने उनके दृष्टिकोण को समृद्ध किया, जिससे उन्हें विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करने का मौका मिला। उनके लेखन में सूक्ष्म, लघु, एवं मध्यम उद्योग, पर्यावरण, शिक्षा और कौशल विकास जैसे क्षेत्र शामिल हैं, जो उनकी बहुमुखी रुचियों और विशेषज्ञता को दर्शाते हैं। जूता उद्योग के दौरान पूरन डावर की गुणवत्ता और विस्तार पर ध्यान देने की प्रतिबद्धता उनके लेखन में परिलक्षित हुई। उन्होंने अपने विषयों पर सावधानीपूर्वक शोध किया, यह सुनिश्चित करते हुए

प्रतिष्ठित बृज रत्न पुरस्कार समारोह के दीप प्रज्ज्वलन सत्र का एक दृश्य, जिसमें उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हैं। उनके साथ मंच पर भारत सरकार के माननीय राज्य मंत्री श्री एस.पी. सिंह बघेल, अतुल्य भारत फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री पूरन डावर तथा शारदा विश्वविद्यालय के प्रो. चांसलर श्री वाई. के. गुप्ता भी दीप प्रज्ज्वलन की पवित्र रस्म में भाग लेते हुए।

कि उनके लेख अच्छी तरह से सूचनात्मक और प्रभावशाली हों। अलग–अलग मुद्दों के बीच संबंध बनाने और उन्हें एक साथ प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता ने उनके लेखन को एक अलग पहचान दिलाई।

आपने अपने विचारों को साझा करने, व्यापक दर्शकों तक पहुँचने और सार्थक चर्चाओं में शामिल होने के लिए सोशल मीडिया का भी उपयोग किया। उनकी पोस्ट स्पष्टता और गहराई से भरी होती हैं, जो अक्सर व्यापक बातचीत को बढावा देती हैं और दूसरों को मौजूदा मुद्दों के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

उदाहरण के लिए, अपने एक ब्लॉग पोस्ट में आपने सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र में कौशल विकास के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने कुशल श्रमिक तक पहुँचने में छोटे व्यवसायों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम और उद्योग–अकादमिक भागीदारी जैसे समाधान प्रस्तावित किए। पोस्ट को व्यापक सराहना मिली, पाठकों ने उनके व्यावहारिक सुझावों और विश्लेषण की सराहना की।

विचार नेतृत्व का सार

पूरन डावर का एक विचारक के रूप में विकास, उनके व्यक्तिगत और पेशेवर

दोनों अनुभवों से आकार लेता है। कॉलेज के चुनावों से लेकर प्रमुख व्यावसायिक कार्यक्रमों के आयोजन में उनकी भूमिका तक की उनकी यात्रा, भाटिया कैंटीन में उनके विचार और राजनीतिक रणनीतियों के उनके गहन अवलोकन ने एक विचारक और विश्लेषक के रूप में उनके विकास में योगदान दिया है।

पूरन डावर के विचार नेतृत्व की विशेषता यह है कि वे परिस्थितियों का गहराई से विश्लेषण करने, व्यावहारिक निष्कर्ष निकालने और प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम हैं। विभिन्न विषयों पर उनके लेखन में गुणवत्ता के प्रति उनकी प्रतिबद्ध ता और सकारात्मक बदलाव को प्रभावित करने की उनकी इच्छा झलकती है। जैसे–जैसे वे अपने विचारों को साझा करते गए, और विविध दर्शकों के साथ जुड़ते गए, वैसे वैसे आप ज्ञान और प्रेरणा के एक प्रकाशस्तंभ के रूप में स्थापित होते गए। आपके लेख व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास को आगे बढ़ाने में विचार नेतृत्व की शक्ति का प्रदर्शन करते हैं।

एक विचारक के रूप में पूरन डावर की यात्रा उनके लेखन की विविधतापूर्ण श्रेणी में परिलक्षित होती है, जिसमें व्यवसाय, राजनीति और सामाजिक मुद्दों के विभिन्न पहलू शामिल हैं। जटिल विषयों का विश्लेषण और स्पष्ट करने की उनकी क्षमता ने उनके ब्लॉग को विभिन्न क्षेत्रों में अंतर्दृष्टि चाहने वाले पाठकों के लिए एक मूल्यवान संसाधन बना दिया है। यहाँ उनके कुछ सबसे प्रभावशाली ब्लॉग पोस्ट या अनुवाद प्रस्तुत किए गए हैं, जो उनकी गहन समझ और दूरदर्शी सोच की झलक पेश करते हैं। ये लेखन न केवल उनकी विशेषज्ञता को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि व्यावहारिक मार्गदर्शन और विचारोतेजक दृष्टिकोण भी प्रदान करते हैं, जो एक विचारक और विश्लेषक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करते हैं।

ये ब्लॉग पोस्ट स्पष्टता और गहराई के साथ प्रमुख मुद्दों को संबोधित करने के लिए पूरन डावर की प्रतिबद्धता का उदाहरण हैं, जो उनके पाठकों के बीच गहरी समझ को बढ़ावा देते हैं। उनका लेखन आज भी प्रेरणा और मार्गदर्शन देता है. तथा एक सफल व्यवसायी से एक सम्मानित विचारक बनने तक की उनकी यात्रा को दर्शाता है।

विषय कः आगरा का विकास

सारांश/अनुवाद

ब्लॉग 1ः उद्योग और पर्यावरणः एक सहजीवी संबंध

न तो उद्योग पर्यावरण के बिना संभव है, न ही उद्योगों के बिना पर्यावरण संरक्षण संभव है।

जीवन उद्योग और पर्यावरण के बीच एक नाजुक संतुलन पर पनपता है। एक के

बिना दूसरा स्थायी रूप से अस्तित्व में नहीं रह सकता। उद्योग आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं और उन्हें पर्यावरण संरक्षण को अपनी उत्पादन प्रक्रिया के अभिन्न अंग के रूप में अपनाना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण की उपेक्षा करने वाले उद्योग समय के साथ विफल हो जाते हैं। उन्हें दूसरों के जीवन को खतरे में डालने की अनुमति नहीं दी जा सकती। पर्यावरण केवल हमारे भरण–पोषण के लिए नहीं है, यह प्रशासनिक अधिकारियों और न्यायालयों से परे है। अधिकारी आते–जाते रहते हैं, बैठकें होती हैं और तबादले होते रहते हैं, लेकिन पर्यावरण की सुरक्षा का काम बिना रुके चलता रहना चाहिए। हमें यह समझना जरूरी है कि पर्यावरण का नुकसान अक्सर भ्रष्टाचार की वजह से होता है। यह समस्या भले ही बड़े स्तर की हो, लेकिन हमें पर्यावरण की रक्षा के लिए किसी भी हाल में समझौता नहीं करना चाहिए। यमुना नदी के किनारे बसा ऐतिहासिक शहर आगरा, जो ताजमहल के लिए दुनिया भर में जाना जाता है, हर साल दस मिलियन से ज्यादा पर्यटकों को आकर्षित करता है। फिर भी यह गंभीर पर्यावरणीय गिरावट से जूझ रहा है। कभी जीवंत और हरा–भरा यह शहर अब पर्यावरण प्रदूषण के मामले में देश में आठवें स्थान पर है। सड़कें कूड़े से भरी पड़ी हैं, कूड़ेदान कहीं नहीं दिखते और सीवर सिस्टम खस्ताहाल है।

एक समय था जब सड़कों पर पानी छिड़का जाता था, नालियों की सफाई की जाती थी और बारिश का पानी आसानी से जलाशयों में चला जाता था। आज, शहर के तालाबों को भ्रष्टाचार ने घर कर लिया है, सीवर सिस्टम ध्वस्त हो गया है और सीवेज सीधे यमुना में बहता है। विभिन्न योजनाओं के तहत सीवर सुधार के लिए महत्वपूर्ण धनराशि आवंटित किए जाने के बावजूद, शहर धूल और अप्रभावी सीवर सिस्टम से ग्रस्त है।

प्रदूषण और पर्यावरण विभाग के अनुसार, आगरा में सल्फर ऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड का स्तर नियंत्रित है, लेकिन पार्टिकुलेट मैटर (पीएम–10 और पीएम–2) नियंत्रित नहीं है। शहर का बुनियादी ढांचा अव्यवस्थित है, टूटी सड़कें, कूड़े के ढेर और कचरा संग्रह या निपटान के लिए कोई प्रभावी व्यवस्था नहीं है। नगर निगम, विकास प्राधिकरण, जल निगम, पीडब्ल्यूडी, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, संचार विभाग और बिजली विभाग समेत कई विभाग लगातार बिना किसी समन्वय के सड़कें खोदते और बनाते रहते हैं, जिससे अनियोजित विकास और पर्यावरण का क्षरण होता है।

उद्योगों और पर्यावरण को सामंजस्य के साथ काम करना चाहिए। 1996 में एम. सी. मेहता द्वारा दायर जनहित याचिका ने आगरा में पर्यावरण संबंधी चिंताओं को उजागर किया। नेक इरादे से दायर जनहित याचिका में उद्योगों को असंगत रूप से निशाना बनाया गया, जिससे कई फाउंड्री बंद हो गई और अन्य को गैस–आधारित संचालन में बदलने के लिए मजबूर होना पड़ा। यहां तक कि छोटी चाय की दुकानों और ईट भट्टों का भी अनुकूलन करना पड़ा। विडंबना यह है कि विकसित देशों में, रेस्तरां में लकड़ी से जलने वाले ओवन आम हैं।

आगरा का चमड़ा उद्योग, जो मुगल काल की विरासत है, खत्म हो गया इसी तरह, होटल उद्योग, जो स्वच्छता और पर्यावरणीय स्थिरता को प्राथमिकता देता है, सख्त पर्यावरणीय मानकों का पालन करने के बावजूद अनावश्यक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है। आगरा के पर्यावरणीय संकटों के लिए केवल उद्योगों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। शहर की प्रशासनिक विफलताएँ और प्रणालीगत भ्रष्टाचार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आगे बढ़ते हुए, उद्योगों और पर्यावरण संरक्षण के बीच एक सहजीवी संबंध को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। केवल समन्वित प्रयासों और पर्यावरण अखंडता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से ही हम आगरा के गौरव को बहाल करने और सतत विकास सुनिश्चित करने की उम्मीद कर सकते हैं।

ब्लॉग 2: प्रशासन में संवेदनशीलता

एक हरित शहर के लिए एक खाका प्रशासन को पर्यावरण संबंधी चिंताओं और शहरी प्रबंधन के प्रति अधिक संवेदनशील होने की तत्काल आवश्यकता है। यहाँ कुछ प्रमुख मुद्दे दिए गए हैं जिन पर एक स्वच्छ, हरित और अधिक कुशल शहर सुनिश्चित करने के लिए तत्काल ध्यान और कार्रवाई की आवश्यकता है:

1. कचरा संग्रहण और निपटान प्रणाली: शहर में कचरा संग्रहण और निपटान के लिए एक कुशल प्रणाली होनी चाहिए। इससे न केवल पर्यावरण को साफ रखने में मदद मिलेगी बल्कि बीमारियों के प्रसार को रोकने और इसके निवासियों के लिए जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार करने में भी मदद मिलेगी।
2. दीवार से दीवार तक सड़कें: सड़कों का निर्माण दीवार से दीवार तक किया जाना चाहिए ताकि किनारों पर धूल और मलबे का जमाव न हो। इससे शहर की खूबसूरती बढ़ेगी और रखरखाव आसान हो जाएगा।
3. सड़कों पर हरियाली: जहाँ भी संभव हो, सड़कों पर हरियाली होनी चाहिए। सड़कों के किनारे पेड़–पौधे प्रदूषण के स्तर को काफी हद तक कम कर सकते हैं, छाया प्रदान कर सकते हैं और शहर का दृश्य सुधार कर सकते हैं।
4. एकीकृत विकास प्राधिकरण: सभी संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए एक एकीकृत विकास प्राधिकरण की स्थापना की जानी चाहिए। वैकल्पिक रूप से, शहरी विकास और प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने के लिए

एकीकृत कर और बुनियादी ढांचा विभाग होना चाहिए।

5. उद्यानों और पार्कों का प्रबंधनः स्वस्थ शहरी वातावरण के लिए उद्यान और पार्क महत्वपूर्ण हैं। इन हरित स्थानों के उचित प्रबंधन और रखरखाव को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे सुंदर और जनता के लिए सुलभ बने रहें।
6. निर्माण संबंधी दिशा–निर्देश और समय–सीमाः निर्माण परियोजनाओं के लिए स्पष्ट दिशा–निर्देश और सख्त समय–सीमा, लंबे समय तक व्यवधान को रोकने और समय पर पूरा होने को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं। इससे शहर के बुनियादी ढांचे को कुशलतापूर्वक बनाए रखने में मदद मिलेगी।
7. तालाबों और जलाशयों का पुनरुद्धारः आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके तालाबों और जलाशयों का पुनरुद्धार किया जाना चाहिए, ताकि उन्हें खूबसूरत शहर के स्थलों में बदला जा सके। ये जल निकाय सामुदायिक गतिविधियों के लिए केंद्र बिंदु बन सकते हैं और शहर के पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बढ़ा सकते हैं।
8. यमुना नदी की ड्रेजिंगः यमुना नदी की गहराई बढ़ाने और बाढ़ को रोकने के लिए इसकी ड्रेजिंग की जानी चाहिए। इससे जल प्रवाह को बनाए रखने और प्रदूषकों के संचय को कम करने में भी मदद मिलेगी।
9. यमुना तटों का विकासः यमुना नदी के किनारों को कैलाश से ताजमहल तक विकसित किया जाना चाहिए, जिसमें उचित गहराई और चौड़ाई निर्धारित की जानी चाहिए। इससे रिवरफ्रंट की उपयोगिता और सुंदरता बढ़ेगी।
10. बैराज और जल प्रबंधनः यमुना नदी में पर्याप्त जल स्तर सुनिश्चित करने के लिए बैराज का निर्माण किया जाना चाहिए। इससे रेत और धूल के फैलाव को रोका जा सकेगा और नदी का स्वास्थ्य बनाए रखा जा सकेगा।
11. रिंग रोड और उत्तरी बाईपास का पूरा होनाः रिंग रोड और उत्तरी बाईपास परियोजनाओं को समय पर पूरा किया जाना चाहिए। ये बुनियादी ढाँचे के विकास यातायात की भीड़ को कम करने और शहर के भीतर कनेक्टिविटी में सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
12. विश्वसनीय बिजली प्रणालीः बिजली की कोई कमी नहीं होने के बावजूद, शहर अव्यवस्थित आपूर्ति के मुद्दों से ग्रस्त है। आवासीय और औद्योगिक दोनों जरूरतों का समर्थन करने के लिए 24 घंटे की विश्वसनीय बिजली प्रणाली होनी चाहिए।
13. स्वतंत्र अनुपालन ऑडिटः उद्योगों के लिए पर्यावरण अनुपालन ऑडिट अंतरराष्ट्रीय मानकों की स्वतंत्र एजेंसियों द्वारा आयोजित किए जाने चाहिए। इससे निष्पक्ष आकलन और पर्यावरण नियमों का पालन सुनिश्चित होगा।

14. प्रदूषण मीटर की स्थापनाः उद्योगों को निगरानी प्रणालियों से सीधे जुड़े प्रदूषण मीटर लगाने चाहिए। इससे प्रदूषण के स्तर पर वास्तविक समय के आंकड़े उपलब्ध होंगे और सख्त पर्यावरण मानकों को बनाए रखने में मदद मिलेगी।
15. सहयोगात्मक पर्यावरण प्रयासः पर्यावरण हमारा जीवन है और उद्योग इसके सुधार और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पर्यावरण नीतियों का कार्यान्वयन अच्छे इरादों से प्रेरित होना चाहिए न कि शोषण से।

संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता के साथ इन क्षेत्रों को संबोधित करके, हम एक स्थायी शहरी वातावरण बना सकते हैं जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों दोनों को लाभान्वित करेगा। प्रशासन, उद्योगों और नागरिकों के बीच सहयोग इस लक्ष्य को प्राप्त करने की कुंजी है।

विषय खः देशभक्ति और राजनीति
सारांश/अनुवाद

ब्लॉग 1. उरी हमले पर विचारः राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक वास्तविकताओं को संतुलित करना

18 सितंबर, 2016 को भारतीय सेना के उरी कैंप पर आतंकवादियों ने हमला किया जिससे पूरे देश में हड़कंप मच गया। पूरा देश शोक में डूब गया और सामूहिक प्रतिक्रिया ने सुझाव दिया कि सैन्य कार्रवाई ही एकमात्र व्यवहार्य प्रतिक्रिया हो सकती है। जनता के धैर्य की परीक्षा हुई खास तौर पर नरेंद्र मोदी जैसे प्रधानमंत्री के नेतृत्व में और भाजपा द्वारा पाकिस्तान से सख्ती से निपटने के पिछले बयानों को देखते हुए स्वाभाविक रूप से उम्मीदें बहुत अधिक थीं। चुनाव प्रचार के दौरान एक के बदले दस सिर लाने, मुजफ्फराबाद में आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करने और यहाँ तक कि सीमा पर लड़ने के बजाय लाहौर में लड़ने जैसे साहसिक बयान दिए गए थे। ये वादे जनता की भावनाओं से मेल खाते थे, जिससे उच्च उम्मीदें पैदा हुई जो अभी भी बनी हुई हैं। पठानकोट और उरी की घटनाओं ने आम लोगों के धैर्य की कड़ी परीक्षा ली। ऐसी ही घटनाओं के समय सत्ता में रहे विपक्ष ने मौजूदा सरकार को उनके साहसिक दावों की याद दिलाई और तत्काल कार्रवाई की माँग की। हालांकि, जो लोग सत्ता में थे वे स्थिति की जटिलताओं और सीमाओं को समझते थे यह जानते हुए कि तत्काल कार्रवाई के लिए जनता की माँग अक्सर अवास्तविक होती थी। भारत एक सभ्य राष्ट्र होने के नाते बिना ठोस सबूत के पाकिस्तान पर आरोप नहीं लगा सकता। पाकिस्तानी सरकार की संलिप्तता को साबित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच पर सबूतों की आवश्यकता

होती है, ठीक उसी तरह जैसे किसी हत्यारे को दोषी ठहराने के लिए अदालत में सबूतों की आवश्यकता होती है।

पाकिस्तानी नागरिक होने का मतलब यह नहीं है कि पाकिस्तान इसमें शामिल है। हमें पाकिस्तानी सरकार की भूमिका साबित करने के लिए सबूत जुटाने पड़ते है। बिना सबूत के पाकिस्तान पर आरोप लगाना अनुचित है। अक्सर सरकारें कार्रवाई करना चाहती हैं, तो भी उनके काम करने पर रोक लग जाती है। उदाहरण के लिए, सरकार हुर्रियत जैसे संगठनों की गतिविधियों से पूरी तरह वाकिफ है, लेकिन सालों से प्रभावी कार्रवाई करने में असमर्थ है। बुरहानवानी की हत्या के बाद से कश्मीर महीनों से जल रहा है। यह समझना और साबित करना महत्वपूर्ण है कि क्या पाकिस्तान इन परिस्थितियों के खिलाफ कार्रवाई करने में असमर्थ है या सरकार इसमें शामिल है। अगर पाकिस्तान कार्रवाई करने में असमर्थ है, तो उसे आतंकी ठिकानों को खत्म करने के लिए भारत या अमेरिका से मदद मांगनी चाहिए। विपक्ष की भूमिका और राजनीतिक वास्तविकताएं आत्मनिरीक्षण का समय है। विपक्ष को सरकार की मजबूरियों और वास्तविकताओं को समझते हुए रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिए। अगर कांग्रेस सत्ता में वापस आना चाहती है, तो उसे यह दिखाना होगा कि सरकार चलाना विपक्ष के साहसिक दावों जितना आसान नहीं है। खासतौर पर रक्षा के मामलों में, भावुक और आवेगपूर्ण बयान मददगार नहीं होते। विडंबना यह है कि कांग्रेस, सरकार पर आक्रामक हमला करके नकारात्मक भूमिका निभा रही है। वह अधिक रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर अपनी छवि सुधार सकती है। प्रमुख रक्षा मामलों में कांग्रेस की पिछली निष्क्रियता ने उसके वर्तमान रुख को जन्म दिया है और राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक गठबंधन (एनडीए) को इस वास्तविकता को अच्छी तरह से समझना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी ने पाकिस्तान के खिलाफ अपने जोशीले चुनावी भाषणों के बावजूद अपने शपथ ग्रहण समारोह में अपने पाकिस्तानी समकक्ष को आमंत्रित किया, जिससे शांति की इच्छा का संकेत मिलता है। यह दर्शाता है कि विकास केवल शांति से ही प्राप्त किया जा सकता है, युद्ध से नहीं। चुनावों के दौरान मोदी के भाषण राजनीतिक बयानबाजी थे, लेकिन चुनाव के बाद उनके कार्यों से शांति के लिए प्राथमिकता दिखाई दी। कश्मीर पर पाकिस्तान की राजनीति उन्नत है और वे समझते हैं कि युद्ध भारत से अधिक उनके लिए खतरनाक है। पाकिस्तान, परिणामों को जानते हुए भी अपनी गतिविधियों को जारी रखता है क्योंकि वह आतंकवादियों की चपेट में है या उनके खिलाफ कार्रवाई करने में असमर्थ है। आतंकवाद की वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान आज अपनी ही आग में जल रहा है। आतंकवादी पाकिस्तान के लिए भी उतने ही खतरनाक हैं, जितने भारत, यूरोप, अमेरिका और यहाँ तक कि

सीरिया, मिस्र, इराक, ईरान, कुवैत और तुर्की जैसे इस्लामी देशों के लिए हैं। अगर पाकिस्तान इस दलदल में फंस गया है और खुद को इससे बाहर नहीं निकाल पा रहा है तो उसे इन आतंकवादियों को खत्म करने के लिए भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों से मदद मांगनी चाहिए। अगर नहीं, तो पाकिस्तान स्वेच्छा से आतंक की फैक्ट्री चला रहा है और उसका विनाश निश्चित है। ऐसे में भारतीयों को राजनीति से ऊपर उठना होगा। राजनेताओं ने राजनीतिक लाभ के लिए जो गलतियां की हैं, उन्हें सुधारना होगा। भ्रष्टाचार के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा को कमजोर करने के लिए यूपीए सरकार जिम्मेदार है। इसमें मीडिया की भी अहम भूमिका है। देश की सुरक्षा को टीआरपी की दौड़ से दूर रखना होगा। कई चौनलों पर बहस करने वाले स्वयंभू रक्षा सलाहकार फायदे से ज्यादा नुकसान करते हैं। सुरक्षा ऑपरेशन गोपनीय होते हैं और सरकार की कार्रवाइयों पर टीवी पर खुलकर चर्चा नहीं की जा सकती। रक्षा विशेषज्ञों का कर्तव्य सरकार को गोपनीय तरीके से सलाह देना है, न कि सार्वजनिक रूप से बहस करके युद्ध की भावना भड़काना। आज के युद्ध पारंपरिक सेनाओं से नहीं, बल्कि परमाणु हथियारों से लड़े जाते हैं। आज के परमाणु बम नागासाकी और हिरोशिमा पर गिराए गए बमों से कहीं ज्यादा शक्तिशाली हैं। एक बम लाखों लोगों को नष्ट कर सकता है। यह याद रखना चाहिए कि

आगरा विकास फाउंडेशन (एडीएफ) का प्रतिनिधिमंडल भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से भेंट करता हुआ दिखाई दे रहा है। इस अवसर पर आगरा के विकास और राष्ट्रीय मुद्दों पर संक्षिप्त लेकिन सारगर्भित चर्चा हुई।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान को हराने के लिए नहीं बल्कि युद्ध को रोकने के लिए परमाणु बमों का इस्तेमाल किया था। अगर परमाणु युद्ध छिड़ जाता, तो तबाही अकल्पनीय होती। राजनेताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा को राजनीति से ऊपर रखना चाहिए। जनता को सरकार को प्रेरित करना चाहिए और कवियों को सेना का मनोबल बढ़ाना चाहिए, लेकिन नेतृत्व, खासकर प्रधानमंत्री मोदी पर भरोसा बहुत जरूरी है। वे राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हर संभव कदम उठाएंगे, जैसा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने किया था जब उन्होंने साहसपूर्वक परमाणु परीक्षण किए थे।

हालांकि देश को नुकसान से बचाने के लिए किसी भी कार्रवाई पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए। हमें जरूरत पड़ने पर सैकड़ों सैनिकों की बलि देने के लिए तैयार रहना चाहिए, जैसा कि हमने उरी में किया था।

इस ब्लॉग में, पूरन डावर राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक वास्तविकताओं के बीच के नाजुक संतुलन को संबोधित करते हैं। उरी हमले पर उनके विचार ऐसे संकटों से निपटने में शामिल जटिलताओं की गहरी समझ प्रदान करते हैं। उनका विश्लेषण तात्कालिक प्रतिक्रियाओं से आगे बढ़कर दीर्घकालिक रणनीतियों और रचनात्मक राजनीतिक भूमिकाओं के महत्व पर विचार करता है। यह विचारशील दृष्टिकोण राष्ट्रीय संकट के समय में सूचित, संतुलित और धैर्यपूर्ण प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

ब्लॉग 2. भारतः अपनी ही राजनीति का शिकार

भारत को विदेशी ताकतों से नहीं, बल्कि देश की अंदरूनी राजनीति से नुकसान पहुँचाया जा रहा है। भ्रष्टाचार राजनीति के जाल में उलझ गया है। रंगे हाथों पकड़े जाने पर भी आरोपों को फर्जी टेप बताकर खारिज कर दिया जाता है, यह मीडिया की ऐसी हरकतों को हथियार बनाने की प्रवृत्ति के कारण होता है। इन आरोपों का जवाब देने की तैयारी पहले से ही शुरू हो जाती है, ताकि हर कदम राजनीतिक रूप से सोच–समझकर उठाया जा सके। जब राजनीतिक लाभ के लिए आतंकवाद का बचाव किया जाता है तो स्थिति असहनीय हो जाती है। ऐसा लगता है कि भारतीय राजनीति ने आतंकवाद को पाकिस्तान से कहीं अधिक ताकत दी है।

राजनीतिक अवसरवादियों ने खून–खराबा करते हुए और अपने एजेंडे के अनुरूप बयानबाजी करते हुए सारी हदें पार कर दी हैं। वामपंथी अक्सर अपने वास्तविक इरादों के विपरीत प्रचार करते हैं। यह सच है कि सर्जिकल स्ट्राइक को प्रचारित नहीं किया जाना चाहिए था, लेकिन इस पर संदेह जताकर विपक्ष ने इसका खुलासा और सबूत मांगना शुरू कर दिया। इसी तरह राफेल सौदे के विवरण का खुलासा करने का मतलब था हमारी सभी गुप्त जानकारी को उजागर करना। राहुल गांधी अच्छी तरह जानते हैं कि सरकार यह जानकारी नहीं दे सकती, फिर भी वे राजनीतिक लाभ के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़ करते हुए जनता को गुमराह कर रहे हैं। देश की सीमाओं और सेना को लेकर किसी भी तरह की राजनीति नहीं होनी चाहिए। मीडिया को केवल सेना द्वारा दिए गए आधिकारिक बयानों को ही प्रसारित करना चाहिए। कभी–कभी, एक कदम पीछे हटकर नीतियां बनाने की आवश्यकता होती है, और कभी–कभी अधिक जोखिम से बचने के लिए या क्षमता की कमी के कारण विपरीत निर्णय लेने पड़ते हैं। यदि मीडिया पर लगाम नहीं लगाई गई तो सरकार के फैसले घबराहट की स्थिति में लिए जाएंगे। सीमा और आतंक की राजनीति से विपक्ष को दूर रखे बिना समाधान निकालना मुश्किल है। निर्णायक लड़ाई या उचित समाधान का समय आ गया है।

ब्लॉग 3. हिंदुत्व को जगाने का प्रयास

मुसलमानों के बीच एकता सराहनीय है, लेकिन इसने उन्हें राजनीतिक शोषण के लिए भी कमजोर बना दिया है। परिणामों पर विचार किए बिना लगातार भाजपा के खिलाफ वोट करने से वे अक्सर खुद को ऐसे नेताओं या पार्टियों का समर्थन करते हुए पाते हैं जो अंततः उनके वोटों का शोषण करते हैं। भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में, छोटी जाति के नेता भी राजनीति को मजाक के रूप में देखने लगे हैं। उनका मानना है कि किसी जाति विशेष के वोट को मुसलमानों के वोटों के साथ मिलाकर वे कोई भी चुनाव जीत सकते हैं, देश को लूट सकते हैं और अराजकता फैला सकते हैं। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरण संरक्षण जैसी आवश्यक सेवाओं में गिरावट आई है। फर्जी सर्टिफिकेट और डिग्रियां शिक्षकों और डॉक्टरों से लेकर पुलिस अधिकारियों और नर्सों तक हर क्षेत्र में घुस गई हैं। जब मोदी प्रधानमंत्री बने, तो नवाज शरीफ और शेख हसीना जैसे पड़ोसी देशों के नेताओं ने बिना किसी धार्मिक भेदभाव के सद्भावना के संकेत दिए। भारतीय मुसलमानों का राजनीतिक रुख नहीं बदला। मोदी ने हर मंच पर मुसलमानों का नहीं, बल्कि आतंकवाद का लगातार विरोध किया। लेकिन राजनीति एक जटिल खेल है जहां केवल नेक इरादों से चुनाव नहीं जीते जा सकते। रणनीति बदलनी पड़ी, इसलिए हिंदुओं को फिर से जगाने का अभियान शुरू हुआ। यह रणनीति पिछले चुनावों में स्पष्ट थी और संभवतः अन्य दलों और मुसलमानों को वोट के व्यापार के अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करेगी। बदलाव पहले से ही दिखाई दे रहा है, राहुल गांधी जैसे नेता मंदिरों में जा रहे हैं और भजन गा रहे हैं। सांप्रदायिक उन्माद तभी कम होगा जब मुसलमान सांप्रदायिक आधार पर

मतदान करना बंद कर देंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें केवल भाजपा को वोट देना चाहिए, बल्कि उन्हें ऐसे अच्छे नेताओं को वोट देना चाहिए जो देश के सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखते हों। सांप्रदायिक जुड़ावों पर देश के कल्याण को प्राथमिकता देकर, हम सांप्रदायिक सोच को समाप्त कर सकते हैं। हिंदू धर्म सिखाता है किः

- **पूरा विश्व एक परिवार है – वसुधैव कुटुम्बकम।**
- **ईश्वर एक है लेकिन पूजा के विभिन्न तरीके एकहुविप्रः बोधपरंति।**
- **यह सभी धर्मों के बीच समानता की वकालत करता है – सर्वधर्म, समभाव।**
- **सभी के सुख की कामना करता है, न कि केवल हिंदुओं की सर्वे भवन्तु सुखिनः।**
- **जय भारत, जय हिंद।**

ब्लॉग 4. मोदी जी ने पहले ही दिन अच्छे इरादे दिखाए

जिस क्षण से मोदी जी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया गया, उन्होंने समावेशी शासन के लिए अपने अच्छे इरादों और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। अपने पहले ही दिन उन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम, सर्वधर्म समभाव (सभी धर्मों के लिए समान सम्मान) और एकहु विप्रः बोध परंति (एक सत्य, अनेक मार्ग) के सिद्धांतों पर आधारित नीतियां बनाई। ये सिद्धांत एकता और समानता के उस लोकाचार को दर्शाते हैं जिसे उन्होंने अपने नेतृत्व में लाने का लक्ष्य रखा था। मोदी जी ने गुजरात में मुसलमानों की समृद्धि को उजागर करते हुए कई तथ्य प्रस्तुत किए। उनके नेतृत्व में गुजरात भारत का एकमात्र ऐसा राज्य बन गया, जहाँ मुसलमानों द्वारा की जाने वाली सरकारी नौकरियों की संख्या उनकी आबादी के अनुपात से अधिक थी। यह समावेशिता पुलिस बल तक फैली हुई थी, जहाँ बड़ी संख्या में मुसलमान कार्यरत थे।

सभी समुदायों के लिए समान अवसर और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने की उनकी प्रतिबद्धता ने एक एकीकृत भारत के उनके दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया, जहाँ हर नागरिक, चाहे वह किसी भी धर्म का हो, राष्ट्र के विकास में योगदान दे सके और फल–फूल सके।

ब्लॉग 5. चुनौतियों के अनुकूल ढलनाः मोदी–वाजपेयी दृष्टिकोण

'अगर घी सीधी उंगलियों से नहीं निकाला जा सकता है तो इसे टेढी उंगलियों से निकालना होगा।' यह कहावत नरेंद्र मोदी और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे नेताओं द्वारा अपनाई गई अनुकूलन रणनीतियों को पूरी तरह से दर्शाती है। जटिल राजनीतिक परिदृश्यों को नेविगेट करने की उनकी क्षमता उन्हें अन्य नेताओं से अलग करती है। इसके विपरीत मैंने आज एक भी विपक्षी नेता नहीं देखा जो वास्तव में देश के बारे में सोचता हो या बोलता हो। उनके मुँह से केवल जोड़–तोड़ और चालें सुनाई देती हैं।

मोदी ने पड़ोसी पाकिस्तान के साथ संबंध बनाने के लिए सभी प्रयास किए, व्यक्तिगत रूप से नवाज शरीफ के घर गए और हर मुस्लिम देश से बातचीत की। उन्होंने 'वसुधैव कुटुम्बकम' (दुनिया एक परिवार है) और 'एकहु विग्रह बोध परंती' (ईश्वर एक है, पूजा के तरीके अलग–अलग हैं) की अवधारणा पर जोर दिया। यहाँ तक कि मुसलमानों के प्रति संघ की भाषा भी बदलने लगी। फिर भी गंदी राजनीति ने उन्हें उनके लक्ष्यों से और दूर धकेल दिया। राजनीति का सार यही हैः अगर सीधे–सादे तरीके काम नहीं करते तो व्यक्ति को अनुकूलन करना चाहिए। यही कारण है कि हिंदू एजेंडे को सबसे आगे लाना पड़ा। समझने और गंभीरता से सोचने की क्षमता इन नेताओं को अलग करती है। हो सकता है कि आपका नजरिया व्यापक हो, जबकि मेरा नजरिया सीमित हो। अभी के लिए, आप संतुष्ट हो सकते हैं, शायद इसलिए कि आपको लगता है कि मोदी का मौजूदा दृष्टिकोण लंबे समय तक नहीं चलेगा। इस गतिशीलता को समझने के लिए नेताओं के सामने आने वाली जटिल वास्तविकताओं को स्वीकार करना होगा। यह हमेशा सबसे आसान रास्ता चुनने के बारे में नहीं होता, बल्कि अधिक से अधिक अच्छे को प्राप्त करने के तरीके खोजने के बारे में होता है, भले ही इसका मतलब अपरंपरागत तरीकों का उपयोग करना हो। यह अनुकूलनशीलता और रणनीतिक सोच ही प्रभावी नेतृत्व को परिभाषित करती है।

ब्लॉग 6. दिल्ली नेतृत्वहीन है

भाजपा ने केजरीवाल और आम आदमी पार्टी (आप) को प्रभावी रूप से सरल विजय दे दी है। सात सांसद होने के बावजूद, दिल्ली में मजबूत नेतृत्व का अभाव है। एक समय था जब दिल्ली में देश के कुछ सबसे प्रतिष्ठित सांसद थे, जैसे बलराज मधोक, मनोहर लाल सोढ़ी, विजय कुमार मल्होत्रा और डॉ. भाई महावीर। यहाँ तक कि अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी जैसे दिग्गज भी दिल्ली का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। मदन लाल खुराना और साहिब सिंह वर्मा जैसे जुझारू नेता मुख्यमंत्री रह चुके हैं। मौजूदा स्थिति के पीछे क्या कारण है, जहां भारत की राजधानी अपने पारंपरिक भाजपा के मूल वोट को छोड़कर किराए के

गायकों और अभिनेताओं पर निर्भर है। भाजपा अब भोजपुरी और पूर्वांचली गायकों, अभिनेताओं और राजनीतिक दलबदलुओं पर निर्भर है। यह एक बड़ा झटका था जब मजबूत नेता और दिल्ली के मूल निवासी दिवंगत अरुण जेटली, जो कभी दिल्ली विश्वविद्यालय के अध्यक्ष थे, को दिल्ली छोड़कर अमृतसर से चुनाव लड़ना पड़ा। क्या दिल्ली में जाने–पहचाने, मजबूत चेहरे उतारना बेहतर नहीं होता? दिल्ली निगम ने शहर की छवि को धूमिल कर दिया है और अब यह देश के सबसे भ्रष्ट नगर निकायों में से एक है। जबकि मोदी के नाम पर सांसद चुने जा सकते हैं, राज्यों को फिर से चुने जाने के लिए परिणाम देने की जरूरत है। अगर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो उत्तर प्रदेश में भी विफलता की स्थिति बन सकती है। ऐसा लगता है कि मोदी जी सरकारी आंकड़ों पर बहुत अधिक भरोसा कर रहे हैं, जो भ्रामक हो सकते हैं।

शौचालय, पीएम आवास योजना, मुद्रा लोन और बिजली कनेक्शन पर रिपोर्ट अक्सर फर्जी डेटा दिखाती हैं। इन्हीं नौकरशाहों ने एक बार संजय गांधी को नसबंदी के गलत आंकड़े दिए थे। केंद्रीय मंत्रालयों को छोड़कर भाजपा शासित राज्यों में भ्रष्टाचार व्याप्त है। बड़े घोटाले भले ही आम लोगों को सीधे प्रभावित न करें, लेकिन उनके दैनिक जीवन में कोई राहत नहीं है। चेहराविहीन कर विभाग ने हाल के दिनों में शोषण को बढ़ा दिया है। पर्यावरण नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन की कमी के कारण उद्योग बंद हो रहे हैं और बेरोजगारी बढ़ रही है। उत्तराखंड को स्विट्जरलैंड में बदलने, साबरमती जैसे वाटरफ्रंट को विकसित करने या गंगा की सफाई करने की बात हो, लोग स्पष्ट नतीजों पर भरोसा करते हैं।

फिलहाल इन पहलों के लिए न तो कोई स्पष्ट दिशा है और न ही कोई ठोस योजना। स्मार्ट सिटी परियोजना का भविष्य अनिश्चित है, अगर इसे जल्द ही साकार नहीं किया गया तो केजरीवाल जैसा व्यक्ति भी इसे मात दे सकता है। दिल्ली चुनाव परिणाम एक कठोर सबक है।

भारतीय राजनीति संगठन आधारित से ज्यादा नेतृत्व आधारित है। चुनाव कभी नेहरू, इंदिरा, मायावती, मुलायम और अब मोदी जी जीतते रहे हैं। मोदी जी का नेतृत्व बेमिसाल है और उनके फैसले अभूतपूर्व हैं, लेकिन ये संवेदनशील मुद्दे तभी सुलझ सकते हैं जब ठोस विकास दिखाई दे।

30 जून तक उत्तर प्रदेश को गड्ढा मुक्त घोषित करने से ज्यादा हास्यास्पद कुछ नहीं है। सिर्फ घोषणाएँ और दावे, नहीं, बल्कि वास्तविक काम होना चाहिए। जब सड़कें वाकई गड्ढों से मुक्त होंगी, तो हर कोई, यहाँ तक कि विकलांग (मोदी जी के दिव्यंग) भी, इस पर ध्यान देंगे और किसी को बताने की जरूरत नहीं होगी क्योंकि उनकी छड़ी अब गड्ढे में नहीं फँसेगी।

विषय गः उद्यमिता के जरिए सामुदायिक कल्याण

ब्लॉग 1. हर घर हरा–भरा हो सकता है

एक ऐसे भविष्य की कल्पना करें जहाँ हर छत हरी–भरी हो, जहाँ हर घर में जैविक सब्जियाँ उगें। यह विजन न सिर्फ हासिल किया जा सकता है बल्कि बागवानों की आय को दोगुना भी कर सकता है जबकि उनकी लागत को एक–चौथाई तक कम कर सकता है।

इस विजन को हकीकत में बदलने के लिए हमें आगरा के सभी बागवानों को पंजीकृत करके शुरुआत करनी होगी। एक समर्पित ऐप से जोड़कर, हम उन युवाओं को प्रशिक्षित कर सकते हैं जो बागवान के रूप में काम करना चाहते हैं। इन बागवानों को आधुनिक उपकरणों की एक किट दी जाएगी जो साइकिल या मोटरसाइकिल पर आसानी से फिट हो जाएँगी।

इस पहल की खूबसूरती इसकी समावेशिता है। यहाँ तक कि सबसे गरीब व्यक्ति भी अपनी छतों पर सब्जियाँ उगा सकता है। अगर उनके पास बर्तन नहीं हैं तो वे टूटी हुई बाल्टियों का इस्तेमाल कर सकते हैं, अगर बाल्टियाँ नहीं हैं, तो बोतलें, अगर बोतलें नहीं हैं, तो बोरियाँ। संभावनाएँ अनंत हैं।

एक माली जो हफ्ते में एक बार आता है और हर विजिट के लिए 150–200 रुपये लेता है, उस पर एक परिवार को महीने में सिर्फ 600–800 रुपये का खर्च होता है। अगर एक माली रोज 10–12 विजिट करे और औसतन 150–200 रुपये प्रति विजिट कमाए, तो वह महीने में 15,000 से 20,000 रुपये तक कमा सकता है। सब्जियों का लेन–देन या बिक्री ऐप के माध्यम से किया जाए, तो यह सभी के लिए फायदेमंद हो सकता है।

इस पहल के लिए डिजिटल युग की तकनीक को अपनाने और सेवाओं को कुशलतापूर्वक व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। आज जिन्हें माली की जरूरत है उन्हें अक्सर माली नहीं मिल पाता, जबकि माली काम पाने के लिए संघर्ष करते हैं। उन्हें ऐप के जरिए जोड़कर हम एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र बना सकते हैं जो निवासियों और माली दोनों को फायदा पहुँचाए, जिससे आगरा का हर घर हरा–भरा हो जाए।

ब्लॉग 2. रोजगार ही देश का असली विकास है

रोजगार ही सच्चे राष्ट्रीय विकास की आधारशिला है। पीढ़ियों से चली आ रही हमारी परंपराएँ बिना किसी कारण के नहीं उभरी हैं। दोस्ती में उपहार जरूरी नहीं है फिर भी मेरा मानना है कि त्योहारों के दौरान उपहारों का आदान–प्रदान जरूरी

है। यह विचार किसी और को ऐसा करते हुए देखने या उधार लेने के बारे में नहीं है, बल्कि अपनी क्षमता के अनुसार उपहार देने के बारे में है। त्योहार और शादियाँ देश की आर्थिक रीढ़ हैं, जो कई लोगों को रोजगार प्रदान करती हैं। उत्पाद चाहे किसी बड़ी कंपनी का हो या किसी छोटे कारीगर का, मजदूर से लेकर व्यवसायी तक सभी को लाभ होता है। यह हमारी सामूहिक आजीविका है। हमें गरीबों का ख्याल रखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी पड़ोसी भूखा न रहे। जबकि हम एक दिन का भोजन दे सकते हैं, स्थायी आजीविका प्रचुर उत्पादन और व्यय से आती है। शादियों में भी अपनी क्षमता के अनुसार खुलकर खर्च करने से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है और रोजगार पैदा होते हैं। यही सच्चा विकास है।

बेरोजगारी के मूल कारणों को दूर करने के लिए हमें अपने सरकारी शिक्षण संस्थानों में सुधार करने की आवश्यकता है। वे जीर्ण–शीर्ण हो गए हैं, फर्जी डिग्री, फर्जी शिक्षक और फर्जी छात्र पैदा कर रहे हैं, जिससे बेरोजगारी का चक्र चल रहा है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना होना चाहिए, न कि केवल नौकरी हासिल करना। जब कोई वास्तव में ज्ञानवान होता है, तो वह नौकरी नहीं मांगेगा, इसके बजाय, वह दूसरों के लिए रोजगार पैदा करेगा। वास्तविक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करके और परंपराओं और उत्सवों के माध्यम से आर्थिक भागीदारी को प्रोत्साहित करके, हम सभी के लिए वास्तविक विकास और समृद्धि को बढ़ावा दे सकते हैं।

ब्लॉग 3. शिक्षा से नौकरियाँ पैदा होनी चाहिए, नौकर नहीं

शिक्षा और काम के बारे में सोचने में एक बुनियादी अंतर है। अपनी स्नातकोत्तर और कानून की डिग्री पूरी करने के बाद, मैंने जूते सिलना शुरू कर दिया। मैंने जूते सिलने से लेकर पैकिंग तक का सारा काम खुद ही किया, वो भी उस समय जब केवल निम्न जाति के लोग ही जूते बनाने का काम करते थे। आज मैं एक निर्यातक हूँ, जो 2,000 लोगों को नौकरी देता हूँ। एक अलग सोच के साथ, मैं शायद किसी बैंक या कार्यालय में काम कर रहा होता।

अगर हमें अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद भी नौकरी माँगने की जरूरत है. तो हमारी शिक्षा अधूरी है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना होना चाहिए, न कि केवल नौकरी पाना। सच्चे ज्ञान के साथ, हम दस अन्य लोगों के लिए नौकरी पैदा करेंगे, न कि खुद के लिए नौकरी माँगेंगे।

विदेशों में, किसी भी तरह का काम करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती। यहाँ तक कि बीएमडब्लू के मालिक भी अपने खाली समय में खुद गाडी चलाने से गुरेज नहीं करते। हाईस्कूल के छात्र पार्ट–टाइम काम करके अपनी फीस कमाते हैं, घास

काटने जैसे काम करके। वहाँ पढ़ाई के बाद भी शारीरिक श्रम करने में कोई शर्म नहीं है। हमें इस मानसिकता को अपनाने की जरूरत है। शिक्षा हमें अवसर पैदा करने के लिए सशक्त बनानी चाहिए, न कि उन्हें पाने तक सीमित रखना चाहिए। ऐसा माहौल बनाकर जहां कोई भी काम छोटा न समझा जाए, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारी शिक्षा प्रणाली सिर्फ कर्मचारी ही नहीं, बल्कि उद्यमी और नवोन्मेषक भी पैदा करे।

विषय घः विचारों को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना

ब्लॉग 1. राजनीति मेरी महत्वाकांक्षा नहीं है

राजनीति कभी भी मेरी महत्वाकांक्षा नहीं रही। यह मेरे स्वभाव के मौलिक रूप से भिन्न है। भारतीय राजनीति में पारदर्शिता एक दुर्लभ गुण है। निर्यात व्यवसाय में शामिल होने से मुझे दुनिया भर के विभिन्न शहरों और प्रणालियों को करीब से देखने का अवसर मिला। मेरी सक्रिय और चिंतनशील प्रकृति मुझे इन अवलोकनों को व्यक्तिगत रूप से लागू करने और विभिन्न मंचों पर हमारे शहर और देश के सुधार के लिए सुझाव देने के लिए प्रेरित करती है।

हाल ही के दिनों में, शहर के कुछ नेक दिल और संवेदनशील मित्रों ने मेयर पद के लिए चुनाव लड़ने के विचार के साथ मुझसे संपर्क किया है। मैंने राजनीति की वास्तविकताओं और पेचीदगियों को समझाने की पूरी कोशिश की। मैंने कभी भी आवेदन करके कोई पद नहीं माँगा, केवल आमंत्रण के आधार पर सेवा की है। मैंने उनसे कहा कि अगर कोई आधिकारिक निमंत्रण आता है, तो मैं उस पर विचार करूँगा।

संयोग से, लगभग उसी समय मुझे कई सामाजिक कार्यक्रमों की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया गया था, जिसमें राज्यपाल द्वारा आयोजित दो कार्यक्रम भी शामिल थे। इससे अफवाहें फैली कि मैं सक्रिय राजनीति में प्रवेश कर चुका हूँ. जिससे दुश्मनी और गलतफहमी की भावनाएँ भड़क उठीं।

मेरे लिए मेरे मित्रों और शुभचिंतकों का स्नेह और समर्थन सर्वोपरि है। राजनीति या राजनीतिक पद मेरे लिए कोई महत्व नहीं रखते। मेरे पास अपने व्यवसाय, उद्योग और विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से योगदान देने के लिए बहुत कुछ है। मैं भगवद गीता की शिक्षाओं में दृढ़ता से विश्वास करता हूँः 'जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है, जो होगा वह अच्छा होगा।' मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं कोई राजनीति शुरू नहीं कर रहा हूँ न ही ऐसा करने की मेरी कोई महत्वाकांक्षा है। राजनीति में मेरे शामिल होने से स्थिति नहीं बदलेगी।

सब कुछ अपने समय में घटित होता है। हर घटना मानव विकास के लिए एक दिव्य योजना के हिस्से के रूप में है। मेरा ध्यान अपने व्यवसाय और सामाजिक प्रतिबद्धताओं पर रहता है, जहाँ मुझे विश्वास है कि मैं सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता हूँ।

ब्लॉग 2. आरक्षण का उद्देश्यः एक कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया

अगर आरक्षण का लाभ उठाने के बाद भी किसी को जीवन भर दलित ही रहना पड़े तो आरक्षण का क्या मतलब है, यह प्रश्न भारत में आरक्षण प्रणाली के साथ एक बुनियादी मुद्दे को छूता है। यदि आरक्षण के बावजूद किसी व्यक्ति को जीवन भर दलित के रूप में पहचाना और व्यवहार किया जाता है, तो यह व्यवस्था की प्रभावशीलता के बारे में क्या कहता है। आरक्षण नीति दलित समुदाय के उत्थान के लिए लागू की गई थी, जो शिक्षा, रोजगार और सामाजिक एकीकरण के अवसर प्रदान करती है, जिन्हें ऐतिहासिक रूप से नकारा गया था। इसका उद्देश्य एक लक्ष्य तक पहुँचने का साधन होना था, न कि अपने आप में एक लक्ष्य। यदि उत्थान की प्रक्रिया सामाजिक स्थिति और स्वीकृति में बदलाव नहीं लाती है, तो इसकी प्रभावशीलता पर सवाल उठाया जाना चाहिए।

आरक्षण का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि उत्थान और सशक्तीकरण की अवधि के बाद, हाशिए के समुदायों के व्यक्ति दूसरों के साथ समान स्तर पर खड़े हो सकें। पिछले 70 वर्षों में, कोई यह उम्मीद कर सकता है कि कुछ दलित उच्च सामाजिक स्तर पर चले गए होंगे। हालाँकि, यदि आरक्षण द्वारा प्रदान किए गए अवसरों के बावजूद उन्हें दलित के रूप में माना और व्यवहार किया जाता है तो इसका मतलब है कि यह एक गहरा सामाजिक मुद्दा है जिसे संबोधित करने की आवश्यकता है। यदि आरक्षण प्रणाली उस पहचान को बनाए रखती है जिसे वह खत्म करना चाहती है, तो इसका उद्देश्य ही कमजोर हो जाता है। लक्ष्य एक ऐसा समाज बनाना होना चाहिए, जहाँ एक निश्चित अवधि के बाद, व्यक्तियों की पहचान उनकी जाति से नहीं बल्कि उनकी योग्यता और क्षमताओं से की जाए। यदि जन्म से दलितों को हमेशा दलित ही रहना है, तो आरक्षण प्रणाली का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह वास्तव में एकीकरण और समानता के अपने इच्छित उद्देश्य को प्राप्त करने की ओर बढ़ भी रही है या नहीं।

ब्लॉग 3. धर्म, आस्था और अपरिवर्तनीयता

'लफ्ज राजी नहीं हैं, अल्फाज बनने को... एक काम करो, तुम मेरी खामोशी पढ़ लो' चुप्पी के अपने गुण हैं, लेकिन ऐसे समय भी आते हैं, जब हम अनिच्छुक होने पर

भी अपने विचारों को शब्दों में व्यक्त कर देते हैं। चुप्पी हमेशा हमारी मान्यताओं की गहराई को व्यक्त नहीं कर सकती है, और इस बात का जोखिम भी रहता है कि हमारी चुप्पी को गलत समझा जा सकता है या गलत व्याख्या की जा सकती है।

मैंने कभी यह दावा नहीं किया कि हिंदू धर्म सबसे अच्छा धर्म है। धर्म आस्था का विषय है और आस्था अपरिवर्तनीय है, जो इसमें पैदा होता है, उसका धर्म सबसे अच्छा होता है। धर्मों के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होनी चाहिए। इसके बजाय, अगर हमें किसी दूसरे धर्म में कुछ सराहनीय लगता है, तो हमें उसे अपना लेना चाहिए।

उदाहरण के लिए, गुरु ग्रंथ साहिब विभिन्न धर्मों के ज्ञान का एक सम्मेलन है। धर्मांतरण के साथ ऐतिहासिक संघर्षों और अपने धर्म की रक्षा के लिए किए गए बलिदानों के बावजूद, सिखों ने कभी भी कुरान का अपमान नहीं किया, इसके बजाय, इसकी शिक्षाएँ गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं। यह समावेशिता ही है जिसका मैं 'अपनी लकीर बड़ी' से मतलब रखता हूँ –अपने स्वयं के धर्म की महानता मानता हूँ। जितना अधिक हम अपने धर्म को अपनाएँगे उतना ही हम गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करेंगे। ऐसी सेवा के कार्यों से ही कोई भी धर्म, समाज और देश प्रगति करेगा।

संक्षेप में, किसी धर्म का सही मापदंड दूसरों पर उसकी श्रेष्ठता में नहीं है, बल्कि यह है कि वह मानवता की कितनी अच्छी तरह सेवा करता है। प्रत्येक धर्म की अपनी अनूठी ताकत होती है और एक–दूसरे से सीखकर हम सभी आगे बढ़ सकते हैं। विभिन्न धर्मों के गुणों को अपनाने से हम अपने धर्म को समृद्ध कर सकते हैं और हमें अधिक दयालु और समावेशी दुनिया की ओर ले जा सकते हैं।

ब्लॉग 4. सदी की सर्वाधिक भयानक त्रासदी

कोविड–19 महामारी सदी की सर्वाधिक भयानक त्रासदी के रूप में खड़ी है. जो समय पर लिए गए साहसिक निर्णयों, प्रेरक कार्यों और सेवा की भावना से चिह्नित है। 22 मार्च, 2020 को, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 130 करोड़ लोगों के देश को बंद करने का अभूतपूर्व निर्णय लिया। यह एक असंभव उपलब्धि लग रही थी लेकिन अपनी असाधारण प्रतिभा और कड़े फैसलों के लिए जाने जाने वाले मोदी ने राजनीतिक और धार्मिक विभाजनों के बावजूद जनता को इसका पालन करने के लिए प्रेरित किया। उनके नेतृत्व ने उन्हें न केवल भारत में बल्कि वैश्विक मंच पर भी सबसे आगे रखा।

एक दिन के पूर्ण लॉकडाउन की सफलता के बाद भारत ने दो और 21 दिवसीय लॉकडाउन देखे। इस कठिन चुनौती को दृढ संकल्प के साथ स्वीकार किया गया, कई राज्यों ने तो अत्यधिक संक्रमित क्षेत्रों में लॉकडाउन को और बढ़ाने

पर भी विचार किया। जहाँ शुरुआती उत्साह सराहनीय था, वहीं इसने अदूरदर्शी कार्यान्वयन को भी जन्म दिया, जो एक आम समस्या है जब उत्साह व्यावहारिकता पर हावी हो जाता है।

भारत में, नौकरशाही कार्यान्वयन हमेशा एक चुनौती रहा है इस बार, इसकी शुरुआत सकारात्मकता, सार्वजनिक अनुशासन और पुलिस की एक नई भूमिका के साथ हुई। पुलिस, जिसे अक्सर अधिकार के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, ने एक नरम पक्ष दिखाया, कम गुस्से और अधिक सहानुभूति के साथ जरूरतमंदों तक पहुँची। वे हर घर में भोजन और राशन वितरित करने में कामयाब रहे, इस तरह के बड़े पैमाने पर संचालन के साथ आने वाली स्वाभाविक शिकायतों और अक्षमताओं के बावजूद एक प्रभावशाली उपलब्धि रही।

चमड़ा निर्यात परिषद (CLE) के पुरस्कार समारोह में श्री पूरन डावर सम्मानित हुए।

शुरुआती सफलता के बावजूद, गलतियाँ हुई। उत्साह कभी–कभी चेतना की कमी को जन्म दे सकता है जैसा कि कुछ लॉकडाउन उपायों के कार्यान्वयन के साथ देखा गया है यदि एक भी कोविड–19 पॉजिटिव मरीज पाया जाता था, तो अस्पताल को सील कर दिया जाता था और मरीजों, तीमारदारों, डॉक्टरों और नर्सिंग स्टाफ को कई दिनों तक बिना उचित जांच के अस्पताल में बंद कर दिया जाता था। इससे मरीजों की मौत वायरस से नहीं बल्कि चिकित्सा देखभाल की कमी से हुई।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के दिशा–निर्देशों और विश्व स्वास्थ्य संगठन की सलाह में सुझाव दिया गया था कि यदि मरीज पॉजिटिव पाए जाते हैं तो उन्हें दूसरे अस्पतालों में शिफ्ट किया जाए और प्रभावित क्षेत्रों को 48 घंटों के भीतर सैनिटाइज किया जाए। इन उपायों का पर्याप्त रूप से पालन नहीं किया गया, जिसके कारण गंभीर परिणाम सामने आए।

शुरू में, कोविड–19 टेस्ट केवल सीमित क्षमता वाले सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध थे, अक्सर एक शहर में प्रतिदिन 50–100 टेस्ट भी नहीं होते थे। इस सीमित क्षमता ने निजी अस्पतालों को पंगु बना दिया, जो पहले से ही मरीजों की जांच किए बिना उन्हें भर्ती करने में असमर्थ थे। नतीजतन, कई निजी अस्पतालों ने अपने दरवाजे बंद कर दिए, जिससे पहले से ही तनावग्रस्त सरकारी अस्पतालों को ओवरफ्लो को संभालने के लिए मजबूर होना पड़ा। उदाहरण के लिए, आगरा के एस एन मेडिकल कॉलेज का आपातकालीन विभाग सिस्टम की कमियों की एक कड़ी याद दिलाता है, जिससे अक्सर झोलाछाप डॉक्टरों को प्राथमिकता दी जाती है।

क्वारंटीन सेंटर एक और ऐसा क्षेत्र था जहां कार्यान्वयन कम हो गया। स्कूल, कॉलेज और मैरिज हॉल को नहाने, कपड़े धोने या हाउसकीपिंग की पर्याप्त सुविधाओं के बिना क्वारंटीन सेंटर में बदल दिया गया। बुनियादी सुविधाओं की कमी और बंद दरवाजों के कारण खाने–पीने की चीजें गेट से बाहर फेंकी जाने लगीं और दुनियाभर में खराब हालात की तस्वीरें फैलने लगीं, जिससे भारत की छवि खराब हुई।

दैनिक वेतन भोगियों पर लॉकडाउन का गहरा असर पड़ा, जिन्होंने सबसे चुनौतीपूर्ण समय का सामना किया। सरकार की मंशा अच्छी थी, उसका लक्ष्य सब कुछ मुफ्त देकर राहत पहुंचाना था। इस दृष्टिकोण ने अधिक खर्च करने की क्षमता वाले लोगों को घटिया जीवन स्थितियों में रहने के लिए मजबूर कर दिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली उत्तर प्रदेश सरकार ने मानवीय पहलुओं और किफायती इलाज पर जोर दिया, लेकिन वास्तविकता अधिक व्यावहारिक समाधानों

की मांग करती थी।

निजी लैब में कोविड–19 जांच की कीमत शुरू में 4,500 रुपये निर्धारित की गई थी, जिसे उत्तर प्रदेश सरकार ने घटाकर 2,500 रुपये कर दिया। इसने नीति–निर्माण में दूरदर्शिता की आवश्यकता तथा सार्वजनिक राहत और व्यावहारिक स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं के बीच संतुलन पर प्रकाश डाला।

कोविड–19 के खिलाफ लड़ाई जारी है, जिसके लिए मानसिकता और सिस्टम दोनों में बदलाव की जरूरत है। निजी और सरकारी दोनों ही चिकित्सा प्रणालियों में व्यापक सुधार की जरूरत है।

गंभीर रोगियों को बिना जांच के परिणाम का इंतजार किए अस्पताल में भर्ती होने की अनुमति दी जानी चाहिए और सभी चिकित्सा कर्मचारियों के लिए पीपीई किट का अनिवार्य उपयोग करके संक्रमण के डर को कम किया जाना चाहिए। क्वारंटीन केंद्रों को निजी क्षेत्र में विकल्प प्रदान करने चाहिए, जिससे व्यक्ति अपने बजट के आधार पर चुनाव कर सके, जिससे सरकारी सुविधाओं पर बोझ कम हो। चुनौतियों के बावजूद भारत का भविष्य उज्ज्वल है।

अगले 40 वर्षों को तपस्या और विकास की अवधि के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें 2025 तक अर्थव्यवस्था के 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। आगे की राह के लिए महामारी के सबक से सीखने, सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे और नीति कार्यान्वयन दोनों में सुधार करने की जरूरत है ताकि एक लचीला और समृद्ध राष्ट्र बनाया जा सके।

विषय ङः उद्योग, चमड़ा उद्योग

ब्लॉग 1. हम एथलीजर जैसे नए रुझानों और पड़ोसी देशों से प्रतिस्पर्धा का सामना कैसे कर सकते हैं?

वैश्विक स्तर पर हम उत्पाद श्रेणियों और उपभोक्ता स्वाद में बदलाव देख रहे हैं, जो भारत के लिए बाजार की हिस्सेदारी को कम कर रहा है। हम एथलीजर जैसे नए रुझानों और पड़ोसी देशों से प्रतिस्पर्धा का सामना कैसे कर सकते हैं भारत पारंपरिक रूप से चमड़े के फॉर्मल और स्मार्ट कैजुअल में अपनी खासियत के लिए जाना जाता है। अब फैशन में फ्लाई निट, एथलीजर, आराम और स्पोर्टी लुक की ओर रुझान है। वर्तमान में, पुरुषों के 15 प्रतिशत जूतों में फ्लाई निट का दबदबा है, जिसने निस्संदेह भारत के लिए बाजार हिस्सेदारी को कम कर दिया है। प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए, हमें आगे के विकास के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए:

1. उत्पाद श्रेणियों की फिर से रणनीति बनाना

चीन, वियतनाम और कंबोडिया जैसे देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए, हमें अपनी उत्पाद श्रेणियों की फिर से रणनीति बनाने की आवश्यकता है। हमारे पास पहले से ही कपड़ा, कच्चे माल में बढ़त हासिल है जो कोई महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं है। इस उत्पाद श्रेणी में नवाचार, आराम और तार्किक सिद्धांत और पैमाने द्वारा समर्थित एक आकर्षक कहानी महत्वपूर्ण हैं। इस तरह की उत्पाद श्रेणियों में प्रतिस्पर्धी होने में पैमाना सबसे बड़ी चुनौती है। हमारे पास एक बड़ा घरेलू बाजार है और हमें सक्रिय कदम उठाने की जरूरत है। संयुक्त उद्यम तकनीकी और विपणन सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

2. चमड़े के उत्पादों में अपनी ताकत का लाभ उठाना

हमें चमड़े के उत्पादों में अपनी ताकत को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। चमड़े के औपचारिक कपड़ों की बाजार हिस्सेदारी कम हो गई है लेकिन यह अभी भी काफी है। हमें अपनी बाजार की हिस्सेदारी बढ़ाने की जरूरत है और कम से कम मौजूदा आँकड़ों को बनाए रखना होगा। चमड़े की वैश्विक स्तर पर अभी भी काफी मांग है और उत्पाद नवाचार और आराम सुविधाओं पर ध्यान केंद्रित करके हम प्रतिस्पर्धी बने रह सकते हैं।

3. भारतीय आपूर्ति श्रृंखला का स्वॉट विश्लेषण

हमें सबसे बड़ी आबादी होने की अपनी ताकत को नहीं भूलना चाहिए, जो चमड़े के उत्पादों के लिए कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करती है। हालाँकि बाजार सिकुड़ गया है, लेकिन चमड़ा कभी खत्म नहीं होने वाला है। आराम सुविधाओं के साथ उत्पाद नवाचार और हमारी विशाल श्रम शक्ति महत्वपूर्ण ताकत बनी हुई है। बढ़ती श्रम लागत के बावजूद, हम प्रतिस्पर्धियों पर बढ़त रखते हैं। हमें फ्लाई निट के बदलते फैशन ट्रेंड का लाभ उठाने की जरूरत है, जो चमड़े की तुलना में ज्यादा किफायती हैं। भारत में एक बढ़ता हुआ आय वर्ग और एक बड़ी आबादी है जो महंगे जूते नहीं खरीद सकती। फ्लाई निट एक किफायती विकल्प हो सकता है। हमें अपने राजनेताओं से सीखना चाहिए कि कमजोरियों को ताकत में कैसे बदला जाए। चुनौतियाँ अवसर लाती हैं और बदलाव की शुरुआत करती हैं।

4. भारतीय विनिर्माण को निर्यात में 150–200 करोड़ से बढ़ाकर 400–500 करोड़ करना

मध्यम स्तर की फैक्ट्रियों को 150–200 करोड़ से बढ़ाकर 400–500 करोड़ करना

और उद्योग को अगले स्तर तक ले जाना एक बड़ा सवाल है। मुख्य बिंदुओं में उत्पाद नवाचार, ब्रांडिंग और प्रौद्योगिकी–समर्थित कहानियाँ शामिल हैं। यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने फंड को रियल एस्टेट में न लगाएँ, बल्कि अपने काम को 100 प्रतिशत दें। यह ध्यान विनिर्माण क्षेत्र के मौजूदा 400 बिलियन से ट्रिलियन तक बढ़ने के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद कर सकता है। इन रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करके और अपनी अंतर्निहित शक्तियों का लाभ उठाकर, भारत मौजूदा चुनौतियों का सामना कर सकता है और वैश्विक बाजार में मजबूत बनकर उभर सकता है।

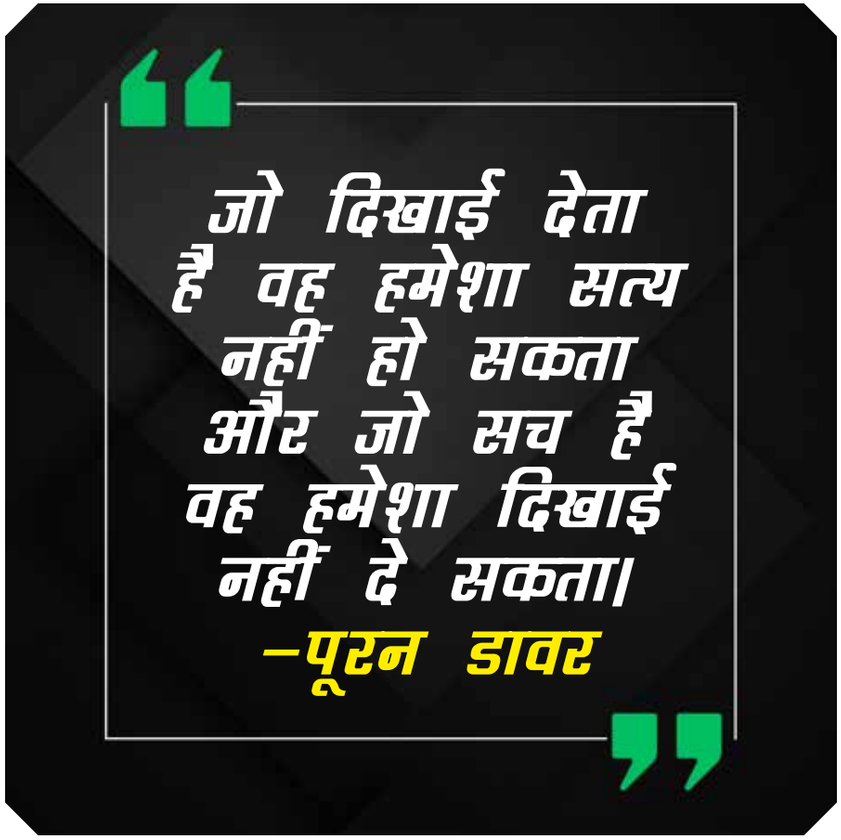

अध्याय 7

अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर धाक जमाना

घरेलू बाजार से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर जाना पूरन डावर के लिए सिर्फ एक रणनीतिक व्यावसायिक निर्णय नहीं था। यह दूरदर्शिता और वैश्विक बाजार की गतिशीलता की समझ से पैदा हुई एक आवश्यकता थी।

1980 के दशक के मध्य तक भारत के घरेलू बाजार ने विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान किए थे। दिल्ली मुंबई और लुधियाना जैसे शहर डावर के जूते के गढ़ बन गए थे। पूरन को एहसास हुआ कि अपने व्यवसाय को सही मायने में बढ़ाने के लिए उन्हें भारत की सीमाओं से परे देखने की जरूरत है। यह विचार सरल लेकिन गहरा था। अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश करने से न केवल राजस्व धाराओं में विविधता आएगी, बल्कि घरेलू बाजार में उतार–चढ़ाव से जुड़े जोखिम भी कम होंगे।

निर्यात व्यवसाय के लचीलेपन को बढ़ाने का एक साधन बन गया था।

1980 के दशक के मध्य में भारत का आर्थिक परिदृश्य अभी भी विकसित हो रहा था जिसमें कई विनियामक और आर्थिक चुनौतियाँ थी। इन अनिश्चितताओं से बचने के लिए वैश्विक बाजार में विस्तार करना एक विवेकपूर्ण रास्ता था। वैश्विक बाजार ने नए अवसरों और चुनौतियों का वादा किया, और पूरन डावर उन्हें अपनाने के लिए तैयार थे।

आगरा–जूता उद्योग का इतिहास

आगरा के जूता उद्योग की जड़ें शहर के समृद्ध ऐतिहासिक ताने–बाने से जुड़ी हुई रहीं हैं। मुगल साम्राज्य की पूर्व राजधानी आगरा हमेशा से शिल्प कला का केंद्र रहा है। आगरा में चमड़ा उद्योग की उत्पत्ति मुगल काल में हुई। अकबर के शासनकाल के दौरान शहर के कारीगरों ने जूते सहित विभिन्न उत्पाद बनाने के लिए चमड़े को रंगना शुरू किया।

मुगल काल में, 'मशक' (जानवरों की खाल से बने पानी के वाहक) का उपयोग करने की प्रथा आम थी। ये शहर के सफाईकर्मियों के लिए आवश्यक थे, जो सफाई के लिए पानी ले जाने और छिड़कने के लिए इनका उपयोग करते थे। इस प्रक्रिया में जानवरों की खाल को रंगना आवश्यक था, जिसने आगरा के चमड़ा उद्योग की नींव रखी। धीरे–धीरे, चमड़े को रंगने में निपुण कौशल को जूते बनाने में लगाया गया, शुरुआत में मुगल सेना के लिए और बाद में आम जनता के लिए।

मुगल काल के दौरान विकसित पारंपरिक शिल्प कौशल धीरे–धीरे विकसित होता रहा, और जब तक अंग्रेजों ने अपना शासन स्थापित किया, तब तक आगरा चमड़े के साज–समान का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका था। शहर के कारीगर अपनी बेहतरीन कारीगरी के लिए जाने जाते थे, जो उच्च गुणवत्ता वाले जूते बनाते थे,

जो पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध थे।

पश्चिम की ओर देखने की आवश्यकता

1987 तक घरेलू बाजार के एक बड़े हिस्से पर सफलतापूर्वक कब्जा करने के बाद, पूरन ने अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर अपनी नजरें टिकाईं। यह बदलाव आंशिक रूप से ऐतिहासिक संदर्भ और वैश्विक व्यापार की उभरती गतिशीलता से प्रेरित था।

1980 के दशक के उत्तरार्ध में तत्कालीन सोवियत संघ का हिस्सा रहे रूस ने जूता बाजार को आकर्षक अवसर प्रदान किये। उस समय आगरा से सोवियत संघ को सालाना लगभग 800 से 900 करोड़ रुपये के जूते निर्यात किए जाते थे। यह व्यापार काफी हद तक राजनीतिक समझौतों से प्रेरित था, जैसे कि सामरिक शस्त्र सीमा संधि, जिसने भारत और सोवियत संघ के बीच वस्तु विनिमय जैसे आदान–प्रदान की सुविधा प्रदान की।

आगरा के जूता उद्योग को बाटा और कैरोना शूज जैसे प्रमुख खिलाड़ियों ने बढ़ावा दिया, जो कई कारखाने संचालित करते थे और रूसी बाजार में उनकी महत्वपूर्ण उपस्थिति थी। 30 से 32 कारखानों वाली बाटा और भारत के लाइसेंस नियंत्रण शासन के दौरान फलने–फूलने वाला एक हेरिटेज ब्रांड कैरोना ने बाजार पर अपना दबदबा कायम कर लिया था। कैरोना ने खासतौर पर बाटा की शैलियों और रणनीतियों को बारीकी से प्रतिबिम्बित करके अपनी प्रतिष्ठा बनाई थी। दिसंबर 1991 में सोवियत संघ का पतन पूरन के व्यवसाय के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। राजनीतिक और आर्थिक उथल–पुथल के कारण रूस को जूते का निर्यात अचानक बंद हो गया, जिससे फलता–फूलता व्यापार ठप्प हो गया। इस महत्वपूर्ण बाजार के पतन ने आगरा के जूता उद्योग को हिलाकर रख दिया, जिसमें मौजूदा क्षमता तो थी, लेकिन मांग नहीं थी। इस संकट ने पूरन सहित निर्माताओं को नए अवसरों की तलाश में पश्चिम की ओर देखने के लिए मजबूर किया।

निर्यात यात्राः रूस से पश्चिम तक

शुरू में पूरन डावर की निर्यात यात्रा का ध्यान रूस के आकर्षक बाजार पर था। मौजूदा व्यापार समझौतों और भारतीय जूतों की उच्च मांग का लाभ उठाते हुए, आगरा के जूता निर्माता खूब फले–फूले। हालाँकि, 1991 में सोवियत संघ का पतन एक बड़ा झटका था। एक बार फलता–फूलता बाजार रातों–रात गायब हो गया, जिससे निर्माताओं के पास बेकार की क्षमताएँ और आगे की कठिन चुनौतियाँ रह गईं। कई लोगों के लिए यह सड़क का अंत हो सकता था, लेकिन पूरन के लिए यह बदलाव का अवसर था।

संकट बदलाव के लिए उत्प्रेरक बन गया। पूरन डावर और अन्य उद्योग के नेत्रत्वकर्ताओं ने महसूस किया कि स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उन्हें अपने निर्यात बाजारों में विविधता लाने की आवश्यकता है। अगला तार्किक कदम पश्चिम की ओर देखना था। पश्चिमी बाजार, विशेष रूप से यूरोप और उत्तरी अमेरिका में, अपार संभावनाएँ थीं। ये बाजार अधिक स्थिर थे, सोवियत संघ की तुलना में इनकी क्रय शक्ति अधिक थी, और व्यापार के लचीलापन बढ़ाने का अवसर प्रस्तुत करते थे।

पश्चिमी बाजारों में संक्रमण के लिए एक रणनीतिक पुनर्संरचना की आवश्यकता थी। यह सिर्फ नए खरीदार ढूँढने के बारे में नहीं था, बल्कि अलग–अलग उपभोक्ता वरीयताओं गुणवत्ता मानकों और विनियामक आवश्यकताओं के अनुकूल होने के बारे में था। पश्चिमी बाजार अत्यधिक प्रतिस्पर्धी थे, जहाँ स्थापित ब्रांड और कड़े गुणवत्ता मानदंड थे। जिन्होंने उच्च लाभ मार्जिन और दीर्घकालिक विकास की संभावनाएँ भी प्रदान की थी।

पूरन ने जल्दी ही महसूस किया कि गुणवत्ता की अवधारणा को सर्वोपरि होना

न्यूयॉर्क में आयोजित एफडीआरए बैठक के दौरान चमड़ा निर्यात परिषद (CLE) के अध्यक्ष श्री पी.आर. अकील अहमद के साथ श्री पूरन डावर।

चाहिए। पश्चिमी बाजार में बेहतर गुणवत्ता की माँग थी, जो उस समय कई भारतीय निर्यातक प्रदान नहीं कर रहे थे। इसने पूरन के दृष्टिकोण को व्यापक बनाया, यह सिर्फ अपने उत्पादों को बेहतर बनाने के बारे में नहीं था, बल्कि पश्चिमी खरीदारों को आकर्षित करने के लिए पूरे उद्योग को ऊपर उठाने के बारे में था।

पश्चिम में सफलतापूर्वक निर्यात करने के लिए, कड़े गुणवत्ता मानकों और उपभोक्ता अपेक्षाओं को समझना आवश्यक था। यह एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन उद्योग के मानकों को बढ़ाने का एक अवसर भी था। पूरन ने समझा कि उच्च गुणवत्ता प्राप्त करना और उसे बनाए रखना न केवल पश्चिमी उपभोक्ताओं को संतुष्ट करेगा, बल्कि वैश्विक मंच पर भारतीय जूते की प्रतिष्ठा भी बनाएगा।

इस अवधि के दौरान, टाटा, बेलीज और तेजुमल एंड संस जैसी कंपनियों को कुछ निर्यात दायित्वों के कारण माल निर्यात करने में लाभ था। ये कंपनियाँ उत्पादों का आयात करती थी और अपने व्यापार को संतुलित करने के लिए उन्हें निर्यात कोटा पूरा करना पड़ता था। यह देखते हुए कि भारत में दुनिया की लगभग 25 प्रतिशत मवेशी रहते हैं, चमड़ा और जूता उद्योग में महत्वपूर्ण संभावनाएं थीं।

डावर जैसे छोटे खिलाड़ियों के पास शुरू में इन अवसरों तक सीधी पहुँच नहीं थी। 1987 से 1992 तक, पूरन और उनकी टीम ने घरेलू और निर्यात दोनों बाजारों को पूरा किया, अक्सर बड़ी एजेंसियों के माध्यम से निर्यात किया। टाटा, बेलीज और तेजुमल एंड संस जैसी बड़ी कंपनियों ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए चैनल स्थापित किए थे। पूरन ने इन बड़ी कंपनियों के साथ सहयोग के माध्यम से निर्यात की बारीकियों को सीखना शुरू किया। वे जूते बनाते थे, और बड़ी कंपनियाँ उनका निर्यात करती थी। इस व्यवस्था ने पूरन को निर्यात बाजार में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की अनुमति दी।

1990 में, पूरन ने जर्मनी में अपने पहले अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भाग लिया। यह अनुभव एक आँख खोलने वाला था। 1993 तक पूरन की अंतर्राष्ट्रीय मेलों में भागीदारी बढ़ गई थी, जिससे निर्यात बाजार में उनका पूर्ण प्रवेश हुआ। यह परिवर्तन एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, एजेंसियों के माध्यम से निर्यात करने से लेकर अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों के साथ सीधे संबंध स्थापित करने तक। व्यापार मेलों ने पूरन की निर्यात यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1990 के दशक की शुरुआत में, जर्मनी और इटली मेले में सीखने और नेटवर्किंग के लिए महत्वपूर्ण कार्यक्रम बन गए। ये मेले केवल उत्पादों के प्रदर्शन के बारे में नहीं थे, बल्कि बाजार की गतिशीलता, उपभोक्ता वरीयताओं और उभरते रुझानों को समझने के बारे में थे।

1993 में, पूरन और आगरा के जूता उद्योग के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों का

परिदृश्य बदलना शुरू हुआ। इटली में रीवा जूता मेला, जिसे शूर रीवा के नाम से भी जाना जाता है, विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। शुरुआत में, आगरा से केवल दो लोग, अल्पना शुक्ला और कोट स्टाइल से एक व्यक्ति, इस मेले में शामिल हुए। वे अक्सर दूसरों को हतोत्साहित करते थे, यह सुझाव देते हुए कि इस तरह की भागीदारी उपयोगी नहीं थी। पूरन ने अपने जुनून और दूरदर्शिता से प्रेरित होकर इन अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में भाग लेने के महत्व को पहचाना। इस प्रकार, उन्होंने रसद चुनौतियों के बावजूद इन अंतर्राष्ट्रीय अवसरों का पता लगाने का फैसला किया। उस समय, आगरा से जूता निर्यात मुख्य रूप से भारतीय एजेंटों द्वारा संभाला जाता था, जिनमें से ज्यादातर ब्रिटेन में बसे भारतीय थे। ये एजेंट उत्पाद खरीदते थे और आगे के व्यापार में शामिल होते थे, जिससे कीमतों में कटौती पर केंद्रित अत्यधिक प्रतिस्पर्धी माहौल बनता था। चार या पाँच प्रमुख खिलाड़ियों के एक छोटे समूह के बीच प्रतिस्पर्धा भयंकर थी, और हर कोई समान व्यावसायिक अवसरों के लिए होड़ कर रहा था। स्टेट ट्रेडिंग कॉरपोरेशन (एसटीसी) ने कुछ प्रयास शुरू किए थे, लेकिन ये मुख्य रूप से पूर्वी ब्लॉक के साथ थे, पश्चिमी ब्लॉक के साथ नहीं।

1994 में रीवा जूता मेले में भाग लेना पूरन और उनकी टीम के लिए एक बड़ा बदलाव था। उन्होंने मेले की अपार संभावनाओं को देखा, जो 60 किलोमीटर लंबी झील के किनारे स्थित, लगभग ग्यारह हजार लोगों की छोटी आबादी वाले एक सुरम्य क्षेत्र में आयोजित किया गया था। रसद चुनौतीपूर्ण थी। गर्मियों के दौरान, यह जगह पर्यटकों से भरी रहती थी, जिससे ठहरने की जगह ढूँढना मुश्किल हो जाता था। इसके विपरीत सर्दियों के ऑफ–सीजन के दौरान अधिकांश होटल बंद हो जाते थे, जिससे केवल कुछ ही खुले रहते थे। इन चुनौतियों के बावजूद पूरन ने प्रमुख खिलाड़ियों को एकजुट करके इन मुद्दों को हल करने के प्रयासों का नेतृत्व किया। सामूहिक प्रयासों की क्षमता और आवश्यकता को समझते हुए, पूरन ने 1997 में आगरा जूता निर्माता निर्यातक चैंबर के गठन का नेतृत्व किया। उनका मानना था कि जब तक उद्योग सामूहिक प्रयास नहीं करेगा, तब तक यह अस्पष्ट ही रहेगा।

चैंबर का उद्देश्य पूरे उद्योग को बढ़ावा देना और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में एक संयुक्त मोर्चा पेश करना था। इस पहल ने निर्माताओं, निर्यातकों और उद्योग के हितधारकों को (एक वैश्विक जूता हब के रूप में आगरा की प्रतिष्ठा) बढ़ाने के लिए एक साथ लाया। आगरा जूता निर्माता निर्यातक चैंबर का गठन एक महत्वपूर्ण मोड़ था। पूरन समझते थे कि उद्योग की सफलता सहयोग और आपसी समर्थन पर निर्भर करती है। निर्माताओं, निर्यातकों और उद्योग के हितधारकों को एक साथ लाकर, चैंबर का उद्देश्य आगरा की प्रतिष्ठा को वैश्विक जूता हब के रूप

में बढ़ाना था। इस एकता ने छोटे खिलाड़ियों को उन अवसरों तक पहुँचने में सक्षम बनाया जो पहले पहुँच से बाहर थे। इसने उन्हें अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के सामने एक सुसंगत छवि पेश करने की भी अनुमति दी, जिससे आगरा के जूता उद्योग की गुणवत्ता और विश्वसनीयता पर जोर दिया गया। चैंबर ने साझा संसाधनों, सामूहिक सौदेबाजी और अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों में संयुक्त भागीदारी की सुविधा प्रदान की। इस एकता ने छोटे खिलाड़ियों को उन अवसरों तक पहुँचने में सक्षम बनाया जो पहले पहुँच से बाहर थे। इसने उन्हें अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के सामने एक सुसंगत छवि पेश करने की भी अनुमति दी, जिससे आगरा के जूता उद्योग की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में सुधार हुआ। लॉजिस्टिक जरूरतों के लिए सामूहिक रूप से बातचीत करना एक महत्वपूर्ण रणनीति थी। उन्होंने निर्माताओं के लिए बड़े पैमाने पर बुकिंग पर बातचीत करके होटल की समस्या से निपटने का फैसला किया। सभी निर्माताओं की सामूहिक शक्ति को समझते हुए, पूरन ने होटल मालिकों के साथ व्यापक बैठकें कीं, ऐसे सौदों पर बातचीत की जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि ऑफ–सीजन के दौरान भी कमरे उपलब्ध हों। सामूहिक बुकिंग की पेशकश करके, उन्होंने तीन दिवसीय मेले के लिए चार दिनों के लिए कमरे सुरक्षित कर लिए। इसी तरह, जब फ्लाइट टिकट और बैगेज का वजन मुद्दा बन गया, तो पूरन ने केएलएम, लुफ्थांसा और एयर फ्रांस जैसी एयरलाइनों के साथ बैठकें आयोजित कीं, टिकट और अतिरिक्त वजन भत्ते पर बातचीत की।

इन सामूहिक प्रयासों ने रंग दिखाया। कुछ ही वर्षों में, भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, 2002–03 तक आगरा से 60 लोग मेले में शामिल हुए। इस पर्याप्त उपस्थिति ने यह धारणा बनाई कि आगरा उद्योग में एक प्रमुख खिलाड़ी था। इस अनुभव से प्रमुख सीख प्रतिस्पर्धा पर सामूहिक प्रयास और सहयोग का महत्व था, जो निर्यात बाजार में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण था।

इसके अलावा, चैंबर ने स्थानीय निर्माताओं को नवाचार करने और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया। पूरन ने इस तथ्य पर जोर दिया कि केवल मेलों में भाग लेना पर्याप्त नहीं था, उत्पादों को गुणवत्ता और डिजाइन के मामले में अलग दिखने की जरूरत थी। गुणवत्ता पर इस फोकस ने विनिर्माण प्रक्रियाओं में पर्याप्त सुधार किए, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि आगरा के जूते पश्चिमी बाजारों की सख्त माँगों को पूरा करते हैं।

आगरा जूता निर्माता निर्यातक चैंबर के सामूहिक प्रयासों ने स्थानीय निर्माताओं के बीच समुदाय और साझा उद्देश्य की भावना को भी बढ़ावा दिया। उन्हें एहसास हुआ कि एक साथ काम करके वे अलग–अलग काम करने की तुलना में कहीं ज्यादा हासिल कर सकते हैं। एकता और सहयोग की यह भावना उद्योग के विकास और

सफलता के पीछे एक प्रेरक शक्ति बन गई।

इन सम्मिलित प्रयासों के परिणामस्वरूप, आगरा का जूता उद्योग पश्चिमी बाजारों में फलने–फूलने लगा। गुणवत्ता और विश्वसनीयता के लिए उद्योग की प्रतिष्ठा बढ़ी, जिसने अधिक अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों को आकर्षित किया और निर्यात में वृद्धि हुई। पूरन की दूरदर्शिता और नेतृत्व ने इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, चुनौतियों को अवसरों में बदल दिया और आगरा को वैश्विक जूता बाजार में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया।

2002–03 तक, इन प्रयासों का प्रभाव स्पष्ट था। आगरा के जूता उद्योग ने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अपनी मजबूत पैठ बना ली थी और आगरा जूता निर्माता निर्यातक चैंबर उद्योग की सामूहिक शक्ति और लचीलेपन का प्रतीक बन गया। इस अवधि ने आगरा के जूता उद्योग के लिए एक नए युग की शुरुआत की, जिसकी विशेषता नवाचार, सहयोग और उत्कृष्टता की निरंतर खोज थी। रूस से पश्चिम की यात्रा अपनी चुनौतियों के बिना नहीं थी, लेकिन यह पूरन और आगरा के जूता उद्योग के लिए महत्वपूर्ण सीखने और विकास का दौर था। अंतर्राष्ट्रीय अवसरों को अपनाकर, सहयोग को बढ़ावा देकर और गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करके, पूरन और उनकी टीम उद्योग को बदलने और आगरा को जूता निर्माण के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने में सक्षम थी। आगरा जूता निर्माता निर्यातक चैंबर के गठन ने इस सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त करने में सामूहिक प्रयासों और साझा दृष्टिकोण की शक्ति को प्रदर्शित किया।

सहयोग की शक्तिः पूरन डावर की निर्यात यात्रा से सबक

इन सामूहिक प्रयासों ने भुगतान किया। कुछ वर्षों के भीतर, भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, 2002–03 तक आगरा से 60 लोग मेले में शामिल हुए। इस पर्याप्त उपस्थिति ने यह धारणा दी कि आगरा उद्योग में एक प्रमुख खिलाड़ी था। इस अनुभव से प्राथमिक सीख प्रतिस्पर्धा पर सामूहिक प्रयासों और सहयोग का महत्व था, जो निर्यात बाजार में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण था।

इस जीवनी के लिए एक साक्षात्कार में पूरन डावर ने एक ज्ञानवर्धक किस्सा साझा किया, जिसने निर्यात के अपने दर्शन को केवल एक डावर उद्यम के बजाय एक सामूहिक भारतीय बाजार प्रयास के रूप में उजागर किया। उन्होंने ग्राहकों को भारत में आमंत्रित करने, पूरे उद्योग को बढ़ावा देने और सहयोग के माध्यम से विकास को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला।

'मैं आपको मानसिकता बता रहा हूँ, विकास कैसे होता है,' पूरन ने कहा, उनकी आँखें यादों से चमक रही थीं। 'हमारे पास इंग्लैंड से एक ग्राहक था जो हमारे लिए

पूरन डावर के आवास पर एक भव्य भेंटवार्ता का दृश्य, जहाँ अमर उजाला के पूर्व चेयरमैन श्री अशोक अग्रवाल, आगरा के महापौर श्री नवीन जैन, श्री अजय गुप्ता एवं डॉ. मुनीश्वर गुप्ता सम्मानपूर्वक उपस्थित हैं।

एक महत्वपूर्ण भागीदार था। उसने ही हमारे व्यापार विस्तार की पहल की थी। जैसे–जैसे उसका व्यापार बढ़ता गया, उसे अपने उत्पाद रेंज में विविधता लाने के लिए दो और कारखानों की आवश्यकता पड़ी। जब हमने अपने स्थानीय भागीदार से सुझाव माँगा, तो उसने एक ऐसी फैक्ट्री की ओर इशारा किया जो संघर्ष कर रही थी और बिल्कुल भी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रही थी।'

पूरन ने रुककर याद करते हुए अपना सिर हिलाया। 'ग्राहक के वापस जाने के बाद, मैंने अपने भागीदार से पूछा कि उसने एक असफल फैक्ट्री की सिफारिश क्यों की। उसका तर्क चौंकाने वाला था। उसका मानना था कि अगर ग्राहक का व्यवसाय कहीं और विफल हो गया, तो वह हम पर निर्भर रहेगा। यह एक संकीर्ण और अदूरदर्शी दृष्टिकोण था।' व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ पूरन ने आगे कहा, 'हमारा विश्वास बिल्कुल इसके विपरीत था। अगर ग्राहक विफल होता है, तो हम विफल होते हैं। अगर उसका सामान खराब हो जाता है और वह पैसे नहीं कमा पाता है, तो इसका असर अंततः हमें ही पड़ता है। एक कमजोर खरीदार का मतलब है एक कमजोर विक्रेता। यह कुछ सालों तक चलता रहा, फिर हमें उसके

हानिकारक दृष्टिकोण के कारण उस भागीदार से अलग होना पड़ा।'

प्रतिस्पर्धा पर सहयोग के पूरन के दर्शन स्पष्ट थे। वह समझते थे कि बाजार में एक खिलाड़ी के विकास से दूसरे खिलाड़ी भी आगे बढ़ सकते हैं। यह दृष्टिकोण आगरा जूता निर्माता निर्यातक चैंबर को मजबूत करने के उनके प्रयासों में सहायक था। उनका मानना था कि एकजुट होकर आगे बढ़ना और दूसरों की सफलता में मदद करना उद्योग के समग्र स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपनी यात्रा में एक और महत्वपूर्ण बदलाव के बारे में बताया।

'एक समय था जब मुझे एक कॉम्प्लेक्स के पीछे एक दुकान लेनी थी। यह एक जोखिम भरा कदम था, लेकिन फिर एक अप्रत्याशित अवसर आया। एक देवदूत ने, यूँ कहें कि, मुझे प्रतीक्षा करने और बेहतर तैयारी करने की सलाह दी। जल्द ही, मैंने एक सामने की दुकान हासिल कर ली, जो बहुत अधिक दृश्यमान और सुलभ थी। वह निर्णय एक बड़ी सफलता साबित हुआ।' उन्होंने हंसते हुए कहा, 'कल्पना कीजिए कि अगर मैं मूल योजना पर ही अड़ा रहता, तो शायद यह इतना अच्छा काम नहीं करता। समय और स्थिति ही सब कुछ है। और यही बात हमारे उद्योग पर भी लागू होती है। अगर हम खुद को सही तरीके से स्थापित करते हैं और प्रभावी ढंग से सहयोग करते हैं, तो सफलता मिलती है।'

पूरन डावर ने निर्यात में गुणवत्ता और विश्वसनीयता बनाए रखने के महत्व पर भी जोर दिया। 'हमने उद्योग में अपने सहयोगियों से कहा, 'अच्छा करो, खासकर अगर आप निर्यात में हैं। अगर आप अपनी प्रतिष्ठा खराब करते हैं, तो इसका असर सभी पर पड़ता है। गुणवत्ता में निरंतरता महत्वपूर्ण है। हमने अपने साथियों को यह समझने में मदद की कि भारतीय आपूर्तिकर्ताओं को यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि उनके उत्पाद अंतरराष्ट्रीय सम्मान और मांग को बनाए रखने के लिए उच्च मानकों पर खरे उतरें।'

उनके प्रयास चुनौतियों से रहित नहीं थे। उन्होंने स्वीकार किया, 'लोग अपने दृष्टिकोण में रूढ़िवादी हैं।' 'आज भी, कई लोग बदलाव करने या नई प्रथाओं को अपनाने के लिए अनिच्छुक है, लेकिन आगरा जूता निर्माता निर्यातक चैंबर के माध्यम से हमने महत्वपूर्ण प्रगति की है। यह अब जूता उद्योग में एक अग्रणी संगठन है, जिसे पूरे भारत में मान्यता प्राप्त है।' पूरन के किस्से और अनुभव एक बुनियादी सिद्धांत को रेखांकित करते हैं; सामूहिक भावना को बढ़ावा देना और एक साथ उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना व्यक्तिगत रूप से प्रतिस्पर्धा करने की तुलना में अधिक सफलता की ओर ले जा सकता है। उनकी कहानी एकता की शक्ति और निर्यात बाजार में दीर्घकालिक विकास और स्थिरता प्राप्त करने में सहयोगी मानसिकता के महत्व का प्रमाण है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों में लॉजिस्टिक

चुनौतियों पर काबू पाने के लिए पूरन के दृष्टिकोण से इन सामूहिक प्रयासों का महत्व और भी पुख्ता हुआ। उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि कैसे बाधाओं के बावजूद, वह और उनकी टीम इन वैश्विक आयोजनों में अपनी छाप छोड़ने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। पूरन की यात्रा एक बुनियादी सिद्धांत पर प्रकाश डालती है। दीर्घकालिक सफलता के लिए सहयोग और एकता आवश्यक है। उनकी कहानी सामूहिक प्रयासों की शक्ति और निर्यात बाजार में विकास और स्थिरता प्राप्त करने में सहयोगी मानसिकता के महत्व का प्रमाण है। एकता की भावना को बढ़ावा देने और एक साथ उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने से पूरन और उनके साथियों ने आगरा के जूता उद्योग को एक वैश्विक पावरहाउस में बदल दिया।

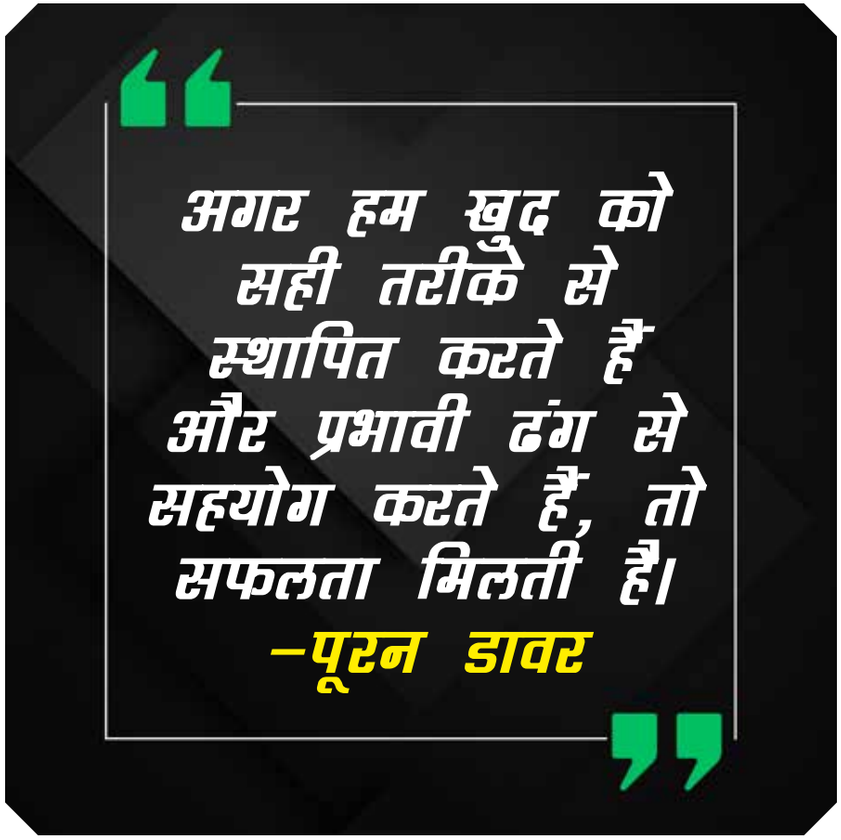

अध्याय 8

प्रतिस्पर्धा से सहयोग तक: भारत के जूता उद्योग की सामूहिक यात्रा

जूता उद्योग में पूरन डावर की यात्रा दूरदर्शी नेतृत्व, नवाचार की निरंतर खोज और सामूहिक औद्योगिक विकास में गहरी आस्था का एक उल्लेखनीय उदाहरण है। आगरा में मामूली शुरुआत से लेकर भारतीय जूता उद्योग में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनने तक, पूरन ने अपनी यात्रा में क्रमागत उन्नति के अनंत पड़ाव दर्ज किए। उनका प्रभाव उनके अपने व्यवसाय से कहीं आगे तक फैला हुआ था, क्योंकि उन्होंने पूरे उद्योग के हित में काम किया और वैश्विक मंच पर भारतीय उद्योग का दर्जा बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किए।

पूरन डावर का दर्शन सरल लेकिन गहन था:

अगर अंतरराष्ट्रीय ग्राहक भारत को उच्च गुणवत्ता वाले जूतों के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में देखते हैं, तो देश के हर निर्यातक को लाभ होगा। इस विश्वास ने उद्योग को एकजुट करने और मजबूत करने के उनके प्रयासों को प्रेरित किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि भारतीय निर्माताओं की सामूहिक शक्ति विश्व मंच पर प्रतिस्पर्धा कर सके। असंख्य भूमिकाओं और पहलों के माध्यम से पूरन डावर ने न केवल अपने उद्यम का विस्तार किया, बल्कि उद्योग के भविष्य के विकास और सफलता के लिए एक मजबूत आधार भी स्थापित किया।

निर्यात सबक: प्रतिस्पर्धा से पहले सहयोग

1994 में घटित एक घटना भारतीय जूता उद्योग की सामूहिक सफलता के लिए पूरन की प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। उस समय, जूता उद्योग फल–फूल रहा था, और अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले निर्माताओं के लिए अपने उत्पादों को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित करने के सुनहरे अवसर प्रस्तुत करते थे। हालांकि, उद्योग के सभी खिलाड़ी पूरन की प्रगतिशील मानसिकता से सहमत नहीं थे।

यह घटना उस वर्ष की एक महत्वपूर्ण घटना से शुरू होती है। दिल्ली के प्रगति मैदान में भव्य मेला ट्रेड फेयर आयोजित होता था। भारत की राजधानी के मध्य में आयोजित यह मेला जर्मनी के प्रसिद्ध मेलों को टक्कर देने के लिए तैयार था। लखानी, लिबर्टी, टाटा, मिडईस्ट, मेस्कोस और वुडलैंड जैसे प्रमुख खिलाड़ियों के भाग लेने से शुरुआती उत्साह स्पष्ट था। उद्योग के ये बड़े नाम, जो घरेलू बाजार में अपने प्रभुत्व के लिए जाने जाते थे, आशावादी थे कि दिल्ली मेला अंततः भारतीय निर्माताओं को अंतरराष्ट्रीय मेलों में जाने की आवश्यकता को कम कर देगा।

हालाँकि, पूरन डावर ने संभावना को अलग तरह से देखा। उन्होंने समझा कि भारतीय जूता सही मायने में अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए घरेलू मानकों को पश्चिमी बाजारों के मानकों से मेल खाने या उनसे बेहतर होने के लिए ऊँचा करना

माननीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल के साथ सार्थक बैठक एवं नई भारतीय संसद के स्मरणीय दौरे के पश्चात, प्रतिष्ठित निर्यातक श्री गोपाल गुप्ता, श्री विकास गुप्ता एवं श्री राजेश सहगल के साथ श्री पूरन डावर।

होगा। उनका दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से दूर भागने का नहीं, बल्कि उसका सीधे सामना करने का था। दिल्ली मेले की आशाजनक शुरुआत के बावजूद, इसने धीरे–धीरे अपनी चमक खो दी। बड़े खिलाड़ी, जो शुरू में उत्साही थे, लड़खड़ाने लगे। लिबर्टी और लखानी जैसी कंपनियाँ जो कभी घरेलू नाम थीं, निर्यात बाजार में अपनी गति बनाए रखने में विफल रहीं। मेस्कोस और मिडईस्ट अंततः बंद हो गईं। लिबर्टी को गंभीर झटकों का सामना करना पड़ा, जिसमें कानूनी परेशानियाँ भी शामिल थीं, जिसके कारण महत्वपूर्ण मंदी आई। वुडलैंड ने अपना ध्यान गुंबदों पर केंद्रित कर लिया।

पूरन डावर अक्सर इस अवधि पर विचार करते, और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सामूहिक विकास के महत्व पर जोर देते हैं। वह बताते हैं कि कैसे दिल्ली मेले की शुरुआती सफलता इन बड़े खिलाड़ियों की मानसिकता – रूढ़िवादी विश्वास

में निहित थी कि उनका अस्तित्व दूसरों की विफलता पर निर्भर करता था। उनका यह अदूरदर्शी दृष्टिकोण अंततः हानिकारक साबित हुआ।

पूरन डावर ने इस गिरावट को कंपनियों के प्रतिस्पर्धा के डर और उच्च मानकों को बनाए रखने में उनकी अक्षमता के परिणामस्वरूप देखा। उनका मानना था कि प्रतिस्पर्धा के डर ने नवाचार और विकास को रोक दिया है। पूरन अक्सर कहा करते थे, 'यदि आप प्रतिस्पर्धा से डरते हैं, तो आप खुद को सीमित कर लेते हैं। प्रतिस्पर्धा ही आपको बेहतर बनने के लिए प्रेरित करती है। कीमत और लाभ में बहुत अधिक अंतर नहीं होना चाहिए। जो लोग उच्च मार्जिन पर काम करते हैं, वे उन प्रतिस्पर्धियों को जगह देते हैं जो अपने मार्जिन को कम कर सकते हैं। वह जगह न देकर, आप प्रतिस्पर्धा के डर को खत्म कर देते हैं।'

पूरन का दर्शन व्यवसाय के मूलभूत वित्तीय सिद्धांतों तक फैला हुआ है। वह अक्सर शीर्ष रेखा (राजस्व) और तल रेखा (लाभ) को संतुलित करने के महत्व पर चर्चा करते हैं। उनका मानना था कि बिक्री की मात्रा (शीर्ष रेखा) पर विचार किए बिना केवल उच्च मार्जिन (तल रेखा) पर ध्यान केंद्रित करना एक अदूरदर्शी दृष्टिकोण था। प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण बनाए रखने और बिक्री की मात्रा बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करके, एक व्यवसाय स्थायी विकास सुनिश्चित कर सकता है। वह समझाते हैं, 'शीर्ष रेखा और निचली रेखा पर अलग–अलग अध्याय हो सकते हैं। शीर्ष रेखा राजस्व और विकास के बारे में है, जबकि निचली रेखा लाभ और स्थिरता के बारे में है। दोनों आवश्यक हैं, और एक सफल व्यवसाय को उन्हें प्रभावी ढंग से संतुलित करने की आवश्यकता है।'

आँख खोलने वाली घटना

1994 में, एक और घटना ने निर्यात बाजार में प्रतिस्पर्धा और सहयोग पर पूरन डावर के दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित किया। यह प्रकरण उनके द्वारा सीखे गए सबक और इन अनुभवों ने भारतीय जूता उद्योग में उनकी नेतृत्वकारी भूमिका को कैसे आकार दिया, को समेटता है।

पूरन डावर के पास दक्षिण अफ्रीका से एक ग्राहक था जो पहले से ही उनके व्यवसाय का एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण हिस्सा था। यह ग्राहक एक अंतरराष्ट्रीय मेले में पूरन से फिर से जुड़ा। जब वे हलचल भरे माहौल में घूम रहे थे, तो पूरन ने उनके आसपास हो रही कई बातचीत और कनेक्शन को देखा। उन्होंने ग्राहक को दिल्ली स्थित दोशी नामक एक बिचौलिए के बारे में सावधान किया, जो गोल्ड फुट शूज के बैनर तले काम करता था। दोशी की प्रतिष्ठा स्थानीय निर्माताओं से नमूने मंगवाकर, सबसे अच्छे नमूने लेकर, और फिर जूतों को $8 से $10 की

अस्थिर कीमतों पर बेचकर नए बाजारों का दोहन करने की थी, जो कि बाजार के मानक $12 से काफी कम थी।

पूरन डावर ने अपने दक्षिण अफ्रीकी ग्राहक को समझाया कि दोशी का व्यवसाय मॉडल बुनियादी रूप से दोषपूर्ण था। निर्माताओं को इतनी कम लागत पर उत्पादन करने के लिए मजबूर करने से उत्पादों की गुणवत्ता अनिवार्य रूप से प्रभावित हुई। इस अभ्यास से न केवल व्यक्तिगत लेन–देन खतरे में पड़ते हैं, बल्कि पूरे भारतीय जूता उद्योग की प्रतिष्ठा भी धूमिल होती है। पूरन की सलाह के बावजूद, कई खरीदारों के लिए दोशी के सस्ते दामों के आकर्षण का विरोध करना मुश्किल था। पूरन ने दोशी की दरों पर काम करने से इनकार कर दिया, यह समझते हुए कि इतनी कम लागत पर गुणवत्ता बनाए रखना असंभव था। हालांकि, दोशी ने अपना काम जारी रखा, ऐसे निर्माताओं को ढूँढ़ा जो काम की हताशा में उनकी शर्तों पर सहमत हो गए। इन निर्माताओं को अक्सर सामग्री और शिल्प कौशल की गुणवत्ता से समझौता करते हुए कटौती करनी पड़ती थी। उन्हें 8.5% कमीशन मिलता था, लेकिन इस प्रक्रिया में बहुमूल्य समय बर्बाद होता था–एक महीना इच्छुक निर्माता खोजने में और दूसरा, जल्दबाजी में, घटिया उत्पादन के लिए।

उस समय, पूरन डावर अपने मानकों को कम न करने के बारे में अड़े हुए थे। उनका मानना था कि जब गुणवत्ता से समझौता किया जाता है तो पूरे बाजार को नुकसान होता है। इस दर्शन की परीक्षा तब हुई जब वे तीन दिवसीय व्यावसायिक यात्रा के लिए दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग गए। उसी ग्राहक ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और बताया कि उनके सात उच्च गुणवत्ता वाले कंटेनरों में से छह पहले ही आ चुके हैं और उनकी बहुत सराहना की गई है। हालांकि, ग्राहक ने पूरन को दोशी द्वारा उपलब्ध कराया गया एक कंटेनर भी दिखाया। गुणवत्ता बहुत खराब थी और ग्राहक असमंजस में था, उसने पूरन से पूछा कि उसे अपने गोदाम में पड़े घटिया गुणवत्ता वाले उत्पादों का क्या करना चाहिए, जो भारतीय निर्माताओं की प्रतिष्ठा को धूमिल कर रहे हैं।

ग्राहक के निदेशकों के साथ बैठक के दौरान, पूरन ने दोहराया कि उसने दोशी के साथ काम करने के बारे में उन्हें चेतावनी दी थी। निदेशकों ने स्पष्ट रूप से निराश होकर सवाल किया कि उनके खरीदार ने पूरन डावर की सलाह को क्यों नजरअंदाज किया। ग्राहक ने अपनी गलती स्वीकार की और हालाँकि उसने पूरन को एक साथ 80,000 जोड़े का ऑर्डर दिया था, लेकिन नुकसान हो चुका था। भारत लौटने के पंद्रह दिन बाद, पूरन को एहसास हुआ कि वादा किया गया ऑर्डर पूरा नहीं हुआ है। चिंतित होकर, उन्होंने देरी के बारे में पूछताछ करने के लिए खरीदार श्री देव से संपर्क किया। उनके निराश होने पर, श्री देव ने उन्हें बताया

कि उनकी कंपनी ने भारतीय निर्माताओं के साथ काम न करने का फैसला किया है। पूरन डावर को आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा कि क्या सातवां कंटेनर इतना घटिया था कि यह निर्णय लिया गया। श्री देव ने स्पष्ट किया कि पूरन के पिछले छह कंटेनरों की तरह सातवां कंटेनर भी बेहतरीन था। समस्या पूरन के उत्पादों से नहीं, बल्कि भारतीय निर्माताओं के साथ काम करने के अनुभव से थी। दूसरों के घटिया उत्पादों ने कुछ लोगों द्वारा किए गए अच्छे काम को फीका कर दिया, जिससे उन्हें काफी वित्तीय नुकसान हुआ और भारत से सोर्सिंग बंद करने का निर्णय लिया गया।

इस घटना ने पूरन के लिए एक महत्वपूर्ण सबक उजागर किया। उन्होंने महसूस किया कि एक निर्माता की सफलता पूरे उद्योग की सामूहिक प्रतिष्ठा पर निर्भर करती है। अंतरराष्ट्रीय बाजार भारत को एक इकाई के रूप में देखता है और एक निर्यातक की विफलता सभी भारतीय निर्माताओं की धारणा को प्रभावित कर सकती है। बाद में पूरन अक्सर विभिन्न उद्योग मंचों पर इस दर्शन पर चर्चा करते थे। वे पारदर्शिता और आपसी सहयोग के महत्व पर जोर देते रहे। उनका मानना था कि अगर कोई प्रतियोगी अच्छा है, तो उसे ऑर्डर मिलने चाहिए और उसे आगे बढ़ना चाहिए। हालांकि, अगर वे बुरे हैं, तो इससे सभी को नुकसान होगा। वे कहते थे, 'देश की छवि निर्यात बाजार से जुड़ी है।' 'एक की विफलता सभी की प्रतिष्ठा को प्रभावित करती है।'

सामूहिक विपणन के बारे में पूरन का दर्शन इस विश्वास पर आधारित था कि पूरे उद्योग को एक एकीकृत मोर्चा पेश करने की आवश्यकता है। वह अक्सर सामूहिक प्रयासों की तुलना कई धागों से बनी मजबूत रस्सी से करते थे। यदि एक धागा कमजोर है, तो पूरी रस्सी की ताकत कम हो जाती है। यह तुलना अंतरराष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

आखिरकार, 1990 के दशक के मध्य में जब आगरा में जूता उद्योग अभी भी निर्यात बाजार में अपनी जगह बना रहा था, पूरन ने निर्माताओं और निर्यातकों को एक छतरी के नीचे लाने के प्रयासों का नेतृत्व किया। इससे आगरा जूता निर्माता निर्यातक चैंबर (AFMEC) का गठन हुआ। चैंबर का उद्देश्य सामूहिक रूप से उद्योग को बढ़ावा देना था, अपने सदस्यों की ताकत का लाभ उठाकर वैश्विक मंच पर अधिक प्रभाव पैदा करना था।

पूरन के नेतृत्व में, AFMEC ने निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित किया:

- गुणवत्ता नियंत्रण: यह सुनिश्चित करना कि सभी सदस्य एक मजबूत प्रतिष्ठा बनाने के लिए कड़े गुणवत्ता मानकों का पालन करें।

- सामूहिक सौदेबाजीः आपूर्तिकर्ताओं और खरीदारों के साथ बेहतर सौदे करने के लिए अपनी सामूहिक शक्ति का उपयोग करना।
- प्रशिक्षण और विकासः कौशल और ज्ञान में सुधार के लिए निर्माताओं और श्रमिकों को प्रशिक्षण प्रदान करना।
- बाजार तक पहुँचः व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों में संयुक्त भागीदारी के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच को सुगम बनाना।

पूरन का मानना था कि अगर भारत में अधिक खरीदारों की हिस्सेदारी होगी, तो इससे सभी को लाभ होगा। वह अक्सर कहा करते थे, 'अगर खरीदार भारत में रुचि रखते हैं, तो उनकी हिस्सेदारी यथासंभव बढ़नी चाहिए। अगर वे अधिक निर्यातकों के साथ काम करते हैं, तो उनकी रुचि बनी रहती है, और इससे पूरे उद्योग को लाभ होता है।'

पारदर्शिता और नैतिक प्रथाओं के प्रति पूरन की प्रतिबद्धता विभिन्न उद्योग संगठनों में उनकी भागीदारी तक फैली हुई है। उनकी नेतृत्व भूमिकाओं में चमड़ा निर्यात परिषद, जूता डिजाइन और विकास संस्थान (FDDI) और केंद्रीय जूता प्रशिक्षण संस्थान (CFTI) शामिल रहे हैं। वह लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के बोर्ड के सदस्य भी रहे और लघु उद्योग भारती में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं।

इन सभी भूमिकाओं ने पूरन को राष्ट्रीय स्तर पर उद्योग की जरूरतों की वकालत करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास किया कि नीतियां छोटे और मध्यम उद्यमों के विकास का समर्थन करें और भारतीय जूता उद्योग वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सके।

सहयोग में निहित दर्शन

पूरन डावर का प्रतिस्पर्धा पर सहयोग का दर्शन सिर्फ व्यापार के बारे में नहीं था, यह पूरे उद्योग के लिए एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के बारे में था। वह समझते थे कि अनैतिक प्रथाओं या कीमतों में कटौती के माध्यम से प्राप्त अल्पकालिक लाभ लंबे समय में उद्योग को नुकसान पहुँचा सकते हैं। उनका उद्देश्य सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देकर वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम एक मजबूत और लचीला उद्योग बनाना था।

पूरन अक्सर सामूहिक सफलता के महत्व को दर्शाने के लिए अपने अनुभवों को सुनाते हैं। दक्षिण अफ्रीकी ग्राहक की कहानी एक स्पष्ट अनुस्मारक थी कि, कुछ लोगों के कार्यों का प्रभाव कई लोगों पर पड़ सकता है। पूरन के नेतृत्व की विशेषता उनकी गतिशीलता की गहरी समझ और आपसी समर्थन और साझा सफलता की संस्कृति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता थी।

पूरन डावर ने केरल के माननीय राज्यपाल महामहिम आरिफ मोहम्मद खान का डावर निवास पर स्वागत किया। इस अवसर पर दोनों के बीच विचारोत्तेजक और सार्थक संवाद हुआ।

उन्होंने हमेशा उच्च मानकों को बनाए रखते हुए और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उदाहरण पेश किया। उनका मानना था कि भारतीय जूता उद्योग में वैश्विक नेता बनने की क्षमता है, लेकिन इसके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। AFMEC और अन्य उद्योग संगठनों के साथ उनका काम इसी दृष्टिकोण से प्रेरित था। वह समझते थे कि उद्योग का विकास एक सकारात्मक छवि बनाने और यह सुनिश्चित करने पर निर्भर करता है कि सभी खिलाड़ी उच्च मानकों का पालन करें। प्रतिस्पर्धा से सहयोग तक पूरन डावर की यात्रा उनके दूरदर्शी नेतृत्व का प्रमाण है। व्यक्तिगत लाभ से परे देखने और सामूहिक सफलता पर ध्यान केंद्रित करने की उनकी क्षमता ने भारतीय जूता उद्योग पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। अपने प्रयासों के माध्यम से, उन्होंने एक ऐसे उद्योग को आकार देने में मदद की है जो गुणवत्ता, पारदर्शिता और सहयोग को महत्व देता है, जिससे वैश्विक मंच पर इसकी जगह सुनिश्चित होती है।

पूरन डावर ने हमेशा अपने सभी प्रयासों में पारदर्शिता और नैतिक प्रथाओं पर जोर दिया। उनका मानना था कि ये मूल्य न केवल व्यक्तिगत सफलता के लिए बल्कि उद्योग के समग्र विकास के लिए भी महत्वपूर्ण थे।

'इसलिए इस समुदाय में चीजें हमेशा पारदर्शी रही हैं। हमने नेतृत्व में भी ऐसा

किया है,' पूरन अक्सर कहते हैं। उनकी बैठकों और उद्योग प्रतिनिधित्व में आंतरिक राजनीति के खिलाफ एक स्पष्ट रुख था। उनका मानना था कि उद्योग संगठनों में राजनीति का कोई स्थान नहीं है। 'अगर कोई अपने उद्योग संगठन के भीतर राजनीति में शामिल होना चाहता है, तो उसे इसके बजाय राजनीति में अपना करियर बनाना चाहिए। उद्योग के भीतर राजनीतिक पैंतरेबाजी में शामिल होना केवल इसकी प्रगति में बाधा डालता है। सीधे शब्दों में कहें तो, अगर आपका उद्देश्य राजनीतिक करना है, तो राजनीति के क्षेत्र में शामिल हो जाइए। यहाँ इसका क्या स्थान है?' पूरन जोर देते हैं।

उनका सीधा–सादा दृष्टिकोण और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से ज्यादा उद्योग के विकास के प्रति प्रतिबद्धता कई लोगों को पसंद आई। इस स्पष्टता और समर्पण ने उन्हें उद्योग नेतृत्व के जटिल परिदृश्य को समझने में मदद की, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि उनके कार्य हमेशा उनके सिद्धांतों के अनुरूप हों। AFMEC की अध्यक्षता और विभिन्न सरकारी परिषदों के साथ उनकी भागीदारी सहित अपनी नेतृत्व भूमिकाओं के माध्यम से, पूरन ने प्रदर्शित किया कि नैतिक नेतृत्व और

उत्तर प्रदेश पब्लिक पुलिस कार्यक्रम में श्री पूरन डावर की गरिमामयी उपस्थिति, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति के.जी. बालाकृष्णन तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों के साथ।

पारदर्शिता केवल आदर्श नहीं थे, बल्कि सफलता के लिए व्यावहारिक उपकरण थे। बैठकों के दौरान और फैक्ट्री फ्लोर पर चलते समय साझा की गई उनकी कहानियां और संस्मरण अक्सर अपने मूल्यों के प्रति सच्चे रहने के महत्व पर प्रकाश डालते थे।

भारतीय फुटवियर उद्योग में पूरन डावर की विरासत

दूरदर्शी नेतृत्व गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता और सामूहिक सफलता की शक्ति में गहरे विश्वास की कहानी है। उनके अनुभव और उनके द्वारा दिए गए सबक निर्माताओं और निर्यातकों की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे। सहयोग और आपसी समर्थन की संस्कृति को बढ़ावा देकर, उन्होंने सुनिश्चित किया है कि भारतीय फुटवियर उद्योग वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सके और अपनी वृद्धि को बनाए रख सके। उनकी विरासत नेतृत्व, अखंडता और उत्कृष्टता की निरंतर खोज की अमूल्य खान है, जिसने उद्योग के लिए एक बेंचमार्क स्थापित किया है। जैसे–जैसे भारतीय जूता उद्योग विकसित होता जा रहा है, पूरन डावर का योगदान इसकी सफलता के लिए आधार का काम कर रहा है। सामूहिक प्रयासों की शक्ति में उनका विश्वास और उच्च मानकों को बनाए रखने की उनकी प्रतिबद्धता ने उद्योग के लिए एक बेंचमार्क स्थापित किया है। अपने दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से, उन्होंने भारतीय जूता क्षेत्र को बदल दिया है, जिससे वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में इसकी जगह सुनिश्चित हुई है।

पूरन डावर की यात्रा एक सफल उद्योग के निर्माण में सहयोग और पारदर्शिता के महत्व को पुख्ता करती है। उनके नेतृत्व ने यह दर्शाया है कि, जब कोई उद्योग एक साथ काम करता है, तो वह उल्लेखनीय विकास और स्थिरता प्राप्त कर सकता है। 'हर किसी को अच्छा करना चाहिए' का उनका दर्शन, उद्योग के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बन गया है, जो एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देता है जो गुणवत्ता, अखंडता और सामूहिक सफलता को महत्व देती है। अपने प्रयासों के माध्यम से, उन्होंने भारतीय जूता उद्योग पर एक अमिट छाप छोड़ी है, जिससे भविष्य का मार्ग प्रशस्त हुआ है जहाँ सहयोग और उत्कृष्टता एक साथ चलते हैं।

नेतृत्व और सहयोग की विरासत

पूरन डावर का दर्शन उद्योग संगठनों के भीतर नेतृत्व के प्रति उनके दृष्टिकोण तक फैला हुआ है। उनका मानना था कि उद्योग का प्रतिनिधित्व स्पष्ट शर्तों के तहत और राजनीति के प्रभाव के बिना किया जाना चाहिए। पूरन अक्सर टिप्पणी करते हैं कि अगर उद्योग की ओर से बोलने का अवसर मिले, तो इसे ईमानदारी

से किया जाना चाहिए और व्यक्तिगत लाभ के बजाय सामूहिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि राजनीति खेलने में रुचि रखने वालों को उद्योग संगठनों के भीतर नहीं, बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में ऐसा करना चाहिए। उनका सीधा दृष्टिकोण स्पष्ट है कि आप राजनीति करना चाहते हैं, तो राजनीति में शामिल हो जाइए। हमारे उद्योग में इसका क्या लेना–देना है?'

अपने कार्यकाल के दौरान पूरन डावर ने कई प्रभावशाली पदों पर कार्य किया, जिसने भारतीय जूता उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के बोर्ड के सदस्य रहे, जहाँ उन्होंने छोटे और मध्यम उद्यमों का समर्थन करने वाली नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चमड़ा निर्यात परिषद के क्षेत्रीय अध्यक्ष (उत्तर भारत) के रूप में पूरन ने चमड़ा क्षेत्र की निर्यात क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया। उन्हों ने 1997 में आगरा जूता मैन्युफैक्चरर्स एंड एक्सपोर्टर्स चौंबर (AFMEC) की स्थापना की और इसके चार्टर सचिव के रूप में कार्य किया। AFMEC के भीतर उनका नेतृत्व निर्णायक था. उन्होंने 2003 से 2005 तक संगठन का नेतृत्व किया और 2009 में फिर से अध्यक्ष का पद संभाला, यह पद वे आज तक संभाल रहे हैं। AFMEC के भीतर उनके प्रयास उद्योग को एकजुट करने और सामूहिक विकास को बढ़ावा देने में सहायक रहे हैं।

AFMEC में अपनी भूमिकाओं के अलावा, पूरन PGC और RSC सहित विभिन्न सरकारी समितियों में सक्रिय रूप से शामिल थे, जहां उन्होंने नीति–निर्माण और उद्योग मानकों में योगदान दिया। वे जूता डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (FDDI) और सेंट्रल जूता ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (CFTI) दोनों के लिए गवर्निंग काउंसिल के सदस्य थे, जो भारत में जूता डिजाइन और प्रशिक्षण की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण संस्थान हैं।

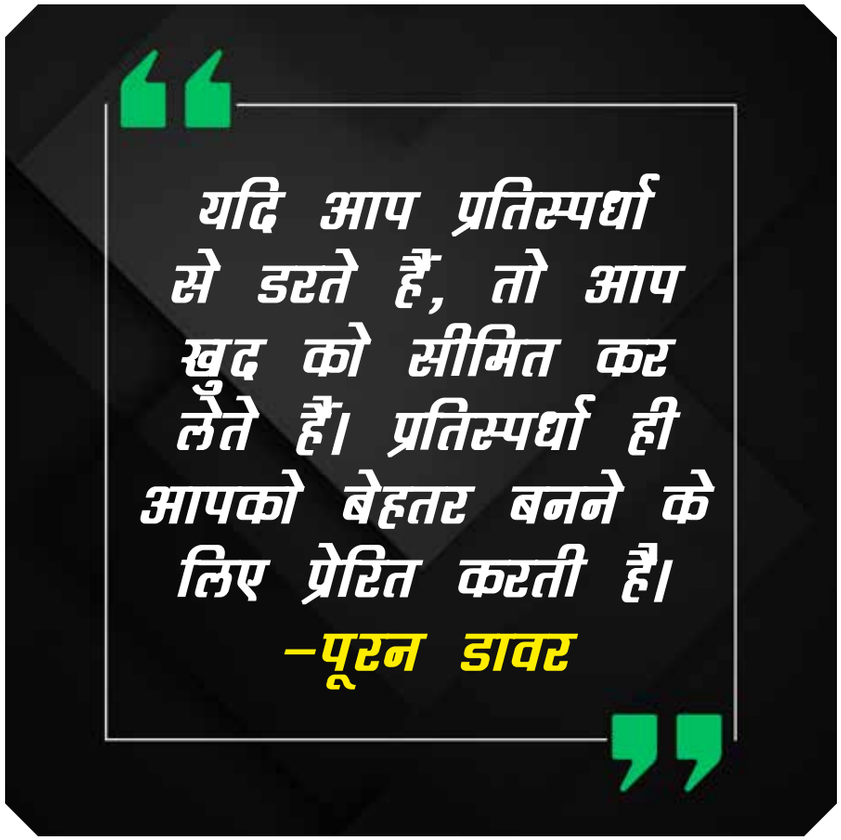

अध्याय 9

वर्तमान का डावर साम्राज्य

अपनी साधारण शुरुआत से, डावर इंडस्ट्रीज एक वैश्विक पावरहाउस के रूप में विकसित हुई है, जो पूरन डावर की दूरदर्शिता और जुनून का प्रमाण है। कंपनी अब हर साल 1, 700 से अधिक अलग–अलग उत्पादों का पोर्टफोलियो पेश करती है, जिसे 2,700 से अधिक कर्मचारियों के समर्पित कार्यबल द्वारा समर्थित किया जाता है। 100 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में सेवा प्रदान करते हुए, डावर इंडस्ट्रीज ने दुनियाभर में एक मजबूत उपस्थिति स्थापित की है। उद्योग में 50 से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ कंपनी ने अपनी विशेषज्ञता को निखारा है, केवल 60–75 दिनों का लीड टाइम सुनिश्चित किया है और प्रति स्टाइल और रंग 240 जोड़े की न्यूनतम ऑर्डर मात्रा बनाए रखी है। ये प्रभावशाली आँकड़े कंपनी की असाधारण यात्रा और वैश्विक बाजार की लगातार विकसित होती मांगों को पूरा करने की इसकी क्षमता को दर्शाते हैं।

'फूड फॉर ऑल' पहल के शुभारंभ के दौरान अपने उद्घाटन भाषण में, पूरन डावर ने गहराई से कहा, 'पैसा बंद कैश चेस्ट का हिस्सा नहीं है, इसे उद्योग का हिस्सा होना चाहिए। उद्योग से बढ़कर कोई अन्य सामाजिक सेवा नहीं है।' यह विश्वास सामाजिक उत्थान के साधन के रूप में औद्योगिक विकास के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है। इस धारणा के विपरीत कि उद्योग श्रम का शोषण करते हैं, पूरन डावर इस बात पर जोर देते हैं कि सच्ची सेवा उद्योग को बढ़ावा देने, रोजगार पैदा करने और आर्थिक प्रगति को आगे बढ़ाने में निहित है। यह दर्शन डावर इंडस्ट्रीज के विकास का आधार रहा है, जिसने इसे नवाचार, दक्षता और सामाजिक जिम्मेदारी का प्रतीक बना दिया है।

शुरुआती वर्षः शू स्टाइल से डावर जूता इंडस्ट्रीज तक

1986 से पहले, डावर इंडस्ट्रीज को शू स्टाइल के नाम से जाना जाता था, जो आगरा में भीड़भाड़ वाली हिंग की मंडी में स्थित थी। वह मुख्य रूप से घरेलू बाजार पर ध्यान केंद्रित करती थी। हालांकि, 1986 में, पूरन डावर ने डावर जूता इंडस्ट्रीज की स्थापना की, जिसने एक नए युग की शुरुआत की। इस परिवर्तन ने घरेलू बाजार से निर्यात–उन्मुख दृष्टिकोण की ओर बदलाव का संकेत दिया। इस अवधि की विशेषता महत्वपूर्ण वृद्धि और भविष्य के विस्तार के लिए एक मजबूत नींव रखना थी।

1990 में ट्रांसपोर्ट नगर में कदम रखना परिचालन को केंद्रीकृत करने और उत्पादन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए एक रणनीतिक निर्णय था।

1987 तक, कंपनी ने पहले ही अंतर्राष्ट्रीय बाजारों की खोज शुरू कर दी थी। पूरन डावर ने एक जर्मन इकाई के साथ भागीदारी करके डावर एक्सपोर्ट्स का

गठन किया, जिसका लक्ष्य विशेष रूप से निर्यात बाजार था। इस भागीदारी ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की गतिशीलता में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की और वैश्विक बाजारों में पैर जमाने में मदद की।

विस्तार और स्थापनाः वर्ष 2000 और उसके बाद

1 जनवरी, 2000 को, डावर इंडस्ट्रीज ने आगरा के सिकंदरा में आगरा–दिल्ली रोड पर बापू आसाराम आश्रम के पास एक नई इकाई खोली। यह इकाई कई कारणों से महत्वपूर्ण थी। यह राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित पहली फैक्ट्री थी, जो कंपनी की वृद्धि और प्रमुखता का प्रमाण थी। ऐसे समय में जब केवल कम से कम 100 करोड़ के टर्नओवर वाले बड़े उद्योग ही ऐसे प्रमुख स्थानों पर काम करते थे, यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी।

यह फैक्ट्री केवल एक औद्योगिक इकाई नहीं थी, बल्कि वास्तव में कंपनी के विजन और आकांक्षाओं का एक बयान थी। इसे आधुनिक बुनियादी ढाँचे और अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ डिजाइन किया गया था, जिसने आगरा में जूता उद्योग के लिए एक नया मानदंड स्थापित किया, जो मुख्य रूप से कारीगरों द्वारा संचालित था। यह इकाई आत्मनिर्भर थी, सभी गतिविधियों को स्वतंत्र रूप से संभालने में सक्षम थी और इसने कई प्रमाणपत्र प्राप्त किए, जिससे गुणवत्ता और उत्कृष्टता के प्रति इसकी प्रतिबद्धता मजबूत हुई। इस कारखाने की स्थापना रातों–रात सफल नहीं हुई। यह व्यापक शोध और वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के समावेश का परिणाम था। नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता से प्रेरित कंपनी के प्रबंधन ने अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और उद्योग के रुझानों में सबसे आगे रहने के लिए वैश्विक यात्राएँ शुरू कीं।

एक महत्वपूर्ण प्रभाव हांगकांग में एक खरीदार का था, जिसके कार्यालयों और कारखानों ने एक स्थायी छाप छोड़ी। इन अवलोकनों से प्रेरित होकर, डावर इंडस्ट्रीज ने 10– फुट ग्लास केबिन और ग्लास फेसेड के साथ एक कारखाना बनाया, जो उस समय भारतीय जूता उद्योग में दुर्लभ था। सामने की ओर लॉन के लिए 5,000 वर्ग मीटर छोड़ना, 5,200 वर्ग मीटर पर कारखाना बनाना और भविष्य के विस्तार के लिए पीछे की ओर 2,700 वर्ग मीटर आरक्षित करना शामिल था, जो एक दूरदर्शी दृष्टिकोण को दर्शाता है। बाद में, कंपनी ने भविष्य के विकास की आशा करते हुए पीछे की ओर अतिरिक्त 10 बीघा जमीनका अधिग्रहण किया। 2023–24 तक इस भूमि पर नई इकाइयाँ स्थापित की गईं, जिससे कंपनी की क्षमता में और वृद्धि हुई। इस सक्रिय दृष्टिकोण ने यह सुनिश्चित किया कि डावर इंडस्ट्रीज बाजार की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए हमेशा तैयार रहे।

बाजार में उपस्थितिः वैश्विक पदचिह्न

डावर इंडस्ट्रीज की घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में मजबूत उपस्थिति है। घरेलू स्तर पर, कंपनी एक जाना–माना नाम है, जो अपने उच्च गुणवत्ता वाले जूते के लिए जानी जाती है, जो उपभोक्ताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को पूरा करती है। इसका वितरण नेटवर्क प्रमुख शहरों और कस्बों में फैला हुआ है, जो इसके उत्पादों की व्यापक उपलब्धता सुनिश्चित करता है।

आज तक, डावर इंडस्ट्रीज ने 100 से अधिक देशों में महत्वपूर्ण पैठ बनाते हुए उल्लेखनीय वैश्विक विस्तार हासिल किया है। यूरोप, उत्तरी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, रूस, दक्षिण अफ्रीका और मध्य पूर्व के प्रमुख बाजारों के साथ, कंपनी की मजबूत वैश्विक भागीदारी और सहयोग विश्व मंच पर अपने ब्रांड को स्थापित करने में सहायक रहे हैं। इन बाजारों में इसे जो व्यापक मान्यता और प्रतिष्ठा प्राप्त है, वह गुणवत्ता और नवाचार के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

नेतृत्व और कार्यबलः सफलता की रीढ़

डावर इंडस्ट्रीज की कहानी दूरदर्शी नेतृत्व और समर्पित कार्यबल की शक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। पूरन डावर के गतिशील मार्गदर्शन में, अनुभवी पेशेवरों से युक्त प्रबंधन टीम ने कंपनी के उल्लेखनीय विकास को आगे बढ़ाने के लिए व्यापक ज्ञान और विशेषज्ञता का लाभ उठाया है। उनकी रणनीतिक अंतर्दृष्टि और चतुर

आगरा, 2013– विजय शंखनाद रैली का ऐतिहासिक दृश्य। प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार घोषित होने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी की यह पहली रैली थी। मंच पर श्री मोदी के साथ श्री ओम माथुर, पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय श्री कल्याण सिंह, स्वागताध्यक्ष श्री पूरन डावर एवं अन्य प्रमुख नेता उपस्थित थे।

निर्णय लेने की क्षमता कंपनी के प्रक्षेपवक्र को आकार देने में महत्वपूर्ण रही है। पूरन डावर के बेटे, संभव डावर ने कमान संभाली है और अब कंपनी के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 2011 में नेतृत्व संभालने के बाद से, संभव ने कंपनी के टर्नओवर को तीन गुना से भी ज्यादा बढ़ा दिया है। उनका दृष्टिकोण उनके पिता के सिद्धांतों को दर्शाता है; मुनाफा ही एकमात्र प्राथमिकता नहीं है। इसके बजाय, वे दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ सही काम करने पर जोर देते हैं। संभव अपने पिता की तरह, संधारणीय प्रथाओं के समर्थक हैं। उनका मानना है कि व्यवसाय जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने और असमानता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हालाँकि, डावर इंडस्ट्रीज की असली ताकत इसके लोगों में है। कर्मचारियों को एक बड़े परिवार का हिस्सा माना जाता है, जो उनके कल्याण और विकास के लिए पूरन डावर की गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कंपनी समान अवसर के सिद्धांतों और अपने कर्मचारियों और उनके परिवारों की भलाई पर केंद्रित एक सख्त आचार संहिता पर काम करती है। डावर इंडस्ट्रीज बुनियादी कर्मचारी लाभों से परे अपनी देखभाल का विस्तार करती है, एक समग्र सहायता प्रणाली बनाती है, जो दैनिक जीवन को प्रभावित करती है। इसमें अपने कर्मचारियों के मेधावी बच्चों की शिक्षा के लिए धन मुहैया कराना, यह सुनिश्चित करना शामिल है कि अगली पीढ़ी को बेहतर अवसर मिलें। ऑन–साइट क्लिनिक सभी कर्मचारियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए तत्काल स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, एक स्वच्छ कैंटीन पौष्टिक भोजन प्रदान करती है, और निःशुल्क परिवहन सेवाएँ सुरक्षित और सुविधाजनक आवागमन सुनिश्चित करती हैं। अपने लोगों के सुख–दुख को साझा करने के पूरन डावर के दर्शन ने कंपनी और उसके कर्मचारियों के बीच एक मजबूत बंधन को बढ़ावा दिया है। इस पारस्परिक सम्मान और देखभाल के परिणामस्वरूप एक प्रतिबद्ध और समर्पित टीम बनी है, जो हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए तैयार रहती है। निरंतर सीखने और विकास पर जोर यह सुनिश्चित करता है कि कर्मचारी उद्योग की बदलती मांगों को पूरा करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हों। डावर गर्व से दावा करते हैं कि अधिकांश कर्मचारी सेवानिवृत्ति तक और उसके बाद भी कंपनी के साथ बने रहते हैं। नतीजतन, डावर समूह को कर्मचारियों के लिए विज्ञापन देने की कभी जरूरत नहीं पड़ती, मुँह से प्रचार और प्रतिष्ठा नए कर्मचारियों को लाती है। किसी भी पद के लिए बाहरी लोगों की जरूरत नहीं है। डावर समूह एक नया कार्यबल बनाने और मौजूदा कर्मचारियों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे नेतृत्व की दूसरी पंक्ति को बढ़ावा मिलता है। प्रतिस्पर्धी बनाने से डरने वाले अन्य लोगों के विपरीत, डावर भविष्य के नेताओं को पोषित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

वे इस प्रगति की व्याख्या करते हैं:

20,000 रुपये प्रति माह कमाने वाले एक पर्यवेक्षक को 40,000 रुपये के वेतन के साथ लाइन इंचार्ज के रूप में पदोन्नत किया जा सकता है। यह दूसरों के लिए अवसर पैदा करता है, क्योंकि एक लाइन इंचार्ज को फ्लोर इंचार्ज, फिर फैक्टरी मैनेजर और अंततः समूह प्रबंधक के रूप में पदोन्नत किया जा सकता है। जिन कर्मचारियों ने 1,800 रुपये प्रति माह कमाने वाले प्रशिक्षु के रूप में शुरुआत की थी, वे अब समूह प्रबंधक के रूप में पद संभाल रहे हैं, जो कंपनी की कार के साथ 2,50,000 रुपये प्रति माह कमा रहे हैं। लाखों रुपये प्रति माह कमाने वाला फैक्टरी मैनेजर, जिसने सैंपल मेकर के रूप में तीन साल तक 3,000 रुपये प्रति माह पर काम किया, इस विकास का उदाहरण है।

न केवल काम, बल्कि शक्ति का प्रतिनिधिमंडल भी व्यावसायिक सफलता की कुंजी है और डावर इंडस्ट्रीज ने वर्षों से इसका अभ्यास किया है। कर्मचारी कल्याण के लिए यह समग्र दृष्टिकोण डावर समूह के कॉर्पोरेट दर्शन की आधारशिला है, जो कंपनी को आगरा और पूरे भारत में चमड़ा निर्यात उद्योग में एक दिग्गज बनाता है। अग्रणी भूमिका निभाकर और प्रतिभाशाली लोगों को मार्गदर्शन प्रदान करके, पूरन डावर ने एक ऐसी कंपनी का निर्माण किया है, जो अपने लोगों को अपनी सबसे बड़ी संपत्ति मानती है, तथा डावर इंडस्ट्रीज के लिए एक टिकाऊ और सफल भविष्य सुनिश्चित करती है।

स्थिरता और नैतिक प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्धता

पूरन डावर का दृढ़ विश्वास है कि किसी भी उद्योग के नेता के लिए पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता सर्वोपरि है। वह अक्सर जोर देते हैं, 'यदि कोई पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं है, तो उसे उद्योग चलाने का कोई अधिकार नहीं है। उद्योग चलाना एक जिम्मेदारी भरा काम है।' पूरन डावर का कहना है कि उद्योग हमारी कमाई का जरिया है, लेकिन पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। यह विश्वास उनके प्रशंसनीय व्यक्तिगत दर्शन को सामने लाता है, कि औद्योगिक सफलता के लिए कभी भी संधारणीय प्रथाओं से समझौता नहीं किया जाना चाहिए।

1990 से, डावर इंडस्ट्रीज संधारणीयता और नैतिक उत्पादन के लिए समर्पित है। हर जूता पूरी तरह से संधारणीय सामग्रियों का उपयोग करके हाथ से तैयार किया जाता है, जो न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। पूरन डावर ने हमेशा संधारणीय प्रथाओं पर जोर दिया है, इस बात पर जोर देते हुए कि उद्योग को पर्यावरण की कीमत पर नहीं बढ़ना चाहिए। इस समर्पण ने डावर इंडस्ट्रीज को जिम्मेदार विनिर्माण में अग्रणी के रूप में स्थापित किया है।

संधारणीयता के प्रति डावर इंडस्ट्रीज की प्रतिबद्धता इसके संचालन के हर पहलू में व्याप्त है। कंपनी पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, प्रदूषण विनियमन और कार्बन और जल पदचिह्न में कमी पर ध्यान केंद्रित करती है। सामाजिक विविधता और बेहतरीन कार्य स्थितियों को भी प्राथमिकता दी जाती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कार्यबल के साथ उचित और सम्मानजनक व्यवहार किया जाए।

कंपनी में, यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है कि जूता कम से कम पर्यावरणीय प्रभाव के साथ स्थायी रूप से उत्पादित, जिम्मेदारी से प्राप्त सामग्रियों से निर्मित उपभोक्ता वस्तुओं की बढ़ती सूची में शामिल हो। कंपनी अपने उत्पादों के पर्यावरणीय प्रभाव की जिम्मेदारी लेती है, पर्यावरण संरक्षण अध्ययन समूह जैसी पहलों के माध्यम से भविष्य में इसे शून्य तक कम करने का प्रयास करती है।

पूरन डावर ने अक्सर पर्यावरण नियमों को प्रभावी ढंग से लागू करने में विफल रहने के लिए सरकारी एजेंसियों की आलोचना की है, पुलिसिंग के बजाय सामाजिक ऑडिट के लिए समर्पित एक स्वतंत्र निकाय की वकालत की है। उनका मानना है कि जुर्माने के माध्यम से प्रवर्तन के बजाय कार्यान्वयन पर केंद्रित एक उचित सामाजिक लेखा परीक्षा प्रणाली पर्यावरण की बेहतर सुरक्षा करेगी।

कई व्यवसाय नियमों का पालन करना एक खर्च के रूप में देखते हैं, लेकिन पूरन डावर इसे एक निवेश के रूप में देखते हैं – न केवल कंपनी के भविष्य के लिए बल्कि दुनिया के लिए भी। उन्होंने इन प्रथाओं को कंपनी की लागत संरचना में एकीकृत किया है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार की पहल, उद्योगों को सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए 1,000 दिन देना, पूरन डावर के दृष्टिकोण के अनुरूप है। उनका मानना है कि इन मानदंडों के अनुसार कारखानों का निर्माण किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे पूरी तरह से हरित हों, जिसमें फर्श की जगह से ज़्यादा हरित क्षेत्र हो।

डावर इंडस्ट्रीज खाद्य अपशिष्ट को यूरिया में भी परिवर्तित करती है, जो शून्य अपशिष्ट के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कंपनी की सुविधा में अपशिष्ट खाद्य और सूखे पत्तों को खाद में बदलने की क्षमता है। यह अभ्यास उनके समाज तक फैला हुआ है, जहाँ पक्की सड़कें, जल संचयन प्रणाली और गीले और सूखे कचरे को अलग करने की व्यवस्था लागू की गई है। पूरन डावर प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण के लिए गीले कचरे को अलग करने के महत्व पर जोर देते हैं।

स्थिरता के प्रति यह समग्र दृष्टिकोण, डावर इंडस्ट्रीज को अलग करता है, जहाँ औद्योगिक विकास और पर्यावरण संरक्षण में सामंजस्य स्थापित किया जाता है। पर्यावरण और संधारणीय प्रथाओं के प्रति पूरन डावर का जुनून न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि अन्य व्यवसायों के लिए अनुसरण करने के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करता है। स्थिरता को लागत के बजाय एक निवेश के रूप में देखते हुए, पूरन डावर एक जिम्मेदार और पर्यावरण के प्रति जागरूक उद्योग बनाने में अग्रणी हैं।

डावर इंडस्ट्रीज को गुणवत्ता और स्थिरता के प्रति अपनी अथक प्रतिबद्धता के लिए कई प्रमाणपत्र और पुरस्कार मिले हैं। इनमें ISO 9001, ISO 14001, ISO 45001 और SA 8000 मानक शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक प्रमाणन उद्योग में महत्वपूर्ण महत्व रखता है:

- ISO 9001: यह प्रमाणन गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली (QMS) के लिए आवश्यकताओं को निर्दिष्ट करता है। यह सुनिश्चित करता है कि डावर इंडस्ट्रीज लगातार ऐसे उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करती है जो ग्राहक और नियामक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं और निरंतर सुधार प्रदर्शित करती हैं। ISO 9001 प्रमाणन कंपनी की अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं में गुणवत्ता के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के प्रति समर्पण को दर्शाता है।
- ISO 14001: यह प्रमाणन पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली (EMS) से संबंधित है। यह संगठनों को संसाधनों के अधिक कुशल उपयोग और अपशिष्ट में कमी के माध्यम से अपने पर्यावरण प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करता है। ISO 14001 प्रमाणन प्राप्त करके, डावर इंडस्ट्रीज पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और अपने पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करने के लिए अपने सक्रिय दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।
- ISO 45001: यह मानक व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा (OH & S) प्रबंधन प्रणाली के लिए आवश्यकताओं को निर्दिष्ट करता है। यह कार्य–संबंधित चोटों और बीमारियों को रोकने में मदद करने के लिए जोखिमों और अवसरों के प्रबंधन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। ISO 45001 प्रमाणन दर्शाता है कि डावर इंडस्ट्रीज अपने कर्मचारियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को प्राथमिकता देता है, जिससे सुरक्षित और स्वस्थ कार्य वातावरण सुनिश्चित होता है।
- SA 8000 मानकः यह दुनिया का अग्रणी सामाजिक प्रमाणन कार्यक्रम है। यह एक समग्र ढांचा प्रदान करता है जो संगठनों को श्रमिकों के साथ उचित व्यवहार के प्रति अपने समर्पण को प्रदर्शित करने की अनुमति देता है। SA 8000 मानक बाल श्रम, जबरन या अनिवार्य श्रम, स्वास्थ्य और सुरक्षा, संघ की स्वतंत्रता, सामूहिक सौदेबाजी का अधिकार, भेदभाव, अनुशासनात्मक व्यवहार, काम के घंटे और पारिश्रमिक जैसे विभिन्न तत्वों को कवर करता है। SA 8000 मानक के प्रति

आगरा में आयोजित बृज रत्न पुरस्कार समारोह के मंच पर अतुल्य भारत फाउंडेशन के अध्यक्ष पूरन डावर लोगों को संबोधित करते हुए।

डावर इंडस्ट्रीज का पालन सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उत्कृष्टता की निरंतर खोज से चिह्नित डावर इंडस्ट्रीज की यात्रा किसी की नजर से नहीं छूटी है। पिछले कुछ वर्षों में, कंपनी को कई पुरस्कारों से नवाजा गया है, जिनमें से प्रत्येक गुणवत्ता, नवाचार और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। ये पुरस्कार पूरन डावर और उनकी टीम की उल्लेखनीय उपलब्धियों को उजागर करते हैं, जो जूता उद्योग में अग्रणी के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को मजबूत करते हैं।

2010 में, डावर इंडस्ट्रीज को औद्योगिक प्रदर्शन में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए उद्यमी सम्मान से सम्मानित किया गया था। यह पुरस्कार एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, जिसने उत्कृष्टता के लिए कंपनी के समर्पण और उद्योग पर इसके प्रभाव को मान्यता दी। मान्यता ने उत्प्रेरक का काम किया, जिसने कंपनी को और भी अधिक ऊँचाइयों पर पहुँचने के लिए प्रेरित किया।

वर्ष 2018––2019 डावर इंडस्ट्रीज के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा, क्योंकि इस दौरान इसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले। उत्तर प्रदेश के राज्य निर्यात पुरस्कार ने निर्यात में कंपनी के असाधारण प्रदर्शन को मान्यता दी, राज्य की आर्थिक वृद्धि

में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में इसकी भूमिका को रेखांकित किया। यह पुरस्कार न केवल कंपनी की निर्यात उपलब्धियों का प्रतिबिंब था, बल्कि इसकी रणनीतिक दृष्टि और परिचालन उत्कृष्टता का भी प्रमाण था।

उसी वर्ष, डावर इंडस्ट्रीज को लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया, जिसने लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र में एक अग्रणी खिलाड़ी के रूप में इसकी स्थिति को और मजबूत किया। यह पुरस्कार चमड़े के उत्पादन में कंपनी के उच्च मानकों, स्थिरता के प्रति इसकी प्रतिबद्धता और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानदंडों को पूरा करने की इसकी क्षमता के लिए एक संकेत था।

इसका सबसे बड़ा गौरव उद्योग विभूषण के रूप में सामने आया, जो औद्योगिक प्रदर्शन में उत्कृष्टता के लिए एक पुरस्कार है। इस प्रतिष्ठित सम्मान ने औद्योगिक क्षेत्र में डावर इंडस्ट्रीज के समग्र योगदान, इसकी नवीन प्रथाओं और उत्कृष्टता के नए मानदंड स्थापित करने में इसकी भूमिका को मान्यता दी।

इनमें से प्रत्येक पुरस्कार समर्पण, कड़ी मेहनत और उत्कृष्टता की निरंतर खोज की कहानी कहता है। ये केवल प्रशंसाएं नहीं हैं, बल्कि एक मामूली घरेलू खिलाड़ी से वैश्विक पावरहाउस बनने और उसके द्वारा स्थापित कंपनी की यात्रा के प्रतीक हैं। इन मान्यताओं ने गुणवत्ता, स्थिरता और सामाजिक जिम्मेदारी के लिए प्रतिबद्ध एक विश्वसनीय और जिम्मेदार निर्माता के रूप में डावर इंडस्ट्रीज की प्रतिष्ठा को मजबूत किया है।

पूरन डावर के दूरदर्शी नेतृत्व और उनकी टीम के सामूहिक प्रयासों ने यह सुनिश्चित किया है कि डावर इंडस्ट्रीज उद्योग में मानक स्थापित करना जारी रखे। उच्च मानकों को बनाए रखने और अपनी प्रक्रियाओं में लगातार सुधार करने की कंपनी की क्षमता ने इसे वैश्विक जूता बाजार में सबसे आगे रखा है। जैसा कि डावर इंडस्ट्रीज भविष्य की ओर देख रही है, ये प्रशंसाएँ इसकी यात्रा की याद दिलाती हैं और उत्कृष्टता के लिए प्रयास जारी रखने के लिए प्रेरित करती हैं।

तकनीकी उन्नति और आधुनिक सुविधाएँ

डावर इंडस्ट्रीज हमेशा तकनीकी उन्नति के मामले में सबसे आगे रही है। कंपनी ने अपनी सुविधाओं को आधुनिक बनाने और अत्याधुनिक मशीनरी को शामिल करने में लगातार निवेश किया है। नवाचार के प्रति यह अटूट प्रतिबद्धता फैक्ट्री के अत्याधुनिक बुनियादी ढाँचे में झलकती है, जिसमें अत्याधुनिक उत्पादन लाइनें और स्वचालित प्रक्रियाएँ शामिल हैं जो दक्षता और गुणवत्ता दोनों को नई ऊँचाइयों तक ले जाती हैं।

प्रौद्योगिकी का उपयोग केवल विनिर्माण तक ही सीमित नहीं है।

कंपनी ने समय पर डिलीवरी और इष्टतम संसाधन उपयोग सुनिश्चित करने के लिए परिष्कृत इन्वेंट्री प्रबंधन और लॉजिस्टिक्स सिस्टम भी लागू किए हैं। इन तकनीकी उन्नतियों ने वैश्विक बाजार में कंपनी की प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

नवाचार और अनुसंधान एवं विकासः संचालन का मूल

नवाचार, डावर इंडस्ट्रीज के संचालन का मूल है। कंपनी ने अनुसंधान और विकास (R&D) में भारी निवेश किया है, जिससे नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा मिला है। R&D पहल नए डिजाइन विकसित करने, उत्पादन तकनीकों में सुधार करने और नई सामग्रियों की खोज करने पर केंद्रित है।

अग्रणी डिजाइन और तकनीकी संस्थानों के साथ सहयोग ने कंपनी की नवाचार क्षमताओं को और मजबूत किया है। ये साझेदारियां डावर इंडस्ट्रीज को बाजार के रुझानों से आगे रहने और उपभोक्ताओं की लगातार बदलती प्राथमिकताओं को पूरा करने वाले उत्पाद देने में सक्षम बनाती हैं।

कंपनी की R&D पहलों में सामग्री सोर्सिंग, जूते के आखिरी हिस्से का विकास, एड़ी और सोल बनाना, हार्डवेयर और रबर सोल के लिए कस्टम मोल्ड बनाना, पेपर पैटर्न बनाना, अलंकरण और कढ़ाई बनाना और 3D रिलीफ लोगो शामिल हैं। ये प्रयास सुनिश्चित करते हैं कि डावर इंडस्ट्रीज द्वारा उत्पादित प्रत्येक जूता शिल्प कौशल और नवाचार की उत्कृष्ट कृति है।

डावर इंडस्ट्रीज ग्राहकों की जरूरतों का आंकलन करने और उनके विनिर्देशों को पूरा करने वाले उत्पाद देने के लिए उनके साथ मिलकर काम करती है। कंपनी के जूता विशेषज्ञ पहले प्रोटोटाइप से लेकर बड़े पैमाने पर उत्पादन तक सभी प्रकार की परियोजनाओं को संभालने के लिए बाजार अनुसंधान, खुदरा और फैशन प्रवृत्ति पूर्वानुमान और अभिनव प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त, कंपनी डिजाइनिंग के लिए उन्नत CAD/CAM सॉफ्टवेयर का उपयोग करती है, जिससे उत्पादन प्रक्रिया में सटीकता और रचनात्मकता की अनुमति मिलती है। प्रोटोटाइपिंग और सैंपलिंग अभिन्न चरण हैं जो सुनिश्चित करते हैं कि अंतिम उत्पाद उच्चतम गुणवत्ता का है। कंपनी का R&D विभाग रचनात्मक अवधारणाओं को पेशेवर डिजाइन में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कंपनी की सुविधाएँ उन्नत मशीनरी और प्रक्रियाओं से सुसज्जित हैं जो उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादन को सुनिश्चित करती हैं। उत्पादों को पैक करने और भेजने से पहले फ॰ विशेषज्ञों द्वारा अंतिम गुणवत्ता निरीक्षण किया जाता है। पूरी सावधानी के साथ यह ध्यान रखा जाता है कि ग्राहकों तक केवल उच्च गुणवत्ता वाले जूते ही पहुँचें। डावर

इंडस्ट्रीज द्वारा उत्पादित प्रत्येक जूते के पीछे परंपरा, नवाचार और गुणवत्ता का मिश्रण है। कंपनी का शिल्प कौशल कुशल कारीगरों द्वारा दशकों के अभ्यास और समर्पण का परिणाम है। डिजाइन और पैटर्न बनाने की प्रक्रिया को एक समर्पित टीम द्वारा सावधानीपूर्वक संभाला जाता है जो सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक जूता उच्चतम मानकों को पूरा करता है।

कर्मचारी संतुष्टि और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति प्रतिबद्धता

डावर इंडस्ट्रीज सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्ध है। कंपनी के प्रयास उत्पादन से आगे बढ़कर अपने कर्मचारियों को लाभ पहुँचाने वाली पहलों को शामिल करते हैं। इसमें बेहतरीन कार्य परिस्थितियाँ प्रदान करना, उत्पाद सुरक्षा सुनिश्चित करना और मानवाधिकारों का सम्मान करना शामिल है।

कंपनी नैतिक रूप से प्राप्त सामग्री और संधारणीय विनिर्माण प्रक्रियाओं का उपयोग करके अपने पर्यावरणीय पदचिह्न को कम करने पर भी ध्यान केंद्रित करती है। संधारणीयता के प्रति यह प्रतिबद्धता कंपनी के संचालन के हर पहलू में, सामग्री सोर्सिंग से लेकर उत्पादन और पैकेजिंग तक, परिलक्षित होती है। हम अगले अध्याय में इसके बारे में और इसके महत्व के बारे में विस्तार से जानेंगे।

उत्कृष्टता की विरासत

एक छोटे घरेलू खिलाड़ी से जूता उद्योग में वैश्विक नेता बनने तक का डावर इंडस्ट्रीज का सफर गुणवत्ता, नवाचार और संधारणीयता के प्रति इसकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। कंपनी की सफलता मजबूत नेतृत्व, समर्पित कार्यबल और निरंतर सुधार की नींव पर आधारित है।

डावर इंडस्ट्रीज जब भविष्य की तरफ बढ़ रही है, तब यह अपने मुख्य मूल्यों – स्थिरता, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी–के प्रति पूरी तरह से वफादार और प्रतिबद्ध है। कंपनी की सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) पहल, जिसकी चर्चा अगले अध्याय में की जाएगी, समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए इसके समर्पण का प्रमाण है। डावर इंडस्ट्रीज एक बेहतर दुनिया बनाने के उद्देश्य और जिम्मेदार व्यवसायिक प्रथाओं के जरिए लगातार नए मानक स्थापित कर रही है।''

अध्याय 10

सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के सामाजिक कार्य

सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना व्यक्तिगत दर्द को समाज की भलाई के लिए एक ताकत में बदलने की शक्ति का एक मार्मिक प्रमाण है। ट्रस्ट के लिए पूरन डावर का दृष्टिकोण केवल अपने दिवंगत बेटे सक्षम को सम्मानित करना नहीं था, बल्कि समाज पर एक स्थायी और सार्थक प्रभाव पैदा करना था। शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करके ट्रस्ट का लक्ष्य गरीबी और सामाजिक असमानता के मूल कारणों से निपटना है।

पूरन डावर की उद्यमशीलता की यात्रा लचीलापन और नवाचार द्वारा चिह्नित की गई है। जिस तरह उन्होंने प्रौद्योगिकी को एकीकृत करके और कारीगरों को ऊपर उठाकर जूता उद्योग में क्रांति ला दी, उसी तरह अब वे समुदायों को उनके विकास के लिए आवश्यक उपकरण और अवसर प्रदान करके उन्हें बदलना चाहते हैं। उनका दर्शन गहरा लेकिन सरल हैः आज हर परिवार को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना, ताकि वे कल संभावित ग्राहक बन सकें। उनका दृष्टिकोण तत्काल व्यावसायिक लाभ से आगे बढ़कर सामाजिक उत्थान के माध्यम से एक स्थायी भविष्य के बाजार का निर्माण करना है। पूरन डावर इस आध्यात्मिक सिद्धांत में गहराई से विश्वास करते हैं कि समाज की सेवा हर जीवन में आशीर्वाद लाती है। वे बताते हैं कि किसी भी व्यवसाय में तीन तरह के निवेश होते हैंः अल्पकालिक, मध्यकालिक और दीर्घकालिक। उनका मानना है कि समाज सेवा अगली पीढ़ी के लिए दीर्घकालिक निवेश है। आज भारत में 22 करोड़ लोग गरीबी रेखा (बीपीएल) से नीचे रहते हैं। अगर सामाजिक सुधार इन लोगों की क्रय शक्ति बढ़ा सकते हैं और उन्हें बीपीएल सीमा से ऊपर उठने में मदद कर सकते हैं, तो यह भविष्य के व्यवसाय के लिए 22 करोड़ संभावित उपभोक्ताओं का एक नया बाजार बनाता है, जो पूरे यूरोपीय संघ की आबादी के बराबर है। यह विश्वास, उनके दिल की दयालुता के अलावा, पूरन डावर की सामाजिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को प्रेरित करता है। वे भारत को 77 करोड़ की युवा आबादी के अपने अनूठे जनसांख्यिकीय लाभ के साथ, अपार संभावनाओं वाली भूमि के रूप में देखते हैं। जबकि दुनिया के अन्य हिस्सों में बाजार संतृप्ति की ओर बढ़ रहे हैं, भारत विकास के लिए अगले बड़े गंतव्य के रूप में सामने आता है। सामाजिक उत्थान में निवेश करके, पूरन डावर का लक्ष्य इस विशाल बाजार को विकसित करना है, ताकि भविष्य के आर्थिक अवसरों के लिए इसकी तत्परता सुनिश्चित हो सके।

सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट अपने प्रभाव को न केवल शिक्षित बच्चों या परोसे गए भोजन की संख्या के आधार पर मापता है, बल्कि समुदायों के भीतर बदले हुए जीवन और आशा की बहाली के आधार पर भी मापता है। पूरन डावर की जीवनी न केवल कॉर्पोरेट अनुपालन के रूप में ट्रस्ट की ब्ै पहलों को उजागर करती है, बल्कि

यह उन गहरे विषयों पर भी प्रकाश डालती है जो उनके दिल के बहुत करीब हैं। उनमें हमेशा सामाजिक जिम्मेदारी की गहरी भावना रही है, जो इस बात से स्पष्ट है कि उन्होंने कारीगरों के उत्थान और असंगठित क्षेत्र को एक संरचित उद्योग में बदलने के लिए तकनीकी प्रगति को कैसे एकीकृत किया। हालाँकि जीवन ने पूरन डावर को एक बड़ी चुनौती दी, जिसने उनके संकल्प और करुणा की परीक्षा ली, ट्रस्ट के माध्यम से उन्होंने अपने दुःख को करुणा और आशा के मिशन में बदलने का एक तरीका खोज लिया है, जिससे एक ऐसी विरासत का निर्माण हुआ है जो उनकी उद्यमशीलता की उपलब्धियों से कहीं आगे जाती है। शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास में सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की पहलों ने अनगिनत लोगों के जीवन को छुआ है, उन लोगों को आशा और अवसर प्रदान किए हैं जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। अपने मिशन और मूल्यों के प्रति सच्चे रहते हुए, ट्रस्ट सकारात्मक बदलाव का प्रभाव पैदा करना जारी रखता है, व्यक्तियों और समुदायों को बेहतर भविष्य बनाने के लिए सशक्त बनाता है।

सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना

1990 के दशक के आखिर में, पूरन डावर को एक अकल्पनीय त्रासदी का सामना करना पड़ा। उनके छोटे बेटे सक्षम का देहांत। 1998 में छत से गिरकर उसकी दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु हो गई थी। आगरा के सेंट पीटर्स कॉलेज में कक्षा 4 का एक होनहार छात्र, सक्षम सपनों और संभावनाओं से भरा हुआ था। उसके अचानक चले जाने से पूरन डावर के जीवन में एक गहरा खालीपन आ गया, एक ऐसा खालीपन जो उसे आसानी से दुख में डुबो सकता था, लेकिन पूरन डावर ने अपने दुख को करुणा और आशा के मिशन में बदलने का फैसला किया।

1998 में, इस गहरी व्यक्तिगत क्षति की पूर्ति के लिए सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना की गई। शुरू में सक्षम के बीमा धन और खुद पूरन डावर द्वारा दिए गए बराबर राशि के योगदान से वित्तपोषित, ट्रस्ट की स्थापना एक दोहरे उद्देश्य से की गई थीः सक्षम की स्मृति का सम्मान करना और एक स्थायी विरासत बनाना जो असंख्य लोगों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। ट्रस्ट के लिए पूरन डावर का दृष्टिकोण शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास पर केंद्रित था, ऐसे क्षेत्र जहाँ उनका मानना था कि वे सबसे महत्वपूर्ण अंतर ला सकते हैं।

ट्रस्ट की पहली पहल सेंट पीटर्स कॉलेज में कक्षा 4 में आर्थिक रूप से सबसे कमजोर लेकिन उत्कृष्ट छात्र के लिए छात्रवृत्ति थी। 1000 रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए समर्पित एक यात्रा की शुरुआत की गई। इस पहल ने जल्द ही न्यूनतम वेतन पाने वाले डावर जूता कर्मचारियों के

सभी बच्चों को शैक्षिक सहायता प्रदान करने के लिए विस्तार किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि वित्तीय बाधाएँ उनके बच्चों की शैक्षिक आकांक्षाओं में बाधा न बनें।

पूरन डावर समझ गए कि शिक्षा गरीबी के चक्र को तोड़ने की कुंजी है। इस प्रकार, ट्रस्ट के तहत बाल शिक्षा कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य डावर इंडस्ट्रीज में काम करने वाले श्रमिकों और आस–पास के क्षेत्रों में रहने वाले अन्य वंचित परिवारों के बच्चों को निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना था। इस पहल ने सीखने का एक सकारात्मक और अनुकूल माहौल बनाया, जिससे इनमें से अधिकांश बच्चों के सामने आने वाली सीखने की बाधाओं को दूर किया जा सका। मौद्रिक सहायता और समर्थन प्रदान करके, ट्रस्ट ने कई बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम बनाया, जिससे उन्हें एक उज्जवल भविष्य की राह पर आगे बढ़ने में मदद मिली।

संयोग से, एक बच्चे के विकास में पोषण के महत्व को पहचानते हुए, ट्रस्ट ने जरूरतमंदों को दैनिक भोजन उपलब्ध कराने पर भी ध्यान केंद्रित किया। विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से, ट्रस्ट ने आगरा में एक केंद्रीय रसोई सुविधा स्थापित की। सौर पैनलों के माध्यम से अक्षय ऊर्जा द्वारा संचालित इस अत्याधुनिक रसोई ने कम आय वाले परिवारों के लिए किफायती और स्वच्छ भोजन तैयार किया और वितरित किया। 20 कर्मचारियों की एक समर्पित टीम द्वारा संचालित केंद्रीय रसोई का उद्देश्य भोजन की बर्बादी को कम करना और समुदाय में भूख को दूर करना था।

कम कार्बन पदचिह्न वाली ECO रसोई सुविधा, पूरन डावर के संधारणीय और जिम्मेदार प्रथाओं के दृष्टिकोण के अनुरूप है। ट्रस्ट की पहलों का एक और आधार कौशल प्रशिक्षण था। ट्रस्ट ने वंचित बच्चों और आस–पास की बस्तियों और बीपीएल (गरीबी रेखा से नीचे) श्रेणी के सदस्यों को कौशल प्रदान करने के उद्देश्य से एक इन–हाउस प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की। यह कार्यक्रम व्यक्तियों को रोजगार सुरक्षित करने और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने के लिए डिजाइन किया गया था। विभिन्न ट्रेडों और शिल्पों में प्रशिक्षण प्रदान करके, ट्रस्ट ने प्रतिभागियों को आत्मनिर्भर बनने और अपने समुदायों में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनाया। इस पहल ने न केवल बेरोजगारी को कम करने में मदद की, बल्कि लाभार्थियों के बीच सम्मान और आत्म–सम्मान की भावना को भी बढ़ावा दिया।

सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की सामाजिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता शिक्षा, भोजन और कौशल प्रशिक्षण से आगे तक फैली हुई है। ट्रस्ट ने आदिवासी बच्चों की शिक्षा में सक्रिय रूप से योगदान दिया, समर्पण ब्लड बैंक और डायलिसिस

सेंटर का समर्थन किया, और एक चिकित्सा धर्मार्थ संगठन 'हेल्प आगरा' का सदस्य था। इसके अतिरिक्त, ट्रस्ट ने बुजुर्गों की देखभाल में योगदान दिया, यह सुनिश्चित करते हुए कि समाज के सबसे कमजोर सदस्यों को भुलाया नहीं जाना चाहिए।

एक दुखी पिता से लेकर समाज कल्याण के चैंपियन बनने तक का पूरन डावर का सफर लचीलापन, करुणा और महान भलाई के प्रति अटूट समर्पण की कहानी है। सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना उनके इस विश्वास का प्रमाण है कि सच्ची सफलता दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता में निहित है। अपनी व्यक्तिगत त्रासदी को दूसरों की मदद करने के मिशन में बदलकर, पूरन डावर ने एक ऐसी विरासत बनाई है जो उनकी उद्यमशीलता की उपलब्धियों से कहीं आगे जाती है। शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास में ट्रस्ट की पहल ने अनगिनत लोगों के जीवन को छुआ है, उन लोगों को उम्मीद और अवसर प्रदान किए हैं जिन्हें इसकी सबसे अधिक जरूरत है। जैसे–जैसे ट्रस्ट अपनी पहुँच का विस्तार करना जारी रखता है, यह गरीबी और सामाजिक असमानता के मूल कारणों को दूर करने के अपने मिशन में दृढ़ रहता है। सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट का प्रभाव केवल संख्याओं में नहीं, बल्कि जीवन और समुदायों के परिवर्तन में मापा जाता है। अपने अथक प्रयासों के माध्यम से, पूरन डावर ने दिखाया है कि अकल्पनीय नुकसान के बावजूद, कोई भी व्यक्ति कुछ सुंदर और सार्थक बनाने की ताकत पा सकता है। ट्रस्ट के माध्यम से सक्षम की विरासत जीवित है, जो जरूरतमंद लोगों को प्रेरित और उनका उत्थान करना जारी रखती है।

बाल शिक्षा कार्यक्रमः उज्जवल भविष्य की राह को रोशन करना

बाल शिक्षा कार्यक्रम इस मान्यता से जन्मा है कि शिक्षा एक मौलिक अधिकार है और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति में पूरन डावर का विश्वास बहुत ही व्यक्तिगत है और उनके अनुभवों में निहित है। उन्होंने एक ऐसी दुनिया की कल्पना की है जहाँ हर बच्चे को, चाहे उसकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच हो। यह दृष्टि बाल शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से जीवंत हुई, जो गरीबी के चक्र को तोड़ने और अगली पीढ़ी को सशक्त बनाने के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता का एक शक्तिशाली प्रमाण है।

बाल शिक्षा कार्यक्रम उन चुनौतियों का समाधान करने के लिए डिजाइन किया गया था जो बच्चों को शिक्षा तक पहुँचने से रोकती हैं। कार्यक्रम की निःशुल्क नामांकन नीति एक अनूठा पहलू है जो कई परिवारों के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा को समाप्त करता है। यह नीति सुनिश्चित करती है कि हर बच्चे को, चाहे उसकी

वित्तीय स्थिति कुछ भी हो, सीखने और बढ़ने का अवसर मिले। शिक्षा को सुलभ बनाकर, कार्यक्रम का उद्देश्य सभी बच्चों के लिए समान अवसर प्रदान करना है, जिससे उन्हें सफलता का उचित अवसर मिले।

कार्यक्रम की शुरुआत उन बाधाओं की गहन समझ से प्रेरित थी जो बच्चों को शिक्षा तक पहुँचने से रोकती हैं। कई समुदायों में, शिक्षा की लागत एक महत्वपूर्ण बाधा है। जीवनयापन के लिए संघर्ष कर रहे परिवारों को अक्सर शिक्षा जैसे दीर्घकालिक लाभों पर तत्काल अस्तित्व को प्राथमिकता देनी पड़ती है। पूरन डावर ने इस दुविधा को पहचाना और ट्रस्ट के प्रयासों के माध्यम से इन बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया।

शुरुआत में, डावर इंडस्ट्रीज में न्यूनतम वेतन वाले कर्मचारियों के बच्चों की स्कूल फीस का भुगतान किया गया। ट्रस्ट ने पहले बच्चे की फीस का 100 प्रतिशत, दूसरे की 50 प्रतिशत, और परिवारों को तीसरे बच्चे का खर्च खुद से उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। बच्चों को किस स्कूल में भेजा जाएगा, इस पर कोई सीमा नहीं थी। फीस सालाना सीधे स्कूल के खातों में जमा की जाती थी। इस कार्यक्रम ने न केवल वित्तीय राहत प्रदान की, बल्कि इन बच्चों के लिए शिक्षा की निरंतरता भी सुनिश्चित की।

जल्द ही यह पहल कंपनी से आगे बढ़कर व्यापक समुदाय तक फैल गई। ट्रस्ट ने एक बार में 600 बच्चों की शिक्षा का समर्थन करना शुरू किया, उनकी फीस सीधे स्कूलों को दी। पूरन डावर ने अन्य व्यावसायिक नेताओं को भी इसी तरह की प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जिससे सभी के लिए शिक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एक श्रृंखला प्रतिक्रिया बनी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जवाबदेही सरकारी दायित्वों से परे कर्मचारियों के बच्चों की भलाई को भी शामिल करती है। उन्होंने व्यवसायियों को अपने खर्चों की योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसमें उनके कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा के लिए प्रावधान भी शामिल हैं। कर्मचारी–हितैषी इस दृष्टिकोण से न केवल समाज को लाभ हुआ, बल्कि डावर इंडस्ट्रीज में कर्मचारियों की संख्या में भी वृद्धि हुई। पूरन डावर का दर्शन सरल था; खुश और सुरक्षित कर्मचारी अधिक उत्पादक और वफादार होते हैं।

इस पहल ने बाल शिक्षा कार्यक्रम की नींव रखी, जो एक दूरदर्शी परियोजना है, जिसका उद्देश्य समुदाय में वंचित बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना है। कार्यक्रम शिक्षा तक पहुँच प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है। यह एक अनुकूल शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करके एक कदम आगे जाता है। वंचित पृष्ठभूमि के कई बच्चे अपनी पढ़ाई की यात्रा में कई बाधाओं का सामना करते हैं, जिसमें उचित अध्ययन सामग्री और संसाधनों की कमी से लेकर गैर–सहायक घरेलू वातावरण तक शामिल है। बाल शिक्षा कार्यक्रम एक सकारात्मक और सहायक शिक्षण

वातावरण बनाकर इन मुद्दों को संबोधित करता है। इसमें आवश्यक अध्ययन सामग्री प्रदान करना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों तक पहुँच, और बच्चों के लिए एक सुरक्षित और उत्साहजनक वातावरण सुनिश्चित करना शामिल है।

कार्यक्रम की उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक इसकी व्यापक सहायता प्रणाली है। ट्रस्ट विभिन्न स्कूलों में कामगारों के बच्चों की शिक्षा का समर्थन करता है, उनकी पढ़ाई में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए सीधे उनकी फीस का भुगतान करता है। यह वित्तीय सहायता परिवारों से बोझ हटाती है और बच्चों को पूरी तरह से उनकी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देती है। इसके अतिरिक्त, ट्रस्ट की प्रतिबद्धता इन बच्चों की प्रगति की निगरानी करने तक फैली हुई है। यह सुनिश्चित करते हुए कि वे अपने शैक्षिक अनुभवों से अधिकतम लाभ उठा सकें।

बाल शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव अनगिनत बच्चों के जीवन में देखा जा सकता है, जिन्होंने इससे लाभ उठाया है। उदाहरण के लिए, राजू को ही लें, जो डावर इंडस्ट्रीज में एक फैक्ट्री कर्मचारी का बेटा है। ट्रस्ट के हस्तक्षेप से पहले, राजू की शिक्षा अनियमित थी, और उसका भविष्य अनिश्चित लग रहा था। वित्तीय अस्थिरता से जूझ रहे उसके परिवार के पास उसे लगातार अच्छे स्कूल में भेजने का खर्च उठाने की क्षमता नहीं थी। हालांकि, ट्रस्ट के सहयोग से, राजू को एक प्रतिष्ठित स्कूल में दाखिला दिलाया गया, उसकी फीस का भुगतान किया गया, और उसे सभी आवश्यक अध्ययन सामग्री प्रदान की गई। आज राजू अपनी पढ़ाई में अव्वल है और इंजीनियर बनने का सपना देख रहा है। उनकी कहानी उन कई कहानियों में से एक है जो इस कार्यक्रम के गहन प्रभाव को उजागर करती हैं।

सामाजिक कल्याण के लिए ट्रस्ट की प्रतिबद्धता सिर्फ उनके कर्मचारियों के बच्चों तक ही सीमित नहीं है। यह आदिवासी बच्चों की शिक्षा में सक्रिय रूप से योगदान देता है, यह सुनिश्चित करता है कि सबसे हाशिए पर पड़े समुदायों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके। यह समावेशिता पूरन डावर के इस विश्वास को दर्शाती है कि हर बच्चे को सफल होने का मौका मिलना चाहिए, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। आदिवासी क्षेत्रों तक अपनी पहुँच बढ़ाकर, ट्रस्ट शिक्षा के अंतर को पाटने और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने में मदद कर रहा है। एक और प्रेरक कहानी मीरा की है, जो एक आदिवासी समुदाय की लड़की है, जिसे शिक्षा की तलाश में अपार चुनौतियों का सामना करना पड़ा। दूरदराज के इलाके में स्थित उसके गाँव में कोई उचित स्कूल की सुविधा नहीं थी, और लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती थी।

सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट ने अपने आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से मीरा की क्षमता को पहचाना और उसे बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की।

आज, मीरा न केवल साक्षर है, बल्कि अपने समुदाय की अन्य लड़कियों के लिए भी प्रेरणा बन गई है, जो यह साबित करती है कि समर्थन और अवसर के साथ वे भी अपने सपनों को हासिल कर सकती हैं।

बाल शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव व्यक्तिगत सफलता की कहानियों से कहीं आगे जाता है। यह एक ऐसा प्रभाव पैदा करने के बारे में है जो पूरे समुदाय को बदल दे। शिक्षित बच्चे बड़े होकर सशक्त वयस्क बनते हैं, जो समाज में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। वे गरीबी के चक्र को तोड़ते हैं और अपने परिवारों और समुदायों का उत्थान करते हैं। यह पीढ़ीगत परिवर्तन कार्यक्रम का अंतिम लक्ष्य है, और यह पहल से उभरने वाली सफलता की कहानियों की बढ़ती संख्या में स्पष्ट है।

बाल शिक्षा कार्यक्रम के लिए पूरन डावर का दृष्टिकोण केवल तत्काल शैक्षिक सहायता के बारे में नहीं है, यह सीखने और विकास की संस्कृति को बढ़ावा देने के बारे में है। उनका मानना है कि शिक्षा वह नींव है जिस पर भविष्य के नेता और नवप्रवर्तक बनते हैं। आज बच्चों की शिक्षा में निवेश करके, वे बेहतर कल की नींव रख रहे हैं। यह दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की पहल को इतना प्रभावशाली बनाती है।

कार्यक्रम समग्र विकास पर भी जोर देता है। शिक्षा केवल अकादमिक के बारे

पूरन डावर ने अंत्योदय अन्नपूर्णा सेवा (एएवाई) रसोई का उद्घाटन किया, जो सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा सेवा भारती के सहयोग से स्थापित एक पूर्ण सुसज्जित रसोई सुविधा है। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यवाह श्री कृष्ण गोपाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

में नहीं है, यह अच्छी तरह से विकसित व्यक्तियों के पोषण के बारे में है। ट्रस्ट बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न पाठ्येतर गतिविधियाँ, कार्यशालाएँ और खेल आयोजन आयोजित करता है। ये गतिविधियाँ छात्रों में आत्मविश्वास, टीमवर्क और नेतृत्व कौशल का निर्माण करने में मदद करती हैं, जिससे वे भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार होते हैं।

चाइल्ड एजुकेशन प्रोग्राम के बढ़ने के साथ–साथ यह सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के अपने मिशन में दृढ़ है। ट्रस्ट लगातार अपनी पहल को बढ़ाने, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने और अधिक बच्चों तक पहुँचने के लिए नवीन शिक्षण विधियों को बढ़ावा देने के नए तरीके खोज रहा है। दृष्टि स्पष्ट हैः एक ऐसी दुनिया बनाना जहाँ हर बच्चे को सीखने, बढ़ने और सफल होने का अवसर मिले।

संक्षेप में, बाल शिक्षा कार्यक्रम इस बात का एक शानदार उदाहरण है कि कैसे एक व्यक्ति की दृष्टि सकारात्मक बदलाव की एक लहर जैसा प्रभाव पैदा कर सकती है। शिक्षा और सामाजिक कल्याण के प्रति पूरन डावर की प्रतिबद्धता एक–एक करके कई बच्चों के जीवन को बदल रही है। सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के माध्यम से उन्होंने एक ऐसी विरासत बनाई है जो न केवल उनके बेटे की स्मृति का सम्मान करती है, बल्कि अनगिनत बच्चों के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण भी करती है। यह पहल शिक्षा की शक्ति और करुणा और दृष्टि के स्थायी प्रभाव का एक प्रमाण है।

सबके लिए भोजनः पूरन डावर की दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता

2017 की वैश्विक भूख सूचकांक (GII) रिपोर्ट पूरन डावर के लिए एक चेतावनी थी। 119 देशों में से 101वें स्थान पर रहने वाले भारत ने भूख और कुपोषण की भयावह स्थिति को उजागर किया। दूरदर्शी उद्यमी और गहरी सहानुभूति रखने वाले पूरन डावर ने महसूस किया कि इस तरह के गंभीर मुद्दे को हल करने के लिए केवल सरकार पर निर्भर रहना अपर्याप्त था। भूख से लड़ने के लिए समुदाय द्वारा संचालित प्रयासों की तत्काल आवश्यकता थी। इस अहसास ने सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के तहत 'सबके लिए भोजन' पहल की शुरुआत की।

2017 में, भारत में भूख के संकट की गहराई से प्रभावित होकर पूरन डावर ने एक सक्रिय रुख अपनाने का फैसला किया। उनका मानना था कि एक समुदाय की ताकत उसके सबसे कमजोर सदस्यों का समर्थन करने के सामूहिक प्रयास में निहित है। इस विश्वास के साथ, उन्होंने जरूरतमंदों को किफायती, पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए एक परियोजना शुरू की। ट्रस्ट ने आगरा में एक

केंद्रीय रसोई सुविधा स्थापित की, जो अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित थी और सौर पैनलों जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों द्वारा संचालित थी। इस म्ब्ब रसोई ने न केवल सस्ते और स्वच्छ भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित की, बल्कि इसके कार्बन पदचिह्न को भी कम किया। मिशन सरल लेकिन गहरा था; केवल 10 रुपये में पूरा भोजन उपलब्ध कराना। इस भोजन में एक सब्जी, दाल, चावल और रोटी शामिल थी, जो उन लोगों को संतुलित आहार प्रदान करती थी जो इसे वहन नहीं कर सकते थे। इस पहल का उद्देश्य मामूली शुल्क लेकर प्राप्तकर्ताओं की गरिमा को बनाए रखना था। जैसा कि पूरन डावर ने कहा, 'कोई भी आत्म–सम्मान वाला व्यक्ति मुफ्त भोजन का आनंद नहीं लेता है। यह छोटी सी राशि यह सुनिश्चित करती है कि वास्तव में जरूरतमंदों को उनकी गरिमा बनाए रखते हुए भोजन मिले।'

इस पहल को शुरू से ही कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। विचार यह था कि आगरा में 12 अलग–अलग स्थानों से भोजन वितरित किया जाए, जिसके लिए एक समन्वित प्रयास की आवश्यकता थी। पूरन डावर ने सेवा भारती के साथ सहयोग किया, जो एक गैर–सरकारी संगठन है जो आदिवासी समुदायों सहित आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के साथ काम करती है। सेवा भारती के स्वयंसेवकों ने वितरण के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि भोजन उन लोगों तक पहुँचे जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

एक महत्वपूर्ण चुनौती थी स्वाद और गुणवत्ता में एकरूपता बनाए रखने के लिए खाना पकाने की प्रक्रिया का औद्योगिकीकरण करना। पूरन डावर, जो खुद खाना पकाने के शौकीन हैं, अक्सर घर पर कितने भी सहायक हों, अपनी चाय रोजाना बनाते हैं। खाना पकाने के प्रति उनके जुनून ने रसोई में नवाचारों को जन्म दिया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि तैयार किया गया भोजन न केवल पौष्टिक हो बल्कि स्वादिष्ट भी हो।

केंद्रीय रसोई में 20 कर्मचारी कार्यरत थे जो भोजन तैयार करने और वितरित करने के लिए अथक परिश्रम करते थे। रसोई को अच्छी तरह से बनाया गया था, जिसमें एक रोटी बनाने की मशीन थी जो हर घंटे 6000 रोटियाँ बना सकती थी। इसके अलावा तीन बड़े चावल पकाने वाले कुकर थे, जिनकी क्षमता 150 लीटर थी। रसोई में छिलके उतारने की मशीन, सब्जी काटने की मशीन और बर्तन धोने की मशीन भी थी। सुचारू संचालन सुनिश्चित करने के लिए उचित गैस और आरओ पानी की लाइनें लगाई गई। रसोई के व्यवस्थित दृष्टिकोण का मतलब था कि दाल पकाने से लेकर चावल और सब्जियाँ तैयार करने तक हर कदम को दक्षता के साथ सुव्यवस्थित किया गया।

जबकि शुरुआती योजना में रसोई में सेवा भारती के स्वयंसेवकों की सेवा लेना शामिल था, यह जल्द ही स्पष्ट हो गया कि उनकी ताकत खाना पकाने के बजाय समन्वय में है। उद्घाटन की पूर्व संध्या पर पूरन डावर ने महसूस किया कि स्वयंसेवक रसोई के काम को संभालने में सक्षम नहीं होंगे। बिना किसी हिचकिचाहट के उन्होंने कार्यभार स्वयं संभाला, कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया और सुनिश्चित किया कि दोपहर 1 बजे तक खाना पक जाए। सेवा भारती के स्वयंसेवकों ने तब कुशलतापूर्वक वितरण का प्रबंधन किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि भोजन समय पर जरूरतमंदों तक पहुँचे।

केंद्रीय रसोई हर दिन हजारों भोजन तैयार करने वाली गतिविधि का केंद्र बन गई। इस पहल का उद्देश्य भोजन की बर्बादी को कम करना और समुदाय के सबसे कमजोर सदस्यों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना था। संरचित दृष्टिकोण में एक साप्ताहिक प्रणाली शामिल थी, जहाँ सोमवार को कच्चा माल खरीदा जाता था और शनिवार तक उसका उपयोग किया जाता था, जिससे ताजगी और दक्षता सुनिश्चित होती थी।

पूरन डावर की उद्यमशीलता की भावना भूखों को खाना खिलाने तक ही सीमित नहीं थी। उन्होंने एक आत्मनिर्भर मॉडल की कल्पना की, जिसे आगरा से आगे अन्य जिलों में भी विस्तारित किया जा सकता है। भोजन तैयार करने के लिए सुबह 7 बजे से 11 बजे तक संचालित होने वाली रसोई में पूरे दिन अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने की क्षमता थी। पूरन डावर ने सलाद, पनीर की सब्जी और एक मिठाई जैसी अतिरिक्त वस्तुओं के साथ थाली तैयार करने का विचार पेश किया, जिसे 50 रुपये या 80 रुपये में बेचा जा सकता था, जो हल्दीराम और बीकानेर वाला जैसे ब्रांडों के समान पेशकशों के बाजार मूल्य से काफी कम था। इस मॉडल के दोहरे लाभ थे, इसने जनता को किफायती, गुणवत्ता वाला भोजन उपलब्ध कराया और साथ ही रसोई के संचालन को बनाए रखने के लिए राजस्व उत्पन्न करने का मार्ग दिखाया। अवधारणा सरल लेकिन प्रभावशाली थी; ग्राहक 40 रुपये में भोजन का आनंद ले सकते थे, जिससे जरूरतमंदों को 10 रुपये में भोजन उपलब्ध कराने में मदद मिली।

रसोई ने आयोजनों की भी व्यवस्था की पार्टियों या पारिवारिक समारोहों के लिए हॉट पॉट उपलब्ध कराए, लेकिन टीम को पेशेवर मानकों को बनाए रखने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि कई लोग बड़े पैमाने पर खाद्य उत्पादन में सीमित अनुभव वाले स्वयंसेवक थे। हालांकि, पूरन डावर के दृढ़ संकल्प और अभिनव सोच ने इन बाधाओं को दूर करने में मदद की। उन्होंने संचालन को सुव्यवस्थित करने और खाद्य गुणवत्ता और सेवा में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं (SOP) को लागू किया।

17 अक्टूबर 2019 को, एक नई महत्वाकांक्षी सेवा, अंत्योदय अन्नपूर्णा सेवा शुरू की गई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की एक सहायक प्रकल्प सेवा भारती ने इस पहल के लिए सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के साथ भागीदारी की। रसोई पूरी तरह से सुसज्जित थी, और यह सुनिश्चित करने के लिए वितरण नेटवर्क की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी कि कोई भी भूखा न रहे। इस सहयोग के परिणाम ने सामाजिक मुद्दों के समाधान में सामुदायिक भागीदारी के महत्व को दिखाया। खाना पकाने की प्रक्रिया सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध की गई थी। इस व्यवस्थित दृष्टिकोण ने यह सुनिश्चित किया कि भोजन कुशलतापूर्वक और लगातार तैयार किया गया।

सभी के लिए भोजन पहल का समुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। खाद्य असुरक्षा को संबोधित करके, ट्रस्ट समाज के सबसे कमजोर सदस्यों के जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव ला रहा है। मामूली शुल्क यह सुनिश्चित करता है कि जरूरतमंदों को भोजन मिले बिना यह महसूस किए कि उन्हें दान मिल रहा है।

भविष्य का विस्तार और विजन

पूरन डावर का फूड फॉर ऑल पहल का विजन आगरा से आगे तक फैला हुआ है। उनका लक्ष्य हर जिले में इस मॉडल को दोहराना है, आत्मनिर्भर रसोई का एक नेटवर्क बनाना है जो जरूरतमंदों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराए। सामुदायिक भागीदारी और अभिनव सोच के साथ व्यवस्थित दृष्टिकोण इस मॉडल को स्केलेबल और टिकाऊ बनाता है।

पूरन डावर का विजन सिर्फ भूखे को खाना खिलाने तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने इस पहल में रोजगार के अवसर पैदा करने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की क्षमता देखी। हर जिले में इसी तरह की रसोई स्थापित करके, उनका लक्ष्य आत्मनिर्भर खाद्य केंद्रों का एक नेटवर्क बनाना था जो भोजन उपलब्ध करा सकें, रोजगार पैदा कर सकें और स्थानीय किसानों को स्थानीय स्तर पर कच्चा माल उपलब्ध कराकर सहायता कर सकें। पहल के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों पर विचार करते हुए उनका दृष्टिकोण समग्र था।

उद्यमी से परोपकारी बने इस व्यक्ति का सपना एक ऐसे भविष्य का है, जहाँ भारत में कोई भी भूखा न रहे। उनका मानना है कि सामुदायिक संसाधनों का लाभ उठाकर, कुशल प्रणाली बनाकर और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देकर बड़े पैमाने पर भूख को दूर करना संभव है। उनका विजन सिर्फ भूखे लोगों को भोजन उपलब्ध कराना नहीं है, बल्कि एक आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है जो

भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से शिष्टाचार भेंट करता हुआ एक प्रतिनिधिमंडल। प्रतिनिधिमंडल में सांसद श्री राम शंकर कठेरिया, उद्योगपति पूरन डावर, शारदा विश्वविद्यालय के प्रो–कुलपति प्रो. वाई.के. गुप्ता, पीएनसी निदेशक चक्रेश जैन, राजीव तिवारी, राकेश गर्ग सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।

स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करता है, रोजगार प्रदान करता है और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

फूड फॉर ऑल पहल पूरन डावर की दृष्टि, प्रतिबद्धता और उद्यमशीलता की भावना का प्रमाण है। अपनी व्यक्तिगत क्षति को अच्छे के लिए एक ताकत में बदलकर, उन्होंने समाज पर एक स्थायी प्रभाव डाला है। यह पहल एक बुनियादी मानवीय आवश्यकता – भोजन को सम्मान, दक्षता और स्थिरता के साथ संबोधित करती है। सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट अपनी पहलों का विस्तार करना जारी रखता है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास के अपने मूल मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध है, और सभी के लिए एक उज्जवल और अधिक न्यायसंगत भविष्य सुनिश्चित करता है।

कौशल विकास पहलः कौशल के माध्यम से सशक्तीकरण

पूरन डावर का हमेशा से मानना रहा है कि शिक्षा को कौशल को बाधित नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें व्यवस्थित करना चाहिए और उन्हें सम्मानित व्यवसायों में ऊपर उठाना चाहिए। यह दर्शन सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की कौशल विकास

पहलों के केंद्र में है। यह समझते हुए कि केवल शिक्षा ही लोगों को गरीबी से बाहर निकालने के लिए पर्याप्त नहीं है, ट्रस्ट ने वंचित बच्चों और वयस्कों को व्यावहारिक कौशल से लैस करने के लिए समर्पित एक इन–हाउस प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की है।

पूरन डावर ने खुद देखा है कि बुनियादी शिक्षा होने के बावजूद कौशल की कमी कैसे लोगों को गरीबी के चक्र में फंसा सकती है। लक्षित कौशल प्रशिक्षण प्रदान करके उनका लक्ष्य इस चक्र को तोड़ना और व्यक्तियों को आर्थिक स्वतंत्रता और सम्मान प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाना है।

पूरन डावर की कौशल विकास के प्रति प्रतिबद्धता इस विश्वास से प्रेरित है कि हर किसी में किसी न किसी क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने की क्षमता होती है। इन कौशलों को पहचानना और उनका पोषण करना, तथा व्यक्तियों को उनकी क्षमता का एहसास कराने में मदद करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करना महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण न केवल उनकी रोजगार क्षमता में सुधार करता है, बल्कि उनके आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान को भी बढ़ाता है।

सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा स्थापित इन–हाउस प्रशिक्षण संस्थान कई वंचित व्यक्तियों के लिए आशा की किरण है। संस्थान समुदाय की जरूरतों के अनुरूप कई तरह के कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करता है। ये कार्यक्रम व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए डिजाइन किए गए हैं, जिन्हें सीधे नौकरी के बाजार में लागू किया जा सकता है।

संस्थान विभिन्न ट्रेडों और व्यवसायों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें सिलाई, बढ़ईगीरी, विद्युत कार्य और कंप्यूटर साक्षरता शामिल है। प्रत्येक पाठ्यक्रम को व्यावहारिक प्रशिक्षण पर जोर देते हुए सैद्धांतिक पहलुओं को कवर करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया है। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कार्यक्रम के स्नातक नौकरी के लिए तैयार हों और कार्यबल में सहज रूप से संक्रमण कर सकें। कौशल विकास पहल का प्रभाव व्यक्तिगत लाभार्थियों से परे है। जैसे–जैसे अधिक लोग कौशल प्राप्त करते हैं और बेहतर रोजगार प्राप्त करते हैं, समुदाय की समग्र सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। यह एक पुण्य चक्र बनाता है, जहाँ सशक्त व्यक्ति समुदाय के विकास में योगदान करते हैं, आत्मनिर्भरता और आपसी सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं।

कौशल विकास के माध्यम से वंचितों के उत्थान के लिए पूरन डावर का दृष्टिकोण केवल प्रशिक्षण प्रदान करने के बारे में नहीं है, यह बेहतर जीवन के अवसर पैदा करने के बारे में है। माँग में व्यावहारिक कौशल पर ध्यान केंद्रित करके, ट्रस्ट सुनिश्चित करता है कि उसके कार्यक्रम प्रासंगिक और प्रभावशाली हों। यह पहल

कौशल विकास की परिवर्तनकारी शक्ति में पूरन डावर के विश्वास और सामाजिक कल्याण के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

स्वास्थ्य सेवा गतिविधियाँः सामुदायिक स्वास्थ्य के लिए एक समग्र दृष्टिकोण

स्वास्थ्य सेवा के प्रति सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की प्रतिबद्धता वंचितों के उत्थान के अपने मिशन का एक अभिन्न अंग है। यह समझते हुए कि एक स्वस्थ समुदाय एक समृद्ध समाज की नींव है, ट्रस्ट ने महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। 'समर्पण ब्लड बैंक और डायलिसिस सेंटर' और 'हेल्प आगरा' जैसे संगठनों में अपनी सदस्यता के माध्यम से, एक चिकित्सा धर्मार्थ संगठन के रूप में, ट्रस्ट सुनिश्चित करता है कि जरूरतमंद लोगों को आवश्यक चिकित्सा सहायता उपलब्ध हो।

समर्पण ब्लड बैंक और डायलिसिस सेंटर के साथ ट्रस्ट की भागीदारी जीवन बचाने के लिए इसके समर्पण का प्रमाण है। रक्तदान स्वास्थ्य सेवा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो कई रोगियों के लिए जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर हो सकता है। ट्रस्ट रक्तदान शिविरों और जागरूकता अभियानों के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेता है, समुदाय के सदस्यों को इस जीवन रक्षक कारण में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, आपात स्थितियों और नियमित चिकित्सा आवश्यकताओं के लिए रक्त की निरंतर आपूर्ति हुई है, जिससे आगरा और उसके बाहर अनगिनत व्यक्तियों की मदद हुई है।

ब्लड बैंक पहलों के अलावा, हेल्प आगरा के साथ ट्रस्ट की साझेदारी ने वंचितों को चिकित्सा सेवा प्रदान करने में अपनी पहुँच का विस्तार किया है। हेल्प आगरा आर्थिक रूप से वंचित लोगों को मुफ्त या रियायती चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि वित्तीय बाधाओं के कारण किसी को भी उनकी जरूरत की देखभाल से वंचित न किया जाए। ट्रस्ट विभिन्न स्वास्थ्य शिविरों, टीकाकरण अभियानों और नियमित जाँचों का समर्थन करता है, जिससे उन लोगों के दरवाजे तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचती हैं, जो अन्यथा बिना किसी इलाज के रह जाते हैं।

पूरन डावर की करुणा आम आबादी के अतिरिक्त बुजुर्गों पर विशेष ध्यान देती है। वरिष्ठ नागरिकों द्वारा सामना की जाने वाली अनूठी चुनौतियों को पहचानते हुए, ट्रस्ट उनकी देखभाल और कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ऐसे समाज में, जहाँ बुजुर्गों को अक्सर उपेक्षित किया जाता है, ट्रस्ट की पहल यह सुनिश्चित करती है कि उन्हें अपने बुढ़ापे में वह सम्मान, देखभाल और सहायता मिले जिसके वे हकदार हैं। चिकित्सा देखभाल, पोषण सहायता और सामाजिक जुड़ाव के अवसर

प्रदान करने के उद्देश्य से कार्यक्रम बुजुर्गों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मदद करते हैं, जिससे उन्हें सम्मान और आराम से जीने में मदद मिलती है।

ये स्वास्थ्य सेवा गतिविधियाँ विभिन्न सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने में सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के व्यापक दृष्टिकोण को उजागर करती हैं। निवारक और उपचारात्मक स्वास्थ्य सेवा दोनों पर ध्यान केंद्रित करके, ट्रस्ट न केवल मौजूदा स्थितियों का इलाज करता है, बल्कि जागरूकता और शिक्षा के माध्यम से बीमारियों की शुरुआत को रोकने के लिए भी काम करता है। यह समग्र दृष्टिकोण एक स्वस्थ समुदाय सुनिश्चित करता है, स्वास्थ्य सुविधाओं पर बोझ को कम करता है और समग्र सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार करता है।

आगे की ओर देखना

सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट का भविष्य उज्ज्वल है। इसके कार्यक्रमों का विस्तार करने और और भी अधिक वंचित समुदायों तक पहुँचने की महत्वाकांक्षी योजनाएँ हैं। अपने मिशन और मूल्यों के प्रति सच्चे रहते हुए ट्रस्ट का लक्ष्य सशक्तिकरण और करुणा की एक स्थायी विरासत बनाना है। पूरन डावर एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ हर व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अपने कौशल को विकसित करने और सार्थक रोजगार हासिल करने का अवसर मिले।

पूरन डावर का एक सफल उद्यमी से एक समर्पित परोपकारी व्यक्ति बनने का सफर लचीलापन, नवाचार और सामाजिक भलाई के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की एक प्रेरक कहानी है। सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के माध्यम से, वे न केवल अपने बेटे की स्मृति का सम्मान कर रहे हैं, बल्कि अनगिनत व्यक्तियों के लिए बेहतर भविष्य का निर्माण भी कर रहे हैं। उनके जीवन का यह अध्याय उद्देश्य और करुणा की गहरी भावना से चिह्नित है, जो समाज पर एक व्यक्ति के प्रभाव की शक्तिशाली याद दिलाता है। गरीबी और असमानता के मूल कारणों को संबोधित करके, पूरन डावर एक समय में एक पहल करके एक अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण दुनिया की नींव रख रहे हैं।

कोविड–19 संकट

पूरन डावर की सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति प्रतिबद्धता सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की पहलों से कहीं आगे तक फैली हुई है। समाज पर एक स्थायी प्रभाव बनाने के उनके दृष्टिकोण ने उन्हें विशेष रूप से संकट के समय में महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने के लिए अपने नेटवर्क और संसाधनों का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया है। ऐसा ही एक उल्लेखनीय प्रयास भारत में कोविड–19 महामारी की

श्री पूरन डावर 'स्ट्रेंगथेन स्ट्रीट्स' पहल पर – युवाओं के लिए स्वरोजगार की दिशा में एक सशक्त कदम।

दूसरी लहर के दौरान उनकी प्रतिक्रिया थी, जिसने उनके नेतृत्व, संसाधनशीलता और मानवीय कारणों के प्रति अथक समर्पण को प्रदर्शित किया।

भारत में कोविड–19 महामारी की विनाशकारी दूसरी लहर के दौरान, स्वास्थ्य सेवा प्रणाली चरमरा गई थी और अस्पताल रोगियों से भर गए थे। कई लोग समय पर चिकित्सा सहायता प्राप्त करने में असमर्थ थे, जिससे दुखद परिणाम सामने आए। इस विकट स्थिति में, पूरन डावर ने आगरा जूता एक्सपोर्टर्स चैंबर के साथ मिलकर अस्पताल के बिस्तरों और चिकित्सा सुविधाओं की गंभीर कमी को दूर करने के लिए त्वरित और निर्णायक कार्रवाई की।

पूरन डावर ने 10 दिनों की छोटी अवधि के भीतर, आश्चर्यजनक रूप से आगरा में 300 बिस्तरों वाले अस्पताल की स्थापना की। यह त्वरित प्रतिक्रिया उनके संगठनात्मक कौशल, संसाधनशीलता और जीवन बचाने की प्रतिबद्धता का परिणाम थी। अस्पताल में सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरण, जैसे कि वेंटिलेटर, ऑक्सीजन की आपूर्ति और COVID–19 रोगियों के प्रभावी उपचार के लिए आवश्यक अन्य बुनियादी ढाँचे से लैस थे। इतने कम समय में 300 बिस्तरों वाले अस्पताल की स्थापना की रसद बहुत बड़ी थी।

पूरन डावर और उनकी टीम ने संसाधन जुटाने, चिकित्सा पेशेवरों के साथ

समन्वय करने और यह सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास किया कि अस्पताल पूरी तरह से चालू हो।

उनके प्रयासों में शामिल थेः

उपकरण सुरक्षित करनाः बिस्तर, वेंटिलेटर, ऑक्सीजन सिलेंडर और पीपीई किट सहित सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरण तुरंत व्यवस्थित किए गए। इन महत्वपूर्ण आपूर्तियों का स्टॉक अभी भी पूरन डावर द्वारा बनाए रखा जाता है, ताकि भविष्य की किसी भी आपात स्थिति के लिए तत्परता सुनिश्चित हो सके।

सहयोगः इस पहल में स्थानीय अधिकारियों, स्वास्थ्य पेशेवरों और आगरा जूता एक्सपोर्टर्स चैंबर के सदस्यों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ सहयोग देखा गया। इस सामूहिक प्रयास ने सुनिश्चित किया कि अस्पताल को तेजी से और कुशलता से स्थापित किया जा सके।

सुविधा प्रबंधनः महामारी द्वारा उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद, टीम ने COVID–19 रोगियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक अच्छी तरह से संरचित और स्वच्छ सुविधा बनाने में कामयाबी हासिल की।

लचीलेपन और प्रतिबद्धता का प्रमाण

हालाँकि अस्पताल तैयार था और पूरी तरह से सुसज्जित था, लेकिन जब तक यह पूरा हुआ, तब तक COVID–19 मामलों की संख्या में गिरावट शुरू हो गई थी। नतीजतन, सुविधा का पूरी क्षमता से उपयोग नहीं किया गया। हालाँकि, यह पहल एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बनी हुई है और यह पूरन डावर के सक्रिय दृष्टिकोण और आपात स्थितियों का जवाब देने की तत्परता को दर्शाता है।

इस अस्पताल को स्थापित करने का प्रयास भले ही इसका उतना ज्यादा उपयोग न हुआ हो जितना उम्मीद थी, फिर भी पूरन डावर की नेतृत्व क्षमता के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को दिखाता हैः

सामुदायिक प्रभावः इस पहल ने समुदाय की भलाई के लिए उनकी प्रतिबद्धता को मजबूत किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि किसी भी चिकित्सा आपात स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक उपाय मौजूद थे।

सक्रिय समस्या समाधानः समुदाय की जरूरतों को पहले से ही भांपकर तुरंत कार्रवाई करने की पूरन डावर की क्षमता उनके नेतृत्व की पहचान है।

संसाधनशीलताः चिकित्सा उपकरणों की त्वरित व्यवस्था और 10 दिनों के भीतर अस्पताल की स्थापना ने उनकी संसाधनशीलता और संसाधनों को प्रभावी ढंग से जुटाने की क्षमता को प्रदर्शित किया।

स्थायी प्रभाव और तैयारी

हालाँकि तत्काल संकट बीत चुका है, लेकिन इस पहल के दौरान विकसित की गई तैयारी और बुनियादी ढाँचे ने एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। अस्पताल भविष्य की जरूरतों के लिए तैयार है, यह सुनिश्चित करते हुए कि आगरा भविष्य में किसी भी ऐसे संकट से निपटने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित है।

कोविड–19 महामारी के दौरान पूरन डावर के प्रयास सक्रिय नेतृत्व और सामुदायिक सहयोग की शक्ति को प्रदर्शित करते हैं। आगरा जूता एक्सपोर्टर्स चैंबर के माध्यम से उनका काम, सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के साथ उनकी चल रही पहलों के साथ–साथ प्रभावी कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के लिए प्रेरणा और बेंचमार्क स्थापित करना जारी रखता है।

अंत में, पूरन डावर ने कोविड–19 संकट के दौरान 300 बिस्तरों वाला अस्पताल स्थापित करके जो त्वरित कार्रवाई की, वह मानवीय उद्देश्यों के प्रति उनके समर्पण और संसाधनों को तेजी से जुटाने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। यह पहल, हालांकि पूरी तरह से उपयोग नहीं की गई, लेकिन उनके सक्रिय नेतृत्व और सामाजिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता का एक सराहनीय उदाहरण है, जो यह सुनिश्चित करता है कि समुदाय भविष्य की चुनौतियों के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो।

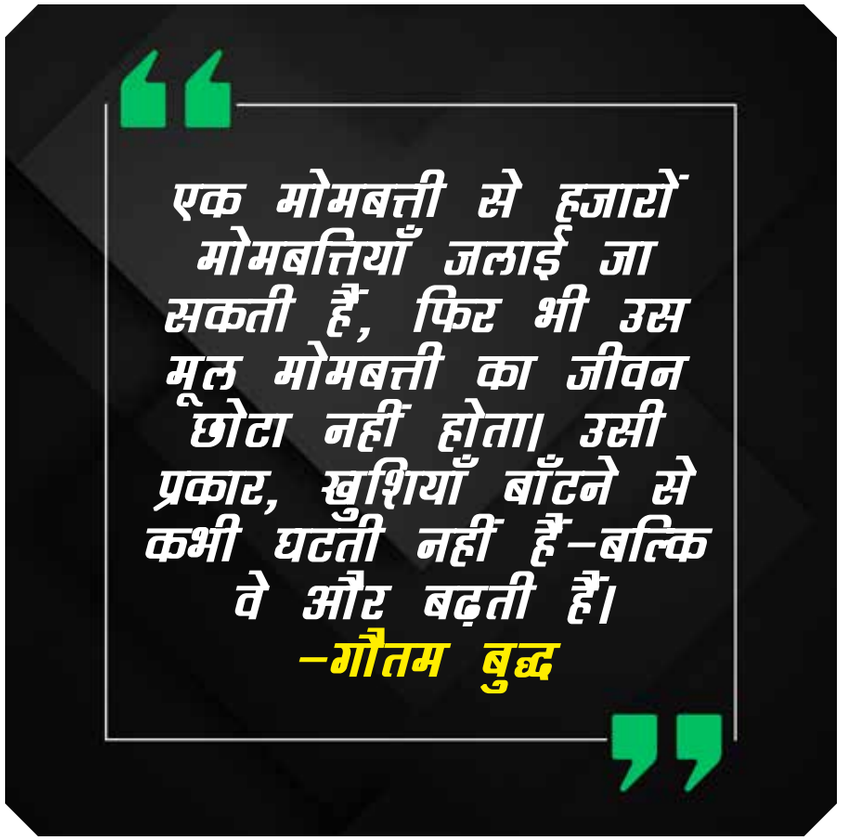

अध्याय 11

नव–उद्यमियों का निर्माण

पूरन डावर एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी उद्यमशीलता की यात्रा और सामाजिक कार्य आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। सामाजिक कार्य के प्रति उनका दृष्टिकोण अद्वितीय है, वह इसे केवल दान के रूप में नहीं, बल्कि उपभोक्ताओं के भविष्य के बाजार को बनाने में दीर्घकालिक निवेश के रूप में देखते हैं। उनका मानना है कि आज के लाभार्थी, अपनी आय बढ़ाने के साथ ही कल के बाजार चालक बन जाएंगे। यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह देने से जुड़े पारंपरिक गर्व को दूर करता है और इसे एक विनम्र, मिशन–उन्मुख मानसिकता से बदल देता है। उद्यमी बनाने के लिए पूरन डावर का समर्पण केवल रोजगार सृजन के बारे में नहीं है, यह लोगों को उन कौशल और प्रणालियों से सशक्त बनाने के बारे में है जिनकी उन्हें स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने के लिए आवश्यकता है। उनका मंत्र स्पष्ट है: यह 'रोजगार' के बारे में नहीं है, बल्कि बेरोजगारी से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए 'स्वरोजगार' (स्व–रोजगार) के बारे में है।

पूरन डावर का दृष्टिकोण मूल कौशल को ऊपर उठाना और उनका औद्योगिकीकरण करना है, जैसा कि उनके व्यवस्थित और आत्मनिर्भर रसोई मॉडल में देखा जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मजबूत नेतृत्व के साथ, जिन्होंने छोटी नौकरियों की गरिमा पर जोर दिया है, पूरन डावर का मानना है कि व्यवस्थित तरीके से किया गया कोई भी काम जीवन को बदल सकता है और देश की अर्थव्यवस्था में योगदान दे सकता है। वह अक्सर कहते हैं, 'अगर एक चाय बेचने वाला चायोस बन सकता है, और बन्स के बीच की टिक्की मैकडॉनल्ड्स बन सकती है, तो कोई भी कौशल, जब शिक्षा के माध्यम से निखारा जाता है, तो एक रसोईये को शेफ और एक दर्जी को फैशन डिजाइनर बना सकता है।'

मिशन 'मेरा रोजगार' आत्मनिर्भर भारत के लिए पूरन डावर के दृष्टिकोण की नींव है। इस पहल का उद्देश्य उन नौकरियों को सम्मान और मान्यता प्रदान करना है जो रोजमर्रा की जिन्दगी के लिए जरूरी हैं, लेकिन अक्सर कम आंकी जाती हैं। मिशन कुशल श्रमिकों और उपभोक्ताओं के बीच की खाई को पाटना चाहता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि श्रमिकों को लगातार रोजगार मिले और उपभोक्ताओं को विश्वसनीय सेवाओं तक पहुँच मिले। मिशन 'मेरा रोजगार' के पीछे का दर्शन सरल लेकिन गहरा है: 'काम करेगा तभी तो बढ़ेगा इंडिया' (भारत तभी बढ़ेगा जब उसके लोग कमाएँगे)।

नारियल पानी की गाड़ी

इस मिशन के सबसे प्रेरक पहलुओं में से एक नारियल पानी की गाड़ी है, जिसे

एक साधारण स्ट्रीट ट्रेड को एक मान्यता प्राप्त वैश्विक ब्रांड में बदलने की दृष्टि से डिजाइन किया गया है। पूरन डावर की नारियल पानी की गाड़ी को नारियल के आकार में सरलता से तैयार किया गया है, जो इसे कार्यात्मक और देखने में आकर्षक बनाता है। गाड़ी के ऊपरी हिस्से में बर्फ पर 25 से 30 नारियल रखे जा सकते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे ताजा रहें, जबकि निचले डिब्बे में अतिरिक्त 100 से 125 नारियल रखने की जगह है। यह विचारशील डिजाइन पारंपरिक नारियल विक्रेताओं के सामने आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक को संबोधित करता हैः सुरक्षा। गाड़ी में एक सुरक्षित कटिंग मैकेनिज्म शामिल है, जो नारियल काटने के पारंपरिक तरीकों से जुड़े जोखिमों को कम करता है।

पूरन डावर द्वारा गाड़ी की क्षमता का विस्तृत विश्लेषण दिखाता है कि यह नवाचार कितना परिवर्तनकारी हो सकता है। ₹10 प्रति नारियल के लाभ मार्जिन पर प्रतिदिन 100 नारियल बेचकर, विक्रेता प्रतिदिन ₹1,000 कमा सकते हैं, जो कि प्रति माह ₹30,000 के बराबर है। यह पर्याप्त आय विक्रेताओं को सम्मानजनक आजीविका प्रदान करती है, जो एक साधारण सड़क व्यापार को एक आशाजनक उद्यम में बदल देती है। गाड़ी का सुंदर डिजाइन न केवल विक्रेता के व्यवसाय को बढ़ाता है, बल्कि ग्राहकों को भी आकर्षित करता है, जिससे नारियल पानी खरीदने का अनुभव सुरक्षित और आनंददायक दोनों हो जाता है। आत्मनिर्भर उद्यमी बनाने

भारत मंडपम में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा आयोजित जी–20 रात्रिभोज।

के लिए पूरन डावर का जुनून नारियल पानी की गाड़ी के हर पहलू में स्पष्ट है। वह अभिनव और टिकाऊ समाधानों के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाने और समुदायों के उत्थान के लिए अपने प्रयास को प्रदर्शित करते हैं।

पहियों पर चाय

एक चाय के शौकीन के रूप में, जो हर दिन अपनी चाय खुद बनाने पर जोर देते हैं, पूरन डावर ने एक मोबाइल चाय व्यवसाय की कल्पना की जो जीवन को बदल सकता है। उनका मानना है कि सावधानीपूर्वक डिजाइन और सुसज्जित एक चाय साइकिल प्रति माह ₹50,000 से ₹60,000 की आय उत्पन्न कर सकती है। चाय साइकिल विचारशील डिजाइन और व्यावहारिकता का एक चमत्कार है। इसे एक स्टोव, पानी का कंटेनर, दूध, चाय की पत्ती और अदरक, मसाला और यहाँ तक कि बिस्कुट और रस्क सहित कई अन्य आवश्यक सामान ले जाने के लिए अनुकूलित किया गया है। गर्म पानी के थर्मस और सभी आवश्यक सामग्री के लिए डिब्बों के साथ, यह साइकिल सुनिश्चित करती है कि चाय की तैयारी स्वच्छ और स्वास्थ्यकर दोनों हो। डिजाइन में सहायक उपकरण रखने के लिए 6 कनस्तरों के लिए जगह, हैंडल पर एक बॉक्स जिसमें 50 कचौड़ियां, मफिन और समोसों को एक हॉट केस में रखने की क्षमता है। एक बर्नर और 2 लीटर का गैस सिलेंडर भी शामिल है, साथ ही 500 पेपर ग्लास रखने की जगह भी है।

पूरन डावर का अभिनव दृष्टिकोण

पूरन डावर का अभिनव दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि साइकिल में चाय विक्रेता कई प्रकार की चाय बेच सकते हैं, जिनमें सादी चाय, मसाला चाय, अदरक की चाय, दालचीनी चाय, काली चाय, हरी चाय, नींबू चाय, कश्मीरी कहवा और शहद वाली चाय शामिल हैं। यह विविध पेशकश विभिन्न स्वाद और प्राथमिकताओं को पूरा करती है, जिससे चाय चक्र, उद्यमियों के लिए एक आकर्षक उद्यम बन जाता है।

वित्तीय मॉडल भी उतना ही आकर्षक हैः

समृद्ध क्षेत्रों में, एक चाय साइकिल ₹20 प्रति चाय के 100 कप बेच सकता है, जबकि अधिक भीड़भाड़ वाले स्थानों में, यह ₹10 प्रति कप के 200 कप बेच सकता है। समोसे जैसे स्नैक्स जोड़कर, विक्रेता अपनी दैनिक कमाई को ₹2,000 तक बढ़ा सकते हैं, जो कि ₹60,000 की मासिक आय में तब्दील हो सकती है। ऐसी कमाई कई वेतनभोगी नौकरियों से आगे निकल जाती है। प्रशिक्षण में स्वच्छता

संबंधी अभ्यास, गर्म पानी के थर्मस का कुशल उपयोग और सामग्री को सही तरीके से मिलाना शामिल है। विक्रेताओं को अपना दिन शुरू करने से पहले साफ–सफाई बनाए रखना, एप्रन पहनना और दो डिब्बे साइकिल पर बांधना सिखाया जाता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि चाय का हर कप उच्चतम मानकों के अनुसार तैयार किया जाता है, जिससे स्थिरता और गुणवत्ता बनी रहती है।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) के साथ पूरन डावर के सहयोग ने इस पहल की पहुँच को बढ़ाया है। उन्होंने प्रदर्शन के उद्देश्य से 75 चाय साइकिल दान की, जिन्हें भारत के विभिन्न राज्यों में वितरित किया गया। ये साइकिलें COVID–19 महामारी के दौरान अमूल्य साबित हुईं, जिससे महत्वपूर्ण राजस्व प्राप्त हुआ और 25 परिवारों को सम्मान के साथ अपना जीवन यापन करने में मदद मिली। महामारी के दौरान इन साइकिलों की सफलता ने KVIC को दिल्ली के लिए और अधिक चाय साइकिलों की तलाश करने के लिए प्रेरित किया और 2024 के मध्य तक, 300 ऐसी साइकिलें पहले ही वितरित की जा चुकी हैं और आने वाले समय में और भी साइकिलें वितरित करने की योजना है।

नवाचार की अपनी निरंतर खोज में, पूरन डावर अब चाय के लिए तैयार मिक्स पाउच बनाने की खोज कर रहे हैं। इस उद्यम का उद्देश्य चाय की तैयारी को मानकीकृत करना है, यह सुनिश्चित करना कि हर कप का स्वाद एक जैसा हो, चाहे वह कहीं भी बेचा जाए। यह प्रक्रिया रेडी–मिक्स पाउच विक्रेताओं के काम को सरल बनाएगी, जिससे वे ग्राहकों को तेजी और कुशलता से सेवा दे पाएंगे। प्रत्येक पाउच में पहले से मापी गई सामग्री होगी, जिससे एक मिनट से भी कम समय में चाय बनाई जा सकेगी। यह पहल उद्यमियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पूरन डावर की प्रतिबद्धता और अपने उपक्रमों की पहुँच बढ़ाने के उनके जुनून का प्रमाण है।

पूरन डावर का दृष्टिकोण स्पष्ट है:

व्यवस्थित रूप से किया गया कोई भी काम किस्मत बदल सकता है, न केवल व्यक्तियों के लिए, बल्कि परिवारों और राष्ट्र के लिए भी। 'टी ऑन व्हील्स' पहल इस दर्शन को मूर्त रूप देती है, जो एक साधारण चाय चक्र को आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण में बदल देती है। यह उनके अटूट विश्वास को दर्शाता है कि सही समर्थन और प्रशिक्षण के साथ, कोई भी व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है और आत्मनिर्भर भारत में योगदान दे सकता है। अपने अथक प्रयासों और अभिनव सोच के माध्यम से, पूरन डावर अनगिनत लोगों को प्रेरित करते हैं और उनका उत्थान करना जारी रखते हैं, यह साबित करते हुए कि सच्ची उद्यमिता

केवल व्यवसाय से कहीं अधिक है। यह अवसर पैदा करने और सभी के लिए बेहतर भविष्य बनाने के बारे में है।

अधिक कार्ट

उद्यमिता के लिए पूरन डावर का दृष्टिकोण केवल एक प्रकार के व्यवसाय मॉडल से बहुत आगे तक फैला हुआ है। आत्मनिर्भर उद्यमी बनाने के उनके अभिनव दृष्टिकोण में विभिन्न प्रकार की गाड़ियां शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक को विशिष्ट उपयोगों के लिए तैयार किया गया है। आईसीआईसीआई बैंक के सहयोग से, उन्होंने बर्नर और छतरी से सुसज्जित एक बहुमुखी गाड़ी विकसित की है, जो स्ट्रीट फूड की एक श्रृंखला बेचने के लिए आदर्श है। अवसरों की निरंतर खोज और विविध उपक्रमों में संभावना देखने की उनकी क्षमता ने इन गाड़ियों को व्यक्तियों को सशक्त बनाने और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के उनके मिशन की आधारशिला बना दिया है।

इन अनुकूलन योग्य गाड़ियों को राजमा चावल और छोले भटूरे से लेकर पानी पुरी, चाट, मिनी भोजन, कचौरी और रायता से लेकर बिरयानी तक कई तरह के खाद्य पदार्थ बेचने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। डिजाइन में लचीलेपन का मतलब है कि उद्यमी उस प्रकार का भोजन चुन सकते हैं जिसे वे बेचना चाहते हैं, जिससे कई महत्वाकांक्षी विक्रेताओं के लिए गाड़ी का व्यवसाय एक व्यवहार्य

अतुल्य भारत फाउंडेशन के कार्यक्रम की एक स्मरणीय झलक, जहाँ पूरन डावर सहित अनेक विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति ने समारोह को गौरवमयी बना दिया।

विकल्प बन जाता है। पूरन डावर मानते हैं कि सही उपकरण होना जरूरी है। उनके कार्यक्रम के समर्थन से संगति को फायदा हुआ। संगति बंसल ने अपने खाना पकाने के जुनून को एक सफल स्थानीय व्यवसाय में बदल दिया। उसका ठेला, जो घर का बना सुखदायक भोजन बेचता है, समुदाय में एक प्रिय वस्तु बन गया है, जो छोटे, उद्यमशील प्रयासों से महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की क्षमता को दर्शाता है।

एक और प्रेरक मामला ताजा सब्जी की गाड़ी का स्टार्टअप है। यह पहल लोगों को कम से कम निवेश के साथ छोटे से शुरू करने और अपने व्यवसाय को स्थायी रूप से बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती है। पूरन डावर के कार्यक्रम द्वारा प्रचारित लीन बिजनेस मॉडल ने कई व्यक्तियों को उद्यमिता में उतरने के लिए सशक्त बनाया है, उन्हें सफल होने के लिए आवश्यक उपकरण और सहायता प्रदान की है। ये ताजा सब्जी की गाड़ियाँ न केवल विक्रेताओं के लिए आजीविका प्रदान करती हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती हैं कि समुदाय को ताजा सब्जी मिले।

'परिवार आजीविका अभियान' के तहत, पूरन डावर ने 101 व्यक्तियों को गाड़ियाँ और साइकिलें वितरित की हैं, जिससे उन्हें अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने में मदद मिली है। यह पहल सिर्फ उपकरण प्रदान करने से कहीं ज्यादा है, यह एक सहायता प्रणाली बनाने के बारे में है, जिसमें प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और समान विचारधारा वाले उद्यमियों का एक नेटवर्क शामिल है। पूरन डावर का विजन

पूरन डावर ने 'टी ऑन व्हील्स' पहल के माध्यम से अपने अनोखे दृष्टिकोण से युवाओं को प्रेरित किया।

आत्मनिर्भर व्यक्तियों का एक समुदाय बनाना है, जो अपने उद्यमशील प्रयासों के जरिए खुद का और अपने परिवार का भरण–पोषण कर सकें। उद्यमी बनाने के लिए पूरन डावर का जुनून उनके काम के हर पहलू में स्पष्ट है। वह हर गाड़ी को एक संभावित व्यवसाय में देखते हैं, और हर व्यक्ति को भविष्य के उद्यमी के रूप में। उनका मिशन स्पष्ट है; लोगों को सफल होने के लिए उपकरण और अवसर प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाना। उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने और व्यावहारिक सहायता प्रदान करके, पूरन डावर एक–एक गाड़ी के जरिए अपने विजन को वास्तविकता में बदल रहे हैं। इस उद्देश्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता जीवन को बदलना, स्थायी व्यवसाय बनाना और एक मजबूत, अधिक आत्मनिर्भर समुदाय का निर्माण करना है।

कॉलेजों में उद्यमिता का पाठ पढ़ाना

पूरन डावर सिर्फ एक उद्यमी नहीं हैं, वे भारत के युवाओं को सशक्त बनाने के लिए एक मार्गदर्शक और एक भावुक अधिवक्ता हैं। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में उद्यमिता पर व्याख्यान देने के लिए नियमित रूप से आमंत्रित किए जाने वाले पूरन डावर 'मेरा रोजगार – स्वरोजगार' की अपनी दूरदर्शी अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उनका मंत्र सरल लेकिन गहरा हैः छोटी शुरुआत करें, बड़ा बनें। उनका मानना है कि शिक्षा को न केवल ज्ञान प्रदान करना चाहिए, बल्कि छात्रों को अपने व्यवसायों के भीतर सिस्टम बनाने में सक्षम बनाना चाहिए, जिससे वे उन्हें संपन्न उद्यमों में बदल सकें।

अपने व्याख्यानों में, पूरन डावर छात्रों को एक उत्तेजक प्रश्न के साथ चुनौती देते हैंः 'यदि आपकी शिक्षा आपके अपने पेशे के लिए एक सिस्टम बनाने में आपकी मदद नहीं कर सकती है, तो आप किसी भी कंपनी के लिए एक परिसंपत्ति कैसे हो सकते हैं?' यह दृष्टिकोण उनके श्रोताओं के साथ गहराई से प्रतिध्वनित होता है, क्योंकि वह उन्हें अपने कौशल का सम्मान करने और उनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वह छात्रों को नाई को हेयर स्टाइलिस्ट, ब्यूटीशियन को मेकओवर आर्टिस्ट और कॉफी विक्रेताओं को कैफे कॉफी डे जैसे उद्यमियों में बदलने की कल्पना करने के लिए प्रेरित करते हैं। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए पूरन डावर का जुनून उनके हर भाषण में झलकता है।

वह छात्रों को प्रेरित करने और उनका मार्गदर्शन करने के लिए सफलता की कहानियों के वास्तविक जीवन के उदाहरण साझा करते हैं। एक उल्लेखनीय केस स्टडी जिसका वह अक्सर हवाला देते हैं, वह है शेफ अंशुल द्वारा लिखित 'द नूडल स्विंग'। यह उद्यम एक मामूली चीनी खाद्य कार्ट के रूप में शुरू हुआ और अब

एक प्रसिद्ध ब्रांड बन गया है। ऐसे उदाहरणों के माध्यम से, पूरन डावर इस बात पर जोर देते हैं कि शिक्षा के साथ कौशल को जोड़ने से उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं। उनके व्याख्यान केवल ज्ञान प्रदान करने के बारे में नहीं हैं, बल्कि छोटी शुरुआत की शक्ति में विश्वास पैदा करने के बारे में हैं। वह बताते हैं कि कैसे एक मिठाई की दुकान हल्दीराम में बदल सकती है, एक स्थानीय मिठाई की दुकान एक प्रसिद्ध ब्रांड बन सकती है, और कैसे एक व्यवस्थित दृष्टिकोण और निरंतर सुधार महत्वपूर्ण विकास की ओर ले जा सकता है।

पूरन डावर का दृष्टिकोण केवल प्रेरणा से आगे तक फैला हुआ है, वह छात्रों को सभी कौशल का सम्मान करना और शिक्षा को इन कौशलों को उद्योगों में बदलने के एक उपकरण के रूप में देखना सिखाते हैं। वह जोर देकर कहते हैं कि यदि कोई छात्र अपने पेशे के लिए एक प्रणाली नहीं बना सकता है, तो वह किसी भी कंपनी के लिए संपत्ति नहीं हो सकता है। यह दर्शन उनके व्याख्यानों का आधार है, जो किसी के पेशे के भीतर मूल्य और व्यवस्था बनाने के महत्व को दर्शाता है।

जब भी पूरन डावर कॉलेज और विश्वविद्यालयों का दौरा करते हैं, तो वे अपने श्रोताओं पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं। उनके भाषण व्यावहारिक सलाह, प्रेरक कहानियों और युवाओं को अपने भाग्य की जिम्मेदारी लेने के लिए कार्रवाई करने के आह्वान से भरे होते हैं। उद्यमिता और आत्मनिर्भरता की संस्कृति को बढ़ावा देकर, पूरन डावर भारत के युवा दिमागों के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण

पूरन डावर, आगरा में आयोजित स्टार्टअप एरा कॉन्क्लेव/24 कार्यक्रम में श्रोताओं को संबोधित करते हुए।

भूमिका निभा रहे हैं, जिससे उन्हें बड़े सपने देखने और उससे भी बड़ी उपलब्धि हासिल करने में मदद मिल रही है।

आत्मनिर्भर भारत के लिए पूरन डावर की प्रतिबद्धता अटूट है। उनका मानना है कि जब व्यक्तियों को अपने कौशल का उपयोग करने और अपने पेशे के इर्द–गिर्द व्यवस्था बनाने का अधिकार दिया जाता है, तो वे न केवल खुद को आगे बढ़ाते हैं, बल्कि देश की आर्थिक मजबूती में भी योगदान करते हैं। उद्यमिता के लिए उनका जुनून संक्रामक है, और वे छात्रों को पारंपरिक रोजगार से परे देखने और स्वरोजगार को एक व्यवहार्य और संतुष्टिदायक करियर पथ के रूप में मानने के लिए प्रेरित करते हैं।

हर व्याख्यान में, पूरन डावर यह विश्वास जगाते हैं कि शिक्षा के माध्यम से हमें हर किसी व्यक्ति को सर्वोत्तम संभव तरीके से निखारना चाहिए। उनका संदेश स्पष्ट है: अपने कौशल का सम्मान करें, उनका दोहन करें और शिक्षा को ऐसा उत्प्रेरक बनने दें जो इन कौशलों को अपने व्याख्यानों के माध्यम से, पूरन डावर न केवल छात्रों को प्रेरित कर रहे हैं, वे एक आत्मनिर्भर और समृद्ध भारत की नींव रख रहे हैं।

निष्कर्ष

पूरन डावर का उद्यमी बनाने का जुनून उनके द्वारा की जाने वाली हर पहल में स्पष्ट दिखाई देता है। सामाजिक कार्य और उद्यमिता के प्रति उनका अनूठा दृष्टिकोण करुणा और रणनीतिक सोच को जोड़ता है। व्यवस्थित प्रशिक्षण प्रदान करके और आत्मनिर्भर व्यवसाय मॉडल बनाकर, वे व्यक्तियों को गरीबी से ऊपर उठने और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

मिशन 'मेरा रोजगार' के माध्यम से, पूरन डावर न केवल सम्मानजनक कार्यबल प्रदान कर रहे हैं, वे एक आत्मनिर्भर भारत की नींव रख रहे हैं। संरचित प्रणालियों की शक्ति में उनका विश्वास और वंचितों के उत्थान के प्रति उनके समर्पण ने सामाजिक उद्यमिता में एक नया मानदंड स्थापित किया है। जैसे–जैसे वे अपनी पहल का विस्तार करते रहेंगे, उनके काम का प्रभाव निस्संदेह कई लोगों के लिए एक उज्जवल, अधिक समृद्ध भविष्य और नए उपभोक्ताओं की एक सेना की ओर ले जाएगा।

अध्याय 12

पूरन डावर– एक विचारक और विश्लेषक

समय अभी रुका नहीं, तो हम क्यों रुक गए।
अभी तो हम चले नहीं, फिर क्यों थक गए।
उठो पथिक, मत भ्रमित हो, धूमिल अंधियारों में।
श्रेष्ठ वही जो घिरा नहीं, क्षणिक निराशा में।
जागो, जगाओ! मन मत बहलाओ।
एक मसीहा तुम भी बन जाओ।
एक मसीहा तुम भी बन जाओ।

उक्त पत्तियां पूरन डावर को, उनकी अदम्य भावना और दृढ़ संकल्प को खूबसूरती से व्यक्त करती है। यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में उनकी यात्रा, उनके विचारों और उनके दर्शन के बारे में बताती है। पूरन डावर सिर्फ एक उद्यमी नहीं हैं, वह एक दूरदर्शी विचारक और विश्लेषक हैं, जिनके विचार व्यवसाय की सीमाओं से परे हैं और सामाजिक कल्याण, राजनीति और नीति को छूते हैं। यह अध्याय उनके विचारों और दर्शन पर प्रकाश डालता है, जीवन और कार्य के प्रति उनके अद्वितीय दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है, कुछ ऐसा जिससे हर उद्यमी सीख सकता है।

पूरन डावर की यात्रा दृढ़ता, नवाचार और अपने सिद्धांतों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की शक्ति का प्रमाण है। शरणार्थी शिविर में अपने शुरुआती दिनों से लेकर वैश्विक जूता उद्योग में एक अग्रणी व्यक्ति बनने तक, उनकी कहानी धैर्य और लचीलेपन की कहानी है। हालांकि, जो बात उन्हें वास्तव में अलग बनाती है, वह व्यक्तिगत और व्यावसायिक अनुभवों को समाज के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण में बदलने की उनकी क्षमता है।

पूरन डावर का दर्शन भगवद गीता की शिक्षाओं में गहराई से निहित है। वह अक्सर प्राचीन ज्ञान और आधुनिक चुनौतियों के बीच, अपने बिंदुओं को स्पष्ट करने और व्यावहारिक समानताएं खींचने के लिए, गीता का हवाला देते हैं। उनकी पसंदीदा पंक्तियों में से एक है:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत द्य
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।

भगवद गीता का यह विशेष श्लोक पूरन डावर के हृदय में विशेष स्थान रखता है। इसका अनुवाद है: 'जब भी धार्मिकता में गिरावट आती है, हे अर्जुन, जब अधर्म बढ़ेगा, तब मैं पृथ्वी पर प्रकट होऊंगा।' पूरन इस श्लोक की व्याख्या अराजकता के समय संतुलन बहाल करने वाली सर्वोच्च शक्ति की एक शक्तिशाली याद के रूप में

करते हैं। वे इसे केवल एक आध्यात्मिक विश्वास के रूप में नहीं, बल्कि व्यवसाय और समाज के चक्रों में एक व्यावहारिक सत्य के रूप में देखते हैं। उनका मानना है कि जीवन और व्यवसाय में संतुलन और धार्मिकता बनाए रखने के लिए इस सर्वोच्च शक्ति को पहचानना और उसका सम्मान करना आवश्यक है।

पूरन डावर की उद्यमशीलता की यात्रा उनकी आध्यात्मिक मान्यताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। उनका दृढ़ विश्वास है कि वृद्धि और विकास चक्रीय हैं, ठीक वैसे ही जैसे वैश्विक आर्थिक शक्ति में भौगोलिक परिवर्तन होते हैं। जिस तरह से वैश्विक शक्ति अमेरिका से चीन के पास चली गई, उसी तरह पूरन वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के उत्थान की कल्पना करते हैं। वह अक्सर इस बात पर जोर देने के लिए भगवद गीता के श्लोक का हवाला देते हैं– परिवर्तन की अनिवार्यता और संतुलन बहाल करने में सर्वोच्च शक्ति की भूमिका।

'ऐसा कहा जाता है कि एक व्यक्ति ने 40 साल की तपस्या की है और तब जाकर उसे जीवन में सफलता मिली है। चाहे देश हो या व्यापार, विकास चरण का जीवनकाल 40 साल है। अगर आप किसी चीज को पूरी तरह से विकसित करना चाहते हैं, तो उसे सफल होने के लिए 40 साल दें।' पूरन के व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण में दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और लचीलेपन में यह विश्वास स्पष्ट है। वह हर चुनौती को समर्पण और दृढ़ता की परीक्षा के रूप में देखते हैं, ठीक उसी तरह जैसे कि महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए तपस्या की आवश्यकता होती है।

चरम सीमाओं को संतुलित करनाः संयम की कला

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप, अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।

इस दोहे का हिंदी अनुवाद हैः

'ज्यादा बोलना अच्छा नहीं है, ज्यादा चुप रहना अच्छा नहीं है, ज्यादा बारिश अच्छी नहीं है, ज्यादा धूप अच्छी नहीं है।

पूरन डावर इस दोहे को ज्ञान का एक कालातीत अंश मानते हैं जो जीवन में संतुलन के महत्व पर जोर देता है। पूरन डावर का मानना हैं कि जीवन के किसी भी पहलू में अतिवादिता असंतुलन और संभावित नुकसान का कारण बन सकती है। यह दोहा अतिभोग के खतरों को उजागर करता है और संयम के महत्वपूर्ण मूल्य को दर्शाता है। पूरन डावर के अनुसार, संतुलन ही सबसे महत्वपूर्ण है, चाहे

वह व्यक्तिगत व्यवहार में हो या सामाजिक आचरण में।

पूरन डावर जीवन के विभिन्न पहलुओं पर संतुलन के इस दर्शन को लागू करते हैंः

1. **व्यक्तिगत आचरणः** वे संचार में संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखने में विश्वास करते हैं, अत्यधिक वाचालता और अनावश्यक चुप्पी दोनों से बचते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि बातचीत सार्थक और उत्पादक हो।
2. **व्यावसायिक व्यवहारः** पेशेवर क्षेत्र में, पूरन डावर संतुलित निर्णय लेने का अभ्यास करते हैं। वे अत्यधिक जोखिम लेने के साथ–साथ अत्यधिक सावधानी बरतने की सलाह देते हैं, एक संतुलित दृष्टिकोण की वकालत करते हैं जो अवसरों और खतरों दोनों पर विचार करता है।
3. **कार्य–जीवन संतुलनः** पूरन डावर काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन के महत्व पर भी जोर देते हैं। अधिक काम करने से बर्नआउट हो सकता है, जबकि पेशेवर जिम्मेदारियों की उपेक्षा करने से करियर की वृद्धि में बाधा आ सकती है। इन पहलुओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने से समग्र कल्याण होता है।

उनके अनुसार, उपरोक्त दोहे की बुद्धिमत्ता व्यापक सामाजिक और पर्यावरणीय संदर्भों तक फैली हुई हैः

- **सामाजिक संतुलनः** जिस तरह अत्यधिक बारिश या धूप प्रकृति को बाधित कर सकती है, उसी तरह अत्यधिक व्यवहार और दृष्टिकोण समाज को अस्थिर कर सकते हैं। पूरन डावर सामाजिक बातचीत, सामुदायिक पहल और शासन में संतुलित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करते हैं।
- **पर्यावरणीय स्थिरताः** स्थिरता की वकालत करते हुए, पूरन डावर संतुलित संसाधन उपयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। अत्यधिक दोहन या अत्यधिक संरक्षण दोनों के हानिकारक प्रभाव हो सकते हैं। एक संतुलित दृष्टिकोण दीर्घकालिक पारिस्थितिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करता है।

पूरन डावर अक्सर इस दोहे के गहरे दार्शनिक निहितार्थों पर विचार करते हैं। उनका मानना है कि यह संतुलन के सार को समाहित करता है जो कई आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षाओं का केंद्र है। अतिवाद से बचकर और संतुलन के लिए प्रयास करके, व्यक्ति आंतरिक शांति और बाहरी सद्भाव की स्थिति प्राप्त कर सकता है।

उदाहरण के द्वारा नेतृत्व करनाः मानक स्थापित करना

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।। ३–२१
भगवद् गीता के इस श्लोक का अनुवाद हैः

'एक महान व्यक्ति जो भी कार्य करता है, आम लोग उसका अनुसरण करते हैं। वह अनुकरणीय कार्यों द्वारा जो भी मानक स्थापित करता है, उसका अनुसरण पूरी दुनिया करती है।'

पूरन डावर इस श्लोक की व्याख्या नेतृत्व और प्रभाव के साथ आने वाली जिम्मेदारी की गहन याद के रूप में करते हैं। उनका मानना है कि सत्ता और सम्मान के पदों पर बैठे लोगों को उदाहरण के रूप में नेतृत्व करना चाहिए क्योंकि उनके कार्य दूसरों के लिए अनुसरण करने के लिए मानक निर्धारित करते हैं। वे इसका अर्थ और इसके महत्व को तीन तरीकों से समझाते हैंः

1. उदाहरण द्वारा नेतृत्वः पूरन डावर इस बात पर जोर देते हैं कि सच्चा नेतृत्व केवल अधिकार के पद धारण करने के बारे में नहीं है, बल्कि उन मूल्यों और सिद्धांतों को अपनाने के बारे में है जिन्हें कोई समाज में देखना चाहता है। नेता, अपने कार्यों से, दूसरों के लिए व्यवहार का एक मॉडल बनाते हैं। यह विशेष रूप से व्यावसायिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है, जहाँ नेतृत्व टीम का लोकाचार पूरे संगठनात्मक संस्कृति को प्रभावित करता है।
2. मानक स्थापित करनाः पूरन डावर के अनुसार, नेताओं के पास ईमानदारी, नैतिकता और प्रदर्शन के उच्च मानक स्थापित करने का अनूठा अवसर है। जब नेता ईमानदारी और समर्पण के साथ खुद का आचरण करते हैं, तो वे अपने अनुयायियों में भी वही गुण प्रेरित करते हैं। यह लहर प्रभाव संगठनों और समुदायों को बदल सकता है, एक ऐसा वातावरण विकसित कर सकता है जहाँ सकारात्मक मूल्यों को बनाए रखा जाता है और दोहराया जाता है।
3. सामाजिक उत्तरदायित्वः पूरन इस दर्शन को सामाजिक कल्याण, और अपने व्यापक कार्य में लागू करते हैं। उनका मानना है कि शिक्षा, कौशल विकास और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में उनके कार्य दूसरों के लिए एक बेंचमार्क के रूप में काम करने चाहिए। इन क्षेत्रों में साहसिक कदम उठाकर, वह अन्य व्यावसायिक नेताओं को इसी तरह की पहल करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते हैं, जिससे समाज पर प्रभाव बढ़ेगा।

पूरन डावर इस श्लोक को विभिन्न तरीकों से अपनाते हैंः

1. अतीत को स्वीकारनाः पूरन डावर का मानना है कि "जो कुछ भी हुआ वह अच्छे के लिए था" के दृष्टिकोण को अपनाकर व्यक्ति खुद को पछतावे के बोझ से मुक्त कर सकता है और वर्तमान पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। यह दृष्टिकोण अतीत के अनुभवों से सीखने को प्रोत्साहित करता है, न कि उनसे उलझने के लिए।
2. वर्तमान परिस्थितियों में आशावादः पूरन डावर के अनुसार, यह मानना कि अभी जो कुछ भी हो रहा है वह अंततः अच्छे के लिए है, एक सकारात्मक मानसिकता को बढ़ावा देता है। यह विश्वास व्यक्तियों को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सकारात्मक पहलू देखने में मदद करता है और उन्हें अपनी वर्तमान परिस्थितियों से सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए प्रेरित करता है। यह लचीलापन और अनुकूलनशीलता को बढ़ावा देता है, जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए आवश्यक गुण हैं।
3. भविष्य के लिए आशाः पूरन डावर इस बात पर जोर देते हैं कि भविष्य में विश्वास रखने से जीवन के प्रति एक आशावादी और सक्रिय दृष्टिकोण सुनिश्चित होता है। यह विश्वास करना कि जो कुछ भी होगा वह अच्छे के लिए ही होगा, आश्वासन की भावना प्रदान करता है और आगे क्या होने वाला है, इस बारे में

अतुल्य भारत फाउंडेशन के अध्यक्ष पूरन डावर प्रतिष्ठित बृज रत्न पुरस्कार समारोह में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल महामहिम श्रीमती आनंदी बेन पटेल को सम्मानित करते हुए।

चिंता को कम करता है। यह विश्वास व्यक्तियों को आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्यों की ओर योजना बनाने और काम करने के लिए प्रेरित करता है, यह जानते हुए कि उनके प्रयास सकारात्मक परिणाम देंगे।

पूरन डावर जीवन के विभिन्न पहलुओं पर स्वीकृति और आशावाद के इस दर्शन को लागू करते हैं:

1. **व्यक्तिगत विकास:** उनका मानना है कि अतीत को स्वीकार करके, वर्तमान पर भरोसा करके और भविष्य में विश्वास रखकर, व्यक्ति विकास की मानसिकता विकसित कर सकते हैं। व्यक्तिगत चुनौतियों पर काबू पाने और आत्म–सुधार प्राप्त करने के लिए यह मानसिकता महत्वपूर्ण है।
2. **व्यावसायिक अभ्यास:** पेशेवर क्षेत्र में, पूरन नेताओं और उद्यमियों को अनिश्चितताओं और असफलताओं से निपटने के लिए इस दर्शन को अपनाने की सलाह देते हैं। पिछली व्यावसायिक विफलताओं को सीखने के अवसर के रूप में स्वीकार करना, वर्तमान चुनौतियों के बीच सकारात्मक रहना और भविष्य की सफलताओं में विश्वास रखना निरंतर विकास और नवाचार को बढ़ावा दे सकता है।

पूरन डावर अक्सर इस श्लोक के गहरे दार्शनिक निहितार्थों पर विचार करते हैं। उनका मानना है कि यह समर्पण और विश्वास के सार को समाहित करता है, जो कई आध्यात्मिक शिक्षाओं का केंद्र है। घटनाओं पर नियंत्रण छोड़कर और ब्रह्मांडीय व्यवस्था पर भरोसा करके, व्यक्ति आंतरिक शांति और संतोष की स्थिति प्राप्त कर सकता है।

इस श्लोक का ज्ञान व्यापक सामाजिक और पर्यावरणीय संदर्भों तक फैला हुआ है:

सामाजिक सद्भाव: जिस तरह पिछली घटनाओं, वर्तमान परिस्थितियों और भविष्य की संभावनाओं को स्वीकार करने से व्यक्तिगत शांति मिल सकती है, उसी तरह यह सामाजिक सद्भाव को भी बढ़ावा दे सकता है। जब व्यक्ति सामूहिक रूप से इस मानसिकता को अपनाते हैं, तो यह एक अधिक दयालु और लचीला समुदाय बन सकता है।

पर्यावरणीय स्थिरता: स्थिरता की वकालत करते हुए, पूरन डावर पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से काम करने के प्रति इस सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। यह मानते हुए कि संरक्षण में पिछले प्रयासों ने आधार तैयार किया, उचित वर्तमान क्रियाएं एक अंतर ला रही हैं, और भविष्य के

प्रयास ग्रह को बेहतर बनाने के लिए जारी रहेंगे, सामूहिक पर्यावरणीय प्रबंधन को आगे बढ़ा सकते हैं।

यज्ञ – दैनिक बलिदान

पूरन डावर का प्राचीन ग्रंथों और पौराणिक कथाओं में उल्लिखित यज्ञ (पवित्र अनुष्ठान) की अवधारणा में विश्वास आधुनिक दुनिया में एक गहन प्रतिध्वनि पाती है। पूरन डावर के लिए, दैनिक कार्य एक प्रकार का यज्ञ है। चाहे वह कारखाना खोलना हो, व्यवसाय चलाना हो, या ईमानदारी और निष्ठा के साथ रोजमर्रा के कर्तव्यों का पालन करना हो, ये सभी कार्य एक पवित्र अनुष्ठान माने जाते हैं। यह दर्शन उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों के प्रति दृष्टिकोण में गहराई से समाया हुआ है।

दैनिक यज्ञ – काम का पवित्र अनुष्ठान

पूरन डावर दैनिक कार्य को यज्ञ के रूप में परिभाषित करते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि कारखाने में जाना, व्यवसाय का प्रबंधन करना और समर्पण और नैतिक आचरण के साथ दैनिक जिम्मेदारियों को पूरा करना इस पवित्र अनुष्ठान के रूप हैं। जो लोग अनैतिक प्रथाओं के माध्यम से इस संतुलन को बाधित करने का प्रयास करते हैं, उन्हें 'असुरों' (राक्षसों) के समान माना जाता है। इसके विपरीत, एक आम व्यक्ति जो अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से करता है, वह एक 'संत' है, जो दैनिक जीवन के शांतिपूर्ण यज्ञ में योगदान देता है। यह दृष्टिकोण प्राचीन ज्ञान में निहित है, जहाँ यज्ञ को एक अनुष्ठान के रूप में देखा जाता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखता है। पूरन डावर इसे आधुनिक संदर्भ में लागू करते हैं, नैतिक कार्य को सामाजिक संतुलन को बनाए रखने के साधन के रूप में देखते हैं। वह अक्सर समझाते हैं कि जिस तरह एक संत ईमानदारी से यज्ञ करता है, उसी तरह एक व्यक्ति जो बिना किसी नुकसान के लगन से काम करता है, वह यज्ञ की सच्ची भावना को दर्शाता है।

सामूहिक यज्ञ – सामाजिक भलाई के लिए सामूहिक प्रयास

पूरन डावर सामूहिक यज्ञ के दर्शन को सामाजिक कार्य तक बढ़ाते हैं, इसे सामूहिक बलिदान के रूप में वर्णित करते हैं। यज्ञ के इस रूप में, प्रत्येक व्यक्ति एक सामान्य उद्देश्य में योगदान देता है, जिससे एक सामंजस्यपूर्ण और उत्पादक समाज का निर्माण होता है। पूरन का मानना है कि सामाजिक कार्य एक सामूहिक प्रयास है जहाँ सभी का योगदान महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। यह विचार सामाजिक कल्याण

और सामुदायिक विकास में उनकी पहल का आधार है।

अश्वमेध यज्ञ – यथास्थिति को चुनौती देना

पूरन डावर अश्वमेध यज्ञ के साथ समानताएँ भी बताते हैं, एक प्राचीन अनुष्ठान जिसमें एक घोड़े को घूमने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है, जो एक राज्य के प्रभाव के विस्तार का प्रतीक होता था। यदि कोई घोड़े को रोकता है, तो यह शासक के अधिकार को चुनौती देने का संकेत देता है। इसी तरह, पूरन डावर आधुनिक उद्यमशील उपक्रमों और अभिनव परियोजनाओं को अश्वमेध यज्ञ के रूप में देखते हैं, जो मौजूदा मानदंडों को चुनौती देते हैं और अपने क्षेत्रों में वर्चस्व के लिए प्रयास करते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें लगातार सीमाओं को आगे बढ़ाने और उत्कृष्टता की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है।

असुर और संत – संतुलन बनाए रखना

यज्ञ के संदर्भ में असुरों (राक्षसों) और संतों की पूरन डावर की व्याख्या विशेष रूप से ज्ञानवर्धक है। वे भ्रष्ट आचरण करने वालों और सामाजिक सद्भाव को बाधित करने वालों को असुर कहते हैं। ये लोग पौराणिक कथाओं के राक्षसों की तरह अराजकता और असंतुलन पैदा करते हैं। दूसरी ओर, जो लोग ईमानदारी से काम करते हैं, बिना किसी नुकसान के समाज में सकारात्मक योगदान देते हैं, वे संत हैं। ये लोग आधुनिक दुनिया के सच्चे नायक हैं, जो अपने दैनिक यज्ञ के माध्यम से शांति और व्यवस्था बनाए रखते हैं।

पूरन डावर अक्सर काम में लय के महत्व पर जोर देते हैं, इसकी तुलना एक सुव्यवस्थित यज्ञ से करते हैं। उनका मानना है कि जिस तरह एक यज्ञ में लयबद्ध मंत्रोच्चार और सटीक अनुष्ठानों की आवश्यकता होती है, उसी तरह काम में भी एक सामंजस्यपूर्ण पैटर्न का पालन करना चाहिए। जो लोग इस लय को बनाए रखने में विफल रहते हैं, वे असुरों के समान व्यवधान पैदा करते हैं। इसके विपरीत, जो लोग अपने पर्यावरण और सहकर्मियों के साथ सामंजस्य में काम करते हैं, वे एक शांतिपूर्ण और उत्पादक वातावरण बनाते हैं।

पूरन डावर द्वारा यज्ञ को दैनिक कार्य के अनुष्ठान के रूप में, सामूहिक यज्ञ को सामूहिक सामाजिक प्रयास के रूप में तथा अश्वमेध यज्ञ को यथास्थिति को चुनौती देने के रूपक के रूप में व्याख्यायित करने से आधुनिक जीवन के लिए एक गहन तथा प्रेरणादायी रूपरेखा मिलती है।

उनका मानना है कि नैतिक आचरण तथा सामूहिक प्रयास सामाजिक संतुलन बनाए रखने के लिए सर्वोपरि हैं, जो उनके व्यवसाय तथा सामाजिक कल्याण के

दृष्टिकोण में एक मार्गदर्शक सिद्धांत है। प्राचीन ज्ञान में गहराई से निहित यह दर्शन, समकालीन विश्व में सामंजस्य तथा सफलता प्राप्त करने के लिए एक कालातीत खाका प्रस्तुत करता है।

40 वर्ष की तपस्या

पूरन डावर अक्सर 'तपस्या' या गहन समर्पण की अवधारणा पर विचार करते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि सच्ची सफलता, चाहे व्यवसाय में हो या व्यक्तिगत जीवन में, 40 वर्षों के अथक प्रयास और दृढ़ता के पश्चात मिलती है। यह विश्वास विकास की चक्रीय प्रकृति की उनकी समझ में निहित है, एक दृष्टिकोण जो वे भगवद गीता की शिक्षाओं और वैश्विक आर्थिक प्रवृत्तियों के अपने अवलोकनों से प्राप्त करते हैं।

पूरन डावर के अनुसार, विकास एक चक्रीय प्रक्रिया है, जो एक चक्र की तरह है। ऐतिहासिक रूप से, हमने शक्ति और समृद्धि को भौगोलिक रूप से आगे बढ़ते देखा है– अमेरिका से इंग्लैंड, फिर चीन और अब भारत और अफ्रीका के भी आगे बढ़ने की उम्मीद है। यह प्रगति तब स्पष्ट होती है जब हम देखते हैं कि कैसे अमेरिका ने 1978 में चीन में अपना पहला दूतावास खोला और कैसे, 2018 तक, चीन ने अमेरिका के आर्थिक प्रभाव का बहुत हिस्सा अवशोषित कर लिया। चीन एक 'भस्मासुर' बन गया, जिसने आर्थिक शक्ति को निगल लिया। पूरन डावर का मानना है कि भारत, जिसने 2018 के आसपास अपनी महत्वपूर्ण चढ़ाई शुरू की है, विकास और परिवर्तन के इस 40–वर्षीय चक्र का पालन करेगा।

2012–13 से, पूरन डावर भारत के उत्थान के पक्षधर रहे हैं, बावजूद इसके कि प्रचलित घोटाले और चुनौतियों के कारण ऐसा सपना उस समय असंभव लगता था। हालांकि, 2014 के बाद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया' और 'स्किल इंडिया' जैसी पहलों के साथ, ज्वार बदलने लगा। इन पहलों के साथ–साथ नई नीतियों और नारों की दैनिक बाढ़ ने भारत के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। पूरन डावर का दावा है कि भले ही नए नेता उभरें, लेकिन यह प्रक्रिया पहले से बनी गति से आगे बढ़ती रहेगी।

अपने जीवन से समानांतर, पूरन डावर ने एक शरणार्थी शिविर से शुरुआत की और, विशुद्ध 'तपस्या' लगातार कठिन मेहनत और अपार चुनौतियों पर काबू पाने के माध्यम से, उन्होंने डावर इंडस्ट्रीज को एक वैश्विक इकाई में खड़ा किया। उनकी यात्रा मानसरोवर की कठिन चढ़ाई के समान है, जहाँ केवल वे ही शिखर तक पहुँचते हैं, जो सबसे कठिन परिस्थितियों को सहन कर सकते हैं। पूरन डावर के लिए, 'तपस्या' कठिन परिस्थितियों के बावजूद की गई कड़ी मेहनत का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें निरंतरता और समर्पण अंततः सफलता की ओर ले

जाता है।

यह दर्शन भगवद गीता की शिक्षाओं के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। उनका एक मार्गदर्शक छंद हैः

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गो स्त्वकर्माणि।।

यह श्लोक परिणामों की चिंता किए बिना अपने कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर देता है। पूरन इसे अपने उद्यमशीलता और परोपकारी प्रयासों दोनों के लिए एक शक्तिशाली सबक के रूप में व्याख्या करते हैं। परिणाम के बजाय प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करके, वह यह सुनिश्चित करते हैं कि तत्काल परिणाम की परवाह किए बिना, उनके प्रयास ईमानदार और सत्यनिष्ठा पर आधारित हों।

पूरन डावर का जीवन और कार्य सामाजिक कल्याण और पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के साथ व्यक्तिगत और व्यावसायिक उत्कृष्टता के सामंजस्य का एक शक्तिशाली उदाहरण है। उनकी कहानी इस बात का प्रमाण है कि समग्र और समावेशी विकास की दृष्टि से प्रेरित होने पर एक व्यक्ति समाज पर कितना गहरा प्रभाव डाल सकता है। गीता के सिद्धांतों में उनका अटूट विश्वास और उनके अपने कठिन परिश्रम से अर्जित अनुभव लचीलापन, दूरदर्शिता और व्यापक भलाई के प्रति अडिग समर्पण से चिह्नित एक यात्रा को उजागर करते हैं।

सामाजिक जिम्मेदारीः हर घर एक स्टार्टअप हो सकता है

पूरन डावर का शिक्षा और कौशल विकास पर दर्शन बहुत ही व्यावहारिक है। उन्होंने अक्सर भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर चिंता व्यक्त की है, जिसे वे बेरोजगारी के प्राथमिक कारणों में से एक मानते हैं। उनका तर्क है कि यह प्रणाली ऐसे डिग्री धारकों को तैयार करने के लिए बनाई गई है, जो नियमित नौकरी चाहते हैं, जो फोर्ड के युग की असेंबली लाइन मानसिकता में फिट बैठते हैं। डिग्री की इस अथक खोज में, हमने कौशल का सार खो दिया है, जिसके परिणामस्वरूप व्यापक बेरोजगारी हुई है।

पूरन डावर विदेश में अपने अवलोकनों से आकर्षित होते हैं, विशेष रूप से वर्जीनिया में, जहाँ उनकी भाभी रहती हैं। उन्होंने देखा कि वहां हाई स्कूल के छात्र अंशकालिक नौकरी करते हैं, जिससे न केवल उनके परिवारों पर वित्तीय बोझ कम होता है, बल्कि उनमें काम करने की मजबूत नैतिकता भी पैदा होती है। उदाहरण के लिए, वर्जीनिया में बच्चे घास काटने जैसे कामों में संलग्न हो सकते हैं, और इसे

कोई छोटा या मामूली काम नहीं माना जाता। इसके बजाय, यह उन्हें सभी प्रकार के कामों का सम्मान करना और अपनी शैक्षणिक शिक्षा के साथ–साथ व्यावहारिक कौशल विकसित करना सिखाता है।

वह इसकी तुलना भारत की स्थिति से करते हैं, जहाँ शिक्षा और कौशल के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। यहाँ, शिक्षा का बोझ अक्सर माता–पिता पर भारी पड़ता है, और बच्चों को अंशकालिक नौकरी करने से हतोत्साहित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यावहारिक कौशल की कमी होती है। पूरन डावर का मानना है कि इससे ऐसी स्थिति पैदा हुई है जहाँ अकुशल संगठित श्रम अर्थव्यवस्था पर बोझ बन गया है। भारत में, केवल 7.3% लोग ही कार्यरत हैं, जबकि शेष 92.7% या तो बेरोजगार हैं या कम रोजगार वाले हैं।

पूरन डावर इस मानसिकता में आमूलचूल परिवर्तन की वकालत करते हैं। उनका सुझाव है कि अगर भारत में बच्चों को उनके छात्र जीवन के दौरान हर तरह के काम का सम्मान करते हुए दिन में चार घंटे काम करना सिखाया जाए, तो इससे अधिक कुशल कार्यबल तैयार होगा। उनका मानना है कि आर्थिक सशक्तीकरण और सामाजिक जिम्मेदारी के लिए नजरिए में यह बदलाव जरूरी है।

अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए वे अक्सर उदाहरण देते हैं। अगर कोई व्यक्ति अपने पारिवारिक व्यवसाय पर गर्व करता है, जैसे कि वह एक नाई का बेटा है, और शिक्षा को अपने विरासत में मिले हुनर के साथ जोड़ता है, तो वह अपनी छोटी सी नाई की दुकान को एक हाई–एंड सैलून में बदल सकता है, ठीक वैसे ही जैसे जावेद हबीब या वंदना लूथरा ने किया। इसी तरह, सही व्यावसायिक कौशल और शिक्षा के साथ एक स्ट्रीट फूड विक्रेता मैकडॉनल्ड्स जैसा ब्रांड बना सकता है। पूरन डावर अक्सर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस बयान का जिक्र करते हैं कि 'पकौड़ेवाला' रोजगार का एक रूप है। जबकि कुछ लोगों ने इस बयान का मजाक उड़ाया, पूरन डावर को इसमें बहुत ज्ञान दिखाई दिया। उनका तर्क है कि मैकडॉनल्ड्स की सफलता मूल रूप से पकौड़ों की कहानी है, जो व्यावसायिक शिक्षा और पैमाने के साथ मिलती है।

भारत की समृद्ध संस्कृति और विविध व्यंजन उद्यमशील उपक्रमों के लिए अपार संभावनाएं प्रदान करते हैं। पूरन गोपालजी जैसे उदाहरणों की ओर इशारा करते हैं, जिन्होंने गुजरात की पारंपरिक खाद्य संस्कृति को छह करोड़ के टर्नओवर वाले एक संपन्न व्यवसाय में बदल दिया। वह इस बात पर जोर देते हैं कि एक दर्जी का बेटा बुटीक या गारमेंट फैक्ट्री खोल सकता है, बशर्ते वह अपने हुनर को शिक्षा, तकनीक और व्यावसायिक कौशल के साथ जोड़ दे।

पूरन डावर का मानना है कि अगर कोई अपना खुद का व्यवसाय नहीं बढ़ा

सकता, तो उससे किसी और के व्यवसाय में महत्वपूर्ण योगदान की उम्मीद कैसे की जा सकती है? यह उद्यमिता पर उनके व्याख्यानों का मूल है, जो वह कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में देते हैं। वह छात्रों को अपने हुनर को व्यवहार्य व्यवसायों में बदलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, और इस बात पर जोर देते हैं कि यदि प्रयास किया जाए तो हर घर एक स्टार्टअप हो सकता है।

इस विजन को बढ़ावा देने के लिए, पूरन स्टार्टअप कॉन्क्लेव के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। उदाहरण के लिए, 10 मई, 2024 को एक स्टार्टअप कॉन्क्लेव आगरा में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया। इन कॉन्क्लेव का उद्देश्य असंगठित क्षेत्रों को एक साथ लाना और उन्हें संगठित उद्योग बनने के लिए आवश्यक सहायता और संसाधन प्रदान करना था।

आगरा, जो 400 से अधिक इकाइयों के साथ अपने सफाई ब्रश उद्योग के लिए जाना जाता है, इस बात का एक प्रमुख उदाहरण है कि इन क्षेत्रों को कैसे बदला जा सकता है। पूरन डावर की पहल का उद्देश्य प्लास्टिक, कपड़ा और इंजीनियरिंग सामान जैसे अन्य उद्योगों में भी इसी प्रकार के परिवर्तन लाना है।

यमुना फ्रंट साइड प्रोजेक्टः एक संधारणीय आगरा के लिए पूरन डावर का विजन

यमुना फ्रंट साइड प्रोजेक्ट के लिए पूरन डावर का विजन पर्यावरणीय संधारणीयता और नागरिक विकास के प्रति उनकी गहरी चिंता का प्रमाण है। आगरा को एक स्वच्छ और स्वस्थ शहर में बदलने के उद्देश्य से उनके व्यापक प्रस्तावों में उनकी विश्लेषणात्मक सोच और नेतृत्व क्षमता झलकती है।

पूरन डावर ने कई महत्वपूर्ण मुद्दों की पहचान की है, जिन्हें आगरा में पर्यावरण और नागरिक स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए संबोधित करने की आवश्यकता है। उन्होंने जोर दिया कि केवल उद्योगों के खिलाफ की गई कार्रवाई की रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट को सौंपना पर्याप्त नहीं है। प्रदूषण और पर्यावरणीय गिरावट के मूल कारणों से निपटने के लिए नीचे बताए गए वास्तविक, दीर्घकालिक समाधानों की आवश्यकता हैः

एक आदर्श सीवर प्रणाली सुनिश्चित करनाः

पूरन डावर ने जिस सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर प्रकाश डाला है, वह अपर्याप्त सीवेज सिस्टम है। वह बताते हैं कि बिना किसी उचित सीवर सिस्टम के नालों में सीवर की निकासी सीधे यमुना नदी में जाती है। यह न केवल नदी को नुकसान पहुँचाता है, बल्कि मच्छरों और कीड़ों के लिए प्रजनन स्थल भी बनाता है, जो ताजमहल के लिए खतरा पैदा करता है। उनका समाधान पूरी तरह से कार्यात्मक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) द्वारा पूरक एक आदर्श सीवर सिस्टम सुनिश्चित करना है।

सूखी यमुना और रेत के तूफानों पर बात करनाः

पूरन डावर सूखती यमुना नदी को लेकर भी बहुत चिंतित हैं, जिसके कारण रेत के तूफान आते हैं जो सस्पेंडेड पार्टिकुलेट मैटर (एसपीएम) और पर्यावरण के और अधिक क्षरण में योगदान करते हैं। वह यमुना से डिस्टिल कर गंद निकालने और एक वाटरफ्रंट और बैराज बनाने का प्रस्ताव की हिमायत करते हैं। उनका मानना है कि इससे पानी का प्रवाह बहाल होगा और रेतीले तूफानों की घटना कम होगी, जिससे आगरा में हवा की गुणवत्ता में काफी सुधार होगा।

धूल–मुक्त वातावरण बनानाः

नागरिक निकाय धूल–मुक्त वातावरण बनाने में विफल रहे हैं, सड़कें अक्सर दीवार–से–दीवार विकास और हरियाली के अभाव के कारण धूल से भरी रहती हैं। पूरन डावर का समाधान ताज ट्रेपेजियम जोन (टीटीजेड) में स्थायी दिशा–निर्देशों को लागू करना है, यह सुनिश्चित करना कि सभी सड़कों को दीवार–से–दीवार विकसित किया जाए और जहाँ भी जगह हो, वहाँ हरियाली के पैच लगाए जाएं। वह क्षेत्र के सौंदर्य और पर्यावरणीय गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए फूलों के गमलों से सजे केंद्रीय चैनलों का भी सुझाव देते हैं।

एकीकृत विकास प्राधिकरणः

पूरन डावर एकल टीटीजेड विकास प्राधिकरण के निर्माण की पुरजोर वकालत करते हैं। इस निकाय में आगरा विकास प्राधिकरण (ADA), नगर निगम, जल निगम, जल संस्थान, लोक निर्माण विभाग (PWD), केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (CPWD), भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI), बिजली और संचार क्षेत्र सहित सभी संबंधित विभागों के प्रतिनिधि शामिल हों।

उनका मानना है कि टीटीजेड प्राधिकरण के अध्यक्ष द्वारा एकल खिड़की प्रणाली के साथ CEO के रूप में कार्य करने से प्रयासों में आसानी होगी और एक विभाग के कार्यों के कारण दूसरे विभाग के कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने के अंतहीन चक्र को रोका जा सकेगा।

वाहन प्रदूषण पर ध्यान देनाः

वाहन प्रदूषण आम जनता को प्रभावित करने वाली एक और महत्वपूर्ण समस्या है।

उत्तम इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट द्वारा आयोजित उद्यमिता कार्यक्रम में चेयरमैन संजीव ने मुख्य अतिथि पूरन डावर का हार्दिक स्वागत एवं सम्मान किया।

पूरन डावर बताते हैं कि उत्तरी रिंग रोड के निर्माण के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के अनिवार्य दिशा–निर्देशों का पालन नहीं किया गया है।

वह यातायात की भीड़ को कम करने और शहर में वाहनों से होने वाले उत्सर्जन को कम करने के लिए इस सड़क का तत्काल निर्माण करने का आग्रह करते हैं।

बिना रुकावट बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करनाः

24 घंटे बिजली की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने में सरकार की विफलता निवासियों और उद्योगों दोनों के लिए एक बड़ा मुद्दा है। पूरन डावर जोर देते हैं कि आईआईजेड में बिजली की कीमत 5 रुपये प्रति यूनिट से अधिक नहीं होनी चाहिए ताकि इसे सभी हितधारकों के लिए वहनीय और टिकाऊ बनाया जा सके।

स्वतंत्र अनुपालन ऑडिटः

पूरन डावर पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MOEF) और टीटीजेड की आलोचना करते हैं, क्योंकि वे व्यापक मुद्दों को संबोधित किए बिना केवल

उद्योगों को दंडित करते हैं। उनका सुझाव है कि सभी अनुपालन ऑडिट स्वतंत्र एजेंसियों द्वारा किए जाने चाहिए। उनका मानना है कि पर्यावरणीय दायित्वों को प्रभावी ढंग से लागू करने का यही एकमात्र तरीका है। इसके अलावा, उनका प्रस्ताव है कि प्रदूषण के स्तर को सटीक रूप से मापने के लिए औद्योगिक परिसरों और सड़कों दोनों पर प्रदूषण मीटर लगाए जाने चाहिए।

वे एक व्यावहारिक परीक्षण का सुझाव देकर वर्तमान दृष्टिकोण को चुनौती देते हैं। उद्योग को एक सप्ताह के लिए बंद कर दें और प्रदूषण में कमी को मापें ताकि यह पता लगाया जा सके कि वास्तविक समस्या कहां है। यह अभिनव सोच पारंपरिक तरीकों पर सवाल उठाने और प्रभावी समाधान प्रस्तावित करने की उनकी क्षमता को दर्शाती है।

दीर्घकालिक परिवर्तन के लिए सिस्टम और संरचना

संबंधित अधिकारियों के साथ चर्चा के दौरान, पूरन डावर ने लगातार व्यवस्थित और संरचित विकास के महत्व पर जोर दिया है। वे भारतीय सिविल सेवा (ICS) और भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के बीच समानताएँ बताते हैं, इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि कैसे ICS ने शुरू में एक नागरिक प्रणाली बनाई, जबकि IAS ने धीरे–धीरे एक पुलिसिंग दृष्टिकोण अपनाया है। पूरन डावर व्यावहारिक मुद्दों की ओर इशारा करते हैं जैसे कि उचित कूड़ेदानों का अभाव, जिसके कारण सड़कें कचरा निपटान क्षेत्र के रूप में काम करती हैं। आईसीएस से उम्मीद थी कि वह सही नागरिक बुनियादी ढांचा तैयार करे, जबकि आईएएस बिना अच्छी निपटान सुविधाएँ दिए ही लोगों को कूड़ा फेंकने पर जुर्माना लगाता है।

इसी तरह, विक्रेता सड़कों पर कब्जा कर लेते हैं, इसलिए नहीं कि वे इसे पसंद करते हैं, बल्कि इसलिए कि उनके लिए कोई निर्दिष्ट स्थान नहीं है। उचित वेंडिंग जोन बनाकर मूल कारण को संबोधित करने के बजाय, वर्तमान दृष्टिकोण में अक्सर इन विक्रेताओं को दंडित करना या हटाना शामिल होता है, जो समस्या को और बढ़ाता है।

पूरन डावर का समाधान एक ऐसी प्रणाली स्थापित करना है जो उचित बुनियादी ढाँचा और संगठन प्रदान करे, जिससे सतत विकास सुनिश्चित हो। विक्रेताओं के लिए निर्दिष्ट स्थान और पर्याप्त अपशिष्ट निपटान सुविधाएँ बनाकर, बुनियादी ढाँचे की कमी से प्रभावित लोगों को दंडित करने के बजाय अंतर्निहित मुद्दों को संबोधित किया जा सकता है। इस संरचित दृष्टिकोण का उद्देश्य अधिक संगठित, कुशल और टिकाऊ शहरी वातावरण बनाना है।

यमुना फ्रंट साइड प्रोजेक्ट के लिए पूरन डावर का विजन व्यापक और दूरदर्शी

है। यह पर्यावरणीय स्थिरता के लिए उनकी गहरी चिंता, समस्या समाधान के लिए उनके विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और आगरा को दूसरों के अनुसरण के लिए एक आदर्श शहर बनाने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उनके प्रस्ताव केवल सैद्धांतिक नहीं हैं, बल्कि व्यावहारिक, कार्रवाई योग्य कदमों पर आधारित हैं जो महत्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

यमुना फ्रंट साइड प्रोजेक्ट के लिए पूरन डावर का समग्र दृष्टिकोण उनके नेतृत्व, पर्यावरण के लिए गहरी चिंता और विचारशील विश्लेषण की उनकी क्षमता को दर्शाता है। अगर उनका विजन लागू किया जाता है, तो आगरा को एक स्वच्छ, स्वस्थ और अधिक व्यवस्थित शहर में बदल जायेगा, जो सतत शहरी विकास के लिए एक मिसाल कायम करेगा।

सरकारी नीतियों पर विचार

राजनीति के शिकारः किसान कानून और अग्निवीर नीतियाँ

पिछले दशक में, मोदी सरकार ने कई महत्वपूर्ण विधेयक पेश किए हैं, जिन्होंने भारत के राजनीतिक परिदृश्य को हिलाकर रख दिया है। इनमें ट्रिपल तलाक बिल, अनुच्छेद 370 को हटाना और नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA) ने व्यापक ध्यान आकर्षित किया। इन विधेयकों को राष्ट्रीय पहचान, धार्मिक सुधार और ऐतिहासिक गलतियों को सुधारने के मुद्दों के इर्द–गिर्द घूमते हुए, मजबूत समर्थन के साथ–साथ विरोध भी मिला। हालाँकि ये कानून महत्वपूर्ण थे, लेकिन इनका आम लोगों के दैनिक जीवन पर उतना गहरा असर नहीं पड़ा जितना कि आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य से बनाए गए कुछ अन्य विधेयकों का पड़ा।

ऐसी दो महत्वपूर्ण नीतियाँ किसान कानून (कृषि विधेयक 2020–21) और अग्निवीर पहल लाखों भारतीयों के जीवन को सीधे प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं। दुर्भाग्य से, ये पहल देश की राजनीतिक चालों के जाल में उलझ गई हैं।

किसान कानूनः एक खोया हुआ अवसर

पूरन डावर के अनुसार, किसान कानून भारतीय कृषि में क्रांति लाने के लिए बनाया गया था। इसका उद्देश्य किसानों को कर्ज की बेड़ियों से मुक्त करना, अनियमित मानसून की बारिश पर उनकी निर्भरता को कम करना और उन्नत उपकरणों के साथ खेती के तरीकों को आधुनिक बनाना था, जिससे श्रम और समय की बचत हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर अपनी उपज बेचने की मजबूरी से मुक्त करने की कोशिश की, जिससे अक्सर बिचौलिए हेरफेर करते हैं।

अगर यह बिल लागू होता, तो इससे किसानों की दुर्दशा में काफी सुधार हो सकता था। हालाँकि, यह राजनीतिक एजेंडे का शिकार हो गया। वामपंथी राजनेता, जिनकी शक्ति अक्सर गरीबी में निहित होती है, ने इस बिल को अपने आख्यान के लिए खतरा माना। उनके साथ पंजाब के बिचौलिए भी शामिल हो गए जिन्होंने बड़े पैमाने पर कमीशन के लिए डैच कानून का फायदा उठाया और विदेशों में खालिस्तानी समर्थक भी शामिल हो गए जिन्होंने भारत को अस्थिर करने की कोशिश की। इस गठबंधन को अरविंद केजरीवाल और अन्य महत्वाकांक्षी राजनेताओं के रूप में एक सुविधाजनक मुखपत्र मिला, जिन्होंने देश की प्रगति पर टीवी पर अपनी उपस्थिति को प्राथमिकता दी। प्रमुख किसान नेता राकेश टिकैत ने शुरुआत में कृषि कानूनों की प्रशंसा की और कहा कि यह 25 साल पुरानी मांग पूरी हुई है। हालांकि, उन्होंने जल्द ही अपने रुख को पलट दिया, कथित तौर पर खालिस्तानी समर्थकों से वित्तीय और राजनीतिक प्रोत्साहन से प्रभावित होकर। पंजाब–हरियाणा–दिल्ली सीमाओं के आसपास केंद्रित विरोध प्रदर्शन, पंजाब की AAP सरकार और केजरीवाल के समर्थन से आयोजित किए गए थे। देश के बाकी हिस्सों में व्यापक समर्थन के बावजूद, मोदी सरकार को पंजाब में अस्थिर स्थिति को देखते हुए कृषि कानूनों को वापस लेना पड़ा।

अग्निवीरः युवाओं को सशक्त बनाना

अग्निवीर पहल युवाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से एक और महत्वपूर्ण नीति है। यह कार्यक्रम पाँच साल का कठोर सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करता है, साथ ही लगभग ₹50,000 प्रति माह का वजीफा भी देता है। प्रशिक्षण के बाद, 25% प्रतिभागियों को सेना में भर्ती कर लिया जाता है, जबकि शेष को अपना खुद का उद्यम शुरू करने के लिए ₹12–23 लाख का वित्तीय पैकेज मिलता है।

अग्निवीर युवा सशक्तिकरण के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण के रूप में सामने आता है, जो सशस्त्र बलों के भीतर संरचित प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर प्रदान करता है। यह पहल न केवल अनुशासन पैदा करती है, बल्कि युवाओं को अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए वित्तीय साधन भी प्रदान करती है, जिससे आत्मनिर्भरता और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है। यह देश के दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे आत्मनिर्भर युवा उद्यमियों की एक पीढ़ी तैयार होती है।

अपनी क्षमता के बावजूद, अग्निवीर नीति को भी राजनीतिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ा है। विपक्ष ने नीति के दीर्घकालिक लाभों से ध्यान भटकाते हुए जनता की भावनाओं का दुरुपयोग किया है। इस तरह का राजनीतिक शोषण अक्सर गलत

सूचना और निहित स्वार्थों से उपजा होता है, जो सतत विकास पर अल्पकालिक राजनीतिक लाभ को प्राथमिकता देते हैं।

राजनीतिक हेरफेर और व्यावहारिक कार्यान्वयन की आवश्यकता

इन नीतियों के इर्द–गिर्द राजनीतिक हेरफेर उनके कार्यान्वयन में चुनौतियों को उजागर करता है। जबकि असहमति और बहस एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग हैं, तत्काल लाभ के लिए इन नीतियों का राजनीतिक शोषण उनकी क्षमता को कमजोर करता है। पूरन डावर का तर्क है कि विरोध अक्सर गलत सूचना और निहित स्वार्थों से उपजा होता है, जो नीतियों के दीर्घकालिक लाभों को कमजोर कर देता है।

किसान कानून और अग्निवीर दोनों नीतियों के लिए, पूरन डावर अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण की वकालत करते हैं। राजनीतिक नेताओं, नीति निर्माताओं और जनता सहित हितधारकों को इन पहलों के व्यापक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए; किसानों और युवाओं को सशक्त बनाना। इसके लिए राजनीतिक जोड़–तोड़ से ऊपर उठना और इन नीतियों के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्ध होना आवश्यक है।

आगे की राह

पूरन डावर इस बात पर जोर देते हैं कि इन नीतियों की वास्तविक क्षमता को केवल उनके दीर्घकालिक दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से ही महसूस किया जा सकता है। अग्निवीर पहल के लिए, इसका मतलब यह सुनिश्चित करना है कि प्रदान की जाने वाली प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता युवाओं में वास्तविक उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त रूप से मजबूत हो। कृषि विधेयकों के लिए, इसमें एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना शामिल है, जहाँ किसान सुरक्षित महसूस करते हैं और उन्हें नए बाजार के अवसरों के लाभों के बारे में पर्याप्त जानकारी होती है।

अल्पकालिक राजनीतिक दबावों के बजाय दीर्घकालिक लाभों पर ध्यान केंद्रित करके, पूरन डावर का मानना है कि भारत सतत विकास और आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर सकता है। समय की मांग है कि नीति कार्यान्वयन के लिए एक संतुलित और दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाया जाए, जो राजनीतिक लाभ से अधिक देश के विकास को प्राथमिकता दे।

पूरन डावर की सरकारी नीतियों के बारे में अंतर्दृष्टि उनकी क्षमता और उनके सामने आने वाली चुनौतियों की गहरी समझ को दर्शाती है। किसान कानून और अग्निवीर नीतियों को लागू करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण के लिए उनका आह्वान सतत विकास और किसानों और युवाओं के सशक्तिकरण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। राजनीतिक जोड़–तोड़ से ऊपर उठकर और दीर्घकालिक लाभों पर ध्यान केंद्रित करके, भारत इन परिवर्तनकारी पहलों की वास्तविक क्षमता का दोहन कर सकता है।

आर्थिक अंतर्दृष्टि

पूरन डावर आर्थिक रुझानों के एक उत्सुक विश्लेषक हैं, जिनके पास एक स्पष्ट और व्यावहारिक उद्यमी मानसिकता है। वे अक्सर ब्रांडिंग और उत्पादों के वास्तविक मूल्य को समझने के महत्व पर जोर देते हैं। पूरन डावर के अनुसार, किसी भी उत्पाद की लागत केवल उसके उत्पादन में ही नहीं बल्कि उसके अनुसंधान और विकास (R&D) और विपणन में भी होती है।

वे विस्तार से बताते हैं कि लग्जरी ब्रांड R&D और मार्केटिंग में भारी निवेश करते हैं, जो उनकी उच्च कीमतों को सही ठहराता है। ये निवेश केवल व्यय नहीं हैं बल्कि रणनीतिक कदम हैं जो मूल्य और स्थिति की धारणा बनाते हैं, मांग को बढ़ाते हैं और ब्रांड प्रतिष्ठा स्थापित करते हैं। पूरन डावर बताते हैं कि लग्जरी उत्पाद खरीदने से अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ती है, क्योंकि यह उच्च–स्तरीय नौकरियों का समर्थन करता है और अर्थव्यवस्था को उत्तेजित करता है।

पूरन डावर अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए एक व्यावहारिक उदाहरण देते हैं। वे बताते हैं कि अगर कोई आज काम करना बंद कर दे और मामूली आय पर जीवन यापन करे, तो वे अपनी क्रय शक्ति के व्यापक प्रभाव को नहीं देख पाएंगे। हालांकि, अगर वे कड़ी मेहनत करना जारी रखते हैं और उदाहरण के लिए, ठडॅ जैसी लग्जरी कार खरीदते हैं, तो इससे न केवल उनके उद्योग को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि विनिर्माण प्रक्रिया में शामिल लगभग 50 लोगों के लिए रोजगार भी पैदा होगा। इसके अलावा, BMW खरीदने से ऑटोमोबाइल उद्योग में रोजगार का समर्थन होता है, जो आर्थिक गतिविधियों के परस्पर संबंध को उजागर करता है। पूरन डावर स्पष्ट करते हैं कि BMW की वास्तविक लागत लगभग 20 से 25 लाख है, जबकि शेष 75 लाख ऑटोमोबाइल उद्योग के R&D को कवर करते हैं। R&D में यह पर्याप्त निवेश निरंतर नवाचार और सुधार सुनिश्चित करता है, जो उच्च कीमत को उचित ठहराता है। इसी तरह, किसी भी ब्रांडेड उत्पाद के लिए, चाहे वह टी–शर्ट हो या iPhone पैसे का मूल्य उससे मिलने वाली संतुष्टि और स्थिति में परिलक्षित होता है। ब्रांडेड उत्पाद के मालिक होने से जुड़ा गर्व उसके कथित मूल्य को बढ़ाता है।

उन्होंने आगे बताया कि 500 रुपये में टी–शर्ट बेचने वाला ब्रांड 5,000 रुपये प्रति माह पर सेल्सपर्सन रख सकता है, जबकि 5,000 रुपये में टी–शर्ट बेचने वाला हाई–एंड ब्रांड 50,000 रुपये प्रति माह पर सेल्सपर्सन रख सकता है। इससे सेल्सपर्सन का दर्जा बढ़ता है और जीवन स्तर में सुधार होता है, जिससे उनके इस तर्क को बल मिलता है कि विलासिता की वस्तुओं को खरीदना भी आर्थिक कल्याण में योगदान देता है। पूरन डावर उत्पादों के लागत विभाजन पर भी चर्चा करते हैं। वह बताते हैं कि किसी भी उत्पाद की लागत में R&D और मार्केटिंग सहित उसके उत्पादन के बाद की लागत शामिल होती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कंपनी R&D में 1 करोड़ का निवेश करती है और प्रति इकाई उत्पादन लागत 500 रुपये है, जिसमें 10,000 का प्रारंभिक ग्राहक आधार है, तो कुल निवेश 1.5 करोड़ हो जाता है। नतीजतन, इन निवेशों को कवर करने के लिए बिक्री मूल्य निर्धारित किया जाता है। एक बार जब प्रारंभिक R&D लागत वसूल हो जाती है, तो उत्पाद को आम मार्केटिंग रणनीति का प्रदर्शन करते हुए कम दरों पर जनता को पेश किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि ऐसे मामलों में भी जहाँ कोई गरीब व्यक्ति नकली बाजार से खरीदता है, वहाँ भी एक दिन असली ब्रांड से खरीदने की आकांक्षा होती है, जो ब्रांडिंग के शक्तिशाली आकर्षण को दर्शाता है। जो लोग इसे खरीद सकते हैं वे अक्सर नकली उत्पादों से बचते हैं, जो ब्रांड की धारणा और मार्केटिंग के महत्वपूर्ण प्रभाव को उजागर करता है।

आर्थिक रुझानों और ब्रांडिंग के बारे में पूरन डावर की अंतर्दृष्टि व्यवसाय परिदृश्य की उनकी गहरी समझ को दर्शाती है। क्रय व्यवहार और ब्रांडिंग रणनीतियों के व्यापक प्रभाव को देखने की उनकी क्षमता उद्यमशीलता के प्रति उनके विचारों की स्पष्टता और दूरदर्शी दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। R&D, मार्केटिंग और आर्थिक गतिविधियों की परस्पर संबद्धता की भूमिका पर जोर देकर, पूरन डावर गुणवत्ता और नवाचार में निवेश के महत्व के लिए एक सम्मोहक मामला प्रस्तुत करते हैं, जिससे व्यवसायों और समाज दोनों को लाभ होता है।

पूरन डावर एक दूरदर्शी विचारक हैं जिनके विचार व्यवसाय की सीमाओं को पार करते हैं। उनका दर्शन भगवद गीता की शिक्षाओं में गहराई से निहित है और नैतिक प्रथाओं, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और सामाजिक कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। विकास, स्थिरता और आर्थिक सशक्तिकरण पर उनके विचार बेहतर भविष्य बनाने के लिए एक रोडमैप प्रदान करते हैं। जैसा कि पूरन डावर अपने व्याख्यानों, ब्लॉगों और पहलों के माध्यम से प्रेरित करना जारी रखते हैं, वे लचीलापन, नवाचार और करुणा की एक स्थायी विरासत छोड़ जाते हैं। उनका जीवन दृढ़ता की शक्ति और दूरदर्शी नेतृत्व के परिवर्तनकारी प्रभाव का प्रमाण है।

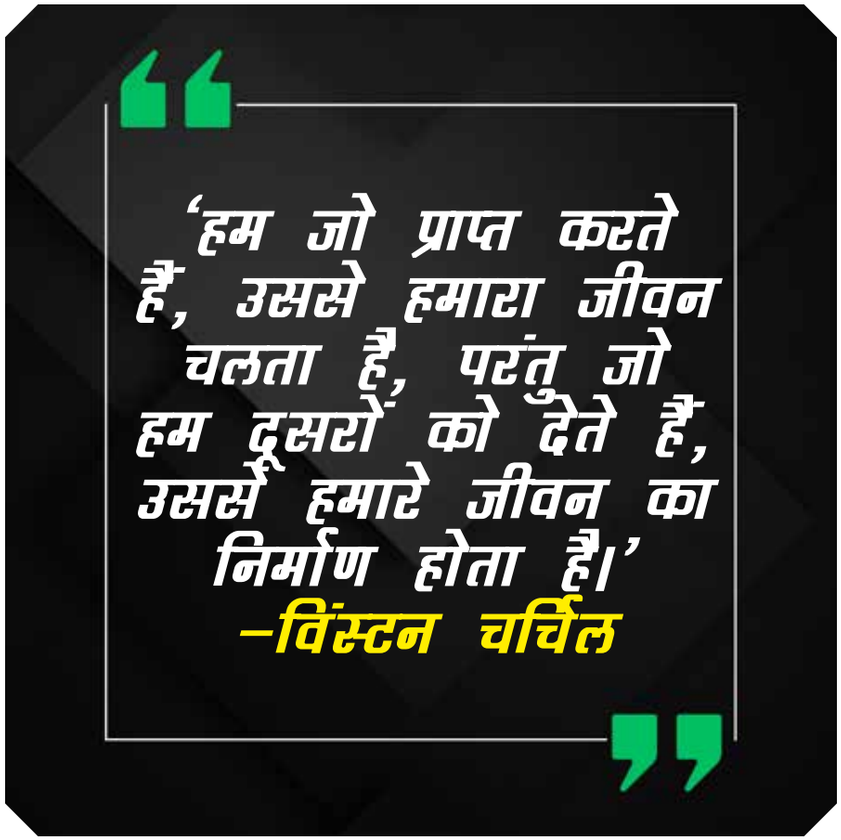

अध्याय 13

विचार की आवाज: बदलाव के लिए पूरन डावर की रचनाएँ और विश्लेषक

शोर और तेज–तर्रार सूचनाओं से भरी दुनिया में, पूरन डावर विचारशील चिंतन और दार्शनिक जाँच के प्रकाशस्तंभ के रूप में सामने आते हैं। उनके लेखन अमूर्त विचारों और लोगों द्वारा सामना की जाने वाली रोजमर्रा की वास्तविकताओं के बीच एक पुल का काम करते हैं। एक दार्शनिक और विचारक के रूप में, पूरन डावर के पास एक अनूठा दृष्टिकोण है जो न केवल साथी बुद्धिजीवियों के साथ बल्कि जटिलता के बीच स्पष्टता की तलाश करने वाले व्यापक लोगों के साथ भी प्रतिध्वनित होता है। समकालीन मुद्दों के साथ पूरन डावर का जुड़ाव बहुआयामी अवधारणाओं को पचाने योग्य अंतर्दृष्टि में बदलने की उनकी विशिष्ट क्षमता से चिह्नित है। वह तत्परता के साथ लिखते हैं, वर्तमान घटनाओं और सामाजिक चुनौतियों को संबोधित करते हैं। यह तत्परता केवल गति का मामला नहीं है, यह महत्वपूर्ण मुद्दों के इर्द–गिर्द संवाद को बढ़ावा देने के लिए उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो उनके पाठकों को उनके आसपास की दुनिया के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने का आग्रह करता है। अपने छोटे–छोटे ब्लॉग और लेखों के जरिए, डावर ने चिंतन के लिए एक जगह बनाई है, पाठकों को आमंत्रित किया है चाहे वे नीति निर्माता हों, कार्यकर्ता हों या आम नागरिक हों, भविष्य को आकार देने में अपनी भूमिका पर विचार करने के लिए। वह उन लोगों के लिए लिखते हैं जो बदलाव को प्रभावित करना चाहते हैं और उन लोगों के लिए जो प्रगति की तलाश में अलग–अलग दृष्टिकोणों को समायोजित करते हैं। उनका काम एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि लोकतांत्रिक समाज में विचारशील जुड़ाव महत्वपूर्ण है।

पूरन डावर को जो चीज अलग बनाती है, वह न केवल उनकी अंतर्दृष्टि है, बल्कि विविध दर्शकों के बीच प्रभावी ढंग से संवाद करने की उनकी क्षमता भी है। वह समझते हैं कि दर्शनशास्त्र शिक्षा के क्षेत्र के लिए आरक्षित एक गूढ़ अनुशासन नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक उपकरण है जो आगे का रास्ता रोशन कर सकता है। उनके लेखन पाठकों को उनकी मान्यताओं पर चिंतन करने और उनके कार्यों के निहितार्थों पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे आलोचनात्मक सोच की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है। शासन, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत जिम्मेदारी जैसे विषयों पर पूरन डावर की खोज आज की दुनिया में गहराई से गूंजती है। वह हमारे समय के दबाव वाले मुद्दों को कठोरता और सुलभता के मिश्रण से सुलझाते हैं, ऐसे तर्क गढ़ते हैं जो सम्मोहक और प्रासंगिक दोनों हैं। दार्शनिक विचारों को वास्तविक दुनिया की स्थितियों से जोड़ने की उनकी क्षमता पाठकों को उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए आमंत्रित करती है। पूरन डावर के लेखन की एक खासियत यह है कि वे मुद्दों को

बड़े संदर्भ में ढालने की क्षमता रखते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कोई भी चुनौती अलग–थलग नहीं होती। उनके लिए, राजनीतिक निर्णयों, सामाजिक मूल्यों और व्यक्तिगत कार्यों का परस्पर संबंध हमारे सामूहिक अस्तित्व के ताने–बाने को आकार देता है। वे समस्या समाधान के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की वकालत करते हैं, पाठकों से जीवन के सभी पहलुओं के परस्पर संबंध को पहचानने का आग्रह करते हैं। इस अध्याय में, हम पूरन डावर के कुछ सबसे प्रभावशाली लेखन पर चर्चा करेंगे, जिनमें से प्रत्येक उनके दार्शनिक कौशल और परिवर्तन को बढ़ावा देने के प्रति उनके समर्पण का प्रमाण है। उनके ब्लॉग स्पष्टता और दृढ़ विश्वास के साथ जरूरी मामलों को संबोधित करने की उनकी क्षमता का उदाहरण देते हैं।

एक राष्ट्र, एक चुनाव

कैबिनेट ने आखिरकार एक राष्ट्र, एक चुनाव विधेयक को मंजूरी दे दी है, जो एक महत्वपूर्ण कदम है जिसे अब लोकसभा और राज्यसभा से पारित करने की आवश्यकता है। यह विधेयक जनसंख्या नियंत्रण और एक राष्ट्र, एक कानून जैसी पहलों जितना ही महत्वपूर्ण है। पिछले पाँच वर्षों में, हमने चुनावों का एक अंतहीन चक्र देखा है, जिसमें राजनीतिक दल लुभावने वादे करते हैं, मुफ्त चीजें बाँटते हैं और सरकारी विज्ञापनों पर लाखों खर्च करते हैं, जबकि सैकड़ों लोगों की जिंदगी प्रभावित होती है और करदाताओं का पैसा बर्बाद होता है।

ऐतिहासिक रूप से, एक साथ चुनाव हमारे संविधान का हिस्सा थे, जिसमें लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ होते थे, इसके बाद स्थानीय निकाय चुनाव होते थे। हालाँकि, 1967 से, राज्य सरकारों के समय से पहले भंग होने के कारण यह प्रथा बाधित हुई है। उदाहरण के लिए, 1967 में उत्तर प्रदेश में राज्य चुनावों के बाद, 1969 में फिर से चुनाव हुए, जिससे ऐसी स्थिति पैदा हुई कि विधायकों को आगामी चुनावों के बारे में पहले से सोचना पड़ा। दुर्भाग्य से, इसके कारण पूरे देश में चुनाव अलग–अलग होने लगे, जिससे हम लगातार चुनावी मोड में आ गए।

प्रस्तावित विधेयक के तहत, कार्यकाल पाँच साल का है, और कोई भी समायोजन केवल एक बार किया जाएगा, जैसा कि पूर्व राष्ट्रपति श्री कोविंद ने पुष्टि की है। महत्वपूर्ण बात यह है कि 2024 में राज्यों के लिए निर्धारित चुनाव तय समय पर ही होंगे, जिसमें राज्यों में अलग–अलग अंतराल पर चुनाव होंगेः कुछ में पाँच साल के लिए, अन्य में चार या तीन साल के लिए और उत्तर प्रदेश में सिर्फ दो साल के लिए। यहाँ प्राथमिकता राष्ट्र की प्रगति होनी चाहिए, न कि दलीय राजनीति। इस विधेयक का विरोध किसी दल के हित में नहीं है, यह शासन और देश के भविष्य के बारे में है। जनता की भावना बदलती है, लोग बेहतर शासन और विकल्प तलाशने का मौका चाहते हैं। अगर राजनीतिक दल सिर्फ विरोध के लिए इस विधेयक का विरोध करते हैं, तो हम गतिरोध का जोखिम उठाते हैं।

यह विडंबना है कि पार्टियाँ ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर एकजुट नहीं हो सकतीं जिससे सभी को फायदा हो, बजाय इसके कि वे लाभ या हानि पर ध्यान केंद्रित करें। एक परिदृश्य की कल्पना करें, जहाँ चुनाव और राजनीतिक शोर हर पाँच साल में सिर्फ एक बार हो, जिससे नागरिक अपने काम पर ध्यान केंद्रित कर सकें और सरकारें शासन पर ध्यान केंद्रित कर सकें। आइए, एक ऐसी व्यवस्था के लिए प्रयास करें, जहाँ देश पहले आता है, लगातार चुनावों की व्याकुलता से मुक्त!

समसामयिक विषयों पर पूरन डावर के स्पष्ट दृष्टिकोण को रेखांकित करते उनके द्वारा रचित ब्लॉग्स में से कुछ महत्वपूर्ण ब्लॉगः

ब्लॉग 1: एथलीजर जैसे नए रुझानों, पड़ोसी देशों से प्रतिस्पर्धा से निपटने की रणनीतियाँ

1. वैश्विक स्तर पर, हम उत्पाद श्रेणी और उपभोक्ता स्वाद में बदलाव देख रहे हैं, जिससे भारत के लिए केक का आकार छोटा हो रहा है। हम एथलीजर जैसे नए रुझानों, पड़ोसी देशों से प्रतिस्पर्धा का सामना कैसे कर सकते हैं? इस मिलियन डॉलर के सवाल का जवाब देने के लिए बहुत विशिष्ट होना महत्वपूर्ण है। निस्संदेह, भारत में मुख्य रूप से चमड़े के फॉर्मल के साथ–साथ स्मार्ट कैजुअल की यूएसपी है, जहाँ फैशन फ्लाई निट एथलीजर, आराम, स्पोर्टी लुक की ओर बढ़ रहा है। लगभग 75% पुरुषों के जूते फ्लाई निट द्वारा ले लिए गए हैं और निश्चित रूप से भारत के लिए केक का एक टुकड़ा कम हो गया है। हमें आगे के विकास के लिए कुछ क्षेत्रों पर काम करना चाहिए ताकि हम अपने प्रतिस्पर्धियों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकें।
2. हमें उत्पाद श्रेणी को फिर से रणनीति बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी, ताकि हम आसानी से चीन, वियतनाम, कंबोडिया आदि जैसे प्रतिस्पर्धियों से मुकाबला कर सकें। जहाँ तक कपड़ा और कच्चे माल का सवाल है, हमारे पास हमेशा बढ़त है। इस उत्पाद श्रेणी में, उत्पाद नवाचार, आराम, निश्चित रूप से तार्किक सिद्धांत और पैमाने द्वारा समर्थित हमारे प्रमुख मुद्दे हैं। इस तरह के उत्पाद रेंज में प्रतिस्पर्धी होने के लिए पैमाना सबसे बड़ी चुनौती है। हमारे पास एक बड़ा घरेलू बाजार है, हमें बस एक कदम आगे बढ़ने की जरूरत है। तकनीकी और विपणन सहायता के लिए संयुक्त उद्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभा

सकते हैं।

3. हमें चमड़े के उत्पादों की अपनी ताकत नहीं खोनी चाहिए। हो सकता है कि चमड़े के औपचारिक कपड़ों में केक का टुकड़ा कम हो जाए, लेकिन यह अभी भी बहुत बड़ा है और हमें अपना हिस्सा बढ़ाने की जरूरत है, और हम कम से कम मौजूदा आंकड़ों को बनाए रख सकते हैं।

2. भारतीय आपूर्ति श्रृंखला का SWOT विश्लेषणः

हमें सबसे बड़ी मवेशी आबादी होने की अपनी ताकत को नहीं भूलना चाहिए। हालांकि बाजार सिकुड़ गया है, लेकिन चमड़ा कभी खत्म नहीं होने वाला है। हमें सबसे अधिक सुविधा वाले उत्पाद नवाचार की आवश्यकता है, हमारा श्रमिक कार्यबल अभी भी सबसे बड़ी ताकत है और श्रम लागत में वृद्धि के बाद भी, हम प्रतिस्पर्धियों पर बढ़त बनाए रखेंगे। हमें फ्लाई निट के फैशन में बदलाव के अवसरों को भुनाने की जरूरत है... ये उत्पाद चमड़े की तुलना में बहुत किफायती हैं। भारत में आय वर्ग बढ़ रहा है। हमारे पास एक बड़ी आबादी है जो जूते नहीं खरीद सकती। ये फ्लाई निट सस्ती होंगी। हमें अपने राजनेताओं से कुछ सीखने की जरूरत है, कि कैसे अपनी कमजोरियों को ताकत में बदला जाए। जब भी कुछ चुनौतियाँ आती हैं, तो वे अवसर लेकर आती हैं और बदलाव की शुरुआत करती हैं।

3. भारतीय विनिर्माण को 150–200 करोड़ से 400–500 करोड़ निर्यात श्रेणी में बढ़ाने के लिए जोर देने की जरूरत हैः

मध्यम स्तर की फैक्ट्रियों को 150–200 करोड़ से 400–500 करोड़ तक लंबी छलांग लगाना और उद्योग को अगले स्तर पर ले जाना मिलियन डॉलर का सवाल है। मुख्य बिंदु उत्पाद, नवाचार, ब्रांडिंग, प्रौद्योगिकी समर्थित कहानियाँ हो सकती हैं। रियल एस्टेट में धन का कोई विचलन नहीं। अपने काम को 100% देना और विनिर्माण क्षेत्र को वर्तमान स्तर 400 बिलियन से 1 ट्रिलियन तक ले जाने के लिए मंत्रों का पालन करना सफलता की कुंजी है।

ब्लॉग 2ः आगराः भारत की पर्यटन राजधानी

13 जून, 2016 को, आगरा बार काउंसिल ने आगरा में उत्तर–पश्चिमी प्रांत उच्च न्यायालय की 150वीं वर्षगांठ मनाई। 1866 में स्थापित, आगरा का उच्च न्यायालय न केवल उत्तर प्रदेश बल्कि भारत के उत्तर–पश्चिम में भी सेवा करता था। मुझे उम्मीद थी कि आगरा बार काउंसिल इस महत्वपूर्ण अवसर का उपयोग

एक बड़े आंदोलन, एक अंत तक की लड़ाई शुरू करने के लिए करेगी। उन्होंने सम्मानपूर्वक कई प्रसिद्ध कानूनी हस्तियों को सम्मानित किया और साथ ही जनता और सरकार को आगरा में उच्च न्यायालय की बेंच की पुरानी मांग की याद दिलाई। यह आंदोलन केवल वकीलों के लिए नहीं हैय यह आगरा और आसपास के क्षेत्रों के लोगों के लिए एक आवश्यकता है, जो न्याय के लिए लंबे, महंगे संघर्षों को सहन करते हैं। आगरा शिक्षा के क्षेत्र में भी अग्रणी रहा है। आगरा कॉलेज और आगरा विश्वविद्यालय, जिसका अधिकार क्षेत्र मेरठ से लखनऊ तक फैला हुआ है, अकादमिक उत्कृष्टता के मामले में सबसे आगे थे। सेंट जॉन्स और सेंट पीटर्स स्कूलों में डॉ. शंकर दयाल शर्मा और चौधरी चरण सिंह जैसी उल्लेखनीय हस्तियाँ और बाबू गुलाब रॉय, डॉ. रांगेय राघव और द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जैसे साहित्यकार रहे हैं।

ऐतिहासिक रूप से, आगरा का बहुत महत्व रहा है। मुगल काल के दौरान राजधानी के रूप में, इसका ऐतिहासिक महत्व 1080 ई. से शुरू होता है, जो महमूद गजनवी से लेकर बहादुर शाह जफर और सिकंदर लोदी से लेकर शेर शाह सूरी तक फैला हुआ है। सूर, मीर, नजीर, अकबराबादी और मिर्जा गालिब जैसे प्रसिद्ध कवियों ने भी इस शहर की शोभा बढ़ाई है।

अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने अपनी यात्रा के दौरान ताजमहल की प्रशंसा की और आगरा को 'मूर्ति शहर' कहा। मुझे अपने छात्र जीवन की एक घटना याद आती है, जो आगरा की अनूठी ऐतिहासिक आभा को उजागर करती है। गर्मी की छुट्टियों में अपनी दादी से मिलने आगरा आए जयपुर के एक लड़के को शुरू में डर लगा, क्योंकि उसे लगा कि ताजमहल, सिकंदरा में अकबर का मकबरा, एत्मादुद्दौला में मिर्जा गयास बेग का मकबरा और फतेहपुर सीकरी में सलीम चिश्ती का मकबरा जैसी अनगिनत कब्रों वाला आगरा भुतहा है। बस में यात्रा के दौरान उसने एक सहयात्री से आगरा में भूतों के बारे में पूछा तो उसे मजाकिया अंदाज में बताया गया, 'मैं बीस साल से मरा हुआ हूँ, मुझे नहीं पता।' यह आगरा की समृद्ध, यद्यपि गलत समझी गई, विरासत को उजागर करता है।

तीन विश्व धरोहर स्मारकों (जिनमें से दो और सिकंदरा और एत्मादुद्दौला को जल्द ही घोषित किया जाएगा), 100 से अधिक संरक्षित इमारतें और शाहजहां गार्डन, रामबाग, मेहताब बाग, कंपनी बाग और हेविट (पालीवाल) पार्क जैसे कई उद्यान होने के बावजूद, आगरा आज अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। वकील हाई कोर्ट बेंच के लिए आंदोलन कर रहे हैं, पर्यटन और व्यापार क्षेत्र हवाई अड्डे के लिए जोर दे रहे हैं, जबकि अन्य लोग जल अधिकार, बैराज, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, यमुना नदी, बेहतर सड़कें और बेहतर यातायात के लिए लड़ रहे

हैं। प्रत्येक समूह अपनी–अपनी लड़ाई में लगा हुआ है।

सामूहिक कार्रवाई का समय आ गया है। आगरा का इतिहास समृद्ध है, वर्तमान जीवंत है और भविष्य उज्जवल है। हमें एकजुट होकर आंदोलन शुरू करना चाहिए। मुगल काल में आगरा भारत की राजनीतिक राजधानी थी। मोदी काल में यह देश की पर्यटन राजधानी बन सकती है। एक अंतरराष्ट्रीय परियोजना प्रबंधन परामर्शदात्री संस्था को विकसित देशों के मानकों के अनुरूप आगरा को भारत की पर्यटन राजधानी बनाने का खाका तैयार करने का काम सौंपा जाना चाहिए। इस खाके में सभी मौजूदा मांगों को संबोधित किया जाना चाहिएरू स्वच्छ पानी, बेहतर सड़कें, कुशल यातायात प्रबंधन, एक कार्यात्मक हवाई अड्डा, पुनर्जीवित यमुना नदी, बुलेट ट्रेन, मेट्रो प्रणाली, डिज्नीलैंड, ऐतिहासिक विरासत का संरक्षण, संग्रहालय, पार्क, जलाशय और वाटरफ्रंट झील। इन सुविधाओं के साथ, स्वाभाविक रूप से एक उच्च न्यायालय भी होगा। मुगल काल की राजधानी आगरा अपना गौरव पुनः प्राप्त कर सकती है और देश की सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए खुद को भारत की पर्यटन राजधानी के रूप में स्थापित कर सकती है।

ब्लॉग 3: पीछे छूट गए लोगों को ऊपर उठाने की हमारी जिम्मेदारी

हर विचारधारा या सिद्धांत तर्क पर आधारित होता है, जो या तो मानवीय जरूरतों से या फिर मानवीय विकास से उपजा होता है। हमने साम्यवाद के उत्थान और पतन को देखा हैय द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, दुनिया के दो–तिहाई लोगों ने साम्यवाद को अपनाया, लेकिन फिर उसका पतन होता हुआ देखा। आज, हम पूंजीवाद की चरम सीमाओं को देख रहे हैं, और अगर मौजूदा रुझान जारी रहे, तो इसका पतन अपरिहार्य लगता है।

मेरे विचार से, चाहे हम किसी व्यक्ति या राष्ट्र की चर्चा कर रहे हों, यात्रा एक समान पैटर्न का अनुसरण करती है। युवावस्था में, व्यक्ति और देश दोनों ही अधिक पूंजीवादी होते हैं, जो विकास और धन संचय पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जैसे–जैसे वे परिपक्व होते हैं, वे समाजवादी पूंजीवाद की ओर झुकते हैं, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण में योगदान देने के महत्व को पहचानते हैं।

जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं और अधिक अनुभव प्राप्त करते हैं, यह हमारी जिम्मेदारी बन जाती है कि हम उन लोगों का उत्थान करें जो पीछे छूट गए हैं। इस सिद्धांत का उदाहरण संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके प्रमुख पूंजीपतियों जैसे बिल गेट्स और वॉरेन बफेट के कार्यों से मिलता है, जो वैश्विक कारणों का समर्थन करने के लिए अपने परोपकारी प्रयासों का निरंतर विस्तार करते हैं। दूसरों को वापस देने और उन्हें ऊपर उठाने की यह परंपरा सतत विकास और सामाजिक

प्रगति के लिए आवश्यक है। पूंजीवादी महत्वाकांक्षाओं को समाजवादी जिम्मेदारियों के साथ संतुलित करके, हम एक अधिक न्यायसंगत दुनिया बना सकते हैं। इस संतुलन के माध्यम से हम न केवल व्यक्तिगत और राष्ट्रीय विकास बल्कि मानवता की समग्र भलाई भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

ब्लॉग 4: संविधान में कोई हस्तक्षेप स्वीकार्य नहीं है

ऐसा कोई अंतरराष्ट्रीय कानून नहीं है जो पाकिस्तान, संयुक्त राष्ट्र या किसी अन्य देश को हमारे संविधान में हस्तक्षेप करने की अनुमति देता है। अनुच्छेद 370 के संबंध में, यह भारतीय संविधान का एक हिस्सा है, और अनुच्छेद 370 के भीतर एक स्पष्ट प्रावधान है जो भारत के राष्ट्रपति को जम्मू और कश्मीर सरकार के परामर्श के बाद एक आदेश द्वारा इसे समाप्त करने या संशोधित करने की अनुमति देता है। 1947 में, जम्मू और कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने पूरे क्षेत्र को भारत में एकीकृत किया। सीमाओं को लेकर कोई विवाद नहीं है। पाकिस्तान ने अपनी सेना और मिलिशिया की मदद से कश्मीर पर हमला करके उसके कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया था। जवाब में भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र से अनुरोध किया कि वह पाकिस्तान को उन इलाकों से हटने के लिए कहे। हालांकि, श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ शिमला समझौते के बाद वह स्थिति सुलझ गई थी। संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने स्पष्ट किया कि जब दोनों देश आपसी सहमति के आधार पर विवाद को सुलझाने के लिए तैयार हों, तो विवाद को सुलझाने के लिए संयुक्त राष्ट्र में प्रस्तुत कोई भी आवेदन स्वतः ही रद्द हो जाएगा। संक्षेप में, हमारे संविधान में कोई बाहरी हस्तक्षेप स्वीकार्य नहीं है, और किसी भी आंतरिक संवैधानिक परिवर्तन, जैसे कि अनुच्छेद 370 से संबंधित, को संविधान में निर्धारित प्रावधानों के अनुसार ही संभाला जाना चाहिए।

ब्लॉग 5: मोदी एक राजनेता हैं

राजनीति के क्षेत्र में, हम अक्सर खुद को दोषपूर्ण विकल्पों में से कम बुरे को चुनते हुए पाते हैं। हालांकि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अलग हैं, अंधों के बीच एक आँख वाले राजा के रूप में नहीं, बल्कि एक सच्चे राजनेता के रूप में। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण वास्तविकता है कि भारतीय राजनीति विषाक्तता से भरी हुई है, और कभी–कभी, जहर का जवाब जहर से देना पड़ता है। मोदी से किसी भी उम्मीद के पूरा न होने के बावजूद, हमें खुद से पूछना चाहिए, और कौन वास्तव में हमारी जरूरतों और आकांक्षाओं को समझता है?

कम से कम मोदी के साथ, एक शुरुआत हुई है। 70 साल बाद, हम आखिरकार

बुनियादी स्वच्छता की आवश्यकता को पहचान रहे हैं। 70 साल बाद, कोई हमसे स्वच्छता बनाए रखने का आग्रह कर रहा है। 70 साल बाद, एक नेता गरीबों की बुनियादी जरूरतों को समझने और उन्हें संबोधित करने का प्रयास कर रहा है। दशकों में पहली बार, हमारे पास एक ऐसा प्रधानमंत्री है जो दिन–रात अथक परिश्रम करता है। जनता उनके पाँच साल के कार्यकाल के हर मिनट का हिसाब दे सकती है। मोदी ने न केवल देश, बल्कि पूरी दुनिया को जगाया है। आज बच्चे उत्सुकता से टीवी देखते हैं, यह जानने के लिए कि कौन सी नई पहल की घोषणा होगी। मोदी में कठिन से कठिन निर्णय लेने की क्षमता है। आज दुनिया में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो भारत के प्रधानमंत्री के नाम से परिचित न हो। किसी देश का निर्माण और परिवर्तन कोई ऐसा कार्य नहीं है जो पाँच साल में पूरा हो जाएय यह एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि देश सही दिशा में आगे बढ़ना शुरू हो गया है। कभी–कभी आगे बढ़ने के लिए कुछ कदम पीछे हटना पड़ता है। बेरोजगारी के लिए कौन जिम्मेदार है? सरकार रोजगार के लिए अनुकूल माहौल बनाती है, लेकिन इन अवसरों को भुनाना हम पर निर्भर है। कई योजनाएं शुरू की गई हैं, कौशल विकास के लिए कई कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं और कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध हैं। हालांकि मौजूदा व्यवस्थाएं देश की पारंपरिक कार्यशैली को बाधित कर रही हैं, लेकिन समय के साथ हम इन चुनौतियों से पार पा लेंगे। हमें किसी भी काम को अपने से छोटा नहीं समझना चाहिए। अगर हम छोटे से छोटे काम का भी अध्ययन करें और उसे अपनाएं तो वह बड़ा हो सकता है और यह सुनिश्चित करेगा कि कोई भी बेरोजगार न रहे। हमारे पास नेतृत्व पर भरोसा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। दूसरी तरफ एक सीधी खाई है। मोदी के नेतृत्व पर भरोसा करना ही हमारे उज्जवल भविष्य की सबसे अच्छी उम्मीद है।

ब्लॉग 6: राजनीति, पूंजी और भ्रमः अडानी विवाद की हकीकत और राजनीतिक नासमझी

राजनीति में किस तरह गुमराह किया जाता है और राहुल गांधी अपनी ही पार्टी के लिए किस तरह समस्या खड़ी करते हैं, अडानी का रोना लगातार रो रहे हैं, इस बात को अस्वीकार नहीं कर सकता। भारत में सरकारी पॉवर टेंडर हासिल करने में लेन–देन होता है, अमेरिका में भी होता है। अमेरिका में इसे 'Lobbying' कहते हैं, बाकायदा बैलेंस शीट में इस मद में बड़ा पैसा खर्च में दिखाया जाता है। लेकिन ये आरोप किन सरकारों पर हैं? सारी कांग्रेस या कांग्रेस समर्थित सरकारें हैं, और ये आरोप न्यूयॉर्क की एक साउथ डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में लगाए गए हैं। जाहिर है कि

कोई निवेशक तो कोर्ट जाएगा नहीं क्योंकि अडानी के शेयर गिरने पर नुकसान उन्हीं का होगा। यह अमेरिका की बड़ी स्टॉक ट्रेडिंग कंपनियां करती हैं, जो इसी तरह शेयर गिराकर इन्हीं शेयरों को सस्ते दाम पर खरीदवाती हैं। शेयर बाजार में यह आम बात है, कभी हिंडनबर्ग तो कभी सोरोस समर्थित और कोई कंपनी। लेकिन भारत में कुछ अपरिपक्व नेता अपनी और अपने देश दोनों की जड़ें खोदने का काम करते हैं। अडानी को अल्प समय के लिए वास्तविक या नेशनल लॉस हो सकता है, लेकिन सीधे नुकसान छोटे–छोटे निवेशकों का होता है।

अध्याय 14

यात्रा जारी है

जब हम इस पुस्तक के अंतिम अध्याय पर पहुँचते हैं और पूरन डावर की उल्लेखनीय जीवन यात्रा पर विचार करते हैं, जैसा कि पिछले अध्यायों में वर्णित है, तो वे एक सफल व्यवसायी और एक दूरदर्शी नेता के एक दुर्लभ संयोजन के रूप में सामने आते हैं, जिन्होंने अपना जीवन सामाजिक विकास के लिए समर्पित कर दिया। पिछले अध्यायों में उनके काम को व्यवसाय की सीमाओं से परे, सामाजिक कल्याण, राजनीति और नीति तक छूते हुए सामने लाया गया है। सामूहिक सहयोगी प्रयासों में निवेशित सफलता के बारे में उनका समग्र दृष्टिकोण आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करेगा। पूरन डावर का अनूठा दर्शन, आध्यात्मिकता में गहराई से निहित है, विशेष रूप से भगवद गीता के सिद्धांतों में, जिसने उनके अपने व्यावसायिक कौशल, रणनीतिक अंतर्दृष्टि और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को विश्लेषणात्मक कठोरता प्रदान की है, जो उभरते हुए व्यापारिक नेताओं और उद्यमियों के लिए नींव के रूप में काम करेगा।

जैसा कि पहले देखा गया है, सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति पूरन डावर की प्रतिबद्धता वंचितों के उत्थान के उद्देश्य से उनकी कई पहलों में स्पष्ट है। उनका दृढ़ विश्वास है कि आर्थिक स्वतंत्रता ही सच्ची स्वतंत्रता की नींव है, और इसके बाद उद्यमिता और कौशल विकास इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक मार्ग हैं।

पूरन डावर का दृष्टिकोण अकुशल श्रम को संगठित करने और पारंपरिक कौशल को संगठित उद्योगों में बदलने तक फैला हुआ है। उनका मानना है कि शिक्षा प्रणाली को न केवल डिग्री प्रदान करनी चाहिए, बल्कि व्यक्तियों को व्यावहारिक कौशल से भी लैस करना चाहिए, जो 'अग्निवीर' और 2020–21 के कृषि विधेयकों जैसी पहलों की उनकी वकालत में परिलक्षित होता है, जिसका उद्देश्य युवाओं को सशक्त बनाना और कृषि क्षेत्र का आधुनिकीकरण करना है।

अगली पीढ़ी को सशक्त बनाना

एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में नेतृत्व का संक्रमण कभी भी सरल नहीं होता है। यह एक संवेदनशील और पेचीदा प्रक्रिया है जिसके लिए धैर्य, विश्वास और सबसे महत्वपूर्ण बात, जाने देने की इच्छा की आवश्यकता होती है। पूरन डावर ने इसका प्रत्यक्ष अनुभव तब किया जब उनके बेटे संभव डावर, डावर इंडस्ट्रीज में शामिल हुए। पूरन डावर ने संभव को कोई खास भूमिका देने के बजाय उसे समय लेने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा, 'एक हफ्ते तक फैक्ट्री में घूमो, तय करो कि तुम कहां से शुरुआत करना चाहते हो। और याद रखो, शक्ति दी नहीं जाती, हमेशा ली जाती है, कभी–कभी छीन भी ली जाती है।' इस दर्शन के अनुसार, संभव ने अगले कुछ सालों में यही किया। उन्होंने आरएंडडी सेक्शन से शुरुआत की,

मैन्युफैक्चरिंग के बारे में बारीकियां सीखीं और धीरे–धीरे मार्केटिंग में अपनी भूमिका का विस्तार किया।

उनकी यह यात्रा चुनौतियों से भरी रही। संभव पूरन डावर के साथ विदेशी व्यापार शो और प्रदर्शनियों में गए, जहाँ वे कभी–कभी मूल्य निर्धारण रणनीतियों और खरीदारों से निपटने के तरीकों पर असहमत होते थे। लेकिन यह अनुभव संभव के नेता के रूप में विकास का हिस्सा बन गया। इटली में प्रतिष्ठित रीवा डेल गार्ड शू फेयर से ठीक पहले एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। संभव ने अपने पिता से संपर्क किया और कहा, 'पापा, इस बार अपना टिकट रद्द कर दो। मैं टीम के साथ अकेला जाऊँगा।' जब पूरन डावर ने कारण पूछा, तो संभव ने समझाया, 'अगर आप आओगे, तो हर कोई आपसे बात करेगा, लेकिन अगर मैं अकेला जाऊं, तो शो में खरीदार मुझसे सीधे बात करने में सहज हो जाएंगे। अगली बार, आप आ सकते हो, उनके साथ कॉफी का आनंद ले सकते हो, और मैं सौदे संभाल लूंगा।' आत्मविश्वास और परिपक्वता के इस प्रदर्शन ने पूरन डावर को आश्वस्त किया, और उन्होंने अपना टिकट रद्द कर दिया, और पहली बार संभव को बागडोर सौंपी।

चेन्नई में आयोजित डिजाइनर मेले के दीप प्रज्ज्वलन समारोह के दौरान, चमड़ा निर्यात परिषद (CLE) के अध्यक्ष अकील अहमद, उत्तर क्षेत्रीय अध्यक्ष पूरन डावर, पश्चिम क्षेत्रीय अध्यक्ष नरेश भसीन तथा एमएसएमई मंत्रालय की संयुक्त सचिव अलका नांगिया अरोड़ा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

अगली पीढ़ी से सीखना

पूरन डावर के लिए यह एक आवर्ती विषय बन गया। प्रतिनिधिमंडल के प्रति संभव का दृष्टिकोण पूरन डावर के व्यवसाय के हर पहलू में हाथों–हाथ शामिल होने के विपरीत था। एक दिन जब संभव दिल्ली में एक पारिवारिक कार्यक्रम में भाग लेने की योजना बना रहा था, उसी दौरान पाँच विदेशी खरीदार कारखाने का दौरा करने वाले थे। पूरन डावर, इस बात से नाराज हुए कि उनका बेटा बैठकों की देखरेख करने के लिए नहीं रुक रहा है। संभव ने शांति से जवाब दिया, 'पिताजी, खरीदार मालिक नहीं हैं। अगर उनके मालिक 10,000 किलोमीटर दूर से उन पर भरोसा कर सकते हैं, तो मैं अपनी टीम पर क्यों भरोसा नहीं कर सकता? जब मैं सिर्फ 200 किलोमीटर दूर हूँ, मैं कॉल पर उपलब्ध रहूँगा।' इस नजरिए ने पूरन डावर के नजरिए को बदल दिया और जिम्मेदारियां सौंपने और टीम पर भरोसा करने का महत्व सिखाया।

ऐसे कई मौके आए जब पूरन डावर को अपनी पुरानी आदतें भूलनी पड़ीं। एक बार, पूरन डावर शिपमेंट में देरी को लेकर प्रोडक्शन मैनेजर, श्री प्रधान से निराश हो गए थे। संभव ने देखा और पूछा, 'शिपमेंट कब जाना है?' श्री प्रधान ने जवाब दिया, '30 जून।' संभव ने शांति से कहा, 'ठीक है, मुझे 1 जुलाई को अपना चेहरा दिखाओ।' पूरन डावर ने संदेह करते हुए अपने बेटे को याद दिलाया कि देरी महंगी पड़ेगी, खासकर अगर उन्हें हवाई जहाज से शिप करना पड़े।

हालांकि संभव को अतिरिक्त लागतों की चिंता नहीं थी, उन्होंने कहा, 'अगर यह नहीं जाता है, तो हम इसे हवाई जहाज से भेज देंगे। अगर यह फिर से विफल होता है, तो हम इससे निपट लेंगे। वह प्रबंधक है, कर्मचारी नहीं, यह उसकी जिम्मेदारी है।' शिपमेंट समय पर रवाना हुआ, जिससे संभव के इस विश्वास को बल मिला कि अपनी टीम को अपनी समस्याओं को हल करने के लिए सशक्त बनाना चाहिए। संभव ने समय के साथ–साथ अधिक जिम्मेदारी लेना जारी रखा, धीरे–धीरे उन्होंने अनुसंधान और विकास, विपणन और उत्पादन को अपने हाथ में ले लिया। यहाँ तक कि पूरन डावर द्वारा पारंपरिक रूप से संभाले जाने वाले कार्य, जैसे खरीद, भी अपने बेटे को सौंप दिए।

एक दिन संभव ने अपने पिता को मूल्य निर्धारण निर्णयों पर चुनौती दी, जिस पर अक्सर उनके बीच असहमति होती थी। पूरन डावर, हमेशा मुनाफे के बारे में चिंतित रहते थे, कभी–कभी कीमतें बहुत अधिक या बहुत कम बताते थे, जिससे रणनीति पर असहमति होती थी। संभव ने एक पल में स्पष्टता से कहा, 'पिताजी, आप यह किसके लिए कर रहे हैं?' पूरन डावर ने जवाब दिया, 'बेशक, आपके लिए।' संभव ने जवाब दिया, 'तो मुझे गलतियाँ करने दो, मुझे सीखने दो। अब

यह मेरी जिम्मेदारी है।'

इन पलों के जरिए, संभव ने न सिर्फ अपने पिता का भरोसा जीता, बल्कि कंपनी को आगे ले जाने की अपनी क्षमता भी दिखाई। पूरन डावर को एहसास हुआ कि डावर इंडस्ट्रीज का भविष्य अच्छे हाथों मंद है और वह धीरे–धीरे रोजमर्रा के कामों से मुक्त हो गए। यह बदलाव, हालांकि मुश्किल और संवेदनशील था, लेकिन उनके आपसी सम्मान और समझ के कारण अंततः सफल रहा।

कंपनी में संभव के उत्थान की कहानी न सिर्फ पीढ़ीगत बदलाव को दर्शाती है, बल्कि नेतृत्व को देखने और व्यवहार करने के तरीके में बदलाव को भी दर्शाती है। पूरन डावर के लिए, यह प्रक्रिया अपने बेटे से सीखने और नेतृत्व की ज्यादा आधुनिक, प्रत्यायोजित शैली को अपनाने की रही है। जैसे ही संभव ने बागडोर संभाली, पूरन डावर नए उपक्रमों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्वतंत्र हो गए, जिसमें चाय साइकिल विक्रेताओं के लिए इंस्टेंट चाय मिक्स का विकास भी शामिल है, जो दर्शाता है कि कुछ नया शुरू करने की कोई उम्र नहीं होती।

संभव को जिम्मेदारियों का हस्तांतरण न सिर्फ प्रेरणादायक है, बल्कि व्यावसायिक नेतृत्व की विकसित होती प्रकृति का एक प्रमाण है, जहाँ अनुभव नवाचार से मिलता है, और परंपरा परिवर्तन को गले लगाती है। इस निर्बाध हस्तांतरण के माध्यम से, डावर इंडस्ट्रीज अगली पीढ़ी के नेतृत्व में आगे बढ़ना जारी रखने के लिए तैयार है।

भविष्य की योजनाएँ और विजन

विकास के अगले चरण के लिए पूरन डावर की दृष्टि महत्वाकांक्षी और रणनीतिक दोनों है। उनका लक्ष्य सामाजिक विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए डावर इंडस्ट्रीज की विरासत को बनाए रखना और उसका विस्तार करना है।

पूरन डावर, डावर इंडस्ट्रीज के लिए एक गतिशील भविष्य की कल्पना करते हैं, जिसमें नए बाजारों और क्षेत्रों में रणनीतिक विस्तार शामिल है। उभरती अर्थव्यवस्थाओं की क्षमता को पहचानते हुए, वह उभरती हुई उपभोक्ता आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कंपनी के उत्पाद पोर्टफोलियो में विविधता लाने की योजना बनाते हैं। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य डावर इंडस्ट्रीज की वैश्विक उपस्थिति को मजबूत करना और नए उपभोक्ता आधारों का उपयोग करना है, जिससे लगातार बदलते बाजार परिदृश्य में निरंतर विकास और लचीलापन सुनिश्चित हो सके।

स्थिरता डावर इंडस्ट्रीज के लिए पूरन डावर की दृष्टि के केंद्र में है। वह कंपनी के भीतर पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं को और बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इनमें भविष्य की योजनाओं में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में महत्वपूर्ण निवेश, कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के प्रयास और नैतिक विनिर्माण प्रक्रियाओं को बढ़ावा देना

पूरन डावर अपने मित्रों गौतम कौल, डॉ. अजय प्रकाश और विजय भार्गव के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में कुछ सुखद पल साझा करते हुए।

शामिल है। स्थिरता को प्राथमिकता देकर, पूरन डावर का लक्ष्य डावर इंडस्ट्रीज को जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं में अग्रणी के रूप में स्थापित करना है, जो दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रबंधन और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी सुनिश्चित करता है।

कौशल विकास के प्रति अपने समर्पण को जारी रखते हुए, पूरन डावर नए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने और शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझेदारी बनाने की योजना बना रहे हैं। ये पहल व्यक्तियों को तेजी से विकसित हो रहे जॉब मार्केट में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने के लिए डिजाइन की गई हैं। अधिक उद्यमियों को बनाने पर ध्यान केंद्रित करके, पूरन डावर का लक्ष्य आर्थिक विकास और नवाचार में योगदान देना है, आत्मनिर्भरता और उद्यमशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देना है।

तकनीकी प्रगति को अपनाना डावर इंडस्ट्रीज के भविष्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। परिचालन दक्षता, उत्पाद की गुणवत्ता और ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए पूरन डावर अत्याधुनिक तकनीकों में निवेश करने की योजना बना

रहे हैं। प्रौद्योगिकी में प्रगति का लाभ उठाकर, कंपनी का लक्ष्य उद्योग के रुझानों से आगे रहना, उत्पादकता बढ़ाना और अपने ग्राहकों को बेहतर उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करना है।

मजबूत सीएसआर पहलों के माध्यम से सामुदायिक जुड़ाव को मजबूत करना पूरन डावर की प्राथमिकता बनी हुई है। वह अधिक दबाव वाले सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने और अधिक संख्या में लाभार्थियों तक पहुँचने के लिए सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के दायरे का विस्तार करने की कल्पना करते हैं। समुदायों को सशक्त बनाने और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के माध्यम से, पूरन डावर का लक्ष्य एक सकारात्मक प्रभाव पैदा करना है जो न केवल जीवन को ऊपर उठाता है, बल्कि नए बाजारों को भी विकसित करता है, जिससे स्थायी व्यावसायिक विकास और सामाजिक कल्याण होता है।

नेतृत्व और नवाचार

डावर इंडस्ट्रीज के भीतर नेतृत्व कंपनी को नई ऊँचाइयों की ओर ले जाता है। वर्तमान नेताओं की प्रोफाइल नवाचार, स्थिरता और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को उजागर करती है। पूरन डावर के मार्गदर्शन में, नेतृत्व टीम कंपनी के विजन के साथ संरेखित आगे की सोच वाली रणनीतियों को लागू करने पर केंद्रित है। अभिनव अभ्यास डावर इंडस्ट्रीज के दिल में हैं। R&D के लिए कंपनी का समर्पण सुनिश्चित करता है कि वे उद्योग के रुझानों से आगे रहें और अपनी पेशकशों में लगातार सुधार करें। भविष्य की परियोजनाओं में नई उत्पाद लाइनों का विकास, उन्नत विनिर्माण प्रक्रियाएँ और एक सहज ग्राहक अनुभव बनाने के लिए डिजिटल तकनीकों का लाभ उठाना शामिल है।

पूरन डावर की यात्रा इस बात का एक शक्तिशाली उदाहरण है कि कैसे व्यक्तिगत और पेशेवर उत्कृष्टता एवं सामाजिक कल्याण और पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के साथ सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। उनका जीवन इस बात का प्रतीक है कि एक व्यक्ति समग्र और समावेशी विकास की दृष्टि से प्रेरित होकर समाज पर क्या प्रभाव डाल सकता है।

एक बार जब आप कमा लेते हैं, तो समाज को वापस देने का समय आ जाता है। पूरन डावर का दृढ़ विश्वास है कि सामाजिक कार्य एक दीर्घकालिक निवेश है जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण रिटर्न देता है। वह सामूहिक दृष्टिकोण के महत्व पर जोर देते हैं, जहाँ हर कोई राष्ट्र निर्माण में भाग लेता है, व्यवसायों और सरकारों से लेकर व्यक्तिगत नागरिकों तक। वह इस बात पर भी जोर देते हैं कि 'विलासिता अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का एक तरीका है,' और आर्थिक

गतिविधियों की वकालत करते हैं जो बड़े पैमाने पर समाज को लाभ पहुँचाती हैं। पूरन डावर का मिशन सभी असंगठित क्षेत्रों, जैसे प्लंबिंग और बागवानी को संगठित करना है ताकि संरचित और टिकाऊ उद्योग बनाए जा सकें। वह समझते हैं कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना कोई सच्ची स्वतंत्रता नहीं है, और उद्यमिता और कौशल विकास इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के मार्ग हैं। पूरन डावर का विजन 2017 तक भारत की स्वतंत्रता की शताब्दी को चिह्नित करते हुए विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करने की उनकी प्रतिबद्धता में गहराई से निहित है। उनके विचार, ब्लॉग और वीडियो इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आवश्यक कदमों के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए समर्पित हैं। एक विचारशील नेता के रूप में, पूरन डावर आम लोगों के सामने आने वाली समस्याओं को व्यापक रूप से समझते हैं और नीतियों और उनके दूरगामी प्रभावों की स्पष्ट समझ रखते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि सफलता एक सामूहिक प्रयास है, जिसमें सभी की भागीदारी की आवश्यकता होती हैकृव्यक्तियों से लेकर व्यवसायों तक और राज्य से लेकर राष्ट्रीय शासन तक।

पूरन डावर टिकाऊ विकास और आर्थिक वृद्धि को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक मजबूत सार्वजनिक–निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल का समर्थन करते हैं। पूरन डावर की यात्रा उत्कृष्टता की निरंतर खोज और सामाजिक कल्याण के लिए एक अटूट प्रतिबद्धता है। एक दूरदर्शी नेता के रूप में, वह अपनी अभिनव पहल और रणनीतिक सोच के माध्यम से अनगिनत लोगों को प्रेरित करते हैं और उनका उत्थान करना जारी रखते हैं। उनकी विरासत की विशेषता न केवल व्यावसायिक सफलता है, बल्कि एक गहन सामाजिक प्रभाव भी है, जो सभी के लिए एक उज्जवल और अधिक समावेशी भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। अपने नेतृत्व के माध्यम से, पूरन डावर न केवल एक सफल व्यावसायिक साम्राज्य का निर्माण कर रहे हैं, वे सशक्तिकरण, करुणा और सतत विकास की एक स्थायी विरासत भी बना रहे हैं। उनके प्रयासों से यह सुनिश्चित होता है कि उनका प्रभाव व्यवसाय से आगे बढ़कर एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव पैदा करे, जिससे राष्ट्र 2047 तक एक विकसित भारत के रूप में उभरकर विश्व के सामने आए।

भविष्य के प्रयास और चिंतन

पूरन डावर के भविष्य के प्रयासों का उद्देश्य एक अधिक न्यायसंगत और समृद्ध समाज का निर्माण करना है। वह शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाने के अपने मिशन के लिए समर्पित हैं। उनके अनुभवों और भगवद गीता की शिक्षाओं से प्राप्त जीवन पर उनके चिंतन, उनके कार्यों का

मार्गदर्शन करते हैं और उनके आस–पास के लोगों को प्रेरित करते हैं।

अंत में, पूरन डावर का जीवन और कार्य आशा और प्रेरणा की किरण के रूप में काम करते हैं। उनकी यात्रा दृढ़ता, नवाचार और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की गहरी प्रतिबद्धता की शक्ति का प्रमाण है। जैसे–जैसे वे दूरदृष्टि और उद्देश्य के साथ नेतृत्व करना जारी रखते हैं, पूरन डावर की यात्रा वास्तव में जारी रहती है, जो समाज और उन लोगों के दिलों पर एक अमिट छाप छोड़ती है जिन्हें वे छूते हैं।

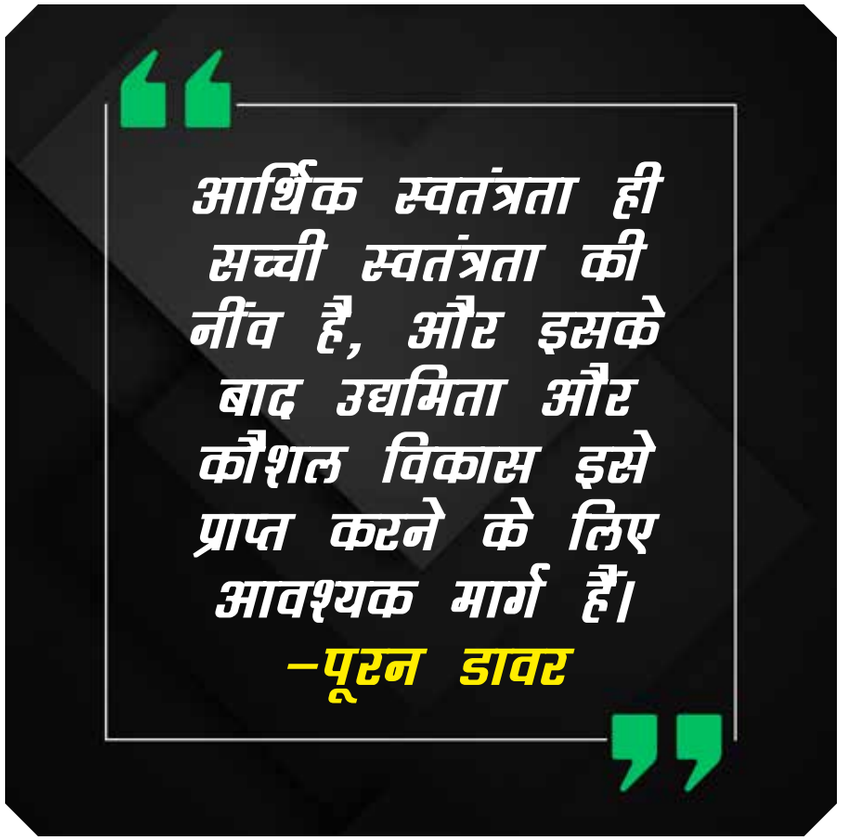

पूरन डावर की जीवनी

विभाजन के बाद के कठिन समय में जन्मे पूरन डावर की जीवन यात्रा संघर्ष, संकल्प और सफलता की प्रेरणादायक गाथा है। उनका परिवार अपने वतन से विस्थापित होकर आगरा के एक शरणार्थी शिविर में आ बसा, जहाँ जीवन का हर दिन अस्तित्व की लड़ाई बन गया था। इन विषम परिस्थितियों में भी, पूरन डावर ने हिम्मत नहीं हारी और कठिनाइयों को अपनी ताकत बनाकर आगे बढ़ते चले गए।

पूरन डावर के पिता की एक साधारण दर्जी की दुकान को पूरन डावर ने अपने परिश्रम, नवाचार और दूरदर्शिता के बल पर एक सफल व्यवसायिक साम्राज्य में बदल दिया, जिसने वैश्विक फुटवियर उद्योग को एक नई दिशा प्रदान की। डावर समूह की स्थापना उनके इसी दृष्टिकोण और प्रभावी नेतृत्व का परिणाम है। आज यह समूह अपने नैतिक व्यापारिक मूल्यों, पर्यावरण के प्रति सजग उत्पादन पद्धतियों और सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित और प्रतिष्ठित है।

पूरन डावर की सफलता केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं रही। समाज के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता और सेवा भावना उनके परोपकारी कार्यों में स्पष्ट झलकती है। सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट के माध्यम से वे शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में निरंतर योगदान दे रहे हैं। उनके ये प्रयास न केवल जरूरतमंदों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रहे हैं, बल्कि समाज को समग्र रूप से सशक्त भी बना रहे हैं।

पूरन डावर की जीवन गाथा इस बात का उदाहरण है कि कैसे एक साधारण शुरुआत, जब अटल संकल्प, स्पष्ट दृष्टि और मानवीय मूल्यों के साथ जुड़ती है, तो वह न केवल एक उद्योग को बल्कि एक प्रेरणादायी विरासत को जन्म देती है। यह जीवनी एक ऐसे व्यक्तित्व की कहानी है, जिसने अपने साहस, मेहनत और सामाजिक प्रतिबद्धता से न सिर्फ अपनी किस्मत बदली, बल्कि असंख्य लोगों के जीवन में आशा और संभावना की एक नई रौशनी जगाई।

ISBN: 978-81-977017-0-2

PRICE
₹ 795/-

asiaone.co.in/.me

@asiaone_magazine
@asiaonemagazine
@asiaonemagazine
@asiaone
@asiaonemagazine